

# मिरा भाईदर महानगरपालिका

## मुख्य कार्यालय, तिसरा मजला, छत्रपती शिवाजी महाराज सभागृह

महासभा दि. ०१/११/२००७

आज गुरुवार दि. ०१/११/२००७ रोजी मिरा भाईदर महानगरपालिकेची मा. महासभा सकाळी ११.०० वाजता सभा सुचना क्र. ०३ दि. २०/१०/२००७ रोजीच्या विषयपत्रिकेवर विचार विनिमय करणेकरिता महापालिका सभागृह, ३ रा मजला, छत्रपती शिवाजी महाराज सभागृह येथे मा. महापौर यांच्या अध्यक्षतेखाली भरली असता खालीलप्रमाणे सदस्य हजर होते.

### उपस्थित सदस्य

|     |                                                  |             |
|-----|--------------------------------------------------|-------------|
| १)  | नरेंद्र मेहता                                    | महापौर      |
| २)  | मेन्डोन्सा स्टीवन जॉन                            | उपमहापौर    |
| ३)  | पाटील जयंत महादेव                                | सभागृह नेता |
| ४)  | दिव्या अशोक तिवारी                               | सदस्या      |
| ५)  | म्हात्रे मिलन वसंत                               | सदस्य       |
| ६)  | शानू जो. गोहिल                                   | सदस्या      |
| ७)  | पाटील उमाताई शाम                                 | सदस्या      |
| ८)  | वैती नर्मदा यशवंत                                | सदस्या      |
| ९)  | सिंह मदन उदितनारायण                              | सदस्य       |
| १०) | शेटी गणेश गोपाळ                                  | सदस्य       |
| ११) | जाधव मोहन महादेव                                 | सदस्य       |
| १२) | वेतोसकर राजेश शंकर                               | सदस्य       |
| १३) | पाटील सुनिता कैलास                               | सदस्या      |
| १४) | पाटील प्रविण मोरेश्वर                            | सदस्य       |
| १५) | म्हात्रे राजेश हरिश्चंद्र                        | सदस्य       |
| १६) | पाटील प्रभात प्रकाश                              | सदस्या      |
| १७) | पुरोहित मधुसुदन मनोहरलाल                         | सदस्य       |
| १८) | पाटील धनेश परशुराम                               | सदस्य       |
| १९) | म्हात्रे कल्पना महेश                             | सदस्या      |
| २०) | पाटील शरद केशव                                   | सदस्य       |
| २१) | अग्रवाल ओमप्रकाश गंगाधर (गाडोदिया)               | सदस्य       |
| २२) | पाटील ध्रुवकिशोर मन्साराम                        | सदस्य       |
| २३) | पाटील मिलन गोविंदराव                             | सदस्य       |
| २४) | व्यास सुधा वासुदेव                               | सदस्या      |
| २५) | रॉझीक्स मॉरस जोसेफ                               | सदस्य       |
| २६) | म्हात्रे नयना गजानन                              | सदस्या      |
| २७) | पाटील अनंत रामचंद्र                              | सदस्य       |
| २८) | गोविंद हेलन जॉर्जी                               | सदस्या      |
| २९) | डिमेलो बर्नड आल्बर्ट                             | सदस्य       |
| ३०) | बाविघर सिसिलीया विजय                             | सदस्या      |
| ३१) | परेरा टेरी पॉल                                   | सदस्य       |
| ३२) | सावळे निर्मला बाबुराव उर्फ कांबळे निर्मला विष्णू | सदस्या      |
| ३३) | कुरेशी याकुब ईस्माईल                             | सदस्य       |
| ३४) | परेरा कॅटलीन ऍन्थोनी                             | सदस्या      |
| ३५) | ठाकुर प्रकाश पांडुरंग                            | सदस्य       |
| ३६) | डॉ. राजेंद्र भवरलाल जैन                          | सदस्य       |
| ३७) | शर्मा भगवती                                      | सदस्य       |
| ३८) | पाटील वंदना मंगेश                                | सदस्या      |
| ३९) | भोईर शशिकांत जगन्नाथ                             | सदस्य       |
| ४०) | भोईर सुनिता शशिकांत                              | सदस्या      |

|     |                                               |        |
|-----|-----------------------------------------------|--------|
| ४१) | पाटील प्रेमनाथ गजानन                          | सदस्य  |
| ४२) | पाटील प्रफुल्ल काशीनाथ                        | सदस्य  |
| ४३) | म्हात्रे तुलसीदास दत्तात्रेय                  | सदस्य  |
| ४४) | वर्षा भानुशाली                                | सदस्या |
| ४५) | सिंग श्रीप्रकाश जिलेदार                       | सदस्य  |
| ४६) | पांडे स्नेहा शैलेश                            | सदस्या |
| ४७) | शेख मुसरतबानु इब्राहिम                        | सदस्या |
| ४८) | जंगम लक्ष्मण गणपत                             | सदस्य  |
| ४९) | सपार उमा विश्वनाथ                             | सदस्या |
| ५०) | इनामदार जुबेर अब्दुल्ला                       | सदस्य  |
| ५१) | पुजारी कांचन शेखर                             | सदस्य  |
| ५२) | मुंज वासुदेव भास्कर                           | सदस्य  |
| ५३) | सय्यद नुरजहाँ नझर हुसैन                       | सदस्या |
| ५४) | शेख नुर मोहम्मद अहेमद                         | सदस्य  |
| ५५) | खान शफीक अहेमद सादत                           | सदस्य  |
| ५६) | भाटकर प्रेरणा प्रमोद                          | सदस्या |
| ५७) | डिसा मर्लिन मर्विन                            | सदस्या |
| ५८) | वैती विजया हेमचंद्र                           | सदस्य  |
| ५९) | पालांडे प्रशांत भगवंतराव                      | सदस्य  |
| ६०) | ठाकूर कल्पना हरिहर                            | सदस्या |
| ६१) | म्हात्रे चंद्रकांत खंडोजी                     | सदस्य  |
| ६२) | मोदी चंद्रकांत भिकालाल                        | सदस्य  |
| ६३) | भट दिप्ती शेखर                                | सदस्या |
| ६४) | दुबे रामनारायण सदानंद                         | सदस्य  |
| ६५) | वैती चंद्रकांत सिताराम                        | सदस्य  |
| ६६) | सावंत अनिल दिवाकर                             | सदस्य  |
| ६७) | भोईर राजू यशवंत                               | सदस्य  |
| ६८) | चक्रे वंदना रामदास                            | सदस्या |
| ६९) | शेख सलिम दाउद                                 | सदस्य  |
| ७०) | हरिश्चंद्र जगन्नाथ म्हात्रे                   | सदस्य  |
| ७१) | माळी हेमा रविंद्र                             | सदस्या |
| ७२) | हसनाळे जोत्सना जालींदर उर्फ शिंदे पूजा प्रताप | सदस्या |
| ७३) | यादव मिरादेवी रामलाल                          | सदस्या |
| ७४) | गावंड मंदाकिनी आत्माराम                       | सदस्या |
| ७५) | म्हात्रे मोहन गोपाळ                           | सदस्य  |
| ७६) | अनिता जयवंत पाटील                             | सदस्या |

#### गैरहजर सदस्य

|    |                    |        |
|----|--------------------|--------|
| १) | फॅरो ग्रिटा स्टीफन | सदस्या |
|----|--------------------|--------|

#### रजेचा अर्ज

|    |                   |       |
|----|-------------------|-------|
| १) | नलावडे दिनेश दगडू | सदस्य |
| २) | शेख आसिफ गुलाब    | सदस्य |

(वंदे मातरम या राष्ट्रीय गीताने सभेला सुरुवात करण्यात आली.)

#### **मा. महापौर :-**

मा. उपमहापौर साहेब, मा. आयुक्त साहेब, सन्मा. नगरसचिव साहेब, मान्यवर उपस्थित नगरसेवक, नगरसेविका, पत्रकार बंधु बांधव आणि अधिकारी, आजच्या मा. महासभेत बरेचसे महत्वाचे विषय आहेत. मिरा भाईंदर शहर हे झपाट्याने वाढत चालले आहे. हॉस्पिटल हे मिरा भाईंदर शहर करिता महत्वाची गरज आहे. दरवर्षी मिरा भाईंदर शहर हे पावसाळ्यात बुडले जाते. मोठ मोठे नाले आणि बरेचसे महत्वाचे विषय आहेत त्या बदल आपण सर्वांना आज येथे दिवाळी निमित्त सर्वांना शुभेच्छा देवुन चांगल्या रित्या आजची सभा पार पाडु या एवढे बोलुन मी माझे दोन शब्द पुर्ण करतो. सचिवांनी पुढील कामकाजाला सुरुवात करावी.

(नगरसचिवांनी विषयपत्रिकेचे वाचन केले.)

**नगरसचिव :-**

आज प्रश्नोत्तर नसल्यामुळे आजची आलेली लक्षवेधी श्री. प्रशांत पालांडे यांच्याकडून आलेली आहे. ती लक्षवेधी मी मा. महापौरांकडे सुपुर्द करित आहे.

**प्रेमनाथ पाटील :-**

मा. महापौर मॅडम, आपली परवानगी असेल तर मी बोलू इच्छितो, आपण बी.पी.रोड व नवघर रोडला अतिक्रमणची मोहिम चालू केली. फेरिवाल्यांना हटविण्यांत आले. पण त्यामध्ये दुकानदारांनी मंडप टाकले आहे. त्याला आपण परवानगी दिलेली आहे का?

**मा. महापौर :-**

सदरची माहिती घेउन आपल्याला सांगतो. सचिवजी लक्षवेधीचे वाचन करा.

**चंद्रकांत वैती :-**

मा. महापौर महोदय, विषयपत्रिकेप्रमाणे मागील सभांचे इतिवृत्तांत निरंक लिहिलेला आहे. मागची सभा झाली नाही असे प्रशासनाचे मत आहे की त्याला विलंब का?

**नगरसचिव :-**

सभा १७ तारखेला झाली. त्याच्यानंतर इतिवृत्तांत दोन दिवसांत पुर्ण होउ शकत नाही इतिवृत्तांचे काम चालू आहे. पुढच्या सभेत इतिवृत्तांत दिले जाईल.

**शानू गोहिल :-**

२८ आणि १७ तारखेला सभा झाली. दोन सभा झालेल्या आहेत.

**नगरसचिव :-**

ती इलेक्शनची सभा होती.

**चंद्रकांत वैती :-**

फक्त दोन दिवसच गेले का? दिवसामध्ये आपण इतिवृत्तांत तयार करू शकलो नाही का?

**नगरसचिव :-**

१७ तारखेला सभा झाली आणि अजेंडा २० तारखेला निघाला. म्हणजे १८ आणि १९ अस दोन दिवस गेले व त्यात एक रविवार होता.

**चंद्रकांत वैती :-**

आपल्याकडे सर्व यंत्रणा आहे. आपण रेकॉर्डिंग देखिल करत असतो. आपल्याकडे सक्षम कर्मचारी आहेत. इतिवृत्त देणं हे गरजेचे आहे. नाहीतर, मागच्या सभागृहातील आमचा असा अनुभव आहे का एका वेळेला तीन चार सभांची इतिवृत्तांत येतात. विषयांचा भरमार असतो. त्यावेळेला इतिवृत्तांतावर कुठच्याही प्रकारचा कम्प्लाइन्स रिपोर्ट आलेला नसतो. ह्यावेळेला ह्या सगळ्या प्रथा आपल्याला बंद करायच्या आहेत. आपल्याकडे प्रत्येक सभेच्यानंतर पुढे येणाऱ्या सभेमध्ये इतिवृत्त तयार पाहिजे आणि माझ्या मते आजच्या सभेत आपण इतिवृत्तांत दयायलाच पाहिजे होते. जाणीवपूर्वक हे इतिवृत्त दिलेले नाही. इतिवृत्त का दिले नाही याचा खुलासा आपण कराल तर अधिक चांगले राहिल.

**नगरसचिव :-**

मा. महासभा ही १७ तारखेला झाली आणि १८ व १९ असे दोनच दिवसमध्ये गेले. २० तारखेला अजेंडा निघाला. १ दिवसात इतिवृत्त पूर्ण होणे शक्य नाही. कारण इतिवृत्त हे जवळ जवळ ५० ते ७० पानाच्यावर आहे. इतिवृत्त आता तयार झालेले आहे. पुढच्या सभेला देता येईल.

**मिलन पाटील :-**

मा. महापौर साहेब, अभिनंदनाचा ठराव मांडू इच्छितो की, आपले महापौर ह्यांना पुत्ररत्न झाला आहे. बाळ बाळतीण सुखरूप आहे. त्याबद्दल या सर्वांना धन्यवाद देवून मी अभिनंदन करतो.

**एस. ए. खान :-**

सचिव साहेब, इतिवृत्तांत कधी मिळेल?

**नगरसचिव :-**

पुढच्या सभेमध्ये इतिवृत्तांत दिले जाईल.

**एस. ए. खान :-**

म्हणजे आपण विषयपत्रिकेवर जी माहिती दिली आहे ती माझ्या मते चुकीची आहे. आपण सर्व नियुक्त्या निरंक दिलेले आहे. आम्हांला दोन दिवस अगोदर समजले की, काही लोकांना प्रमोशन देवून अपॉईंटमेंट केलेले आहे. ह्याची माहिती सभागृहाला देण्याची आवश्यकता नाही.

**नगरसचिव :-**

ज्यावेळी अजेंडा काढतो त्यावेळी सचिव कार्यालयात ती माहिती यायला पाहिजे.

**एस. ए. खान :-**

आजही देवू शकतो ना.

**नगरसचिव :-**

प्रशासन देवू शकते. माझ्याकडे, सचिव कार्यालयात ती माहिती नाही.

**एस. ए. खान :-**

विचारले नाही का? जे लोकांना बाहेर माहिती झाले आहे ते आपल्याला माहित नाही का? प्रशासनाने सचिवांना माहिती द्यायला नको का?

**नगरसचिव :-**

सचिवांकडे माहिती आल्यावर नगरसेवकांना ती माहिती उपलब्ध करून देवू शकतो.

**एस. ए. खान :-**

नियुक्त्या झालेल्या आहेत. प्रमोशन देवून दुसरी अपॉईटमेंट झाली आहे. प्रशासनाने तुम्हांला द्यायला नको का? तुम्ही प्रशासनाला विचारू शकत नाही का? बाहेर सर्व लोकांना माहित झालेले आहे?

**नगरसचिव :-**

ह्या ज्या नियुक्त्या आहेत त्या अधिकारी, कर्मचारी नियुक्त्या नाही.

**एस. ए. खान :-**

कुठलीही नियुक्ती असेल ना. ह्याच्यामध्ये आपण स्पेसिफिक अधिकारी, कर्मचारी नियुक्ती तर त्याचा खुलासा करा ना.

**नगरसचिव :-**

प्रमोशनची जी नेमणुक केली जाते त्याचा गोषवारा दिला जातो.

**एस. ए. खान :-**

सभागृहाला माहिती देण्याची गरज नाही का?

**नगरसचिव :-**

प्रशासनाने गोषवारा द्यायला पाहिजे. प्रशासनाकडून गोषवारा येईल तेव्हा मी आपल्याला देईल ना.

**एस. ए. खान :-**

आपण प्रशासनाला सांगा ना की माहिती द्या.

**नगरसचिव :-**

सदरची माहिती आपल्याला प्रशासनाकडून मिळेल.

**एस. ए. खान :-**

आणि न्यायालयाचे काही निर्णय वगैरे आलेले नाही का?

**जुवेर इनामदार :-**

आमच्या माहितीप्रमाणे जी चर्चा आहे त्याप्रमाणे चार अधिकाऱ्यांना आपण डेप्युटी इंजिनियर म्हणून नियुक्त केलेले आहे. त्या विषयाबद्दल येथे काहीच चर्चा झालेली नाही की, प्रमोशन द्यायचे की नाही. ही पद कोणत्या कारणाने क्रिएट करण्यांत आलेली होती आणि त्या व्हॅकन्सी भरण्याकरिता इंटरव्ह्यू सुद्धा चालू होत्या. अशी शहरामध्ये आमच्याकडे चर्चा आहे.

**नगरसचिव :-**

कुठचेही प्रमोशन किंवा कोणाची नियुक्ती केली याबाबत प्रशासनाकडून सचिव कार्यालयात माहिती आल्यानंतर ती येथे दिली. आमच्याकडे अशी कोणतीही माहिती उपलब्ध झालेली नाही किंवा झालेली नाही. त्यामुळे ती माहिती मला येथे देता येत नाही. सदरची माहिती ही आपल्याला प्रशासनाकडून घ्यायची आहे. प्रशासन आपल्याला उत्तर देवू शकते.

**चंद्रकांत वैती :-**

प्रशासनाचे प्रमुख म्हणून मा. आयुक्त साहेबांना विनंती करतो की, या सभागृहामध्ये आपण आता ज्या नविन नियुक्त्या करत आहोत. काही इंजिनियरच्या मुलाखती झाल्या आणि ह्या मुलाखती होताना साधारणपणे कुठच्याही प्रकारची जाहिरात काढताना येथील जे वर्तमानपत्र आहे त्याच्यामध्ये ह्या जाहिराती प्रसिद्ध झाल्या पाहिजे. परंतु, या जाहिराती प्रसिद्ध झाल्या ते लक्षदीप नावाचे वर्तमानपत्र आहे. कुठे आहे ते मला माहित नाही. लक्षदीप समुहामध्येच आहे तेही माहित नाही. या नियुक्त्या आपण करतो. कुठच्याही प्रकारच्या इंटरव्ह्यू घेतो. आज महापालिकेमध्ये २८ फेब्रुवारी २००२ ला महापालिकेची स्थापना झाली आणि प्रशासकीय ठराव होता व त्या प्रशासकीय ठरावप्रमाणे आकृतीबंधाला मंजूरी दिल्यानंतर निदान आपण आयुक्त म्हणून या शहराचा कारभार पाहायला सुरुवात केल्यापासून या मिरा भाईदर महापालिकेचा आस्थापनेवरील जो खर्च ५७ लाख प्रति माह होता तो १ लाख ७ हजाराच्यावर गेलेला आहे आणि त्यानंतर आपण अभ्यासपणे नविन अपॉईटमेंट घेत आहात. नविन नोकऱ्या देत आहात. आता नुकती अशी माहिती आमच्याकडे उपलब्ध झाली की, आपल्याकडे जे संगणकचालक आहेत. त्या संगणक चालकांना आपण टेकापद्धतीने घेतलेले त्याऐवजी आपण नविन काहीतरी जाहिराती काढल्यात. नविन संगणक चालक मागवलेले आहेत. तर याबाबत सभागृहासमोर आपण एकदा खुलासा केला तर अधिक सोपं राहिलं आणि आजच्या विषयपत्रिकेची चर्चा ही जे विषय आलेले आहेत त्या विषयानुसारच झाली तर सर्व सदस्यांना देखिल कळेल ही, ह्या महापालिकेमध्ये नेमके काय चाललेले आहे?

**एस. ए. खान :-**

लक्षदीप पेपर आहे ते कुठे आहे? तो पेपर कोण काढतो? ते वर्तमान कुठून निघतो.

**अनिल सावंत :-**

सचिव साहेब, आपली मागची सभा १७ तारखेला झाली आणि ह्याचा अजेंडा २० तारखेला निघाला म्हणून वेळ मिळाला नाही तर या दोन दिवसामध्ये दुसऱ्या मिटींगचा अजेंडा काढायला लागावा. एवढी अरजन्सी काय निर्माण झाली होती? शहरामध्ये असे कोणते प्रश्न निर्माण झाले होते की, इतिवृत्त दिल्याशिवाय निर्णयाचा मिटींग बोलवावी लागली.

**मा. महापौर :-**

महत्त्वाचे म्हणजे कर्मचाऱ्यांचा बोनसचा विषय होता आणि अजेंडाला कमीत कमी ७ दिवस तरी पाहिजे. त्या हिशोबाने लवकरात लवकर ही सभा लावण्यांत आली होती.

**एस. ए. खान :-**

मग एकच विषय घ्यायचा होता ना. जो महत्त्वाचा विषय होता तोच विषय घ्यायचा होता.

**मा. महापौर :-**

विषय मा. महासभेत आणलेले आहे. किती विषय व कोणते विषय घ्यायचे हा माझा अधिकार आहे. तुम्ही तुमच्या हिशोबाने सभागृहाने निर्णय घ्यावा.

**जुबेर इनामदार :-**

मा. महापौर साहेब, विषय सानुग्रह अनुदानाचा होता. बोनसचा नव्हता. तर तो विषय नंतरही घेता आला असता. त्याची एवढी घाई नव्हती तो विषय आपल्याला पुढेही लोटता आला असता नंतरही घेता येता.

**मा. महापौर :-**

आता हा विषय मा. महासभेत आलेला आहे. सभागृहाने त्याच्यावर निर्णय घ्यावा. सचिवजी लक्षवेधी वाचून दाखवा. सन्मा. सदस्य चंद्रकांत वैती साहेब आपण नंतर खुलासा करू या.

**चंद्रकांत वैती :-**

विषयपत्रिकेप्रमाणे जा. तुम्हांला लक्षवेधी घेता येईल. पहिल्या विषयाच्या आधी लक्षवेधी घ्या. विषयपत्रिकेवर काय लिहिलेले आहे. नियुक्त्या लिहिलेल्या आहेत. त्या नियुक्त्या झालेल्या आहेत. प्रशासनाने त्या नियुक्त्यांचा खुलासा केला पाहिजे. ह्याच्याआधी १७० पदांची भरती झाली होती. मागच्या सभागृहात अस्तित्वात असलेल्या नगरसेवकांना कमिशनर साहेब आपण आश्वासित केले होते की या शहरातल्या कर्मचाऱ्यांना नोकरभरतीमध्ये प्राधान्य देवू आणि प्रत्येक नगरसेवकाकडून शिफारस केलेला एक कर्मचारी घेऊ. त्या १७० पदांच्या भरत्या आपण आमच्यापुढे कधीच आणल्या नाहीत आणि आपल्या मर्जीने सातत्याने येथे कर्मचाऱ्यांचा भरणा करत आहात. या शहरामध्ये बेकार तरुण नाहीत का, अशी आपली भावना असेल तर आपण तसे स्पष्ट सांगावे. पण त्याचा खुलासा झाल्याशिवाय प्रशासनाने किती नविन नियुक्त्या केल्या त्याचा खुलासा झाल्याशिवाय पुढच्या विषयांना आपण सुरुवात करू नये.

**मा. महापौर :-**

मा. आयुक्त साहेबांनी याचा खुलासा करावा.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

मा. महापौर साहेब, सन्मा. नगरसेवक चंद्रकांत वैती साहेबांनी इतिवृत्तांतावर प्रश्न उपस्थित केला होता. माझ्या माहितीप्रमाणे मागच्या सत्रामध्ये एक-एक नाही तीन-तीन सभांचे वृत्तांत चार-चार, पाच-पाच महिन्यांनंतर येत होते. त्यावेळी आम्ही विरोधी पक्ष म्हणून ही गोष्ट लक्षात आणून देत होतो. वेळ गेली होती. प्रशासनाला एक-एक महिना देवून सुद्धा इतिवृत्तांत देत नव्हते. त्यावेळी सर्व चालत होते. म्हणून ही प्रथा सुधारली पाहिजे या मताशी आम्हीही आहोत. सचिवांना आपण तसे इन्स्ट्रक्शन द्या. आज सानुग्रह अनुदानाचा महत्त्वाचा विषय आहे. म्हणून हा विषय त्यांनी घेतलेला आहे. यानंतर सचिवांनी वेळ ठरवून इतिवृत्तांत वेळेवर द्यावा अशी मागणी आजपासून नाहीतर दहा वर्षांपासून आहे. पण आता विरोधी पक्षात आल्यानंतर ही गोष्ट त्यांच्या जास्त लक्षात यायला लागली आहे. म्हणून आम्हांलाही बरे वाटले की, इतिवृत्तांत वेळेवर मिळेल. ही काळजी सचिवांनी घ्यावी. दुसरे नियुक्त्या म्हणजे नियुक्त्या प्रशासन करतो त्याची जाणीव मा. महासभेत दिली पाहिजे की नाही. निवडणुका हा सभागृहाचा विषय होता. नियुक्त्याबाबत खरोखर जर प्रशासनाने नियुक्ती केलेली आहे. याच्यावर जास्त वाद न करता आयुक्तांनी याच्यावर निवेदन करावे आणि आजच्या महत्त्वाच्या विषयाला सुरुवात करावे असे निवेदन आहे.

**गोविंद परब (मा. अधीक्षक सा.प्र.) :-**

मा. महापौर मंडमच्या परवानगीने बोलत आहे की, संगणक चालकाबाबत विषय आला त्याबद्दल बोलत आहे. संगणक चालक आपल्या महापालिकेने बऱ्याच विभागात संगणक आहेत आणि सध्या जे कार्यरत आहेत त्यांची मुदत ३१ डिसेंबर, २००७ रोजी संपत आहे आणि ते कंत्राटी पद्धतीने असल्यामुळे शासनाचे व सुप्रिम कोर्टाचे असे निर्देश आहेत की त्यांना सहा महिन्यांच्या वर मुदतवाढ द्यायची नाही व त्यांची नविन अपॉईटमेंट करायची त्यानुसार आम्ही वृत्तपत्रात जाहिरात दिलेली आहे. मुंबई लक्षदिप व साप्ताहिक सुरज प्रकाशमध्ये जाहिरात आहे.

**चंद्रकांत वैती :-**

इतर पेपर नाहीत का? मिरा भाईदरमध्ये महाराष्ट्र टाईम्स चालतो, लोकसत्ता चालतो, सकाळ चालतो, सामना चालतो, लोकमत चालतो, वृत्तमानस चालतो असे केवढे पेपर आहेत. आपण अशा वृत्तपत्रामध्ये जाहिरात द्या. ज्याच्यामुळे सर्व लोकांना कळेल. ह्या पेपरमध्ये देण्यामागे आपला हेतू काय? आपले मत काय की हे पेपर फार प्रसिद्ध आहेत. फक्त महापालिकेत पेपर वाटला गेला किंवा अमुक लोकांपर्यंत पोहचला म्हणजे सर्व जनतेपर्यंत पोहचला असे आपले मत आहे का?

**गोविंद परब (मा. अधीक्षक सा. सा.प्र.) :-**

साहेब तसे नाही. वृत्तपत्रात जाहिरात देण्याची जी रूटीन आहे त्या रूटीनमध्ये जो नंबर येईल त्याप्रमाणे दिले जाते. एक-राज्यस्तरीय आणि दुसरे - ठाणे जिल्हास्तरीय (स्थानिक).

**चंद्रकांत वैती :-**

ठाणे जिल्हास्तरीय कुठला आहे व राज्यस्तरीय कुठला आहे.

**गोविंद परब (मा. अधीक्षक सा. सा.प्र.) :-**

दैनिक मुंबई हे वृत्तपत्र राज्यस्तरीय आहे आणि साप्ताहिक हे स्थानिक आहे.

**चंद्रकांत वैती :-**

लक्षद्विप हे राज्यस्तरीय आहे. आपल्या महापालिकेत वृत्तपत्राचे एवढे गाठोडे येते त्याच्यात लक्षद्विप हा पेपर येतो का? येत असेल तर आम्हांला दाखवा. आता आयुक्तांच्या दालनातून पेपर मागवा. तुम्ही लोक किती दिशाभूल करणार आहात?

**एस. ए. खान :-**

तुमच्याकडे असा दाखला आहे का?

**गोविंद परब (मा. अधीक्षक सा. सा.प्र.) :-**

दाखला म्हणजे त्यांच्याकडे रजिस्टर पत्र असते.

**एस. ए. खान :-**

असे आणि तसे चालणार नाही. जे आहे ते नीट सांगा. आणि खरं सांगा. तुमच्याकडे राज्यस्तरीय आहे त्याचा दाखला आणा.

**चंद्रकांत वैती :-**

आयुक्त साहेब, सभागृहाचे असे मत झालेले आहे की, श्री. परब साहेब व्यवस्थित उत्तर देवू शकत नाही. आपणच उत्तर दिले तर चांगले होईल. सभागृहाच्या माहितीसाठी सांगू इच्छितो की, १२ जून १९८५ पूर्वी ह्या परिसरामध्ये नवघर ग्रुप ग्रामपंचायत, भाईदर पश्चिम ग्रामपंचायत, काशी ग्रामपंचायत, मिरा ग्रामपंचायत, घोडबंदर ग्रामपंचायत अशा ग्रामपंचायतींचे विलीनीकरण करून १२ जून, १९८५ ला नगरपालिकेची स्थापना झाली होती. त्यानंतर २८ फेब्रुवारी २००२ ला महानगरपालिकेची स्थापना झाली आणि महाराष्ट्रातल्या २२ महानगरपालिकांपैकी एक महानगरपालिका म्हणून मिरा भाईदर महानगरपालिका झाली. त्यावेळी १२ जून १९८५ रोजी आस्थापनेचा खर्च मात्र ७८८८८८ होता आणि २८ फेब्रुवारी २००२ ला महानगरपालिकेची स्थापना झाली आणि नविन प्रशासकीय ठरावप्रमाणे जेव्हा आपण आकृतीबंध शासनाच्या मंजूरीसाठी पाठवला त्यावेळेला आस्थापनेचा खर्च हा फक्त १८८८८८ होता आज हा खर्च साधारणपणे ४५८८८८ च्या आसपास गेलेला आहे. या शहरातील जकात ठेकापद्धतीने वसूल होते. सफाई कर्मचारी ठेकापद्धतीने काम करतात. सुरक्षा रक्षक ठेका पद्धतीने येतात. म्हणजे जर लोकांच्या पैशातून जर १००० रु. कोणाकडून हाउस टॅक्स घेत असू तर त्यातला ४५ रुपये हे आपल्या आस्थापनेवर खर्च करणार आहेत. आस्थापनेच्या खर्चामध्ये समाविष्ट होतो तो कर्मचाऱ्यांचा पगार, आपण जी दालन वापरतो, आपण ज्या गाड्या वापरतो, ए.सी.लावतो तो ह्याच्यातून खर्च होत असतो तरी आपला खर्च वारंवार वाढत चाललेला आहे आणि आजच्या सभेमध्ये ह्याच्यापुढे देखिल आपल्याकडे अजून खर्चवाढ कशी होणार आहे याबाबत निवेदन आहे. माहितीच्या अधिकाराची माहिती घेतली होती त्या माहितीप्रमाणे माझ्याकडे जी माहिती उपलब्ध आहे, सरळसेवा भरती पदोन्नतीचा खर्च प्रतिमाह ५७,०१,९३०/- रु. होता आणि आपण सरळसेवा भरती केली त्यानंतर पदोन्नतीचा खर्च पकडला तर प्रति माह हा खर्च एकदम डबल झाला १,०८,३०,७४४/- रु. एवढा खर्च झाल्यानंतर आपल्याकडे सफाई कर्मचारी हे ठेकापद्धतीने काम करत आहेत. जकात नाक्याचे काम ठेकापद्धतीने चालू आहे. आपल्याकडे संगणकचालक ठेकापद्धतीने आहेत. आपल्याकडे सुरक्षा रक्षक ठेका पद्धतीने आहेत. म्हणजे प्रशासन आस्थापनेत एकूण किती खर्च करत असतो आणि त्याच्यामध्ये आपण सर्वांना फार मोकळीक दिली आहे. वाहन देखिल पुरवलेले आहेत. पुढे अजून काही वाहन पुरवण्याचे, भ्रमणध्वनी पुरवायचे आहे म्हणजे प्रशासन शहराच्या एकूण विकासामध्ये किती खर्च करत असतो? लोकांकडून आपण पैसे घेतो. ह्या शहरामध्ये माझ्या माहितीप्रमाणे साधारणपणे ४९ करोड रुपये आपल्याला हाउस टॅक्सच्या माध्यमातून येत असतात. ७० करोडच्या वर जकातच्या माध्यमातून येते. आपण ही जकात कुठून आणलेली नाही. आपणाला राज्य शासनाकडून येत नाही. आपल्या येथे जे लोक राहतात. व्यापार करतात त्यांच्याकडून आपण जकात वसूल करतो. पाणीपट्टी वसूल करतो. मग लोकांना काय देतो? फक्त येथे कर्मचाऱ्यांची संख्या वाढवायची. किती कर्मचारी इमानेइतबारे काम करतात. एक टपरी मागायला गेला की, कर्मचारी सांगतो, मला पाच हजार रुपये खर्च येणार आहे. हाउस टॅक्स लावायला गेल्यानंतर

आमचा अनुभव वाईट आहे. आमच्या सारख्या काही लोकांकडे ही मागणी केली जात नाही पण सर्व सामान्य नागरिक गेले की हाउस टॅक्स लावायची मागणी केली जाते अशी नाव सांगितल्यानंतर आपण कार्यवाही करणार आहात का ते सांगा. आम्ही तुम्हांला नावाची लिस्ट देतो आणि आपण कार्यवाही करून दाखवा. म्हणजे महापालिकेच्या कारभारामध्ये अमुक कर्मचाऱ्यांची अशाप्रकारे एवढी दादागिरी चालू आहे की, हाउस टॅक्स लावण्यासाठी देखिल पैसे लागतात. कधीपासून चालला आहे असा न्याय कमिशनर साहेब आपल्याला विनंती केलेली आहे, आतापर्यंत आपण आल्यानंतर किती बढत्या घेतल्या. आस्थापनेचा खर्च किती वाढला हे आपण सभागृहासमोर आणले पाहिजे.

**मा. महापौर :-**

सन्मा. चंद्रकांत वैती साहेब, आपण आज हॉस्पिटलसाठी स्टाफ पॅटर्न करणार आहोत त्यासाठी नक्की खर्च वाढणार आहे आपण मंजूरी दिली तर....

**चंद्रकांत वैती :-**

मा. आयुक्त साहेबांकडून खुलासा व्हायचा आहे. प्रशासनाचे प्रमुख आहेत त्यांच्याकडे खुलासा मागितलेला आहे त्यांना खुलासा करू द्या.

**मा. महापौर :-**

प्रशासन खुलासा करतील आणि ह्याचा ही खुलासा द्यावा की १२ ऑगस्टला निवडणुक झाली व ११ ऑगस्टला काय खर्च होता आणि ह्या ११ ऑगस्ट महिन्यापासून आजपर्यंत किती झाला त्याची माहिती द्या. महापालिका स्थापन झाली त्यावेळी हा खर्च कोणी वाढवला व कसा वाढविला ते दिसून येईल.

**मा. आयुक्त :-**

सन्मा. सदस्यांनी आस्थापनेच्या बाबतीमध्ये जो काही प्रश्न उपस्थित केलेला आहे. त्याबाबतीमध्ये सभागृहाला मी सांगु इच्छितो की, नगरपालिकेची स्थापना जेव्हा झाली. तेव्हा आस्थापनेच्या खर्च, त्याच्यानंतर महापालिकेची स्थापना झाली. तेव्हा आस्थापनेचा खर्च याबाबतीमध्ये मी संबंधित विभागाकडून माहिती मागवून आपल्याला टक्केवारीची माहिती देईन. आपण जे मगाशी म्हणालात की, सन्मा. सदस्यांनी एक प्रश्न विचारलेला होता की, ज्या नियुक्त्या केलेल्या आहेत त्या नियुक्त्यांच्या बाबतीमध्ये सभागृहाला माहिती द्यावी. सन्मा. सदस्यांना मी सांगु इच्छितो की, दोन दिवसापूर्वी मुलाखती घेण्यात आल्या होत्या. ज्युनिअर इंजिनिअरच्या मुलाखाती घेण्यात आल्या होत्या. त्यांच्या नियुक्त्या अद्यापर्यंत झालेल्या नाहीत. त्याच्यावर काहीही निर्णय झालेला नाही. १७० सफाई कामगारांच्या बाबतीमध्ये सन्मा. सदस्यांनी जो मुद्दा उपस्थित केलेला आहे त्याबाबतीमध्ये मी सांगु इच्छितो की, आस्थापनेवर जे काही ठराव यापूर्वी सभागृहामध्ये झालेले आहेत त्या ठरावप्रमाणे आकृतीबंध मंजूर केलेला होता. त्याच्यापैकी जी पदे रिक्त होती त्याच्या जाहिराती मागवल्या होत्या. जाहिराती रुपाने अर्ज मागवलेले होते आणि ते अर्ज आपल्याजवळ अकरा ते साडे अकरा हजार अर्ज प्राप्त झालेले आहेत. त्याच्यामध्ये त्या सर्वांच्या मुलाखती घेतल्यानंतर त्यांची शारिरीकक्षमता तपासण्यासाठी आपल्या शहरामध्ये संबंधित ज्या शाळा आहेत त्या शाळांमध्ये काही पी.टी.चे शिक्षक आहेत त्यांना आपण ह्याच्यामध्ये इनवॉल केलेले आहे आणि त्यांना सुध्दा आपण याटिकाणी उमेदवाराची शारिरीक क्षमता तपासण्यासाठी कार्यवाही सुरु आहे. अद्यापर्यंत १७० ची भरती आपण केलेली नाही. आस्थापनेवरचा जो काही खर्च आहे ते पूर्वीच्या नगरपालिकेमध्ये किंवा महानगरपालिकेची स्थापना झाल्यानंतर खर्च वाढला असेल. मी ते नाकारत नाही. परंतु, जसजशी आपल्या शहराच्या ज्या काही वेगवेगळ्या प्रकारच्या नागरी सुविधा लोकांपर्यंत पोहचविण्याचा प्रयत्न करतो, त्या पोहचविण्यासाठी आपल्याला ज्या यंत्रणेची कर्मचाऱ्यांच्या रुपाने गरज असते ती गरज भागवायला लागणार आहे. जे काही नविन नविन प्रकल्प येतात तेही आपल्याला मंजूर करायचे असतात. शासनाच्या धोरणाप्रमाणे काही टिकाणी, काही विभागामध्ये कंत्राट पध्दतीने ही सेवा दिलेली आहे. आपण ऑक्टाय सुध्दा खाजगी करणामधून घेतलेले आहे. सुरक्षा रक्षकही खाजगी करणातून घेतलेले आहे. मगाशी सांगितले त्याप्रमाणे संगणक चालकांच्या बाबतीमध्ये आस्थापना विभागाने जो काही खुलासा केलेला आहे की, ह्या नियुक्तीच्या बाबतीमध्ये सुप्रिम कोर्टाने गाईड लाईन्स दिलेल्या आहेत त्या गाईडलाईन्स प्रमाणेच आपण ही सर्व कार्यवाही करत आहोत. त्याच्यामध्ये कुठल्याही पध्दतीने आपण कोणाला फेवर करतोय अशातला काही भाग नाही. जे काही शासन निर्देश असतील त्या शासनाच्या आदेशाप्रमाणे आणि सुप्रिम कोर्टाच्या गाईड लाईन्सप्रमाणे अशाप्रकारच्या नियुक्त्या आपण करणार आहोत. संगणक चालकांची खाजगी करणातूनच भरती करणार आहोत. त्याची सहा महिन्यात मुदत संपणार आहे. ती मुदत संपण्यापूर्वी आपल्याला संगणक चालक उपलब्ध करणे आवश्यक आहे. म्हणून आपण त्याच्या जाहिराती दिलेल्या आहेत. जाहिराती ज्या वर्तमानपत्रामध्ये प्रसिध्द झाल्या आहेत आणि वर्तमानपत्राची जी काही रुढी, परंपरा आहे, जे संकेत आहेत त्या संकेताप्रमाणेच आपण त्या वर्तमानपत्रामध्ये जाहिराती देत असतो. त्याच्यामध्ये काही स्थानिक वृत्तपत्र असतील, काही शासनमान्य, राज्यस्तरीय वर्तमानपत्र असतील. आपण जे काही रोटेशन ठरवून दिलेले आहे त्या रोटेशनप्रमाणेच या जाहिराती दिल्या जातात. सन्मा. नगरसेवक चंद्रकांत वैती साहेबांनी जो मुद्दा उपस्थित केलेला त्या खर्चाच्या बाबतीमध्ये मगाशी मी सांगितले त्याची आकडेवारी घेउन माहिती देईन.

**चंद्रकांत वैती :-**

साहेब, आपण आणखीन एक खुलासा करा की, वृत्तपत्राचे रोटेशन कसे ठरले आहे आणि आपण सांगितले की, जे शासनाचे निर्णय असतील किंवा सुप्रीम कोर्टाचा निर्णय असेल, पण नोकऱ्यांच्या बाबतीत सुप्रीम कोर्टाचा निर्णय नाही. आपण सभागृहात काहीच्या काही थापा मारू नका. असे का सांगता?

**मा. आयुक्त :-**

सन्मा. सदस्य, आपणाला सभागृहात बोलण्याचा पूर्ण अधिकार आहे. परंतु, अधिकाऱ्यांच्या बाबतीमध्ये जे काही वक्तव्य कराल ते जसे आम्ही आदरार्थी बोलतो तसे आपण ही आदरार्थी बोला.

**चंद्रकांत वैती :-**

सुप्रीम कोर्टाचा आदेश कुठे आहे ते आपण आम्हाला सांगा ना. महाराष्ट्र शासनाचा जी.आर. काय आहे हे मी आपणाला वाचून दाखवितो. महाराष्ट्र राज्यातील महापालिकांचे वर्गीकरण त्या आधारे महानगरपालिका सेवांची तीन सेवेत विभागणी करून ३८ अधिकाऱ्यांच्या पदांसाठी आकृतीबंध निश्चित करणेबाबत असा जी.आर. आहे आणि हा जी.आर. शासन निर्णय क्र. संकिर्ण १००५/वर्गीकरण/प्र.क्र.३७९/२००५/नवि-२४, मंत्रालय, मुंबई. दि. ४ मे २००६-०७ चा जी.आर. आहे. ह्याच्यामध्ये काय लिहिलेले आहे ते आपण वाचा ना. आपण सुप्रीम कोर्टाचे काय सांगता? सुप्रीम कोर्टाच्या निर्देशाने कधी नोकऱ्या लागतात का? घनकचऱ्यासाठी सुप्रीम कोर्टाचा निर्देश महापालिकेला आहे. घनकचरा प्रकल्प २००२. तुम्ही तो सांगा. महाराष्ट्र शासनाने निवडणूकांसाठी निवडणूक अधिनियम २००७ तयार केला आहे. असे सांगा पण, जी.आर. च्या बाबतीत आपण काहीतरी चुकीची माहिती देवू नका आणि ह्या जी.आर.मध्ये स्पष्टपणे लिहिले आहे की, महानगरपालिका विकास कामासाठी पुरेसा निधी उपलब्ध होणे आवश्यक आहे. त्यासाठी त्यांच्या आस्थापना खर्चावर नियंत्रण देखिल राहणे गरजेचे आहे. महापालिकांचे वर्गीकरण व ३८ अधिकारी संवर्ग पदांचे आकृतीबंध निश्चित करताना महापालिका आस्थापना खर्चावर नियंत्रण मिळवण्यासाठी जास्तीत जास्त ३५ टक्के एवढा खर्च मर्यादा ठेवण्यात येत आहे. आस्थापना खर्चामध्ये वेतन, निवृत्ती वेतन, कार्यालयीन खर्च, वाहन, इंधन, स्टेशनरी, बैठकांवरील खर्च दुरुस्ती, महापालिकांतील आउट सोर्सिंगमार्फत होणारी कामे यासाठी महापालिकेस येणारा खर्च याचा देखिल समावेश राहिल. आस्थापना खर्च ३० टक्के पेक्षा अधिक झाल्यास महानगरपालिकेने अत्यावश्यक असेल अशी परिस्थिती वगळता नविन पद निर्मितीचे प्रस्ताव मजुरीकरिता शासनाकडे पाठविले आहेत. हा जी.आर. आहे. आपण किती पदे घेतली? पद घ्यायला आपण कुठेही, कसलीही परवा करत नाही आणि लोकप्रतिनिधींनी सांगितले की, आमच्या शहरात ग्रॅज्युएट मुले आहेत त्यांनी सांगितले की, आमची सफाई काम करण्याची तयारी आहे. आम्ही गटारावर काम करायला तयार आहोत. सर्व नगरसेवकांनी आपल्याकडे एक-एकदा नाहीतर १०-१० वेळा चकरा मारल्या आणि जेव्हा या विषयात तत्कालीन विरोधी पक्षनेते श्री. परशुराम पाटील साहेब यांनी उपोषणाचे हत्यार वापरले व उपोषणाला बाहेर बसले तेव्हा आपण ही जाहिरात स्थानिक वृत्तपत्रामध्ये प्रसिध्द केली. ११ हजार उमेदवारांनी त्याच्यासाठी अर्ज केले. याचा अर्थ या शहरामध्ये बेकारांची संख्या किती आहे हे बघा आणि आपण लक्षद्विप व सुरजप्रकाशमध्ये जाहिरात करता. पेपरांवर आमचा काही आरोप नाही. आपल्यावर आरोप आहे. ही माहिती सामान्य जनतेला कळू नये ह्याचा आपण जाणीवपूर्वक प्रयत्न केला आणि नगरभवनमध्ये त्या मुलाखाती घेतल्या. अशा मुलाखती वारेमाप चालू असतात. रोज चालू असतात. आपण आकृतीबंध मंजूर केलेला आहे. त्याचा अर्थ असा होत नाही हा जेवढा आकृतीबंध मंजूर आहोत. तसाच्या तसा आणून आपण येथे ठेवणार. या शहरामध्ये आस्थापनेवर कमी कर्मचारी काम करत होते तेव्हा येथे ७६ टक्के घरपट्टी वसूल झालेली आहे आणि आता आपण जाहिरातींवर एवढे पैसे खर्च केले. आपण लोकांना रिबेट दिले. तरी आपण ७६ टक्केचा फिगर गाठू शकलो नाही. ही चुक कोणाची? कर्मचारी घरोघरी जावून वसुली करत होते. आपण कर्मचाऱ्यांना बक्षिस म्हणून दिले तर ते दोन दोन तास एक्स्ट्रा काम करत होते. कर्मचारी येतात जातात. आपण पंचिंग मशिन आणलेली आहे. त्याचा उपयोग किती होतो? तेही माहित नाही. आपला कोणावर काहीही कंट्रोल नाही. हे काय चालले आहे? सभागृहाला वनखात्याबाबत माहिती देवू इच्छितो की, अडीचशेच्या वर कर्मचारी काम करतात. आपण किती कर्मचारी ठेवले आहेत? जकातीचे कर्मचारी, सुरक्षारक्षक, संगणक चालक, सफाई कर्मचारी, वनखात्यातील कर्मचारी हे सर्व जर धरले तर जो मंजूर आकृतीबंध आहे त्याच्यापेक्षा जास्त कर्मचारी होतील, असा माझा ठाम विश्वास आहे. आजच या सभागृहामध्ये विषय आणलेला आहे. तर आजच खुलासा झाला पाहिजे आणि या विषयामध्ये आपण स्पष्ट माहिती सभागृहाला दिली पाहिजे.

**मिलन पाटील :-**

आयुक्त साहेब, मी मागच्या टर्ममध्ये सुध्दा होतो. आपले मा. महासभेमध्ये असे ठरले होते की, जेवढे स्थानिक बेकार आहेत, ह्या लोकांना पहिले प्राधान्य द्यायचे आणि ते तुम्ही मान्य सुध्दा केलेले आहे. आता १७० च्या ज्या मुलाखती घेतल्या त्याच्यामध्ये स्थानिक लोक किती आहेत याची सुध्दा आपण माहिती घ्या.

**प्रभात पाटील :-**

मा. महापौर साहेब, आपल्या महापालिकेमध्ये, आपली मागची मा. महासभा दि. २०/६/२००६ ला आपण संगणकचालक व लघुलेखक भरले त्याच्यामध्ये आपले ७१ संगणक चालक व ४ लघुलेखक असे एकूण ७५ कर्मचारी भरले आणि हा मा. महासभेचा ठराव आहे. त्यांना मानधनावरच घेतले. आज आपली जाहिरात



निघाली ती ही मानधनावरच आहे आणि मानधनावरची जाहिरात असताना रोस्टर लावले गेले. त्यांना आपण आस्थापनेवर घेणार आहात? तुम्हाला यांना मानधनावर घेताना रोस्टर लावता येतं का?

**गोविंद परब (मा. अधीक्षक, सा.प्र.) :-**

येते.

**प्रभात पाटील :-**

घेता येते. असा कोणता नियम आहे तो मला वाचून दाखवा की, तुम्हाला मानधनावरच्या कर्मचाऱ्यांना रोस्टर लावता येतो.

**चंद्रकांत वैती :-**

सचिव साहेब, आपण हे करण्यापूर्वी एका कर्मचाऱ्याला पाठवा आणि आपली सर्व आकडेवारी तरी मागून घ्या. म्हणजे सभागृहात तेवढ्या वेळेत सर्व येऊ द्या.

**प्रभात पाटील :-**

मा. महापौर घेतांना आपण ७५ कर्मचारी घेतले होते आज तुमची जाहिरात ९० लोकांची निघाली आहे आणि ह्या ७५ लोकांनी दि. २०/६/२००६ पासून आपल्याकडे जे काम केले आहे त्याच्या आधीपासून आपल्याकडे काम करत आहेत. अगोदर ठेकापध्दतीने काम केले त्याच्यानंतर मानधनावर काम केले. आजची आपली जाहिरात ह्या लोकांचे समोउच्चाटन करणारी आहे. त्यांच्याकडून आपण इतकी वर्षे काम करून घेतले त्या लोकांना आपण कचऱ्यात फेकणार का बाजुला कचऱ्याच्या डब्यात टाकणार आहात त्यांच्यावर का अन्याय? ह्या लोकांची तुमच्या आस्थापनेवरच्या लोकांप्रमाणे काम केलेले आहे मी तुम्हाला विनंती करेन एकीकडे तुम्ही तुमच्या कर्मचाऱ्यांना सानुग्रह अनुदान देण्याचा विषय आणता. त्याचबरोबर दुसऱ्यांना लाथाड्या मारतात ही सभागृहाच्या कामकाजाची पध्दत नाही आणि असे सभागृह आम्ही कधीही चालू देणार नाही. कारण या सभागृहाने नेहमीच कर्मचाऱ्यांच्या हिताच्या गोष्टी केलेल्या आहेत. मग तो कर्मचारी मानधनावरचा असो तरी आम्ही त्याच्या हिताची गोष्ट केलेली आहे. सफाई कामगार असेल तर आम्हांला त्याला सानुग्रह अनुदान देण लागत नाही. परंतु, त्या ठेकेदाराला घेऊन त्याच्याशी चर्चा करून आम्ही ठेकेदारातर्फे त्याला सानुग्रह अनुदान दिलेले आहे. तेव्हा ज्या कर्मचाऱ्यांने या महापालिकेमध्ये काम केलेले आहे. तेव्हा ज्या कर्मचाऱ्यांने या महापालिकेमध्ये काम केलेले आहे त्या कर्मचाऱ्यावर कोणत्याही प्रकारचा अन्याय होऊ नये अशी मी मा. महापौर साहेब तुम्हाला विनंती करेन आणि संपूर्णपणे ह्या जाहिरातीला स्थगिती द्या. व जे कर्मचारी आहेत. ते ३,९०० रु मध्ये काम करत आहेत. शेवटच्या क्षणापर्यंत या महापालिकेमध्ये काम करत असतात. त्या कर्मचाऱ्यांना तुम्ही माणुसकीचा ओलावा म्हणुन ही जाहिरात रद्द करा व आपण मानधनावरच घेणार आहात ना तर त्यांनाच कंटिन्यु करा असा मी ठराव मांडत आहे.

**प्रेमनाथ पाटील :-**

माझे अनुमोदन आहे.

**शानु गोहिल :-**

माझे अनुमोदन आहे.

**एस. ए. खान :-**

मानधनावर घेणार आहात. त्याबाबत आरक्षणाची प्रोव्हिजन काय आहे ते आपण दाखवा.

**प्रेमनाथ पाटील :-**

जी जाहिरात काढली आहे ती रद्द करा.

**नयना म्हात्रे :-**

मा. महापौर साहेब, ही जी जाहिरात काढली आहे ती कोणी आयुक्तांनी सांगितले होते की, श्री. परब नी स्वतःच्या मनाने केले? कारण श्री. परबला ही घाण सवय आहे. कोणावर अन्याय करायचा आहे ते शिकायचे असेल तर श्री. परब कडून शिकावे.

**सुरेश बनसोडे (मा. मुख्य लेखापरिक्षक) :-**

सन्मा. महासभेला सर्व प्रथम अभिवादन करतो. तसेच मा. महापौर साहेबांच्या परवानगीने बोलतो. सन्मा. सदस्या प्रभात पाटील मॅडमनी जो मुद्दा उपस्थित केला त्याबद्दल बोलतो. शासनाचे परिपत्रक सामान्य प्रशासन विभाग क्र बी.सी.सी - १०७० - इ.सी.आर ७ (ए) दि. २९ एप्रिल ७९, ६२ आणि ७३ या तिन्ही परिपत्रकांमध्ये ज्यांच्या नियुक्त्या तीन महिन्यापेक्षा जास्त कालावधीच्या असतात आणि त्या जरी त्यांना आरक्षण असतील तात्पुरत्या स्वरूपाच्या आणि त्या तरी त्यांना आरक्षण लावण्याचा येथे स्पष्ट जी.आर आहे आपण ते कधीही बघू शकतो सर्वोच्च न्यायालयाबद्दल सांगतो. मा. सर्वोच्च न्यायालयाने तात्पुरत्या अस्थायी नियुक्त्या नियमित न करणेबद्दल निर्देश दिलेले आहेत. त्या निर्णयाचा क्रमांक ही आपल्याकडे उपलब्ध आहे ते आपल्याला बघण्यासाठी कधीही उपलब्ध होतील त्यामध्ये रेग्युलेशन कॅन नॉट मी मेड ऑफ रिक्रूटमेंट बा इन स्टॅट असा त्यात स्पष्ट उल्लेख केलेला आहे. त्यामुळे ह्या नियुक्त्या आपल्या सलगपणे करणे शक्य नव्हते आणि जरी आपला मुद्दा होता स्थायी .....

**प्रभात पाटील :-**

माझी एक शंका आहे. एस.टी., एन. टी., एस.सी. च्या जागा आपण रोस्टरप्रमाणे घेणार तुम्हांला त्यांना तीन महिन्यांनंतर कमी करता येईल.

**सुरेश बनसोडे (मा. मुख्य लेखापरिक्षक) :-**

आपण जो मुद्दा मांडला.

**प्रभात पाटील :-**

म्हणजे ते कर्मचारी कायम झाले ना.

**सुरेश बनसोडे (मा. मुख्य लेखापरिक्षक) :-**

नाही तसे कमी करता येणार नाही. जर एकदा सहा महिन्याकरिता नियुक्ती झाली तर...

**प्रभात पाटील :-**

आपण फक्त माझ्या प्रश्नाचे उत्तर द्या की, त्या लोकांना तुम्ही तीन महिन्यांनंतर कमी करणार.

**सुरेश बनसोडे (मा. मुख्य लेखापरिक्षक) :-**

मी पहिल्यांदा तुमच्या पहिल्या प्रश्नाचे खंडन करतो. ह्या जरी तात्पुरत्या स्वरूपाच्या नियुक्त्या असतील तरी त्यांना रोस्टर लावण्याकरिता शासनाने बंधनकारक केले आहे.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

आपण नियुक्त्या म्हणता.

**सुरेश बनसोडे (मा. मुख्य लेखापरिक्षक) :-**

तात्पुरत्या स्वरूपाची मानधनावरच्या नेमणुका.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

एक ऑनोरियम देवून आपली अपॉईटमेंट होउ शकते का? वॉट इज अ डेफिनेशन ऑफ ऑनोरियम तुम्ही मानधन देत आहात. एखादा नगरसेवक सोडून तिसरा माणूस जर तुमच्या पालिकेच्या दालनात जावून मदत करतो तर तुम्ही त्याला मानधन देणार. पालिकेच्या हद्दीमध्ये एखादा मुलगा बुडत असताना त्याला तुम्ही बाहेर काढले, त्याला तुम्ही मानधन देणार. क्रिडाक्षेत्रामध्ये एखादया व्यक्तीने चांगली कामगिरी केली तर त्याला आपण मानधन देणार. ऑनोरियम इज अबाउट वॉट जी.आर. यू मस्ट स्पेसिफाय वॉट काइन्ड ऑफ अ अपॉईटमेंट इज? त्या अपॉईटमेंट ऑनोरियम च्या होउ शकत नाही.

**सुरेश बनसोडे (मा. मुख्य लेखापरिक्षक) :-**

तात्पुरत्या किंवा अस्थायी.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

तात्पुरत्या किंवा अस्थायी आणि तुम्ही जाहिरात दिलेली आहे ती मानधनावर हा जी.आर. त्याठिकाणी लागू होतो हे बरोबर आहे का, ते तुम्ही सांगा.

**सुरेश बनसोडे (मा. मुख्य लेखापरिक्षक) :-**

ज्याप्रकारचे काम या संगणकचालकाकडून महापालिका घेणार आहे त्याबद्दल त्यांना आर्थिक वेतन किंवा मोबदला दयावा लागतो आणि त्या मोबदल्याला आपण मानधन हा शब्द वापरलेला आहे. कारण ह्याच्यामध्ये रु. ३,९००/- हे ठोक वेतन त्यांना देत आहोत. म्हणून हॉनेरियम त्याच्याकडून घेत असलेल्या सेवेच्या बदल्यात त्याला दिलेले वेतन याला आपण मानधन म्हणतोय.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

हॉनेरियम याचा अर्थ वेगळा होता. हॉनेरियम इज नॉट अ सॅलेरी. इट इज नॉट अ वेजेस. हॉनेरियम हॅज नथिंग टू डू विथ अ इम्प्लॉयमेंट. इट नॉट अ रेग्यूलर इम्प्लॉयी ऑर ही नॉट अ टेम्पररी इम्प्लॉयी. स्थायी किंवा अस्थायी कर्मचाऱ्याला पगार दयायचे निश्चित केले किंवा सॅलेरी दयायचे निश्चित, वेजेस दयायचे निश्चित केले तर तो स्थायी, अस्थायी कर्मचाऱ्याच्या व्याख्येत येउन तुमचा हा जी.आर. त्याठिकाणी अप्लीकेबल होतो. मग ते तीन महिन्याचे असू दे किंवा सहा महिन्याचे असू दे किंवा नउ महिन्याचे किंवा वर्षभराची असू दे. अँज यू स्पेसिफाय दीज आर गोईंग टू बी द हॉनेरियम अपॉईटमेंट तर त्या मानधनावर अपॉईटमेंट आहे. असे आपण म्हणता तेव्हा त्या रेग्यूलर अपॉईटमेंट होउ शकत नाही. इररेग्यूलर अपॉईटमेंट होउ शकत नाही, टेम्पररी अपॉईटमेंट होउ शकत नाही. त्यामुळे तुमचा जी.आर. अप्लीकेबल होउ शकत नाही. म्हणून रोस्टर लागू केल्यानंतर एस.सी. आणि एस.टी. ची पद एकदा भरली तर इज देअर अॅनी लॉ, यू कॅन रिमूव्ह दीज पीपल, स्पेसिफाय, हाउ कॅन अलॉ दिज टाईप ऑफ अँडव्हटाईजमेंट? वॉट बेसिस? तुम्ही सांगा एस.सी. आणि एस.टी. च्या लोकांना घेतल्यानंतर काढू शकू.

**सुरेश बनसोडे (मा. मुख्य लेखापरिक्षक) :-**

नियुक्ती पत्र देताना आपण त्यामध्ये क्लिअर केलेले असते की आपली नियुक्ती सहा महिन्यापर्यंत असेल.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

एस.सी. आणि एस.टी. ला तुमची नियुक्ती पत्र चालत नाही. यू कॅन नॉट हॅव दी इंटरव्ह्यू ऑल दोज पीपल अल्सो. तुम्हांला ही प्रोव्हीजन माहित आहे का? एस.सी. आणि एन.टी. चा उमेदवार आला तर त्याला इंटरव्ह्यू लागत नाही. हे तुम्हांला माहित आहे का?

**सुरेश बनसोडे (मा. मुख्य लेखापरिक्षक) :-**

आपले हे म्हणणे चुकीचे आहे.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

आपण एक लक्षात घ्या की, एस.सी., एस.टी. च्या कर्मचाऱ्यांना इंटरव्ह्यू इज अ ओनली प्रोसिजर इज नॉट अ कम्पलेशन. एस.टी. चा कॅन्डीडेट आला त्याचे क्वालिफिकेशन आहे त्याला घ्यायलाच लागतो. तुम्ही त्याला रिमूव्ह करू शकता का, ते मला सांगा. तुम्हांला मी अजून डिटेलमध्ये सांगतो. एस.सी ची जागा एक आहे आणि पाच लोक आले आहेत तर तुम्ही त्यांचे मेरिट ठरवू शकता आणि एक एस.टी. ची जागा आहे आणि एक उमेदवार आला तर यू हॅव टू अपॉईटमेंट. यू कॅन नॉट निगलेक्ट.

**सुरेश बनसोडे (मा. मुख्य लेखापरिक्षक) :-**

आपण आरक्षणाबद्दल मुद्दे मांडत आहात.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

तुम्ही वडाची साल पिंपळाला लावता ना. तुम्हांला मानधनावरच्या जागा भरायच्या आहेत देन व्हॉय यू स्पेसिफाय दॅट देअर शूड बी ओनली रिझर्व्हेशन अप्लीकेबल फॉर दी पोस्ट ऑफ दे आर नॉट टेम्पररी ऑर परमन्ट कार्ड ऑफ पोस्ट म्हणजे तुम्हांला त्या लोकांना बाजूला करायचे आहे हा तुमचा स्पष्ट हेतु आहे. यू हॅव एवरी थिंग रेडी विथ यू. तुमच्याकडे सगळी मशिनरी तयार आहे. आपल्या या लोकांनाच घ्यायचे आहे. त्यांच्याशी आगाउ अॅडव्हान्समध्ये सेटिंग करायचा जर तुमचा विचार असेल किंवा त्यांना घ्यायचा विचार असेल, म्हणून ह्यांना तुम्हांला काढायचे. जेव्हा ऑनरियम पोस्टमध्ये एस.सी. आणि एस.टी. चा प्रस्ताव असणारी जाहिरात प्रसिद्ध करण्याचा तुम्हांला अधिकारच काय होता? यू मस्ट स्टेप आउट. डोन्ट गिव्ह अॅनी एक्सप्लीनेशन.

**चंद्रकांत वैती :-**

ज्या जागा आहेत. जे कार्यरत आहेत. त्यांनी तीन वर्ष महापालिकेत कामकाज केलेले आहे. महापालिकेच्या कामकाजाचे त्यांना अनुभव आहे. त्या लोकांना बाजूला करायचे आणि नविन लोक आणण्यासाठी हा घाट घातलेला आहे. मी पुन्हा सांगतो ऐकून घ्या. आपण किती नियुक्त्या केलेल्या आहेत? शासनाचा जी.आर. आपल्याला वाचून दाखवला मी लिहिलेले नाही. त्या जी.आर.प्रमाणे आपल्याला ३५ टक्के च्यावर आस्थापनेवर खर्च करता येणार नाही. तेवढी श्रीमंत आपली महापालिका नाही आणि आपण याबाबत कर्मचाऱ्यांच्या नियुक्त्या करतात. जे कर्मचारी आणि अधिकारी आहेत. ते किती काम करतात? हे आता स्पष्ट झाले. आपल्याकडे अजून आपण फिगर देवू शकलो नाही की आपल्याकडे आस्थापनेवर किती लोक काम करतात? हे किती खर्च करतो? हे अगदी सभा सुरु झाल्यापासून मी सांगतोय. अजूनपर्यंत एकाही अधिकाऱ्यांना हालचाल केलेली दिसत नाही. याचा खुलासा प्रथम व्हावा. पहिला खुलासा करावा की, आस्थापनेवर किती खर्च करतो आपण? किती कर्मचारी आहेत? याची टक्केवारी काय आहे? याचा खुलासा आपण प्रथम करावा.

**प्रभात पाटील :-**

त्याचा खुलासा होईलच. परंतु, कोणत्याही हालतमध्ये या नियुक्त्या होत्या कामा नये. असा देखील ठराव येथे झालेला आहे. कोणत्याही पद्धतीमध्ये ह्या जाहिरातीप्रमाणे मुलाखती झाल्या आणि उमेदवारांनी तुम्ही घ्यायचा प्रयत्न केला तर आम्ही कोणत्याही पद्धतीचे येथे त्यांना सहकार्य करणार नाही. ठराव महानगरपालिका होवू देणार नाही. जे कर्मचारी आहेत. तेच कर्मचारी यापुढे देखील संगणक चालक म्हणून त्या पदांवर कामावर राहतील. मी ठराव मांडलेला आहे आणि त्याला अनुमोदन पण झालेले आहे.

**एस. ए. खान :-**

ते तीन वर्षापासून काम करतात. आणि ते सर्व स्थानिक आहेत. त्यांना तुम्ही काढण्याचा प्रयत्न करता.

**गोविंद परब (सा. प्र. अधिक्षक) :-**

त्यांना काढायचा प्रश्न येत नाही.

**एस. ए. खान :-**

ते स्थानिक आहेत त्यांना तुम्ही काढायचा प्रयत्न करता अनुभव असलेले उमेदवार पाहिजे मग असे कशाला?

**गोविंद परब (सा. प्र. अधिक्षक) :-**

शासनाचे जे जी.आर. आहे आणि साहेब, आता बोलले की, मानधनावर तर रोजंदारीवर टेम्पररी भरती कराल त्याला अनुशेष भरण्याबाबत शासनाचे निर्देश आहेत.

**चंद्रकांत वैती :-**

तुम्हांला हे अॅड करायची गरज नव्हती ना.

**गोविंद परब (सा. प्र. अधीक्षक) :-**

मानधनाचे कुठेही नियमात नाही की, मानधनावर अनुशेष लागू नाही. अनुशेष मागासवर्गीयांची भरती करायची असेल तर सर्वाना तो लागू होता.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

तुम्हांला फाशी दयायचे हे माहित आहे.

**गोविंद परब (सा. प्र. अधीक्षक) :-**

नविन किंवा जुने असा आपला गैरसमज झालेला आहे की, कोणाला तरी भरती करायचे आहे. हे चुकीचे आहे.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

आपण मा. महासभेपुढे बोलत आहात त्यामुळे शिस्तीने बोला. डोन्ट क्रॉस मी.

**गोविंद परब (सा. प्र. अधीक्षक) :-**

आय एम सॉरी, सर.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

डोन्ट क्रॉस मी, यु विल बी वेरी सिन्सीअर. डिसीप्लीन ने बोला. मी काही तुमच्यावर उलटेपालटे आरोप केले नाही. मी बोलत असताना आपण मध्ये बोलू नका. तुम्ही इतकी अरेरावी करता. यु आर सो वलगर. मा. महासभेपुढे बोलत आहात. तुम्ही काय म्हणालात, असे नियमात नाही की, मानधनावर अनुशेष लावावे. जे नियमात नसते ते करायचे असते का? की, जे नियमात असते ते करायचे असते. मानधनावरच्या पोस्ट भरायला नियमात जर अनुशेष लावायचा असेल तर जरूर लावा. मानधनाच्या पोस्ट भरायच्या आहेत आणि ते नियमात नाही म्हणून त्याला अनुशेष लागू होतो असे काही एकतर्फी डिक्लेअर करायला तुम्ही राष्ट्रपती आहात का? आणि या सभागृहापुढे तावातावाने बोलत आहात. जेव्हा लोकप्रतिनिधी बोलतात तेव्हा त्यांच्याशी असे बोला. मला वाटत नाही आपण इतर लोकांशी चांगले बोलत असाल. यांची ट्रान्सफर करा असा ही मी ठराव मांडतो.

**याकुब कुरेशी :-**

या ठरावाला माझे अनुमोदन आहे.

**प्रकरण क्र. :-**

श्री. गोविंद परब, सहा. आयुक्त आस्थापना विभाग यांनी मा. महासभेमध्ये नियमबाह्य, खोटे निवेदन केले व उध्दटपणे वागून गैरवर्तन केल्यामुळे त्यांची आस्थापना विभागातून त्वरीत बदली करणेबाबत.

**ठराव क्र. ९ब :-**

मिरा भाईंदर महानगरपालिका आस्थापनेवर मानधनावर पदे भरण्याकरिता मनपा/आस्था/१८८५/४५६/०७-०८ दिनांक २२/१०/२००७ अन्वये जाहिर नोटीस प्रसिध्द केली आहे. त्यामध्ये मानधनावरील पदे आरक्षणातून भरण्यासाठी प्रस्तावित केले आहे.

मानधनावरील पदे भरण्याकरिता आरक्षण लागू करावे असे कोणसाठी नियमात नसताना आज दि. १/११/२००७ रोजीच्या सभागृहात या विषयावर झालेल्या चर्चेत आस्थापनेवरील श्री. गोविंद परब यांनी मध्येच येउन सदर विषया संदर्भात खोटी माहिती दिली. तसेच सदस्यांनी विचारलेल्या प्रश्नांना उध्दट उत्तरे दिली त्यांचे सदर जाहिर नोटीस मधील भरतीबाबत केलेले खोटे, नियमबाह्य निवेदन व उध्दटपणे वागणे, गैरवर्तन करणे, त्यांच्याकडे असलेल्या खात्याचा कार्यभार योग्यरितीने न सांभाळणे या कारणास्तव त्यांची आस्थापना विभागातून त्वरीत बदली करण्यात यावी असा मी ठराव मांडत आहे.

सुचक :- श्री. प्रफुल्ल पाटील.

अनुमोदक :- श्री. याकुब कुरेशी.

ठराव सर्वानुमते मंजूर.

सही/-

महापौर

मिरा भाईंदर महानगरपालिका

**अनिल सावंत :-**

मागच्या मा. महासभेने निर्णय घेतला की, ७५ लोकांची भरती करावी त्या ७५ लोकांनी तुमच्याकडे तीन वर्ष काम केले. ते तुमच्याकडे कामात कुठे कमी पडत आहेत का, ज्यामुळे तुम्ही नविन भरती करत आहात. ७५ लोकांना भरती करण्याचा निर्णय जेव्हा मा. महासभेने घेतला ते लोकप्रतिनिधी होते. साडे आठ लाख वस्तीचे त्यांना लोकप्रतिनिधी होते. साडे आठ लाख वस्तीचे लोक त्यांना लोकप्रतिनिधी पकडत होते. मग त्या लोकांना काढता तरी त्यावेळी तुम्ही विचारात घेतले का? आणि १५ उमेदवार एक्स्ट्रा लावत आहात. त्यावेळी सुद्धा आपण मा. महासभेला विचारात घेतले का? याचा खुलासा करावा.

**नयना म्हात्रे :-**

मा. महापौर साहेब, श्री. परब साहेब आपल्या सभागृहात किती हुशारीने बोलत आहात ते बघा. आपल्या करदात्यांशी ते कसे बोलत असतील त्याचा विचार करा.

**मा. महापौर :-**

संपूर्ण सभागृहाची भावना अशी आहे की, आपल्याकडे सध्या संगणकचालक म्हणून काम करत आहेत त्यांना आपण कामावर एक्सटेन्शन द्यावे व नियमाप्रमाणे परत नियुक्त करावे. ३१ डिसेंबरपर्यंत पिरिएड आहे. तर नियमाप्रमाणे आपल्याला जाहिरात देवून त्याची इंटरव्यू घेउन नेमणुक करता येईल. तरी आपण याबद्दल कुठल्या पेपरमध्ये जाहिरात दिली. तर प्रत्येक पक्षाच्या गटनेत्यांनी उपस्थित राहून..

**प्रफुल्ल पाटील :-**

स्थायी समितीने ऑलरेडी त्यांच्या मुदतवाढीचा ठराव पारित केलेला आहे. ते त्यांनी आपल्यासमोर रेकॉर्डवर का आणले नाही?

**शानु गोहिल :-**

मा. महापौर साहेब, दि. ५/६/२००७ चा ठराव आहे.

**मा. महापौर :-**

म्हणजे ३१ डिसेंबरपर्यंत त्यांची मुदत आहे.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

होय आणि ३१ डिसेंबरच्या अगोदर आपण एक सभा घेणारच आहात ना

**चंद्रकांत वैती :-**

स्थायी समितीचा ठराव तर आहे. त्या विषयात आपल्याला निर्णय घ्यायचा आहे. आमचा ठराव झालेला आहे. त्या कर्मचाऱ्यांच्या संदर्भातला ठराव आपल्याकडे दिलेला आहे. माझी मागणी आहे की, आस्थापनेचा खर्च, आस्थापनेवरील एकूण कर्मचारी, आकृतीबंध याची माहिती सभागृहासमोर आजच पाहिजे आणि दुसरा विषय असा काढला होता की, कर्मचारी काम करताना पगारा व्यतिरिक्त ज्याचे काम आहे. त्याच्याकडून मोबदला मागतात त्या विषयात आपण काय करणार आहोत. या विषयात देखिल कमिशनरसाहेबांनी आपली भूमिका स्पष्ट करायची आहे.

**गोविंद परब (सा. प्र. अधीक्षक) :-**

मा. महापौर साहेबांच्या परवानगीने बोलतो की, सध्या महापालिकेच्या आस्थापनेवर पंधराशे दोन कर्मचारी काम करून ४२ टक्के त्यांचा खर्च होत आहे.

**चंद्रकांत वैती :-**

शासनाचा जी.आर. काय आहे? ३५ टक्केच्या वर जायचे नाही आणि आता ४२ टक्के होत आहे आणि अजून आपण कितीतरी कर्मचारी घेणार आहात. म्हणजे महाराष्ट्रामध्ये २२ महापालिकांपैकी सोलापूर महानगरपालिका अशी आहे की, जिथे आस्थापनेचा खर्च ५५ टक्के आहे तर तिथे जो बजेट, जे उत्पन्नाचे स्रोत त्यांच्याकडे असेल त्याच्यापैकी ५५ टक्के खर्च कर्मचाऱ्यांच्या वेतनावर आणि सोयीसुविधांवर खर्च होतो आणि ज्यांच्याकडून टॅक्स वसूल करतो, पाणीपट्टी वसूल करतो त्यांच्यासाठी ४५ टक्के देतो अशी पद्धत म्हणजे महाराष्ट्रामध्ये आपली दुसरी महानगरपालिका करायची आहे की पहिली करायची आहे. त्याच्यासाठी आपण प्रयत्न करतो असे मला दिसते. कशासाठी, हे कर्मचारी आपण भरती करतो ते मला कळत नाही आणि आतापर्यंतचा इतिहास आहे, सभागृहाला मी ही माहिती करून देत आहे की, आपण आतापर्यंत जेवढे कर्मचारी ठेका पद्धतीने घेतले त्या प्रत्येकाला आपण स्थायी कर्मचारी म्हणून घेत आहोत. मग त्यांना परमनन्त केले तर अधिकाऱ्यांनी दायित्व काय दिले? महापालिकेचा किती फायदा करून दिला. महापालिकेमध्ये किती चांगले काम केले? टॅक्स डिपार्टमेंटला असतील त्यांनी टॅक्स डिपार्टमेंटमध्ये किती चांगल्याप्रकारे वसूली केली, किती सल्लागार आहेत आणि किती चांगले सल्ले दिले? कितीतरी कर्मचारी आपण असे घेतले? आपला नेमका हेतू काय आणि अजून आपल्याला भरती करायचीच आहे म्हणजे या शहराला पूर्णपणे मातीमोल करूनच जायचे असे सगळ्यांनी ठरविले आहे का? या शहरामध्ये आम्ही राहणार आहोत. या महापालिकेत काम करणारे अधिकारी या शहरात राहत नाही. काही स्थानिक अधिकारी आहेत. बाकी बरेचसे अधिकारी बाहेर राहतात. आपण येथे कामासाठी आलेले आहात. कर्तव्यावर आलेले आहात. आपण आपले काम कराल आणि निघून जाल व या शहरामध्ये जो काही त्रास होईल तो लोकप्रतिनिधी व जनता हे स्लॉव्ह करण्यासाठी भांडत बसतील आणि आपण निघून जाल. पुन्हा या शहरामध्ये मागे वळूनही पाहणार नाही. माझ्याकडे ३५ टक्के च्या जी.आर.ची कॉपी आहे. पाहिजे असल्यास दाखवितो.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

आपण मान्य करता का, की आता पुन्हा अॅरोगन्डली बोलला तो जी.आर. आपण मान्य करता की मानत नाही की जे तुमच्या कामाचे आहेत तेच मानता.

**जुबेर इनामदार :-**

आस्थापना प्रमुख कमी करा म्हणजे अजून एक वॅकेन्सी कमी होते.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

मा. महापौर साहेब, सभागृहात नियुक्ती विषयी विषय चालू आहे. मिरा भाईंदर महानगरपालिकेच्या नागरिकांना मी धन्यवाद देतो की खरोखर आपला भाईंदर विकासाकडे चालला आहे. कारण सभागृहामध्ये आता जी संख्या आहे. जे मुद्दे १० वर्षापूर्वी, ५ वर्षापूर्वी या सभागृहात आले पाहिजे ते येत नव्हते. आता यायला लागले. ते आता कोणीही आणू दे. मागे ते सत्ताधारी होते आणि आता विरोधी आहेत. पण हे भाईंदर शहरासाठी चांगला पायंडा पडलेला आहे. चांगला शगून आहे. त्याच्याबद्दल आम्ही सर्व नागरिकांचे या मिरा भाईंदर महानगरपालिकेच्या वतीने या नागरिकांचे अभिनंदन करतो.

**चंद्रकांत वैती :-**

याच्यात तारीफ करण्याची गरज नाही. विषयाला बगल देवू नका. आपण आस्थापनेवरची १४८७ फिगर सांगितली आहे ही फिगर खोटी आहे. वेरीफाय करा.

**गोविंद परब (मा. अधीक्षक सा.प्र.) :-**

साहेब १५०२ बोललो.

**चंद्रकांत वैती :-**

तुम्ही सांगा. काय करायचे आणि आस्थापनेवरच्या खर्चामध्ये आपण काय काय पकडतो. मी जी.आर. वाचून दाखवला आहे. परत एकदा वाचून दाखवू की तुमच्या माहितीसाठी पाठवू.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

वर्तमानपत्राचा सूरजप्रकाश, लक्षव्दीपचा विषय निघाला. माझ्या माहितीप्रमाणे या सभागृहामध्ये श्री. बनसोडे साहेबांनी पत्रकारांवर आक्षेप घेतला होता की या पत्रकामध्ये जाहिरात देवू नये. या सभागृहात विषय झाला. त्यावेळेही या सभागृहाचे नेते हेच होते जे आज बोलतात त्यावेळी कोणी सुरजप्रकाश किंवा वर्तमानपत्रामध्ये जाहिरात देवू नये असा विषय काढला नव्हता. आज सुरजप्रकाश असो किंवा कोणीही असो, आज शहरात वर्तमानपत्र दहा वर्षापासून मा. महासभेची अधिसूचना त्या वर्तमानपत्रामध्ये येते आणि आज सुरजप्रकाश असे झाले की, ते वर्तमानपत्र फक्त महापालिकेमध्ये फिरतोय. म्हणून आयुक्त साहेब, यानंतर कुठकुठल्या वर्तमानपत्रामध्ये कशा पद्धतीने जाहिरात दयावी याचा ही पायंडा या मा. महासभेत होऊ द्या. या सभागृहात आधीही ठराव मांडले. ठराव मांडायचा किंवा नाही. ठराव असो किंवा नसो किंवा तो मांडण्याचा हक्क आहे किंवा नाही. तीन ठराव झाले. ते ठराव आहेत की नाही त्याचाही पायंडा व्यवस्थित पडला तर बरे होईल आणि नियुक्त्यांच्या विषयामध्ये.....

**चंद्रकांत वैती :-**

आयुक्त साहेब, आमचा विषय चालला आहे की आस्थापनेवरचा खर्च किती ते सांगितलेले नाही.

**मा. महापौर :-**

सन्मा. नगरसेवक त्यांना बोलू द्या नंतर आपण बोला.

**मिलन पाटील :-**

एक नगरसेवक बोलत असताना सन्मा. नगरसेवकाला जाण पाहिजे की, एक नगरसेवक बोलत असताना आपण कसे बोलायचे.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

मा. महापौर साहेब, म्हणून माझा आग्रह आहे की, अनेक विषय शहराच्या दृष्टीने महत्त्वाचे आहेत. आयुक्त साहेबांनी त्यावेळी आम्हांलाही असे उत्तर दिले की, माझ्या केबिनमध्ये या तुम्हांला सविस्तर माहिती देतो म्हणून या आस्थापनेवर जो खर्च होणार आहे तो खर्च का वाढला? जी.आर.च्या अतिरिक्त का वाढला का वाढू नये. वाढायला पाहिजे का नाही. याचा खुलासा येथे वेळ न घालवता सन्मा. नगरसेवकांना केबिनमध्ये बोलावून त्यांना त्याचे उत्तर दयावे किंवा पुढचा मा. महासभेत दयावे असे सांगावे व त्या विषयाला गती येईल. नाहीतर, सर्व विषय असेच पेन्डींग राहतील. म्हणून आयुक्त साहेब जसे तुमचे पहिले परिपाटी होती की, केबिनमध्ये या साहेबांनी आस्थापनेवरचा खर्च मागितला त्याला तुम्ही दया. आमचे मत नाही असे नाही. आस्थापनेवरचा खर्च शासन जी.आर.पेक्षा जास्त जायला नको असे आमचे सर्वांचे मत आहे. म्हणून याच्यावर जास्त वेळ न घालवता, मा. महापौर साहेब पुढच्या प्रश्नाला सुरुवात करा आणि त्यांना आयुक्त साहेब केबिनमध्ये उत्तर देतील अशी माझी अपेक्षा आहे.

**मिलन पाटील :-**

मा. महापौर साहेब, याच सभागृहाने मागच्या टर्ममध्ये शांती स्टार बिल्डरची जी भरती केली. माझे पत्र सुद्धा आहे. प्रशासनाला तसे माझे पत्र दिलेले आहे. त्याचे उत्तर अजून मला दिलेले नाही का? मागच्या वेळेला त्या ठरावाच्या ऐवजी जे ठराव केला होता. शांतीस्टार बिल्डरच्यावरती, पाणीपुरवठ्याच्या बाबतीत त्या ठरावाला आम्ही सुद्धा मान्यता दिलेली आहे नाही अशातला भाग नाही. आम्ही सुद्धा त्या सभागृहात होतो. तेव्हा आम्ही मान्यता दिलेली आहे. परंतु शांतीस्टार बिल्डरकडे किती लोक होते? त्याची कुवत आहे का? एकूण ७० लोक भरण्याची तो एकूण ७० लोक पाळत होता का? एवढे तो पाणी पुरवठा करत होता का? एकूण ७० माणसे त्याच्याकडे कधी होती? आणि ती कधी भरली गेली? याच्याबद्दलही खुलासा करावा. याचा

खुलासा झाला पाहिजे. आणि ती एकूण ७० माणसे कशी आली? कुठून आली?शांतीस्तर बिल्डरकडे पहिले ७० माणसे कामाला होती का? ठराव आम्ही दिलेला आहे. परंतु, त्याला सुद्धा कलाटणी मिळालेली आहे.

**प्रभात पाटील :-**

मा. महापौर साहेब, जाहिरात दिलेली आहे. त्या संदर्भामध्ये ७५ कर्मचारी दि. २०/६/२००६ ला भरली. त्याच्यातली दोन महिन्यापूर्वी आठ लोकांना अतिरिक्त होतात म्हणून काढून टाकली आणि आज आपण ९० घेत आहोत. ती अतिरिक्त होत होती आणि आज आपण ९० घेतोय.

**चंद्रकांत वैती :-**

जे काढले आहेत त्यांना ही समाविष्ट करून घ्या.

**गोविंद परब (सा.प्र.अधिक्षक) :-**

अतिरिक्त होते म्हणून काढले नाहितर त्यांची अपॉईटमेंट करताना कागदपत्र अपूर्ण होती व नेमणुक केली होती. ह्याच्यावर ऑब्जेक्शन आले म्हणून त्यांना काढण्यात आले.

**चंद्रकांत वैती :-**

त्याला जबाबदार कोण? ती नेमणुक कोणी केली त्याच्यावर कारवाई करा. ही चुक कोणाची आहे? जर अधिकारी आणि कर्मचारी सक्षम नसतील तर त्यांना सुचना, विनंती आहे की, आपण आपल्या कामकाजामध्ये सुधार करा. आयुक्त साहेब, आपले निवेदन व्हायचे अजून बाकी आहे की, आस्थापनेवर आपण किती खर्च करत आहोत आणि असे कर्मचारी जे वरून पैसे मागतात. जे अधिकारी त्याची मागणी करतात त्याच्यावर काय करणार आहात तेही सांगावे.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

मा. महापौर साहेब, महत्वाचे विषय आहेत. ताबडतोब त्या विषयाला आयुक्त साहेब उत्तर द्या. त्यांना केबिनमध्ये बोलवा, विषय संपवा आणि पुढचे विषय घ्या.

**जुबेर इनामदार :-**

विषय मा. महासभेमध्येच आणा, केबिनमध्ये नाही.

**एस. ए. खान :-**

ही सभा केबिनमध्ये बोलावण्यासाठी लावली आहे का?

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

अशी माहिती मागवली तेव्हा प्रशासन केबिनमध्ये बोलावून उत्तर देत होते. आधीपण देत होते. आस्थापनेवरच्या खर्चाचा जी.आर. मिळालेला आहे.

**चंद्रकांत म्हात्रे :-**

विषय संपलेला नाही.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

आयुक्त साहेब, आपण केबिनमध्ये बोलावण्याची प्रथा मोडू नका. जो विषय मा. महासभेत नाही त्या विषयाचे उत्तर तुमच्या केबिनमध्ये द्या. येथे वेळ कशाला घालवता? मा. महापौर साहेब, पुढचा विषय घ्या.

**एस. ए. खान :-**

सन्मा. सदस्य ओमप्रकाशजी अग्रवाल तुम्ही महापौर झाले का? तुम्ही सांगणार केबिनमध्ये जा. असे बोलणारे तुम्ही कोण आहात?

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

असे उत्तर आम्हांलाही अगोदर मिळत होते.

**मा. महापौर :-**

आस्थापनेवरचा खर्च ४२ टक्क्यापर्यंत गेलेला आहे. हे मागची बॉडी ज्यावेळेला होती त्यावेळी हा खर्च वाढलेला आहे. आपण पूर्ण सभागृहाने सहकार्य केले तर हा खर्च नक्की ३५ टक्क्यापर्यंत शंभर टक्के आपू असे मी तुम्हांला आश्वासन देतो.

**चंद्रकांत वैती :-**

काहीतरी सांगू नका. आश्वासन देवू नका. कुणाला काढणार आहात ते सांगा. आस्थापनेवरचा खर्च कमी करण्यासाठी आपण कोणाला काढणार? गाड्या कमी करणार आहात की, तुमच्या लोकांची ए.सी. कमी करणार आहे ते सांगा.

**मा. महापौर :-**

हा खर्च मागच्या बॉडीमध्ये वाढला होता. मागच्या बॉडीने जे जे निर्णय घेतले त्याच्यामध्ये आस्थापनेचा खर्च वाढलेला आहे आणि नविन बॉडीने त्याच्यामध्ये कमी कसे करता येईल व ३५ टक्क्यावर कसे आणता येईल याच्याकरिता आपण निर्णय घेऊ या. तसेच, पेपरमध्ये जाहिरात दिलेली आहे ते राज्यस्तरीय पेपर असतील व नियमाप्रमाणे बरोबर असतील व योग्यरित्या आपण केले असेल तर पुढची कार्यवाही करा व यावर निर्णय घ्या. ज्या कोणाला याच्या व्यतिरिक्त माहिती पाहिजे त्यांनी ती माहिती आयुक्तांकडून घ्यावी.

**मिलन म्हात्रे :-**

मा. महापौर साहेब, आपल्या परवानगीने बोलत आहे. बऱ्याच वेळेपासून आस्थापनेचा खर्च कर्मचाऱ्यांच्या पंचिंग मशिनचा खर्च आहे या सगळ्यांवर किंवा पंचिंग मशिनवर होणारी कारवाई याच्यावर खर्च झाला.

**मा. महापौर :-**

सन्मा. सदस्य कुठला विषय कुठे चालला आहे.

**मिलन म्हात्रे :-**

गेल्या दिड महिन्यामध्ये महापालिकेचे उपायुक्त अनेक दौऱ्यांवर गेले. कोण प्लेन, ट्रेनने गेले, कोण घोडागाडीने गेले ते आम्हांला काय माहित नाही. पण ट्रेनिंगला जावून आल्यानंतर नंतरच्या मिटींगमध्ये उपायुक्तांनी सभागृहामध्ये हजेरी लावली. सभाशास्त्राच्या नियमानुसार एखादा अधिकारी, एखादया प्रयोजनाकरिता बाहेर गेला, खासकरून प्रशिक्षण ह्याचा जो खर्च होतो, आस्थापनेवरचा त्यांचा पगार जाण्यायेण्याचा खर्च, राहण्याचा खर्च ही आमची महापालिका उचलत असते. याठिकाणच्या नागरिकांचे भले व्हावे म्हणून अशा अधिकाऱ्यांना ट्रेनिंगला पाठवले जाते हे प्रयोजन आहे. पण हे अधिकारी कुठले ट्रेनिंग घेउन आले किंवा आम्ही कुठच्या विषयाकरिता तज्ञ बनायला गेलो होतो किंवा आम्हांला कोणत्या विषयावर प्रशिक्षण दिले गेले हे आम्ही आतापर्यंत बघितलेले नाही. माझ्या माहितीनुसार जे उपआयुक्त गेलेले आहेत त्यांची प्रशासनातल्या बऱ्याचशा अधिकाऱ्यांना आणि आम्हांला कल्पना नाही. जे उपायुक्त प्रशिक्षणाला गेले होते. श्री. संभाजी पानपट्टे साहेब व श्री. बालाजी खतगांवकर (मु.) साहेब, पुणे यशदा येथे गेले होते. त्यांनी तिथे कोणता कोर्स केला? जनहिताच्या दृष्टीकोनातून किंवा महापालिकेच्या आर्थिक बचावाकरिता, आर्थिक परिस्थिती चांगली करण्याकरिता, कुठल्या प्रोजेक्टकरिता त्यांनी त्याच्यावर प्रशिक्षण घेतले आम्हांला येथे सभागृहात माहिती दिली नाही. नियम असा आहे की, त्या अधिकाऱ्याने उठून सांगायला पाहिजे की, मी १० दिवस सुट्टीवर होतो. पण या दिवसामध्ये मी अमुक अमुक ठिकाणचे असे असे प्रशिक्षण घेउन आलेलो आहोत ते प्रशिक्षण ह्याप्रकारचे आहे. याची माहिती कृपया त्यांनी सभागृहाला दयायला पाहिजे होती. आज आपल्या येथील उपायुक्त परत गेलेले आहेत. भाईंदर शहरामध्ये कुत्री मोकटाट फिरत आहेत. मोकटाट जनावरे लोकांना दिवसाढवळ्या मारत आहेत. कोंडवाडे रिकामे आहेत आणि आपले उपायुक्त, श्री. पानपट्टे साहेब हे सिंगापूरला गेले आहेत. आपल्या इथला आस्थापनेवरचा अधिकारी ते जितके दिवस गेले तितके दिवस सगळी कामे पेन्डींग राहणार आहेत. दिवाळीचा मौसम आहे आणि उपायुक्त (मु.) श्री. खतगांवकर साहेब हेही निघून गेले आहेत. अतिक्रमण तुटत आहेत. अधिकारी कमी आहेत. दिवाळी जवळ आली आहे. आपल्याला हे शहर स्वच्छ ठेवायचे आहे. या शहरामध्ये काही दुर्घटना घडू नये अशी ईश्वरचरणी प्रार्थना. पण यदाकदाचित काय घडले तर आज फायर ब्रिगेडचा चार्ज ज्या अधिकाऱ्याकडे आहे तो अधिकारी दिवाळीच्या ऐन सणामध्ये सिंगापूरला आहे. याचे स्पष्टीकरण आपल्याला सभागृहात कोणी दिले का?

**मिलन पाटील :-**

मा. महापौर साहेब, उपायुक्त दर्जाचे अधिकारी आहेत त्यांच्याबाबतीत सभागृहामध्ये तुम्ही अशी समज द्या की, सौजन्याची भाषा वापरली पाहिजे. ते अधिकारी आहेत, झाडूवाले नाही. ते कुठे गेले असू दे त्याबाबत विचारण्याचा अधिकार आहे. परंतु, सौजन्याची भाषा वापरली पाहिजे.

**मा. महापौर :-**

यापुढे कुठलाही अधिकारी ट्रेनिंगला जाईल त्यावेळी सभागृहाला आल्यानंतर काय ट्रेनिंग घेतली त्याची पूर्ण रिपोर्ट माहिती आयुक्त साहेब आपण द्यावी.

**मिलन म्हात्रे :-**

मा. महापौर साहेब, आपण निर्णय दिला त्याबद्दल मी आपला आभारी आहे. आपल्याकडे खाली पंचिंग मशिन लागली आहे. या राज्याचा मुख्य सचिव आहे. नियमानुसार मुख्य सचिव मंत्रालयात प्रवेश केल्यानंतर पंचिंग मशिनजवळ जावून स्वतःची हजेरी लावतात. नियमानुसार त्यांच्या गळ्यामध्ये जे ओळखपत्र असते ते प्रत्येक सेक्रेटरीच्या गळ्यामध्ये असते. जे सेक्रेटरी आयुक्तांची नियुक्ती करता ते नगरविकासचे प्रधान सचिव त्यांच्या गळ्यामध्ये ही ओळखपत्र असते. ते आम्ही बघतो. आज आपल्या येथे अधिकाऱ्यांना स्वतःची हजेरी लावायला शरम वाटते. ओळखपत्र गळ्यात घालण्याची शरम वाटते आणि शिपाईपासून सर्वांकरिता प्रस्ताव आलेला आहे. या प्यून लोकांना टोपी ड्रेस आहे. आपल्या समोर जे प्यून उभे आहेत. त्याच्यात एकाची खाकी पॅन्ट आहे व दोघांच्या काळ्या पॅन्टी आहेत. आज उल्हास नगरच्या महापालिकेमध्ये जेवढ्या प्यून महिला आहेत त्यांना निळीशार अशी व्यवस्थित साडी आहे. पुरुषांना टोपी, शर्ट-पॅन्ट एकाच रंगाचा आहे. आज तुम्ही प्रत्येकाला अनुदान द्या. सानुग्रह अनुदान द्या असे सर्व नगरसेवक बोलतील. गेल्या सभेत मी होतो. पण शिस्तीला कोण बोलतो का? कोणी बोलत नाही. रडतात, आपसात बोलतात मी गेलो माझे काम झाले नाही. अधिकाऱ्याने अमुक अमुक केले. अधिकाऱ्यांनी उत्तर दिले नाही. आज आपण प्रत्येक अधिकाऱ्याला मोबाईल दिले आहेत. साडे सहा लाखावर महिन्यांचा खर्च होतो. रिलाईन्सचा मोबाईल फ्री असूनसुद्धा अधिकारी मोबाईल बंद ठेवतात. आमच्या नगरसेवकांची ही गत आहे तर नागरिकांचे काय? अॅम्ब्यूलन्सला बाहेरून लॅन्ड लाईन नंबर नाही. कुठल्याही क्षेत्रामध्ये राहत असलेल्या माणसाला अॅम्ब्यूलन्सकरिता संपर्क करता येत नाही.



ही परिस्थिती आहे. तुम्हांला मी सांगून २५ दिवस झाले. ह्याच्यात कुठलीही इम्प्रुव्हमेंट नाही. मागच्या बाजूला जेवढे अधिकारी बसत आहेत, या शहरामध्ये मोठमोठे डक तुटले आहेत. एखादा माणूस मोटरबाईक वरून डबल सीट चाललो आहे त्यांचे ॲक्सीडेंट होउन दोघंही मरु शकतात. मोठमोठे खड्डे आहेत. आपले सिटी इंजिनिअर बाहेर फिरतात का, तर नाही. अतिक्रमण तोडतात आहेत तिथे अतिक्रमण तोडणाऱ्यांकडे ड्रेस नाही. अधिकारी फिरतात त्यांच्या गळ्यामध्ये ओळखपत्र नाही. उदया मारहाण झाली. दगडफेक झाली तर कोण ओळखणार की, तो माणूस अधिकारी आहे की, तिथला कोणीतरी व्यापारी आहे. या गोष्टीला उहापोह करा. उगीच वायफळ बडबड करण्यांत अर्थ नाही आणि ज्या लोकांनी अधिकाऱ्यांपासून पंचिंग मशिनचा वापर केलेला नाही. त्यांच्यावर काय ॲक्शन घेता ते येथे सांगा. त्यावर आपण पाच लाख रुपये खर्च केलेला आहे. धन्यवाद.

#### नयना म्हात्रे :-

साहेबांनी आता सांगितले की, गळ्यामध्ये ओळखपत्र नाही व महापालिकेने दिलेला गणवेश घालत नाही. खरोखरच इमारतीमध्ये ए.सी.ची हवा खाउन ते सगळे माजले आहेत. दिवाळी जाऊ दया. सगळ्यांना दुसऱ्या ठिकाणी जाऊ दे आणि बाकीचे सगळे कर्मचारी आपल्या मिरा भाईदरच्या इमारतीमध्ये येऊ दे. सगळ्यांच्या बदल्या करा.

#### चंद्रकांत वैती :-

मा. महापौर साहेब, आतापर्यंत जे निवेदन झाले त्याच्यामध्ये मी जी माहिती मागतोय ती माहिती उपलब्ध झालेली नाही. चर्चेचे गुराळ झालं. निर्णय काहीही निघाला नाही. पुन्हा अधिकारी मोकळे हा निर्णय तुम्ही आज देत नसाल तर कधी देणार आहे ते सांगा. दालनात मी कधीही जाऊ शकतो. पण निर्णय कधी देणार आहे ते सांगा. आस्थापनेवरचा खर्च कधी सांगणार आहात? किती कर्मचारी आहेत? आणि आपण जो ठराव केला. सन्मा. सदस्या प्रभात (ताई) पाटील यांनी ठराव मांडला की, जे कर्मचारी आहेत त्यांनाच घ्यायचे त्याच्यावर आपण काय कार्यवाही करणार आहात? अधिकाऱ्यांवर काय कार्यवाही करणार आहात? निर्देश काय देणार आहात. कर्तव्यात कसूर करणाऱ्यांवर काय कार्यवाही करणार आहात. या सगळ्याची माहिती मला नव्हे तर मी म्हणतो की, सर्व सदस्यांना आस्थापनेवरच्या खर्चाची आणि जेवढी पद भरलेली आहेत आणि आउट सोर्सींगचा जेवढा खर्च आहे. त्या सगळ्यांची माहिती सर्व सदस्यांना द्यावी. आमच्या मित्रपक्ष सदस्यांना नको असेल तर चालेल. पण आमच्या सदस्यांना मात्र नक्कीच द्या आणि त्यांना पाहिजे असेल द्या. त्याला काही हरकत नाही.

#### चंद्रकांत मोदी :-

मा. महापौर साहेब, कमिशनर साहेब, आपने सभी अधिकारीयोंको लाखों रुपयोंका खर्चा करके महानगरपालिका के तर्फे मोबाईल दिया है। लेकिन एक-एक घंटे तक आदमी रिडायल करते रहेगा और उनका मोबाईल लगता ही नहीं। सभी सदस्योंको मेरा विनंती है की, जो मोबाईल दिया है और वह अधिकारी फोन नहीं उठाता है तो उससे मोबाईल वापस लिया जाए। किसीका भी मोबाईल चलता नहीं, अगर किसीका नंबर लग गया तो हमारा नसीब। महानगरपालिकाने जो मोबाईल दिया है वह बंद ही रखते है।

#### मा. महापौर :-

सन्मा. सदस्य मिलन म्हात्रे, चंद्रकांत मोदीजी, सन्मा. सदस्या नयना म्हात्रे यांनी जो विषय मांडला त्याप्रमाणे सर्वांनी ओळखपत्राचा वापर करावा, पंचिंग मशिनचा हजेरीकरिता वापर करावा. असा आपण त्यांना आदेश जाहिर करावा व ज्या कर्मचाऱ्यांना आपण गणवेश दिलेला आहे त्यांना तो गणवेश नियमाप्रमाणे कम्लसरी करावे. तसेच, सन्मा. सदस्य चंद्रकांत वैती साहेब, आपल्याला परवा सकाळी आस्थापनेवरील रितसर सर्व माहिती शनिवारी ११.०० वा. माझ्या दालनात ज्या कोणत्या सदस्याला माहिती पाहिजे त्यांना उपस्थित राहून ती माहिती घ्यावी.

#### शरद पाटील :-

मा. महापौर साहेब, आपण सर्व विषयावर रुलिंग दिली त्याचबरोबर मोबाईलच्या विषयावर ही रुलिंग द्या. अधिकारांचे मोबाईल बंद असतात.

#### मा. महापौर :-

सभागृहाने निर्णय घ्यावा की मोबाईल बंद करावे.

#### शरद पाटील :-

त्यांच्याकडचा मोबाईल परत घेऊनच टाका.

#### मा. महापौर :-

सभागृहाला जर असे वाटत असेल तर येणाऱ्या महिन्यापासून मोबाईल बंद करू या आणि चालू ठेवायचे तर.

#### मिलन पाटील :-

साहेब मोबाईल पाहिजे. अधिकाऱ्यांना संपर्क करायचे असेल तर कसे करणार?

#### प्रभात पाटील :-

स्थायी समितीमध्ये हा विषय मागच्या वेळेला चर्चेला आला होता. आपल्या काही अधिकाऱ्यांनी, तो शब्द वापरू नये, पण असे मस्तवालपणे उत्तर दिले होते की, हा मोबाईल आमचा आहे. स्वखर्चाचा आहे.

आमचा पर्सनल आहे. त्या मोबाईलवर आपण फोन केल्यावर तो फोन आम्ही उचलावा तर का? आमच्या मोबाईलवरचा प्रत्येक फोन आम्ही उचलावाच का? असे त्यांचे उत्तर होते. यासाठी आपण त्यांना महापालिकेतर्फे मोबाईल दिले. जर त्यांचे स्वतःचे मोबाईल त्यांनी यापुढे कन्टीन्यू केले तर ते आपला फोन घेतीलच याची खात्री देता येणार नाही. म्हणून आपण महापालिकेतर्फे मोबाईल दिले.

**मा. महापौर :-**

साहेब, आपण जे मोबाईल दिले, त्याबद्दल आयुक्त साहेब, असे आहे की, आपण पहिल्यांदा टाईम नक्की करून घेऊ या. अधिकाऱ्यांना बऱ्याच वेळा नगरसेवक रात्री १२.०० वा. फोन करतात. जर काही आपात्कालिन असेल तर ठिक आहे.

**चंद्रकांत मोदी :-**

आपत्काल में रात १२.०० बजे या २.०० बजे भी फोन करना पडता है।

**मा. महापौर :-**

हर व्यक्ती को आस्थापनेवाले को भी आप रात १२.०० बजे फोन करे तो आप एक नियम बनालो की, किसने कितने बजे तक मोबाईल चालू रखना चाहिए। चौबीस तास चालू ठेवायचे का?

**चंद्रकांत म्हात्रे :-**

अत्यावश्यक ज्या बाबी आहेत. त्याकरिता आम्ही रात्री १२.०० वा. काय किंवा रात्री १.०० वा. ही फोन करू शकतो.

**मिलन म्हात्रे :-**

फायर बिग्रेड आहे. पाणी विभाग आहे.

**दिप्ती भट :-**

हम फोन करते हैं तो आपके अधिकारी फोन उठाते नहीं है। हमलोगोंको १०-१० बार फोन करना पडता है। हमलोगों का खर्चा उनसे डबल है।

**मा. महापौर :-**

आप डिस्मिशन ले लीजिए। कलसे मोबाईल दे देंगे।

**मिलन म्हात्रे :-**

ही अत्यावश्यक सेवा आहे.

**मा. महापौर :-**

आस्थापना खर्च कम करनेकी बात कर रहे हैं। एक बाजू मोबाईल की डिमांड कर रहे हैं।

**दिप्ती भट :-**

क्यों नहीं करेंगे। चार दिन से मैंने पाच बार श्री. जानकार को लाईट के लिए फोन किया।

**मा. महापौर :-**

उन्होंने फोन नहीं उठाया इसलिए आपको मोबाईल चाहिए क्या?

**दिप्ती भट :-**

मैं. उसके लिए नहीं बोल रही हूँ।

**मा. महापौर :-**

तो फिर आपको क्या चाहिए वह बोलिए।

**दिप्ती भट :-**

आप बोल रहे हैं की, रातके २.०० बजे कभी भी फोन मत करो, तो ऐसे चलता है क्या?

**मा. महापौर :-**

मैंने यह नहीं कहा की, रातको २.०० बजे फोन ना करो।

**निर्मला सावळे :-**

मा. महापौर साहेब, मिरा भाईंदर महानगरपालिकेच्या आस्थापनेवर वर्ग-१ पासून वर्ग-४ पर्यंत जे कर्मचारी काम करतात. ते पूर्ण शहरातील साडे आठ लक्ष लोकांनी सेवा करण्यासाठी भरलेले आहेत. कर्मचारी व अधिकारी वर्ग जो आहे तो स्वतःच्या कामासाठी भरला गेलेला नाही आणि नगरसेवक हे लोकशाही प्रतिनिधिक नेतृत्व करत असताना जनतेशी संपर्क असतो. त्यांना जनतेचे सतत फोन येत असतात आणि प्रश्न सोडवण्यासाठी ते अधिकाऱ्यांशी संपर्क करतात. ते स्वार्थासाठी किंवा पर्सनली कॉन्टेक्ट करून अधिकाऱ्यांना कधीही त्रास देत नाही. मग तो १२.०० वाजता फोन असो किंवा २.०० वाजता फोन असो. त्याचे गांभीर्य लक्षात घेऊनच आम्ही अधिकाऱ्यांना डिस्टर्ब करत असतो. आम्हांला अधिकाऱ्यांना रात्री २.०० वा., ३.०० वा. डिस्टर्ब करण्याकरिता कुठलाही आनंद होत नाही. तुम्हांला याही पुढे जावून सांगते की, दोन महिन्यापासून पाणी पुरवठ्यात भरपूर अडचणी आणि प्रॉब्लेम्स शहरामध्ये सुरु आहेत. दोन महिने झाले श्री. बारकुंड साहेबांचा माझ्या फोनवरून एकदाही फोन लागला नाही आणि आम्ही इतर फोनवरून सुद्धा ट्राय केले तरीही फोन लागला नाही. त्यांच्या ऑफीसमध्ये मॅसेज सोडले. इतर माणसे येउन भेटतात. तरीसुद्धा हा मॅसेज त्यांच्यामार्फत येउन पोहचत नाही. तुमचे अधिकारी कामामध्ये किती कमी पडतात त्याचे जिवंत उदाहरण या महापालिकेच्या मा. महासभेत द्यावे लागते असे अधिकारी कामावरून त्वरीत कमी करण्यांत यावे.

**मा. महापौर :-**

मॅडम, आपण जे बोललात, त्याकरिता टाईमिंग अशाकरिता सांगितले की, पुन्हा पुन्हा अशा चुका होता कामा नये.

**निर्मला सावळे :-**

जनतेच्या सेवेसाठी वाहून घ्या. तुम्हांला जर पेमेन्ट मिळतो ते तुमच्या पदाला नाही. जनतेची सेवा करतात, त्यांच्या टॅक्समधून तुम्हांला पेमेन्ट मिळतो. अधिकारी वर्ग, कर्मचारी वर्ग आहे त्यांना जो पगार भत्ता दिला जातो तो जनतेच्या सेवेसाठी दिला जातो आणि आपण या जनतेचे सेवक आहात. आम्ही लोकशाही प्रतिनिधी आहोत. तुम्ही अधिकारी वर्गातून जनतेची सेवा करता. तरही जनतेची सेवा करताना कुठलाही कसूर होता कामा नये. याचा जाब आणि आम्ही त्याच्यासाठी लोकशाही प्रतिनिधी व तुम्हांला धरून ते उत्तर आणि ती समस्याच्या सोडवू शकतो. त्यामुळे तुमचे व अधिकाऱ्यांचे ही तेवढेच सहकार्य आम्हांला अपेक्षित आहे आणि आम्ही त्याच्यापेक्षा वेगळी काही मागणी करत नाही. फोनवरून मॅसेज देवून ती समस्या लवकरात लवकर सोडविता यावी आणि जनतेचे समाधान व्हावे याकरिता आम्ही संपर्क करतो.

**मा. महापौर :-**

आयुक्त महोदय, यापुढे मोबाईल चालू रहावा.

**हेलन गोविंद :-**

मा. महापौर साहेब, सन्मा. सदस्य निर्मला सावळे मॅडमनी सांगितले की अधिकाऱ्यांच्या बाबतीमध्ये आम्ही गेली अडीच वर्षांमध्ये तेच सांगत होतो. आता नशिब येथे बसल्यावर त्यांना कळले. तुम्हांला मी विनंती करते की, खरोखर अधिकाऱ्यांवर, कर्मचाऱ्यांवर नियंत्रण असले पाहिजे. कारण आम्ही या ऑफीसमध्ये येतो तेव्हा एखादया कामासाठी संपूर्ण दिवस जातो. ह्या केबिनमध्ये गेलो तर अधिकारी नसतात, त्या केबिनमध्ये गेलो की अधिकारी नसतात आम्ही फोन करतो तर अधिकारी फोन उचलत नाही. मॅडम, तुम्ही येथे बसल्यावर तुम्हांला हे समजले. आम्ही तुम्हांला सतत सांगायचे की, अधिकारी आमचे काम करीत नाही. अधिकारी ऐकत नाही, फोन उचलत नाही. त्याचा अनुभव तुम्हांला आला ते बर झाले. मा. महापौर साहेब, तुम्हांला आम्ही सांगतो, तुम्ही लक्ष द्या.

**चंद्रकांत म्हात्रे :-**

मा. महापौर साहेब, मी आपल्या निदर्शनात आणू इच्छितो की प्रभागामध्ये जे साफसफाई कर्मचारी येतात त्यांची संख्या किती असते ते प्रत्येक नगरसेवकाला दिले पाहिजे.

**मा. महापौर :-**

तुम्हांला प्रत्येक डिपार्टमेंटची जी जी माहिती पाहिजे ती माहिती संबंधित खात्याकडून मिळेल.

**चंद्रकांत म्हात्रे :-**

त्याच्यामध्ये आम्ही केव्हा केव्हा मुकादमला विचारतो, तिथे साईड सुपरवायझर असतो, त्यावेळेला त्याला विचारणा करतो की, तो म्हणतो की इथल्या प्रभागात जी माणसं कामाला दिलेली आहेत त्याची संख्या १० आहे, १५ आहे ते सांगतो आणि त्यातलेच काही कामगार दुसऱ्या ठिकाणी फिरवले जातात आणि ठेकेदार व मुकादममध्ये मला वाटते की, दोघांची दिलजमाई आहे. कारण हा ठेकेदार जो माणसं पुरवतो ती माणसं पुर्ण नसून ती अपुरी असतात आणि मुकादम जो असतो त्याने तिथे संख्या वाढवून दाखवलेली असते की, इतकी माणसं पाठवली. पण वास्तव्यात बघण्यात आले आहे की, तिथे कामाला कोणीच माणसं नसतात आणि जी थोडीबहुत माणसं असतात ती गार्डनमध्ये झोपा काढत असतात. साडे अकरा वाजले की, त्यांचा लंच टाईम होता आणि लंच टाईमच्या वेळेत ते गार्डनमध्ये जाऊन झोपा काढत असतात. अशावेळेला आम्ही मुकादमला फोन केला असताना त्याचा फोन बंद असतो. मग आपण फोनवर एवढा खर्च करतोय, त्या साईड सुपरवायझरला मोबाईल देता त्याचा अर्थ काय? ज्यावेळेला सन्मा. नगरसेवक चंद्रकांत मोदी यांनी हा मुद्दा उपस्थित केला की आम्हांला गरज असते त्यावेळेला आम्ही त्यांना संपर्क साधण्यासाठी फोनवर लावतो त्यावेळी त्यांचा फोन बंद असतो. तर आपण प्रत्यक्षात आज मी पत्र ही दिलेले आहे की आपण प्रभागासाठी किती माणसं नियुक्त करता. किती मुकादम आहेत, महानगरपालिकेचा जो ठरलेला मुकादम आहे आणि एक ठेकेदार आहे तर त्यांनी आम्हांला किती माणसं आहेत त्याची नोंद दिली पाहिजे की, आज आपल्या प्रभागासाठी इतकी माणसं आहेत आणि एक रजिस्टर त्याला प्रोव्हाईड केले पाहिजे की, त्याच्यामध्ये किती माणसं आली आणि स्थानिक नगरसेवक त्याच्यावर स्वाक्षरी करेल की, आज इतकी माणसं आलेली आहेत आणि इतकी नाही. म्हणजे तुमच्या नजरेस ही माहिती पडेल की आपण किती माणसं पाठवता. मुकादम आणि ठेकेदार मिळून हे दोघेजण काहीतरी तफावत चालली आहे. आपल्या निर्दर्शनात आणू इच्छितो आपण याची खोल चौकशी करावी आणि जे साफसफाई कर्मचारी आहेत त्यांचा जो मुकादम आहे त्याला एक रजिस्टर द्यावे की किती माणसं प्रभागामध्ये आहेत. माझ्या प्रश्नाचे पहिल्यांदा उत्तर द्यावे.

**मा. महापौर :-**

तुम्ही एकावेळी पत्रास प्रश्न विचारले. मलाच माहित नाही की, नेमकं तुम्हांला काय पाहिजे. जी माहिती पाहिजे, जे उत्तर पाहिजे ते संबंधित खात्याकडून तुम्हांला लेखी मिळेल.

**चंद्रकांत म्हात्रे :-**

साहेब लेखी पत्र दिलेले आहे.

**मा. महापौर :-**

तुम्हांला लवकरात लवकर ती माहिती पुरविली जाईल.

**प्रशांत पालांडे :-**

मा. महापौर साहेब, भरपूर विषयांतर होत आहे. कृपया आपण सभेच्या कामकाजाला सुरुवात करावी.

**राजेंद्र जैन :-**

मा. महापौर साहेब, बात विषय से हटकर प्रशासन पर आ गयी है और प्रशासन पर अंकुश नहीं है यह बात माननी पड़ेगी। प्रशासन पर अंकुश के लिए पहिला प्रश्न है की, जो भी कोई समर जनता या नगरसेवक जब भी कोई लेटर देता है और रिसीव्हड लेता है तो उसकी क्या जिम्मेदारी बनती है की यह किसके लेटर को पहिले जवाब देंगे यह तय किजिए। जब कोई लेटर दिया गया कोई भी वॉर्ड में काम करनेके लिए तो इनका चार-चार महिने तक जवाब आता नहीं है। चार महिनेके बाद फॉलोअप करके कमिशनर से डेप्युटी कमिशनर लेकर सबको कॉपी देनी पडती है की इसका क्या किया। उसका जवाब नहीं आता है। एकही लेटर का जवाब कितने दिन में आयेगा उसकी जिम्मेदारी तय किजिए और वह नहीं करते है, उसकी सजा क्या होगी वह भी आप नक्की किजिए।

**चंद्रकांत वैती :-**

आपल्याला ही जाणीव झाली व हे नोंद घेण्यासारखे आहे. कमिशनर साहेब, आस्थापनेवर कर्मचाऱ्यांबद्दल चर्चा केली त्याची माहिती आपण लेखी देणार आहात. परंतु जे इंटरव्यू इंजिनियरचे झाले म्हणजे आस्थापनेवर आपण आणखिन वाढ करणार आहात त्या इंटरव्यू बदल आपण काय करणार आहात? त्यांना घेणार आहात की, नाही. या सभागृहाच्या भावना लक्षात घेउन माझ्यामते आपण त्यांना येथे नियुक्ती देण्याचा विचार केला असेल तर तोही जाहिर करावा.

**राजेंद्र जैन :-**

मेरा और एक सवाल है की, जब भी मिटींग होती है तो हमलोग चार से पाच बार प्रशासन से जाकर मिलते है। वह सब बात मिटींग बनकर रह जाती है ऑन रेकॉर्ड कुछ देते नहीं। अभी में सफाई और पानी के लिए बीस चक्करे काटी है। मुझे सिर्फ वरबल बोला गया कोई रिपोर्ट नहीं है। आश्वासन दिया की, दिवाळी में आपके यहा लाईन लग जाएगी। दिवाळी आनेवाली हो गयी। मैं किसको बोलू, मुझे बोला गया था की, दिवाळी तक हो जाएगा। मैं साहेब को बोला की मुझे रिटर्न में दिजिए तो रिटर्न में नहीं मिलता है। प्रशासन में लगाम नहीं आएगी जब तक हम अच्छा काम नहीं कर पाएंगे। नियम बनाईए की नगरसेवक या जनताने जवाब दिया तो उस जवाब का आश्वासन रिटर्न में आना चाहिए और उसका कॉलम होना चाहिए। अगर रिटर्न का जवाब नहीं दिया गया तो उसकी कुछ ना कुछ ना सजा होनी चाहिए।

**मिलन पाटील :-**

मा. महापौर साहेबांच्या परवानगीने बोलतो की, सन्मा. नगरसेवक चंद्रकांत म्हात्रे साहेबांनी सांगितले ती सत्य परिस्थिती आहे. ठेकेदाराकडे अमुक एक माणसं, अमुक एक प्रभागामध्ये दिलेली असतात. समजा, सुभाषचंद्र बोस मैदानावर १० कर्मचारी दिले आणि ते फिक्स कर्मचारी आहेत. आम्ही नेहमी नेहमी जातो तेव्हा त्यांना विचारतो की, इथले १० कर्मचारी कुठे गेले. तर सांगतात की, मिरारोडला पाठविले, राईला पाठविले आहे आणि असतात तिथे ५-१० असतात ते १० च्या १० जागेवर असतात की नाही. तो ठेकेदार भरतो की नाही. किंवा ५ माणसांचे काम करतो आणि १० माणसांचे पैसे घेतो. अशी परिस्थिती चालू आहे. तर जे ठेकेदार ती माणसं फिरवत असतील त्या ठेकेदाराला काही अधिकार नाही ती माणूस फिरवायची. शासनाकडून, आपल्याकडून कोणी उपायुक्त लेवलच्या दर्जाच्या माणसांना त्यांची ऑर्डर काढली पाहिजे की, मिरारोडला १० माणसं फिरवा की, ५ माणसं फिरवा. तो ठेकेदार सांगेल की माणसं फिरवली नाही पाहिजे. आयुक्त साहेब मी तुमच्या माहितीसाठी बोलतो की ही सत्य परिस्थिती आहे. अॅक्चुअलमध्ये तेवढी माणसं कामावर येत नाही आणि आमचे काम निघत नाही. त्याच्याने आम्ही मागणी करतो. आम्ही अगोदर मागणी करतो व ठेकेदार जेव्हा पथक घेतो तेव्हा आम्ही मागणी करतो की, आम्हांला या प्रभागामध्ये एवढी माणसं द्या. माणसं दयायला देतात परंतु, प्रत्यक्षात तेवढेजण काम करत नाही. याची दखल तुम्ही घ्या. माणसं फिरवताना पुन्हा ठेकेदाराने फिरवली नाही पाहिजेत. त्यांनी अधिकाऱ्यामार्फत ऑर्डर काढली पाहिजे की इथली १० माणसे मिरारोडला पाठवा किंवा ५ माणसे येथे फिरवा. माणसं ट्रान्सफर करतेवेळी आम्ही अधिकाऱ्यांची ऑर्डर विचारणार.

**एस. ए. खान :-**

आयुक्त साहेब, ही सत्य परिस्थिती आहे. भाईदरची माणसे मिरारोडला गेले तसेच, मिरारोडला सांगतात की मिरारोडची माणसं भाईदरला गेली आहेत. ही सत्य परिस्थिती आहे.

**शशिकांत भोईर :-**

मा. महापौर साहेब, आपल्या परवानगीने बोलत आहे की, मगास पासून जी कर्मचाऱ्यांवर चर्चा चालू आहे. आपण नागरिकांसाठी तळमजल्यावर जाहिरनामा लावलेला आहे. मोठा जाहिरनामा आहे. तिथे कालावधी

लिहिलेला आहे की, या कालावधीमध्ये आपले हे काम होईल. परंतु, तो आपल्या शोसाठी लावलेला, इंटेरियर घरामध्ये करतो त्याप्रमाणे इंटेरिअर केल्यासारखे आहे का? त्याच्यावर का कार्यवाही नाही. याचे निवेदन आम्हांला आयुक्तांनी करावे. त्याचप्रमाणे काही कर्मचारी जरी आता सर्वांनी कर्मचाऱ्यांच्या विरोधात बोलले तरी, काही कर्मचारी पदासाठी अदयापर्यंत ताटकळत उभे आहेत. परंतु, त्यांना पदोन्नती देण्यात येत नाही. खास खास माणसांना पदोन्नती देण्यात येते आणि जे बाकीचे राहिले आहेत त्यांचे प्रयत्न असतात. परंतु, त्यांची वरची मंत्रालयापर्यंत पोहच नसल्यामुळे त्यांना पदोन्नती देण्यामध्ये कुठेतरी खंड पडतो आणि आपल्याला अशा पदाधिकाऱ्यांची आवश्यकता आहे. उदा. बघितले तर अग्निशमन दल, आपल्याकडे पोस्ट असूनसुद्धा त्या व्यक्तीला पोस्ट दिले जात नाही की, त्याच्याऐवजी नविन नियुक्ती करणार म्हणजे आपण रोस्टरप्रमाणे बघणार तर आपले हे जे जुने कर्मचारी आहेत त्यांना पदोन्नती कधी मिळणार याचा ही खुलासा करायला पाहिजे. त्याचप्रमाणे आज आपले कर्मचारी जे मोबाईल वापरत आहेत आणि ते मोबाईल वापरत नसेल व नगरसेवकांचा मोबाईल उचलत नसेल अशा अधिकाऱ्यांवर ५६ खाली कार्यवाही करून त्यांना पदाच्या खाली आणा. जर तो योग्य नसेल, मोबाईल घेण्यास किंवा मोबाईल घेऊन त्या नागरिकांचा किंवा नगरसेवकांचे समाधान होत नसेल. मग अशा अधिकाऱ्यांवर ५६ खाली कार्यवाही करून खाली आणा ना. ही माझी सुचना आहे. मा. महापौर साहेबांनी, आयुक्त साहेबांना त्याबद्दल निवेदन करायला सांगावे.

**मा. महापौर :-**

आयुक्त साहेब, आपल्याकडे जे संगणक चालक ऑलरेडी मानधनावर आहेत त्यांना नियमाप्रमाणे एक्सटेन्शन देता येईल तर आपण त्यांना एक्सटेन्शन द्यावे आणि आपल्या पुढच्या सभेत विषय आणून त्यांना एक्सटेन्शन देवू.

**प्रेमनाथ पाटील :-**

साहेब, सभा चालू होण्याअगोदर मी आपल्याला एक प्रश्न विचारला होता की, बी.पी.रोडला ज्या दुकानदारांनी मंडप टाकलेला आहेत. फुटपाथवर त्याची आपण परवानगी दिलेली आहे का?

**मा. महापौर :-**

मी आपल्याला सांगितले आहे की, चेक करून माहिती देतो.

**प्रेमनाथ पाटील :-**

आपण चेक करून माहिती देणार पण तेथून माणसांना जा-ये करण्यासाठी भरपूर त्रास होत आहे. रस्त्यावर दुकान येणार मग लोक जाणार कुठून?

**मा. महापौर :-**

आपण नक्की कुठल्या दुकानाबद्दल बोलता? आपण त्यावेळेला काही दुकांनांना परवानगी दिली असेल नसेल ते कसे माहिती पडेल.

**प्रेमनाथ पाटील :-**

फटाक्यांची दुकानेपण फुटपाथवर लावलेली आहेत. माणसांनी चालायचे तरी कुठून चालायचे? रस्त्यावरून चालायचे का?

**मा. महापौर :-**

सन्मा. नगरसेवक प्रेमनाथ पाटील, आपण कुठल्या मंडपाला परवानगी दिली. ही माहिती सध्या आपल्याकडे उपलब्ध नाही.

**चंद्रकांत म्हात्रे :-**

मा. महापौर साहेब, आपल्याला सांगतो की या शहरामध्ये मंडपाचा जो विषय निघाला त्या अनुषंगाने बोलत आहे. शहरामध्ये मिरा भाईंदरतर्फे जे फटाक्याचे स्टॉल दिलेले आहेत त्या रस्त्यावरून लोकांना अक्षरशः चालता येत नाही. त्या ठिकाणी त्यांना बांधकाम केलेले आहे. प्रत्येकाने एकेका चौकामध्ये १०-१२ फटाक्याचे स्टॉल लावलेले आहेत. त्या संदर्भात आमचे विभागीय अधिकारी श्री. गोखले साहेब यांच्या निर्देशनात आणले आहे. पण त्यांना आतापर्यंत त्याच्यावर काहीही कार्यवाही केलेली नाही. लोकांना आम्ही प्रत्यक्षात जाऊन दाखविले की ह्या ठिकाणी अशी अशी परिस्थिती आहे. लोकांना रस्त्यावरून चालता येत नाही. अशा ठिकाणी आपण स्टॉलला परवानगी दिलेली आहे. जर आपण ती परवानगी दिली असेल तर ती परवानगी आपण ताबडतोब रद्द करावी अशी मी आपल्याकडे मागणी करतो.

**शशिकांत भोईर :-**

मा. महापौर साहेब, मी आपणांस निवेदन केले की, आयुक्तांनी निवेदन करावे की, नागरिकांचा जाहिरनामा लावला आहे त्याच्यावर कार्यवाही होणार आहे की, नाही. याचा खुलासा झाला पाहिजे नाहीतर, आम्ही आता जावून ते मोडणार.

**एस. ए. खान :-**

मा. महापौर साहेब, आयुक्त साहेबांना उत्तर द्यायला लावा.

**शशिकांत भोईर :-**

जर जाहिरनाम्याप्रमाणे कार्यवाही झाली नाही तर आम्ही तेथून जाहिरनामा फाडून टाकू.

**एस. ए. खान :-**

आम्ही अशी सभा चालू देणार नाही. ते जे खुलासा मागत आहेत त्याचा खुलासा करा.

**चंद्रकांत म्हात्रे :-**

मा. महापौर महोदय, आपल्या निर्देशनात आणतो की, वाशी महानगरपालिकेमध्ये नविन मुंबई त्या ठिकाणी फटाक्याला जे स्टॉल देतात ते एका मैदानामध्ये सर्वांना देता जेणेकरून त्याने त्याठिकाणी स्टॉल स्थापन करावे आणि तिथे फटाक्याचा बिझनेस करावा. ज्यावेळी त्यांची वेळ संपेल तेव्हा त्यांचे सर्व स्टॉल काढून टाकण्यांत येते तशीच प्रथा या ठिकाणी देखिल चालू करण्यांत यावी की, एकाच ठिकाणी मिरा भाईंदरमध्ये असेल, प्रत्येक विभागामध्ये मोठमोठी मैदाने आहेत त्याठिकाणी फटाक्याचे स्टॉल लावावे.

**शशिकांत भोईर :-**

मा. महापौर साहेब, जाहिरनामा प्रसिद्ध केलेला आहे त्याबद्दल मी तुम्हांला विचारतो की याचे विनाकारण त्यापद्धतीने होणार का नाही. महापालिकेच्या प्रांगणात आपण जेव्हा प्रवेश करतो तिथे तळमजल्यावर मोठा जाहिरनामा लावलेला आहे की, हे काम पंधरा दिवसात होईल, सात दिवसात होईल. त्याच्यावर कार्यवाही होणार की नाही याचा खुलासा आयुक्त साहेबांना करायला लावा की, आता जाऊन फाडू का?

**एस. ए. खान :-**

प्रत्येक प्रभाग कार्यालयात असा जाहिरनामा लावलेला आहे.

**चंद्रकांत म्हात्रे :-**

साहेब जी मागणी केलेली आहे. त्या संदर्भाबद्दल खुलासा करावा.

**जुबेर इनामदार :-**

मा. महापौर साहेब, प्रशासनाच्या विषयावर चर्चा चालू असताना एक विषय मांडू इच्छितो की लोकप्रतिनिधी प्रशासनाला जे पत्र देतात. आपल्याकडे विषय मांडतात, प्रश्न देतात त्या पत्रांचे उत्तर लोकप्रतिनिधीला प्रशासनाने द्यावे अशी मी येथे सुचना मांडतो. लोकप्रतिनिधी नसून मात्र पूर्ण जनता जी आपल्या प्रशासनाला आपल्या पत्राने प्रश्न विचारतात त्यांना लेखी स्वरूपातच त्याचे उत्तर देण्यात यावे असा मी येथे विषय मांडत आहे.

**मा. महापौर :-**

यापुढे जो काही पत्रव्यवहार आणि जाहिरनामा केलेला आहे त्या हिशोबाने आपल्याला उत्तर दिले जाईल. जे उत्तर देत नाही त्या अधिकाऱ्यावर आयुक्त साहेबांनी नियमाप्रमाणे कार्यवाही करावी.

**रामनारायण दुबे :-**

मा. महापौर महोदय, कल मिरा रोड प्रभाग कार्यालय मे सभी नगरसेवकोके उपस्थिती मे ऐसा निर्णय लिया गया की जो भी नाकेपर जहा भीड होती है। वहापर से फटाकडी के दुकान को हटाया जाए। श्री. गोखले साहेब, वहापर गए और हटाना शुरु किए। उसके बाद मैं अपने कार्यालय मे गया और उनको फोन करके बोला की, जो भी स्टॉल है वह सब हटाया जाए। किसी को छोडा नही जाए। श्री. गोखले साहब ने कहा की जीन लोगोंने यह कहा की हटाना है और मैंने कार्यवाही शुरु की और वही लोग आकर के बोल रहे है की, फटाकडी का दुकान नही हटाया जाए। मैं आपके माध्यम से यही जानना चाहता हूँ की, जो कल मिरा रोड प्रभाग मे नगरसेवको का निर्णय लिया गया वह हटानेकी कार्यवाही शुरु कर दी। इसकेबाद किन सज्जनोंने आकर के रोका मैं वह जानना चाहता हूँ।

**एस. ए. खान :-**

विषयपत्रिका बघा, विनंती अर्ज आलेला नाही का? रजेचा अर्ज नाही का?

**नगरसचिव :-**

दोन रजेचे अर्ज आलेले आहेत.

**एस. ए. खान :-**

मग त्याची सभागृहाला माहिती द्यायची नाही का?

**नगरसचिव :-**

ते विषयच्या अगोदर होणार आहे. विषयाच्या अगोदर घोषित केले जाते.

**एस. ए. खान :-**

विषयाच्या अगोदर कसे काय? पहिले व्हायला पाहिजे ना.

**नगरसचिव :-**

विषयाच्या अगोदर.

**एस. ए. खान :-**

तसेच, हायकोर्टाचा निर्णय आलेला आहे त्याची माहिती सभागृहाला द्यायची नाही का? काय, पत्रव्यवहार आलेला आहे का? हायकोर्टाचा निर्णय झालेला आहे ना.

**नगरसचिव :-**

प्रशासनाकडून कुठचेही परिपत्रक किंवा काही अजून वाटण्याकरिता दिलेले नव्हते.

**एस. ए. खान :-**

प्रशासनाने तुम्हांला दयायला नको का?

**नगरसचिव :-**

त्यांना मी पत्र ही दिलेले आहे की, जे काही पत्र आलेले असतील ते माझ्याकडे जमा करावेत.

**एस. ए. खान :-**

सचिव साहेबांना माहिती दिलेली नाही. म्हणजे काय?

**प्रभात पाटील :-**

मा. महापौर साहेब, आपण मगाशी त्या विषयावर काय निर्णय दिला की, त्यांना एक्सटेन्शन द्यावे असे. ऑलरेडी त्यांना डिसेंबर महिन्यापर्यंत एक्सटेन्शन आहे. माझा ठराव झालेला आहे.

**मा. महापौर :-**

आफ्टर ३१ डिसेंबरसाठी बोललो.

**प्रभात पाटील :-**

पण माझा ठराव गेलेला आहे ना की आपण संपूर्ण ही प्रक्रिया रद्द बादल करा. त्याला स्थगिती द्या. म्हणजे ती प्रक्रिया चालूच करायची नाही आणि जे कर्मचारी आहेत त्यांनाच यापुढे सेवेमध्ये सामावून घ्या.

**मा. महापौर :-**

मॅडम, तेच रूलिंग दिलेले आहे.

**प्रेमनाथ पाटील :-**

आम्ही ठराव दिलेला आहे.

**मा. महापौर :-**

३१ डिसेंबर नंतर मी बोललो. त्यांना नियमाप्रमाणे एक्सटेन्शन देता येईल तर एक्सटेन्शन द्यावे.

**प्रभात पाटील :-**

एक्सटेन्शन नकोच आहे. त्याच लोकांना पुढे सेवेमध्ये कायम करण्यांत यावा असा मी ठराव दिलेला आहे.

**मा. महापौर :-**

मॅडम, एक्सटेन्शन चा मिनिंग तोच झाला ना.

**प्रभात पाटील :-**

३१ डिसेंबरपर्यंत ते ऑलरेडी आहेत. मी ३१ डिसेंबर नंतर सांगते.

**एस. ए. खान :-**

आपण जर दुसऱ्या लोकांची नेमणूक केली तर ती लोक कुठे जाणार?

**मा. महापौर :-**

वन मोअर एक्सटेन्शन.

**शानु गोहिल :-**

पाच महिने के बाद.

**प्रभात पाटील :-**

मी, ३१ डिसेंबर नंतर सांगते की, त्याच कर्मचाऱ्यांना..

**मा. महापौर :-**

३१ डिसेंबरनंतर परत एक्सटेन्शन द्यावे.

**प्रभात पाटील :-**

त्यांना एक्सटेन्शन कशाला? आपण त्यांना मानधनावर कायम करून घ्या ना.

**प्रेमनाथ पाटील :-**

त्यांनाच तिथे कायम करून घ्या. सचिव साहेब, आम्ही तुम्हांला ठराव दिलेला आहे.

**मा. महापौर :-**

विषय अजून आपण त्यांना रितसर कायम करू या.

**अनिल सावंत :-**

मा. महापौर साहेब, त्या नियुक्त्यांच्या बाबतीतच जो ठराव दिलेला आहे त्यात ७५ लोकांच्या जीवनमरणाचा प्रश्न आहे त्यांना तुम्ही ३१ डिसेंबर नंतर डिसकन्टीन्यू करून पुन्हा कन्टीन्यू करू शकता. तशी प्रोव्हिजन आहे.

**प्रभात पाटील :-**

माझ्या ठरावाचे वाचन झाले? माझा ठराव रद्द केले की, काय केले?

**अनिल सावंत :-**

पेपरमध्ये दिलेली जी जाहिरात आहे ती रद्द करून टाका.

**एस. ए. खान :-**

सचिवजी ठराव वाचा.

**प्रेमनाथ पाटील :-**

सचिव साहेब, आम्ही जो ठराव दिलेला आहे त्याचे वाचन करावे.

**शरद पाटील :-**

मा. महापौर साहेब, जर एक्सटेन्शन ३१ डिसेंबर पर्यंत होती तर ती अँड काढलीच कशाला? अँड काढायचे कारण काय?

**एस. ए. खान :-**

दोन महिने बाकी आहे.

**शरद पाटील :-**

म्हणजे एवढी घाई होती. आपले साफसफाईचे टेंडर काढायचे ते एप्रिल सोडून जून महिन्यात काढतात. जे फेब्रुवारी महिन्यामध्ये काढायला पाहिजे. ज्याची गरज आहे ते काढत नाही व ज्याची गरज नाही ते पहिले काढतात. म्हणजे स्वतःच्या स्वार्थासाठी येथे सगळं बघायचे का? त्याच्यामुळे आलेली ही जाहिरात कॅन्सल करा आणि पुढे एक्सटेन्शन नाहीतर त्यांना कायम रुजू करून घ्या.

**प्रेमनाथ पाटील :-**

सचिव साहेब, आपण ठरावाचे वाचन करा ना.

**प्रभात पाटील :-**

मुंबई लक्षदीप व सुरजप्रकाश या दैनिकात प्रसिद्ध झालेल्या संगणक चालक व लिपीक पुरवठा कामी मानधनावर करण्याच्या नेमणुकांबाबत दि.२६/१०/०७ रोजी जी जाहिरात आली होती त्या संदर्भात मी असा ठराव मांडते की, मागील मा. महासभा दि. २०/६/०६ च्या ठरावाअन्वये ७१ संगणकचालक व ४ लघुलेखक यांची नेमणुक केली गेली होती त्यानुसार हे सर्व कर्मचारी त्या पदावर कार्यरत आहेत. आजच्या मा. महासभेत त्याच सर्व कर्मचाऱ्यांना यापुढे देखिल कायम कार्यरत ठेवून दि. २६/१०/०७ ची जाहिरात रद्द करून पुढील कार्यवाही थांबविण्यात यावी व त्या कर्मचाऱ्यांवरील अन्याय दूर करावा असा मी ठराव मांडत आहे.

**प्रेमनाथ पाटील :-**

या ठरावाला अनुमोदन आहे.

**जयंत पाटील :-**

आजच्या मा. महासभेत एकूण ९ विषय आहे. महत्त्वाचे विषय आहेत. तरीसुद्धा सन्मा. नगरसेवक, माजी उपमहापौर चंद्रकांत वैती साहेब यांनी सभागृहाचे लक्ष वेधण्यासाठी आजच्या सभेमध्ये अतिशय चांगले विषय उचलले आहेत. आम्ही त्यांच्या मताशी संपूर्णपणे सहमत आहोत. येथे एक विषय राहिला होता की, ठेकापद्धतीने सैनिक सिव्क्युरिटीकडून आपण क्लार्क घेतलेले आहोत. त्यांना किती दिवस ठेकापद्धतीने ठेवणार आहोत? आपल्या आस्थापनेवर ४२ टक्के खर्च होत आहे. सन्मा. सदस्यांनी आणलेला विषय अतिशय चांगला आहे. ह्याचा विचार आयुक्त साहेबांनी केला पाहिजे. माझ्या माहितीप्रमाणे आपल्याला फक्त दोन महिने शिल्लक आहेत इफ आय डोन्ट मिस्टेक सुरुवात काय आम्ही दोन महिन्यांत काहीही करू कसेही करू. असे ट्विस करू नका. कारण ही जनता आम्ही, आपल्याकडून अपेक्षा करतो. जास्तीत जास्त चांगलं नाव आपण कमवा. ठसा असा उमटवा की आपण गेल्यानंतर सुद्धा म्हणजे महापालिकेकडून गेल्यानंतर सुद्धा रिटायर्ड झाल्यानंतर सुद्धा आपले नाव या महापालिकेच्या पटलावर कोरले गेले पाहिजे. ही आमची भावना आहे. सन्मा. नगरसेविका प्रभात पाटील ह्यांचा सुद्धा विषय अतिशय चांगला होता. ह्या महापालिकेमध्ये कर्मचारी आपण ठेका पद्धतीने घेतो. त्यांना चांगला अनुभव मिळतो. परंतु, त्यांच्या अनुभवाचा फायदा घेण्यापेक्षा आपण बाहेरचेच कामगार आस्थापनेवर घेतो. तेव्हा असे न होता. आणि अनेक वेळा मी मागच्या सभेतसुद्धा बोललो होतो मागच्या टर्ममध्ये बोललेलो आहे. आणि त्या संबंधी सभागृहाचे एकमत असावे. तर स्थानिक लोकांना आपण प्राधान्य दिले पाहिजे. ह्या शहरामध्ये सुशिक्षित तरुण आहेत. अतिशय सुशिक्षित आहे. म्हणजे आमच्या आगरी समाजामध्ये म्हणाल, तर डॉक्टर झालेले आहेत, एम.कॉम झालेले आहेत, सी.ए. झालेले आहेत. असे मुले आणि मुलीसुद्धा आहेत. असे सर्व समाजामध्ये आहेत. स्थानिकाची व्याख्या तुम्ही महाराष्ट्राची करू नका. स्थानिकाची व्याख्या स्थानिक ही करा. ह्या मिरा भाईंदर मधील करा. मग तो कुठल्याही जाती-धर्माचा असेल. आमचे त्याबद्दल म्हणणे नाही. इथल्या लोकांना इथल्या तरुणांना आपण नोकऱ्या द्या. त्यांची जे काम करण्याची ताकद असेल जी भावना असेल. ते बाहेरून येणाऱ्या कामगारापेक्षा निश्चितच चांगले असेल. कारण ते समजणार की हे शहर माझे आहे. ह्या शहराची सेवा मला करायची आहे. कधीही रात्री अपरात्री आपतकालीन व्यवस्थेत सुद्धा आपण त्यांना बोलवू शकतो. साहेब, ह्यासंबंधी आपण विचार करा. १७० कामगारांची भर्ती तशीच रेंगाळलेली आहे. सफाई कामगार आणि त्यांची आम्ही शारिरीक तपासणी करतोय. हा मोठा विनोद आहे. खरे पाहिले तर त्यांना आम्ही गटारावर पाठविणार आहोत. त्यांना काही मिलेटरी मध्ये पाठविणार नाही की त्यांना मिलेटरीमध्ये पाठविणार अथॅलॅटीस म्हणून आम्हांला बनवायचे. तुम्ही इंटरव्ह्यू घेतलात. ११ हजार तरुणांचा इंटरव्ह्यू घेतलात आणि आपण आता त्यांची शारिरीक तपासणी करण्याचे वेगळेच मी नाटक हा शब्द वापरणार नाही. परंतु, त्या तऱ्हेने पावलं चाललेली आहेत. आपण जाता जाता त्या १७० जे आमचे कामगार आहेत. त्यांना सुद्धा आपण न्याय द्या. नगरसेवकांना न्याय द्या. असे मी म्हणेन. शेवटी आपल्याला संगणक कामगार झालेत. मोबाईलचा विषय निघाला. मोबाईलची सर्वांची जी भावना आहे.



ती माझी सुद्धा आहे. कारण मोबाईल आपत्कालीन व्यवस्थेमध्ये आम्हांला मिळायला पाहिजे. लागला पाहिजे. बऱ्याच वेळेला ते सांगतात की, चार्जिंगला होता हे कारण ठरलेले आहे. चार्जिंगला असले म्हणजे काय? मग तुमचे त्याचे कधी चार्जिंग होणार आहे? तो सुद्धा विषय अतिशय महत्त्वाचा आहे. मोबाईल चालू राहणे हे गरजेचे आहे आणि प्रत्येक महापालिकेचे अधिकारी आहेत. त्यांच्याकडे स्वतःचे मोबाईल आहेत. त्यांच्यामुळे चार्जिंगला होतं असे म्हणणे आम्हांला न पटण्यासारखे आहे. त्यासंबंधी आपण आपली प्रशासनावर जी पकड आहे. मा. आयुक्त साहेब मला दुदैवाने असे म्हणायला लागेल की ती पकड आपली दिल्ली झालेली आहे. मगाशी आमच्या एका नगरसेवकांने सांगितले होते. सन्मा. सदस्य श्री. डॉ. जैन यांनी आपली पकड मजबूत ठेवा. सर्व स्थानिक कामगार आहेत. अतिशय चांगले अधिकारी आहेत. त्यांच्या कामाचा, त्यांच्या ताकदीचा आपण फायदा करून घ्यावा आणि मी सर्व सन्मा. मित्र पक्ष मगाशी श्री. वैती साहेब आम्हांला मित्र पक्ष बोलले आम्ही त्यांना मित्र पक्ष म्हणतो की पुढील जे आपले विषय राहिलेले आहेत. त्या विषयाकडे आपण वाटचाल करूया. कामगारांसाठी बोनसचा प्रश्न अतिशय महत्त्वाचा आहे.

**नयना म्हात्रे :-**

मा. महापौर साहेब आता जो ५० क्लार्क लोकांचा विषय काढला, साहेब त्यांना १०-१० महिन्यांपासून पगार दिलेला नाही. साहेब त्यांच्या घरातील लोक येवून आम्हांला विचारतात. की दिवाळी आली त्यांचा पगार मिळणार आहे की नाही. आज साहेब त्यांची दिवाळी आली. त्यांना दिवाळी नाही का? फक्त आपल्यालाच दिवाळी आहे का? आज साहेब पहिले श्री. परब साहेबांच्या जागेवर श्री. गोखले नावाचे साहेब बसायचे..

**मा. महापौर :-**

ठेकेदार कोण आहे?

**नयना म्हात्रे :-**

कॉन्ट्रक्टर तुम्हांलाच माहिती तुम्ही मिरा भाईंदर महापालिकेचे मा. महापौर आहात.

**मा. महापौर :-**

त्यावेळी आपण केलेले आहे.

**नयना म्हात्रे :-**

नाना कॉन्ट्रक्टर.

**जयंत पाटील :-**

याविषयाशी मी सहमत आहे. सैनिक सिक््युरिटी यांच्या निमाजीत एन्टरप्रायझेस. ते नानाचेच आहे. नाना नावाची थोडीशी आम्हांला भिती वाटते. तेव्हा निमाजित एन्टरप्रायझेस यांच्याकडून ती भरती होते. नियमित परंतु, त्यांची मुदत संपल्यानंतर महापालिका त्यांच्याकडून काम करून घेते. परंतु, पगार मिळत नाही.

**मा. महापौर :-**

मा. आयुक्त साहेब, ह्यापुढे जिथपर्यंत जे कॉन्ट्रक्टर पद्धतीवर आपल्याकडे कर्मचारी आहेत. त्यांना जिथपर्यंत पूर्ण सॅलरी माझे असे म्हणणे आहे की ज्या कुठल्याही कर्मचाऱ्यांचे कॉन्ट्रक्टर ला आपण पेमेंट दिलेले आहे. आणि त्याने पगार नाही दिलेला किंवा पी.एफ. भरलेला नाही आणि साडे आठ टक्के जे नियमाप्रमाणे आहे. ते बोनससुद्धा त्यांनी दयावे. त्यानंतर त्याला पुढच्या महिन्याचा पेमेंट रिलीझ करावा.

**एस. ए. खान :-**

मा. महापौर साहेब, हायकोर्टाचा जो निर्णय आलेला आहे. लोक आम्हांला विचारतात की सर्व्हिस रोड होणार आहे की नाही होणार? त्याचा काय आदेश आलेला ते हायकोर्टाचा आम्हांलाच माहिती नाही. अजेंडयावर विषय आहे ना. आणि मा. सचिव साहेब सांगतात की प्रशासनाला त्यांनी पत्र दिलेले आहे. कोणाला पत्र दिलेले आहे? मा. आयुक्त साहेबांनी खुलासा करावा तर आम्हांला आदेश द्या. मा. सभागृहाला माहिती देण्याची गरज नाही का? काही आवश्यकता नाही का?

**चंद्रकांत वैती :-**

ह्याच्यामध्ये आहे. सर्व पत्रे, विनंती अर्ज, मा. आयुक्तांकडील पत्रे, कामकाज, शिक्षण मंडळाची सभा, व परिवहन समितीच्या सभा.

**एस. ए. खान :-**

परिवहन समितीचाही काही ठराव नाही का? त्याच्यामध्ये ठराव झालेले नाही का?

**चंद्रकांत वैती :-**

सभागृहाला माहिती देवू इच्छितो की, महाराष्ट्रामध्ये रस्ते एकात्मिक योजना जी आहे आणि त्याच्यामध्ये एम.एम.आर.डी.ए. च्या माध्यमातून सर्व शहरे जवळ आणण्याचा प्रयत्न आणि महाराष्ट्रातल्या पाच प्रमुख महानगरपालिका ज्या आपल्या आसपासच्या आहेत. मुंबई, ठाणे, कल्याण-डोबिंदली, मिरा भाईंदर या महानगरपालिकांमध्ये ज्या बससेवा आहेत. त्या बससेवा एकमेकांकडे आपण दयायच्या. त्यांच्या बससेवा आपल्या शहरांत आपल्या बससेवा त्यांच्या शहरात पाठवायच्या. अशा एक एम.एम.आर.डी.ए. कडून पत्र आलेले होते. महाराष्ट्र शासनाचे पत्र होते. आणि त्या पत्राला आपल्या परिवहन समितीमध्ये आमची बससेवा आम्हांला सिमित ठेवायची आहे. अशा प्रकारचे डिसीजन झाले. वास्तविक महापालिकेसमोर हा विषय यायला पाहिजे. या शहरातील लोकांना सुविधा मिळणार असतील, जर आज ट्रान्सपोर्टची परिस्थिती अतिशय भिन्न

आहे. आपल्याकडे एस.टी. ने आपले कामकाज बंद केले. आपल्या ज्या परिवहनच्या बसेस आहेत. त्याची फ्रीक्वेन्सी कमी आहे. त्याच्यामुळे शहरामध्ये बस जर बाहेरच्या आल्या असल्या बी.ई.एस.टी. येते, टी.एम.टी. येते तर त्या गाड्या पूर्णपणे भरून जातात. जर अजूनपर्यंत दूरचा प्रवास करणाऱ्या लोकांना सोयिस्कर होत असेल तर तो ठराव नाकारला आणि आपल्या अर्जेड्यावर तेव्हा प्रश्न असतो की परिवहन किंवा इतर समिती किंवा स्थायी समिती ठराव पण आपण जो ठराव झालेला आहे. तो आला नाही? सचिव साहेब आपण हे एक चुकीचे काम चाललेले आहे. आपल्याकडून हा ठराव यायला पाहिजे होता. परिवहनमध्ये एवढा मोठा ठराव केला आणि या मा. महासभेला माहिती नाही. या शहरामध्ये या बससेवा चालणार, परिवहन सेवा चालावी. हा ठराव ह्या मा. महासभेचा आहे. त्याच्यामध्ये बस सुधारणा करावी. हा ठराव मा. महासभेचा आहे, मग हा ठराव मा. महासभेसमोर का आला नाही?

**प्रभात पाटील :-**

मला एक कळले नाही की माझा तो ठराव मंजूर झाला असे मा. महापौर साहेब बोलले नाही.

**प्रेमनाथ पाटील :-**

सचिव साहेबांनी वाचून कायम करावे.

(नगरसचिवांनी सन्मा. सदस्या प्रभात पाटील व सन्मा. सदस्य प्रेमनाथ पाटील यांनी मांडलेल्या ठरावाचे सभागृहासमोर वाचन केले.)

**प्रकरण :-**

दि. २६/१०/२००७ या वृत्तपत्रामध्ये दिलेली जाहिरात रद्द करून सद्या कार्यरत संगणकचालक व लघुलेखक यांनाच कायम करणेबाबत.

**ठराव क्र. ०९ अ :-**

मिरा भाईंदर महानगरपालिकेच्या लक्षद्वीप व सुरजप्रकाश ह्या दैनिकात प्रसिद्ध झालेल्या संगणक चालक व लिपिक पुरवठाकामी मानधनावर करावयाच्या नियुक्त्यांवर नेमणूकांबाबत दि. २६/१०/२००७ च्या जाहिराती नुसार मी असा ठराव मांडीत आहे की, मागील महासभा दि. २०/०६/२००६ च्या ठरावान्वये ७१ संगणक चालक व ४ लघुलेखक ह्यांची नेमणूक केली होती. त्यानुसार हे सर्व कर्मचारी ह्या पदावर कार्यरत आहेत. आजच्या महासभेत त्याच सर्व कर्मचाऱ्यांना यापुढे देखील कायम कार्यरत ठेवून दि. २६/१०/२००७ च्या जाहिरात रद्द करून पुढील कारवाई थांबविण्यात यावी व त्या कर्मचाऱ्यांवरील अन्याय दूर करावा असा मी ठराव मांडीत आहे.

**सुचक :- सौ. प्रभात पाटील.**

**अनुमोदक :- श्री. प्रेमनाथ पाटील.**

**ठराव वाचून कायम करण्यात आला.**

**सही/-**

**महापौर**

**मिरा भाईंदर महानगरपालिका**

**नगरसचिव :-**

अर्जेडा गेल्यावर त्यांनी विषय माझ्याकडे दिलेला आहे. तो विषय पुढच्या वेळेला येईल, हा अर्जेडा दि. २० तारखेचा आहे.

**अनिल सावंत :-**

सचिव साहेब, परिवहन समितीचा जो ठराव होता. तो फार महत्त्वाचा विषय होता. स्थानिक मा. आमदार श्री. मुझफ्फर हुसैन साहेब यांनी कल्याण-डोबिंवली, उल्हासनगर, ठाणे आणि मिरा भाईंदर ह्या शहरांना एकत्र आणावे म्हणून परिवहन समितीची सेवा इंटर एक्सचेंज करावी असा ठराव एम.एम.आर.डी.ए. कडे पाठविला होता आणि आपल्या परिवहन समिती ने तो सपशेल तो ठराव फेटाळून लावला आणि ही माहिती आम्हांला इंडियन एक्सप्रेस पेपर मधून कळाली. आणि तो एवढा महत्त्वाचा विषय ह्या मा. महासभेपुढे न आणता, तुम्ही निरंक असे लिहिले. ह्या निरंक शब्दाविषयी काय आपले प्रेम आहे? ते मला कळत नाही.

**नगरसचिव :-**

आपला हा जो रेग्युलर अर्जेडा आहे. तो अर्जेडा निघाल्यानंतर त्यांच्याकडून गोषवारा प्राप्त झालेला आहे. तो पुढच्या सभेला येणार.

**अनिल सावंत :-**

पुढच्या सभेला येई पर्यंत कार्यवाही झालेली असेल. ठराव फेटाळला गेलेला आहे. ऑलरेडी

**नगरसचिव :-**

मा. महासभेला आपल्याला मंजुरी द्यावी लागेल. आपल्या ह्या मा. महासभेची सभागृहाची मंजुरी मिळाल्यानंतर त्यावर कार्यवाही होईल

(नगरसचिवांनी लक्षवेधीचे वाचन केले.)

**प्रशांत पालांडे :-**

मा. महापौर साहेब या मिरा भाईंदर महानगरपालिकेच्या क्षेत्रामध्ये गेल्या अनेक वर्षांपासून निरनिराळ्या समस्यांना नागरिकांना तोंड द्यावे लागते. पाण्याचा प्रश्न आहे, डम्पींग ग्राउंडचा प्रश्न आहे. अंडर ग्राउंड ड्रेनेजचा प्रश्न आहे. त्याच बरोबर शवविच्छेदन केंद्राबाबतही फार मोठी समस्या नागरिकांसमोर उभी आहे. कुठल्या विषयाची लक्षवेधी मांडावी. हाच मोठा प्रश्न आहे. पण इतर ज्या समस्या आहेत त्याच्या बदल प्रशासन काहीतरी करतेय. पण शवविच्छेदन केंद्राबद्दल प्रशासनाचे अक्षम असे दुर्लक्ष झालेले आहे असे जनतेची आणि नागरिकांची भावना आहे. म्हणून मी आजची लक्षवेधी ह्या सभागृहासमोर मांडत आहे. आज शवविच्छेदन केंद्राबद्दल लक्षवेधी मांडतांना सुध्दा वैद्यकिय आरोग्य अधिकारी मला वाटते एकही इथे उपस्थित नाही.

**मा. महापौर :-**

ते आजारी आहेत. आणि काल हॉस्पिटलमध्ये स्लिप डिप झाली आणि त्यामुळे ते हॉस्पिटलमध्ये अँडमीट आहेत.

**प्रशांत पालांडे :-**

वैद्यकिय आरोग्य अधिकारी स्वतःच आजारी आहेत. मा. महापौर साहेब, ह्या शहरामध्ये जिल्हा परिषदेच्या वतीने दोन पोस्टमार्टम सेंटर चालविण्यांत येत होती. माझा प्रश्न आहे. मा. आयुक्त साहेब, की सन २००२ ला महानगरपालिका होवून सुध्दा स्वतःचे पोस्टमार्टम सेंटर चालू करण्यासाठी महानगरपालिका प्रशासनाने कोणती कार्यवाही केली? हा माझा पहिला प्रश्न आहे. टेंबा येथील जे शवविच्छेदन केंद्र होते त्याच्याबद्दल मला असे वाटते एप्रिल महिन्यामध्ये पी.आय.एल मध्ये दाखल करण्यांत आली. त्यानंतर तरी कमीतकमी आपण कार्यवाही करण्यांस सुरुवात करायला पाहिजे होती की, प्रशासनाला असे वाटत होते की ती जागा आपल्याकडे हस्तांतर होणारच नाही. अशी प्रशासनाची भुमिका होती का? त्याच्यानंतर आता नक्की नविन समस्या नविन शवविच्छेदन केंद्र सुरु करण्यासाठी नक्की आपल्या समोर प्रश्न काय आहेत? डॉक्टरस उपलब्ध नाहीत ? की आपल्याकडे रुग्णालये उपलब्ध नाहीत? हा माझा पुढचा प्रश्न आहे. आपण डेप्युटेशनवर दोन डॉक्टरची मागणी पोस्टमार्टमसाठी करण्यांत आली होती. आपल्यावतीने तर माझ्या माहितीप्रमाणे आपल्या जे आरोग्य विभागामध्ये जे एम.बी.बी.एस डॉक्टर्स आहेत. की त्यांनाही काहीवेळा पोस्टमार्टम ह्या ठिकाणी केले होते त्यावेळी जिल्हा परिषदेचे आरोग्य अधिकारी अनुपस्थित होते. त्यावेळी त्यांनी केलेले होते. अशी माझी माहिती आहे म्हणजे डॉक्टर हा प्रश्न नक्की आपल्यासमोर आहे का? त्याच्यानंतर आरोग्य विभागाने मला जे उत्तर दिले होते त्याच्यामध्ये ते स्पष्ट पणे म्हणता आहेत. की, पोस्टमार्टम सेवा आम्ही का देवू शकत नाही? कारण आमच्याकडे रुग्णालयच उपलब्ध नाहीत. तो आहे की, आपल्याकडे आरोग्य अधिकारी नाही? तो आहे त्याच्यानंतर आपण डेप्युटेशनवर दोन अधिकारी मागविलेले आहे. त्याची पद निर्मीती झालेली आहे का? महानगरपालिकेच्या वतीने ती पदनिर्मीती झाली असेल. तर ते डेप्युटेशन चे डॉक्टर आपल्याकडे येवून काय काम करतील? त्याच्यापुढचा माझा असा प्रश्न आहे की, एखादे पोस्टमार्टम सेंटर आपण आयसॉल्युटेड करून चालवू शकतो का? टेंबामध्ये जे आपले एक पोस्टमार्टमसाठी एक छोटेसे रुम आहे. त्याच्या बाजूला आणखी एक छोटेसे रुम आहे. जर समजा उद्या डेप्युटेशनवर आपल्याकडे दोन डॉक्टर्स आले तर त्यांना उठण्या बसण्यासाठी त्यांचे इनस्ट्रुमेंट ठेवण्यासाठी आणि इतर जे त्यांच्याकडे इनफ्रास्ट्रक्चर्स आहेत. त्यांच्यासाठी आपल्याला आणखी व्यवस्था लागणार आहे. त्या व्यवस्थेसाठी आपल्याकडून काही नियोजन झालेले आहे. का? त्याच्यापुढचा प्रश्न आहे की, जे डेप्युटेशन डॉक्टर्स आपण सांगितलेले आहेत. त्या संदर्भात प्रशासनाने नक्की काय केलेले आहे? फक्त पत्र व्यवहारच करून आपण गप्प बसलो की, मा. आयुक्त साहेब, आपण स्वतः प्रधान सचिव जे आहेत. त्यांच्याकडे आपण स्वतः गेलेले आहात की, आपल्या व्यतिरिक्त कोणी सक्षम अधिकारी त्याठिकाणी गेलेले आहात का? ह्याच्याबद्दल मला आपल्याकडून थोडीशी माहिती हवी आहे. पोस्टमार्टम हा विषय मी स्वतःहून आणलेला आहे. जेव्हा टी.एम.टी बसचा अपघात झाला होता. तेव्हा माझ्या जवळचे तीन नातेवाईक त्यावेळी मृत्यूमुखी पडले होते. त्यावेळी त्या मृत व्यक्तींच्या नातेवाईकांची काय मानसिकता असते त्याचा अत्यंत जवळून आम्ही अनुभव घेतलेला आहे. मिरा रोड आणि भाईंदरच्या मध्ये बॉम्बस्फोट झाला होता त्यातल्या काही मृत व्यक्तींवर टेम्बा हॉस्पिटलच्या येथे पोस्टमार्टम करण्यांत आले होते. दुदैवाने होउ नये पण अशाप्रकारची एखादी घटना मिरा भाईंदर शहरामध्ये घडली तर आपल्याकडे त्यासाठी कोणती व्यवस्था आहे या गोष्टीचा खुलासा करण्यासाठी मी आज ही लक्षवेधी मांडलेली आहे. आयुक्त साहेब, आपल्याकडून या सर्व प्रश्नांची उत्तरे अपेक्षित आहेत.

**मिलन पाटील :-**

मा. महापौर साहेब ही जी समस्या आता मांडलेली आहे. स्थानिक नगरसेवकांची समस्या आहे ते मांडतील.

**डिमेलो बर्नड :-**

मा. महापौर साहेब, आयुक्त साहेब, मला असा विषय मांडायचा आहे की, जे शवविच्छेदनाचा विषय निघाला तर पाली येथे, जिल्हा परिषदेकडून अजूनपर्यंत मला माहिती मिळालेली नाही. जिल्हापरिषद किंवा नगरपालिकेचे, तिथे शवविच्छेदन करण्यासाठी चेन्नेपासून ते चौकापर्यंतचा एरिया व बाहेरून एस्सल वर्ल्डकडे येणाऱ्या लोकांचा रस्त्यावर जो अपघात त्यांची जी बॉडी असते ती शवविच्छेदनासाठी पाली येथे नेली जाते.

पाली हॉस्पिटलच्या शेजारी आमचे गाव वसलेले आहे. मंदिर आहे. होली क्रॉस हायस्कूल आहे. त्याच्या ते एकदम जवळ आहे. एका दिवसामध्ये चार आणि रात्रीच्या वेळी दोन शव असे टाकले होते की जसे एका बाजुला ढोर मेलेली असतात. दुर्गंधी एवढी पसरली होती की, लोकांना तेथुन येता जाता वेळी अधिकाऱ्यांना विचारले पण त्याचे उत्तर कोणीही देवु शकले नाही. माझे मित्र यांनी विचारल्याप्रमाणे डॉक्टर्सची काय सोय आहे की, हॉस्पिटलची ते सांगा व त्याच्यावर आपण त्वरीत कार्यवाही करा. माझा दुसरा प्रश्न असा आहे की, येणारा जाणारा जो रस्ता आहे आणि तुम्ही जो रुम बनवलेला आहे त्याला दोन्ही बाजुला खिडक्या नाही. खिडक्यांचे गाळे आहेत पण ते ओपन आहेत. हत्यारे अशाप्रकारची वापरली आहेत. की, त्याच्याने झाडसुध्दा कापणार नाही. हाथोडी एवढ्या जोरात मारली जाते की, बाजुने येणाऱ्या जाणाऱ्या माणसाला त्याचा आवाज येतो महानगरपालिकेला चांगली सोय करण्याकरिता काही अडचणी असतील तर आज माझ्या माहितीप्रमाणे हॉस्पिटलची उपकरणे खरेदी करण्यासाठी व कर्मचारी भरती करण्यासाठी जो कोट्यावधी रुपयाचा आकडा दाखविला आहे आणि ज्यांचे कोणी नातेवाईक मरतो त्याचे पी.एम करण्यासाठी हत्यार भेटत नाही मला वाटले ही आपल्या महानगरपालिकेला लाजीरवाणी गोष्ट आहे. लवकरात लवकर जो पी. एम विभाग करायचा असेल व त्याची सोय करण्याकरिता पंधरा दिवसांचा किंवा महिन्याचा अवधी लागत असेल व आमच्या वॉर्डमध्ये पाली येथे करायचे असेल तर मला तरी वाटते की, राहण्यासाठी जी सोय कर्मचाऱ्यांसाठी केलेली आहे तो रुम साफ करुन पी.एम. साठी तो रुम वापरवा जेणेकरुन येणा जाणाऱ्या वाटसरुंना त्याचा त्रास होवु नये हिच माझी अपेक्षा.

### मा. आयुक्त :

सन्मा. नगरसेवक श्री. प्रशांत पालांडे यांनी लक्षवेधी मांडलेली आहे. त्या लक्षवेधीच्या संदर्भात त्यांनी जे काही प्रश्न आणि उपप्रश्न उपस्थित केलेले आहेत. त्याबाबतीमध्ये मी खुलासा करतो टेम्बा हॉस्पिटल हे जिल्हा परिषदेच्या मालकीचे होते आणि नंतर त्याबाबतीमध्ये हायकोर्टामध्ये जनहित याचिका दाखल झाली. त्या जनहित याचिकेमध्ये शासनाकडुन आणि आपल्याकडुन जे अॅफिडेव्हिट केलेले होते त्याप्रमाणे ती जागा महापालिकेला हस्तांतरीत झालेली आहे आणि त्या जागेचा ताबा महापालिकेने घेतलेला आहे ही जागा ताब्यात घेतांना त्याठिकाणी पोस्ट मार्टम रुम कार्यरत होते. ती पोस्टमार्टम रुम तशीच कार्यरत राहावी त्याच्यासाठी ताब्यात घेणाऱ्या आधिपासुन आपण जिल्हापरिषदेची पत्रव्यवहार करित होतो. आणि जिल्हापरिषदेला विनंती केलेली होती की, त्याठिकाणी आपला जो काही कर्मचारी वर्ग आहे. तो कर्मचारी वर्ग तसाच ठेवावा आणि त्याचे वेतन आणि भत्ते हे महापालिकेकडुन देण्यात येतील अशाप्रकारे सुध्दा आपण त्यांना कळवलेले होते परंतु, या बाबतीमध्ये महापालिकेने जवळ जवळ त्यांना दोन ते तीन पत्र पाठविलेली होती. मी समक्ष जावुन त्यांना भेटलो होतो. दुरध्वनीवरुन माझे त्यांच्याशी बोलणे झाले होते परंतु, ते जिल्हापरिषदेने मान्य केले नाही. आणि नंतर टेम्बा हॉस्पिटल हे आपण आपल्या ताब्यात घेतले व त्याच्यानंतर पुढील प्रोसिजर वेगळी करणार आहोत मध्यंतरीच्या कालावधीमध्ये या ठिकाणी जवळ जवळ भगवती आणि मुंबई येथे पोस्टमार्टमची गैरसोय होवु नये जे काही नागरिक आहेत त्या नागरिकांची गैरसोय होउ नये म्हणुन आपण जिल्हापरिषदेला विनंती केलेली होती आणि पत्र पाठवलेले आहे की, आपल्या उत्तन साईडला जे प्राथमिक आरोग्य केंद्र आहे त्या आरोग्य केंद्रामध्ये अशाप्रकारची आपल्याला सोय करता येत असेल तर आपण त्याठिकाणी सोय करावी त्याठिकाणी ती सोय केलेली आहे हे जे उत्तनचे प्रायमरी हेल्थ सेंटर आहे ते पुर्वी जिल्हापरिषदेच्या अखत्यारिमध्ये आहे अजुन उत्तन जिल्हा परिषदेच्या प्राथमिक आरोग्य केंद्राचा ताबा आपल्याला मिळालेला नाही. त्या ठिकाणी एक सोय म्हणुन अगदी परिपूर्ण म्हणता येणार नाही परंतु, तात्पुरती सोय म्हणुन त्याठिकाणी सुरु केलेले आहे.

### डिमेलो बर्नड :-

आपण सोय हा शब्द वापरु नका. सोयचा अर्थ काय होतो? सर्व सोयी पाहिजे. सोय नाही फक्त पाउस पडतोय म्हणुन फाटलेल्या छत्रीमध्ये उभे आहोत अशातली ती गत आहे.

### हेलन गॉविद :-

सन्मा. आयुक्त साहेब मला वाटते की, सन्मा. नगरसेवक बर्नड साहेबांनी संपुर्ण हॉस्पिटलची जी परिस्थिती सांगितलेली आहे. त्याच्यानंतर जवळ जवळ १५ ते २० बायका आपल्याकडे आल्या आहेत. सन्मा. उपमहापौर साहेब, त्यांच्याबरोबर आपण डिसक्स केलेले आहे. आणि तुम्ही १५ दिवसाचा आम्हाला अवधी दिलेला आहे. की, १५ दिवसामध्ये आम्ही कुठली तरी व्यवस्था करू. आम्हाला तिथली लोक विचारतात. अक्षरशः तिथे तुमच्याकडे साहित्य नाही तर लोकांकडून हातोड्या, कोयते घेतले जाते आणि तिथे घाण अवयव पडलेले असते तिथे मुंग्या झालेल्या. पाच सहा दिवस तसेच होते. ते बघून मुल घाबरली व त्यांना ताप आला. तिथे एवढी दुर्गंधी येते. बायका अक्षरशः घर सोडून दुसरीकडे रहायला गेल्या. कारण तिथे पुर्ण वस्ती आहे. तुम्ही ह्याच्यावर लवकरात लवकर काहीतरी उपाय करा. अन्यथा त्या बायका पुन्हा महापालिकेत यायला तयार आहेत. ते आम्हाला प्रश्न विचारतात की, ह्याच्यावर काय झाले आहे. आम्हाला तुम्ही सांगितले की, १५ दिवसांचा अवधी देणार. एका दिवशी तर आठ बॉडी आली आणि संपुर्ण दुर्गंधी पसरलेली आम्ही पाहिलेले आहे. संपुर्ण गाव उठणार होते तरी आम्ही तुम्हाला सहकार्य केले.

**डॉ. राजेंद्र जैन :-**

मा. महापौर साहेब, पोस्टमार्टम रूम स्टार्ट करनेके लिए आवश्यक निर्देश होते की, जहा पोस्टमार्टम होगा उसके आसपास इतना डिस्टन्स होगा। मेडीकल कॉलेज के अंदर कोई भी बडै अस्पताल के अंदर पोस्टमार्टम कोने के साईड मे होता है। जैसे म्युनिसिपल हॉस्पिटल बांधती है उसका आर्किटेक्ट होता है। ऐसे आपने पोस्टमार्टम रूम डिस्प्युट करनेका सोचा, जब आपने उसका ले आउट प्लान स्टडी किया था क्या? वहापर पोस्टमार्टम के लिए अपना सिस्टम स्टटअप किया तो उसके पहिले जो आवश्यक जरूरी कार्यवाही होती है उसका काम कही से स्टडी करके किया था?

**मधुसुदन पुरोहित :-**

मा. महापौर साहेब, जब इस विषयपर अपनेको परवानगी नहीं मिली थी, तब हमने पत्रव्यवहार किया था की, मिरा भाईंदर महानगरपालिका के लिगल सेल की तरफ से हमलोगोने उनको कोई नोटीस इश्यु की थी क्या? क्या इसबारे हमने कोई लिगल एगल क्रिएट करनेकी कोशीश की थी क्या? इतना बडा शहर है इतने लाख लोग इस शहर मे रहते है। यहा की जो व्यवस्था है उसे कम की गयी तो उसके लिए कोई नए निर्देश या नया विकल्प हमारे लिए उपलब्ध कराया जाएगा क्या? हमारे पास इतनी बडी महापालिका है तो हमारे पास लिगल सेल भी उपलब्ध होगा। यह जरूरी नहीं समझा की, पत्रव्यवहार करने से अच्छा हम लिगल वे से करते तो आज यह बेहाल हो रहा है। हमारे जनता को जो तकलिफ हो रही है वह तकलिफ नहीं होती थी। क्या यह आयुक्त साहेब और मिरा भाईंदर महानगरपालिका की समझके बाहर की चीज थी क्या? या हम लोगोने या जनताने समझाना चाहिए की आप लोगो को लिगल सेल का उपयोग करना चाहिए था। सिर्फ पत्रव्यवहार से कार्य होते तो मेरे ख्याल से हमलोग बहुत अग्रहीन होते। यह बहुत ज्यादा गौरतलब बात है की, हमलोगो को पहिले लिगल सेल का उपयोग करना चाहिए था।

**प्रशांत पालांडे :-**

मा. महापौर साहेब, आयुक्त साहेब बोलत आहेत तर या विषयाचे पूर्ण स्पष्टीकरण त्यांना देवू द्या.

**मधुसुदन पुरोहित :-**

साहेब, हमारे प्रश्नोका उत्तर ही नहीं मिलता है। हमने जो कहा वह सुना, सुनने के बाद उत्तर तो आना चाहिए। हमारे जो प्रश्न है उनके उत्तर ही नहीं है तो पुछने का फायदा क्या है? मैंने प्रश्न पुछा की हमने सिर्फ पत्र व्यवहार किया क्या? हमारे पास लिगलहेज क्रिएट करनेके लिए लिगल अॅडवायझर नहीं है। अगर लिगल अॅडवायझर है तो हमने उनसे लिगल हेजल क्रिएट करना जरूरी नहीं समझा क्या? विकल्प को धुंडने की बहुत ज्यादा समजदारी हममे नहीं है क्या?

**जयंत पाटील :-**

लक्षवेधी पोस्टमार्टम संबंधित आहे आणि लक्षवेधीला धरून जे प्रश्न असतील तेच येथे व्हायला पाहिजे. पाली येथले जे सन्मा. नगरसेवक श्री बर्नड यांनी जो विषय काढला की, आपण म्हणालात की जिल्हापरिषदेचे केंद्र आहे. साहेब, केंद्र जरी जिल्हापरिषदेचे असले तरी तिथे पोस्टमार्टम होते. ते आपल्या शहरातून होते हा महत्वाचा भाग आहे. पोस्टमार्टम साठी येणारे जे शव आहेत ते शहरातीलच आहेत. ते मुंबईवरून आणले जात नाही त्यामुळे त्याच्याकडे लक्ष देणे आपले कर्तव्य आहे. आपण १५ दिवसाची मुदत दिली होती की मुदत उलटून गेली. एका साध्या गोष्टीसाठी सुद्धा महिलांना येथे यावे लागते. आपल्याला निवेदन द्यावे लागते आणि तेवढे करून सुद्धा त्याच्यावर पुन्हा इम्प्लीमेंटेशन काही होत नाही. आपण जर तिथली परिस्थिती पाहिली तर लोकवस्तीमध्ये आहे. तिथे शव कापले जातात. वेळे प्रसंगी कोळी लोकांकडून कापावयास कोयते मागितले जातात हा प्रकार योग्य नाही. म्हणजे साडे तीनशे करोड बजेट असणाऱ्या महापालिकेला हे लांछनास्पद गोष्ट आहे. आपण ह्याच्यावर सिरियसली अॅक्शन घ्यायला पाहिजे. ताबडतोब अॅक्शन घ्यायला पाहिजे. १५ दिवस तर आपण खुप दिवस सांगितले होते. जे जे सोयीनुसार करता येईल. त्यांच्या माहितीप्रमाणे त्याठिकाणी दुसरे केंद्र आहे तिथे जागा आहे. आपण बघुन घ्या आपल्या आरोग्य अधिकाऱ्यांना पाठवा या शहराचे आरोग्य अधिकारी आजारी पडलेले आहेत. त्या ज्या खिडक्या आहेत त्यांना झडप्या नाही. आपण त्या खिडक्या बंद करू शकलो असतो. लहान मुल त्याच्यातून आत डोकावतात बघतात आणि रात्री झोपेत उठतात ही वाईट परिस्थिती आहे. साहेब, या विषयावर आपण गांभीर्याने लक्ष द्या.

**प्रशांत पालांडे :-**

आयुक्त साहेब, माझा प्रश्न होता की, रूग्णालय नाही म्हणून आपले केंद्र सुरु होत नाही की डॉक्टर नाही म्हणून केंद्र सुरु होत नाही.

**मिलन म्हात्रे :-**

मा. महापौर साहेब, सभागृहामध्ये आयुक्तांनी जे काही वक्तव्य केले. सर्व नगरसेवक स्वतः आपण माझे सन्मा. सदस्य, आयुक्तांनी केलेले वक्तव्य हे ह्या सभागृहाची संपुर्णपणे दिशाभुल करणारे आहे. अगदी छातीठोकपणे आणि पुराव्यानिशी मी सांगतो. कारण जमीन हस्तांतरण होणे. न्यायालयाच्या माझ्या याचिकेमुळे निकाल आला. निकाल आल्यानंतर १५ मे २००७ ला आपल्या महापालिकेने उच्च न्यायालयाच्या निकालानुसार सहा महिन्यामध्ये प्रत्यक्ष स्वरूपामध्ये भाईंदर (पश्चिम) टेम्बा हॉस्पिटलच्या बांधकामास सुरुवात करावयास हवी होती. शेवटी, जेव्हा उच्च न्यायालयाच्या न्यायाधिषाने निकाल दिला. त्यावेळेला आपल्या दुर्दैवाने मिरा

भाईदरचे शहरवासिय आपण सर्व नगरसेवक यांच्या दुंदैवाने महापालिकेच्यावतीने आयुक्त किंवा त्या आरोग्य विभागाचा एकही बीएमसी महापालिकेच्या वतीने उच्च न्यायालयाच्या न्यायाधिशसमोर हजर नव्हते. त्यामुळे त्याठिकाणी.....

**मा. महापौर :-**

सन्मा. सदस्य आपण लक्षवेधीला धरून बोला. विषय वेगळा आहे.

**मिलन म्हात्रे :-**

ही लक्षवेधी आहे. त्याच्या वरच मी येत आहे. लक्षवेधी काय आहे ते मला सांगा.

**मा. महापौर :-**

विषय असा आहे की, पोस्टमार्टमसाठी.....

**मिलन म्हात्रे :-**

पोस्टमार्टम म्हणजे हॉस्पिटलचे काम योग्य वेळेत झाले नाही. त्याठिकाणी पोस्टमार्टमचे काम सुरु झाले नाही म्हणून ते तिथे गेले. ए.बी.सी.डी पैकी ए टू झेड सगळे मला माहित आहे. मी जे बोलत आहे ते आपण ऐकून घ्या अशी माझी विनंती आहे.माझी तुम्हाला कळकळीची विनंती आहे. यामध्ये कुठलेही राजकारण करू नका. उच्च न्यायालयाने स्पष्टपणे निकालपत्रामध्ये सांगितले कोणत्याही स्वरूपामध्ये आहे ती एक्झीस्टिंग सोय महापालिकेने बंद करायची नाही. जिल्हा परिषदेचे विशेष कार्यकारी अधिकारी श्री. सुभाष हजारे साहेबांकडे आम्ही आयुक्त वगैरे भेटायला गेलो. त्या सभेमध्ये सुद्धा आपले आरोग्य अधिकारी अॅन्टीकरण मध्ये गेलेले नव्हते. श्री. राठोड साहेब नव्हते. पण त्यावेळेला श्री. सुभाष हजारे साहेबांनी सांगितले, तुमच्या मिरा भाईदर च्या लोकांना शवविच्छेदनाची सोय गैरसोय होऊ नये म्हणून मी माणूसकीच्या दृष्टीकोनातून त्यांना एक महिन्याचा अवधी देतो आणि माझा स्टाफ मी ठेवतो. पण त्या एक महिन्यामध्ये तुम्ही कायमस्वरूपी स्वतःची सोय करावी. त्याच्यामध्ये त्यांना मी, सांगितले की आमच्या येथे डॉक्टर आहे ते करू शकतील का? तर ही कॅन ते एम.बी.बी.एस आहे एम.बी.बी.एस.च्या परिक्षेच्या अगोदर एक पेपर असतो, कॉरोनर म्हणजे शवविच्छेदनाचा पेपर जो डॉक्टर पास करतो तोच डॉक्टर एम.बी.बी.एस होतो. आपल्याकडे एम.बी.बी.एस तीन डॉक्टर आहेत आणि त्यांनी सांगितले इतर महापालिका आहेत त्या स्वतः फॉरनर करतात म्हणजे पोस्टमार्टम करतात. तुमच्या इथल्या एम.बी.बी.एस. डॉक्टरांनी उद्यापासून केले तरी आमची काही हरकत नाही. हे आमच्या समोर झाले आहे. ह्याची कोणीही दखल घेतली नाही. आपले डॉक्टर आपल्या दवाखान्यात असतात, नसतात. कुठे असतात भगवान जाणे? पण जाणूनबुजून हेतु पुरस्परपणे त्याठिकाणी दुर्लक्ष केल्यामुळे आज उत्तनला आपल्या इथल्या बॉड्या घेवून जाव्या लागतात. आपले इथले आरोपी वसईच्या पी.एच.सी. मध्ये न्यायला लागतात. पोलीस स्टेशनचे आरोपी भगवती हॉस्पिटलला घेवून जावे लागते. काही बेवारस बॉडी आपल्याला ठाणे येथे घेउन जायला लागतात. ही परिस्थिती उद्भवली आहे. ह्याला कारण आपले प्रशासन आहे. महापालिकेच्यावतीने सचिवांनी म्हणा, आयुक्तांनी म्हणा या तीन महिन्यामध्ये या गोषवाच्यामध्ये अजूनपर्यंत काहीही दिलेले नाही. या विषयपत्रिकेत कुठली पत्रे आलेली आहेत, गेली आहेत. वास्तविक पाहता आयुक्तांनी जिल्हा परिषदेचे विशेष कार्यकारी अधिकारी आणि आपली महापालिका ह्याच्यात एवढी मोठी जागा घेण्याचा जो करार झाला त्याची माहिती सदनाला दिली पाहिजे. त्याचे आपण २ करोड ८२ लाख रुपये भरत आहोत. ही रक्कम छोटी नाही. ही जी पध्दती आहे, मागच्या सभेला आपण एक रुलिंग दिली. गेल्या तीन महिन्यांचा पत्रव्यवहार आपण पटलावर ठेवा. ते याच्यामध्ये अजूनपर्यंत दिलेले नाही. तुम्ही आणि आम्ही येथे बसून एवढा वेळ वेस्ट करतोय आणि प्रशासन आपल्याला एक ही पत्र देत नाही. आमचे तर सोडा, तुमचीही दिशाभूल करतात. आता एवढे मोठे ट्रान्झेक्शन झाले त्याची पत्र लावली पाहिजेत की, नाही ही जागा आम्ही विकत घेतली. या तारखेला ही जागा आपल्या ताब्यात मिळाली हे तुमच्या माहितीकरिता सादर. पण तसे काही नाही. ही जी संपूर्णपणे दिशाभूल करण्याची पध्दत चालली आहे, त्यामुळे तिथे लॉ अॅन्ड ऑर्डर मेन्टन करायला प्रॉब्लेम झालेला आहे. आमचे काही सदस्य बोलले ते बरोबर आहे. पण आपल्या येथे होणारी वास्तु याच्यात दुर्लक्ष केल्यामुळे आपली जागा ताब्यात घेण्यासाठी अडीच महिने गेले. म्हणजे मी तर अडीच, पाच आणि दोन, साडे सात महिने गेले. निकाल झाल्यानंतर प्रोसेस सुरु झाली पाहिजे. सर्व्हे करायला नउ महिने गेले. साहेब, गेल्या महिन्यात सर्व्हे झाला. अधिकाऱ्यांना आम्ही जागे केले, १ लाख २० हजार रुपये भरले आणि अचानक तो सर्व्हे झाला. अॅग्रीमेन्ट झाल्यानंतर सर्व्हे झालेला आहे. आपण स्वतः व्यवहार करता, व्यवसाय करता. पहिले जागा मोजल्याशिवाय पैसे घेता का? पण आपण पहिले पैसे दिले नंतर सर्व्हे झालेला आहे. सर्व्हेच्या सीट अजूनपर्यंत कोण आणायला गेलेले नाहीत. ह्याच्यात एक स्पेसीफिक ऑफीसर नेमला पाहिजे. त्याची अजूनपर्यंत नियुक्ती झालेली नाही. ते ह्याच्याकरिता सांगतोय, अजूनही वेळ गेलेली नाही. लोक रस्त्यावर येतील त्याची वाट बघू नका. आपल्याकडे डॉक्टर आहेत. प्रशासनाला कोणती अडचण होती की, आपल्या इथल्या एम.बी.बी.एस. डॉक्टरला तिथे पोस्टमार्टम कर म्हणून सांगायची. तुम्ही ज्यादिवशी ते सगळं ताब्यात घेतले त्यादिवशी तिथले आस्थापना काढून घेतली. नर्सस वगैरे सर्व जिल्हापरिषदेने काढले आणि तिथे त्या जागा कमी झाल्या आहेत. बसायला जागा आहे. पोस्टमार्टम रुम आहे. तुमचा डॉक्टर प्रेगनन्सीच्या महिलांना रिटर्न करतात. आज आपल्याकडे फुकट डिलेव्हरीच्या केसेस व्हायच्या. ज्या गरोदर महिला आहेत त्यांची तपासणी व्हायची. हे गेल्या तीन महिन्यापासून बंद आहे. हे इलेक्शनच्या अगोदरपासून बंद आहे. इलेक्शन

होते म्हणून आम्ही काही बोलू शकत नव्हतो. त्या दरम्यान आचार संहिता होती. पण आज गोरगरीब महिलांना तिथे कोणत्या सोयी-सवलती मिळत नाही. ह्याला जबाबादार कोण? आपल्या ओ.पी.डी. मध्ये ज्या सोयी नाही ते त्या हॉस्पिटलला मिळायच्या. टी.बी. चे पेशन्ट तपासले जात नाहीत. त्याला तीन महिने झाले आहे. गर्हर्मॅन्टच्या बऱ्याचशा स्कीम आहेत ते तिथे चालविल्या जात नाही. ह्याला जबाबादार कोण? आपले अधिकारी त्यांना काय पडलेले नाही. दोन तीन वेळा श्री. पडवळ साहेबांना भेटलो. त्यांनी आम्हाला उत्तर ही दिलेले नाही. या सगळ्यावर आपले काय रुलिंग आहे का? ते द्या. मी जे बोलतो त्याच्यावर रुलिंग द्या. फक्त उत्तनला करू नये. तर कुठे करावे? आमच्या येथे का बंद आहे? कोणी बंद केले? आदेश देणारा अधिकारी योग्य होता का? आज आपल्याकडे चीफ मेडीकल ऑफीसरचे पद, म्हणजे हे जे श्री. पडवळ आहेत ह्यांना अधिकार नाही त्या पदावर बसायचा त्यांचे डेजीगनेशन अलग आहे. आज जिल्हा वैद्यकीय अधिकारी रॅकचा अधिकारी तिथे पाहिजे. तो घेत नाही आणि सगळ्यात मोठा कहर जो आतापर्यंत जे अधिकारी वाढवत आहेत, आपल्या महापालिकेच्या कमिशनर साहेबांनी स्टेट गर्हर्मॅन्टकडे दोन एम.बी.बी.एस. डॉक्टर मागितले. आम्हाला आणखीन प्रतिनियुक्तीवर द्या. म्हणजे आहेत ते कशासाठी आहेत. मागवणार आहेत ते का मागवतात. ह्याचे कुठे तुम्हाला आम्हाला स्पष्टीकरण नाही. आज प्रतिनियुक्ती डॉक्टर मागितले गेले त्याचे त्याच्यामध्ये पत्र आहे. का, तर पोस्टमार्टम करणार. प्रतिनियुक्तीला तीन महिन्यांनी मंजुरी मिळेल म्हणून आपण मेलेल्या नातलगाच्या नागरीकांच्या बॉड्या बाहेर जाणार का? या सगळ्यांची व्यवस्थित चौकशी झाली पाहिजे. हा जो विषय आहे, तो एवढा गंभीर असूनसुद्धा प्रशासन काहीच करायला मागत नाही. तिथल्या पेशन्टची अवस्था काय आहे, याबाबत अधिकाऱ्यांनी पाहणी केली का? ज्या गरोदर महिला येतात, बाळंतपणाकरिता ज्यांच्याकडे पैसा नसेल तिथे गोरगरीबांची तीन तीन डिलीव्हरी एका टाईमला झालेली आहे. आज त्यांची व्यथा काय? आपण आपल्या ओ.पी.डी. मध्ये हे करत नाही. मग ते का केले गेले नाही? ते तुमच्या रुलिंगमध्ये तसे आले पाहिजे की, तीन-चार महिने याच्यावर कोणाचे लक्ष का नाही? त्याचा अधिकारी कोण आहे? आणि डॉ. पडवळ आज आजारी आहेत. लोक आजारी पडतात त्याचे बोला. डॉ. पडवळ गेले तर बाकीचे दोन अजून आहेत ना, ते काय करतात? ही बाब आपल्या येथे शरमेची आहे. आपला जो आरोग्य अधिकारी होता, तो अॅन्टीकरणमध्ये गेला. ही फार शरमेची बाब आहे. डॉ. राठोड साहेबांचे काय झाले त्याचे स्पष्टीकरण येथे दिले का? त्यांना आपल्या आस्थापनेवरून कमी केले. ते बडतर्फ झाले किंवा आम्हाला न्यायालयाचे आदेश आले किंवा आम्ही जावून आदेश काढून घेवून आलोत. त्याचे सर्व स्टॉप केले. तसे काहीच नाही. अॅन्टी करणची रेट पडली आणि ते गेले व सभागृहापुढे त्याचे आपल्याला काही दिले गेलेले नाही. महत्वाचा क्लास-१ ऑफीसर होता. त्यांच्या पोस्टबद्दल काय झाले. आस्थापनाने काय केले? उद्या ते क्लेम करू शकतात. माझी एवढी विनंती आहे. बस्स झाले, आपल्याला ह्याच्यामध्ये राजकारण करायचे नाही. पण लोकांच्या, नागरिकांच्या आरोग्याच्या दृष्टीकानातून आपण रुलिंग द्या व त्याच्यावर अॅक्शन होईल असे बघा. धन्यवाद.

#### डिमेलो बर्नड :-

साहेब, मला असे सुचवायचे होते की, महानगरपालिकेमध्ये सफाई ठेक्याद्वारे दिली जाते. सिक्युरिटी आणि काही विभाग आपण ठेक्याद्वारे देतो. जर आपल्याजवळ हॉस्पिटल व त्याप्रकारची सोय नसेल तर ही जी पध्दत आहे ती काही कालावधीसाठी दिली जावू शकते का? इमारतीसाठी आहे की, डॉक्टरांसाठी आहे. शवविच्छेदन असो की, हॉस्पिटलची असो. टेंभा हॉस्पिटल बंद झाले. प्रत्येक गोष्टी आता ठेक्याद्वारे केले जाते. आपल्याला जर उशिर होत असेल आणि ते करण्यामध्ये काही अडथळे येत असतील तर ही बाब दुर करण्यासाठी ठेक्याद्वारे केली जावू शकते का? दुर होउ शकते का? मला वाटते की, त्याच्यावर सभेमध्ये विचार व्हावा आणि आपण लवकरात लवकर निर्णय घ्यावा.

#### मा. आयुक्त :-

सभागृहामध्ये आता लक्षवेधीवर जी चर्चा सुरु होती. त्या चर्चेच्या अनुषंगाने सन्मा. सदस्यांनी जे जे प्रश्न याठिकाणी उपस्थित केलेले आहेत त्याबाबतीमध्ये मी मघाशी निवेदन करतच होतो, सन्मा. नगरसेवक श्री. पालांडे यांनी जो प्रश्न विचारलेला होता त्या संदर्भामध्ये मी सांगु इच्छितो की, हे जे शव विच्छेदन केंद्र आहे. या शवविच्छेदन केंद्रावर आपल्याला खाजगीरित्या म्हणजे आपल्या महापालिकेचे जे डॉक्टर्स आहेत. सन्मा. नगरसेवक श्री. मिलन म्हात्रे यांनी सभागृहाला जी माहिती दिली की, एम.बी.बी.एस डॉक्टर हे करू शकतात. माझ्या माहितीप्रमाणे तसे नाही कारण, शेवटी शासनाने त्यांना लिगललाईज करायला पाहिजे. शासनाने त्यांना अधिकार पत्र द्यायला पाहिजे. त्यांच्याशिवाय पोस्टमार्टम करू शकत नाही. कारण आपल्या ठाणे जिल्हामध्ये बऱ्याचशा महापालिका आहेत बऱ्याचशा नगरपालिका आहेत. त्यांच्यामध्ये अशाप्रकारच्या आरोग्य केंद्र सेवा सुरु असतील त्या ठिकाणी एम.बी.बी.एस डॉक्टर कार्यरत असतील. पण सगळ्यांनाच शवविच्छेदन करण्याची परवानगी नाही आणि त्याप्रमाणे सुद्धा याबाबतीमध्ये मी स्वतः समक्ष संचालकांशी बोललेलो आहे. संचालकांनी सुद्धा आम्हांला सांगितलेले आहे की, अशाप्रकारे तुम्हाला आम्हांला अलाउड करता येणार नाही. जे कोणी प्रतिनियुक्तीने आम्ही अधिकारी पाठवितो प्रतिनियुक्तीने अधिकारी पाठविल्यानंतर त्यांच्याकडून तुम्ही अशाप्रकारची सोय उपलब्ध करून घेउ शकता. सन्मा. नगरसेवक श्री. पालांडे यांनी एक प्रश्न उपस्थित केला की, अशाप्रकारची पद आपल्याकडे मंजूर आहे का? आपल्याकडे वैद्यकीय अधिकाऱ्याचे पद मंजूर आहे. परंतु, आपण प्रतिनियुक्तीने जी मागणी केलेली आहे ते सध्या आपल्याकडे मंजूर नाही. ते आपल्याला मंजूर करावे

लागतील. दोन डॉक्टर किंवा एक डॉक्टर व बाकीचे त्यांना सहकारी कर्मचारी लागतात. सहकारी कर्मचारी आपल्या सेवेमधून सुद्धा वर्ग करता येईल तो विषय नाही. परंतु, कमीत कमी मेडिकल ऑफीसरचे पोस्ट आपल्याला क्रिएट करावे लागेल किंवा ते अधिकार महापालिकेच्या वैद्यकीय अधिकाऱ्यांना प्रदान करणेबद्दल विनंती केलेली आहे. संचालकांना तसे पत्रही पाठविलेले आहे. ते पत्र याठिकाणी आहे.

**मिलन म्हात्रे :-**

आपल्याकडे पत्र आहे. पण आमच्याकडे नाही. इतर पत्रव्यवहारामध्ये काहीच दिलेले नाही.

**मा. आयुक्त :-**

सन्मा. नगरसेवक मिलन म्हात्रे, महापालिकेने जे पत्र संचालकांना पाठवलेले आहे ते पत्र आपल्याकडे.....

**मिलन म्हात्रे :-**

ते तुम्ही सभागृहापुढे दिले पाहिजे ना, म्हणजे आमचा वाद होणार नाही. आम्हांला कळेल ना, आपण काय करता ते?

**मा. आयुक्त :-**

आपले म्हणणे बरोबर आहे.

**मिलन म्हात्रे :-**

गेल्यावेळेस मा. महापौरांनी तुम्हांला रुलिंग दिले होते तुम्ही बाजूला बसलेले होता. आम्ही तीन महिन्यांची सर्व पत्र पुढच्या मिटींगला ठेवू. एकही पत्र आलेले नाही. न्यायालयाचे ऑडर आलेले नाही, काही आलेले नाही. आणि आपण जे म्हणता, ज्यावेळेला आपला टेम्पररी वैद्यकीय स्टाफ घेतला तो ठराव नीट वाचा. मी सभागृहामध्ये त्यावेळेला हजर होतो. कायम स्वरूपी अधिकारी येईपर्यंत सदर स्टाफला मुदतवाढ किंवा त्यांची टेम्पररी नियुक्ती ही केली जाते. हा अडीच वर्षापूर्वीचा ठराव आहे. आपण अडीच वर्षे ही पद भरण्याकरिता कोणते प्रयत्न केले तर काही नाही. त्यावेळेला प्रयत्न केले नाहीत. म्हणून आपल्याला आज पत्रव्यवहार करण्याची वेळ आलेली आहे आणि तुम्ही जे म्हणता ते माझ्या माहितीनुसार कल्याण-डोबिवली, ठाणे महानगरपालिका, उल्हासनगर महानगरपालिका या महानगरपालिकांमधील डॉक्टर शवविच्छेदन करतात. डॉ. पडवळ यांच्या नावाने जर आपण सरकारकडून परवानगी मागितली असती तर ती लगेच मिळाली असती. प्रतिनियुक्तीचा अधिकारी, माझ्या माहितीनुसार श्री. आर.डी.शिंदे साहेब असताना सुद्धा मी स्वतः प्रयत्न केले आहे. आपल्याकडे प्रतिनियुक्तीचा जिल्हा आरोग्य वैद्यकीयच्या रँक चा अधिकारी आपल्याकडे यायला तयार नव्हता. जिथे डॉ. राठोड साहेब बसतात, संचालक त्यांनी सांगितले की.....

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

सन्मा. नगरसेवक, आयुक्त साहेबांकडून आपण पूर्ण खुलासा करून घ्या. शेवट तर माहित पडेल की, महापालिकेने काय व्यवस्था केलेली आहे. डॉक्टर करू शकत नाही, तो करू शकत नाही, हा करू शकत नाही. शेवटी, लोकांची भावना काय तर आपल्या शहरामध्ये पोस्टमार्टम होणार ते किती दिवसात होणार, प्रशासनाने काय केलेले आहे.

**मिलन म्हात्रे :-**

आमचे म्हणणे असे आहे की, आपण डॉ. पडवळ साहेबांच्या नावाने मंजूरी आणा ना. अजून तीन डॉक्टर आहेत त्यांच्या नावाने तुम्ही मंजूरी आणा. नविन माणसं कशाला घेता. त्या वैद्यकीय अधिकाऱ्यांच्या नावाने मंजूरी घ्या.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

साहेब, आपण आपले क्लेरिफिकेशन करा की, आपली काय व्यवस्था आहे? किती दिवसात होणार आहे की, नाही तो डॉक्टर करणार तो करू शकत नाही हा करू शकत नाही, प्रतिनियुक्तीने हे काय चालले आहे.

**मा. आयुक्त :-**

महापालिकेने जे पत्र पाठवलेले आहे. त्या पत्राच्या संदर्भामध्ये संचालकांनी मा. प्रधान सचिव, सार्वजनिक आरोग्य विभाग यांना १९/१०/०७ ला पत्र पाठवलेले आहे आणि त्याच्यामध्ये त्यांना सांगितलेले आहे की, संदर्भिय वरील टिप विचारात घेता, मिरा भाईंदर महानगरपालिका येथे दोन वैद्यकीय अधिकारी यांची प्रतिनियुक्ती केल्यास तेथील शवविच्छेदन सेवा सुरु करता येईल असे शासनास विनंती करता येते मिरा भाईंदर महापालिका येथे शासनाकडून दोन वैद्यकीय अधिकाऱ्यांची प्रतिनियुक्ती त्यांच्या वेतन व भत्ते मिरा भाईंदर महानगरपालिका अदा करेल. या अटीवर मंजूर करण्यासंदर्भात आवश्यक ते आदेश निर्गमित झाले. यानंतर जेव्हा १९/१०/०७ ला पत्र पाठवले. तेव्हा १९ तारखेला संध्याकाळीच मला हे सगळं कळलं. त्यानंतर मी स्वतः प्रधान सचिव, नगरविकास यांची भेट घेतली आहे आणि त्यांना सुद्धा विनंती केलेली आहे की, आपण आपल्या स्तरावर प्रधानसचिव, सार्वजनिक आरोग्य विभाग यांच्याशी आपण बोला आणि तातडीने या सेवा आमच्याकडे वर्ग करा. जेणेकरून याठिकाणी नागरिकांना जो काही त्रास होणार आहे तो नागरिकांचा त्रास आपण कमी करणार आहोत.



**प्रशांत पालांडे :-**

आयुक्त साहेब, आपण आता जे स्पष्टीकरण दिले त्याच्यामध्ये साधारणपणे असे वाटते की, डॉक्टर नाही म्हणून आपले हे शवविच्छेदन केंद्र सुरु होत नाही. आपल्या आरोग्य विभागाचे पत्र मला आलेले आहे. त्यात स्पष्टपणे म्हटलेले आहे. महानगरपालिका मालकीचे एकही रुग्णालय नसल्याने, महानगरपालिकेतर्फे शवविच्छेदन सेवा देवू शकत नाही. आपले मिरा रोडला जे नविन हॉस्पिटल प्रस्तावित आहे तिथे आपण पी.एम.सी. चालू करणार आहोत का किंवा दुसरी पर्यायी व्यवस्था काय आहे आणि तुम्ही म्हणता त्याप्रमाणे पदनिर्मिती करायची असेल तर त्याच्यामध्ये आणखिन बराचसा वेळ जाणार आहे. मग आपले शवविच्छेदन केंद्र सुरु कधी होणार?

**मा. आयुक्त :-**

हे जे पत्र, संचालकांनी प्रधान सचिव, आरोग्य विभागाला दिलेले आहे. त्याचा पाठपुरावा आपण करत आहे. रोज एक दिवस आड आपण त्यांच्याशी बोलत आहे. जर समजा त्यांनी आपल्याला प्रतिनियुक्तीने दिले तर तातडीने टेम्बा हॉस्पिटल सुरु करता येईल.

**डिमेलो बर्नड :-**

मला असे बोलायचे आहे की, प्रत्येक गोष्टीकरिता पाठपुरावा चालतो. पण शवविच्छेदन प्रक्रिया यामध्ये माणसांचा जो मृत्यू होतो. त्याच्यामध्ये हा विलंब आणि अशी उत्तरे देणे, मला तरी वाटते की, आपल्याला हे शोभत नाही. लवकरात लवकर त्वरित करण्याजोगी ही गोष्ट आहे. तुम्हाला महानगरपालिकेच्या नियमामध्ये आणि कायद्यामध्ये करायला बोलले जात आहे. माणूस गेला. त्या गोष्टीमध्ये महानगरपालिकेने सर्व काम बाजूला ठेवून ते काम केले पाहिजे. हा आपला भाग आहे. दुधाची आणि मासळीची गाडी जकात नाक्यावर थांबवू शकत नाही. त्याप्रकारची ही गोष्ट आहे. त्याच्यासाठी आपण पाठपुरावा करण्याची वाट बघत राहणार हे आपल्याला शोभत नाही. काहीतरी निर्णय घेतला पाहिजे. तो निर्णय आता घेतला पाहिजे.

**मा. आयुक्त :-**

या बाबतीमध्ये नियम आहेत. कायदे आहेत.

**डिमेलो बर्नड:-**

नियम तोडून करायचे नाही. आपल्याला नियमामध्येच राहून करायचे आहे.

**मा. आयुक्त :-**

नियमामध्ये बसुनच आपण ही कार्यवाही करत आहे.

**डिमेलो बर्नड :-**

तरतुद करा. पाठपुरावा हा शब्द बराच लांब जावू शकतो.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

आयुक्त साहेब, आता उत्तनला जिल्हापरिषदेच्या माध्यमातून अजुन पोस्टमार्टम होत आहे. ते पोस्टमार्टम आपल्या टेंभा हॉस्पिटलमध्ये शिफ्ट करा आणि त्यांना सांगा की, उत्तनला व्यवस्था नाही म्हणून खास प्रयत्न करावा. एवढी तरी सवलत करा. म्हणजे आपल्याला डॉक्टर मिळेल व शवविच्छेदन करण्यासाठी रुम आहे. उत्तनला न करता जिथे आहे तिथे व्यवस्था करा. एवढे झाले तरी बरे होईल.

**मा. आयुक्त :-**

आपण म्हणता त्याप्रमाणे आपल्याला कार्यवाही करता येईल. त्याप्रमाणे मी डॉक्टरांशी बोललेलो आहे. याबाबतीमध्ये माझ्याकडे जे काही सन्मा. नगरसेवक कमीतकमी तीन-चार वेळा आलेले होते. याबाबतीमध्ये मा. उपमहापौरजी आहेत त्यांना ही बाब माहित आहे आणि त्यांना सुध्दा मी हे सर्व सांगितले आहे.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

आमची एवढी विनंती आहे की, उत्तनला करतात ते भाईदरला आणा. त्यांचे डॉक्टर येथे मागवा.

**मा. आयुक्त :-**

जिल्हापरिषदेचे जे डॉक्टर आहेत त्यांच्याशी मी दोन वेळा चर्चा केली. त्यांना सांगितले की, तिथले शवविच्छेदन केंद्र टेंभा हॉस्पिटलला आणण्यासाठी तुम्ही तुमच्या वरिष्ठांची परवानगी घ्या आणि आम्ही त्याला संपूर्ण सहकार्य करायला तयार आहोत. हे सर्व त्यांना बोलावून मी स्वतः सांगितलेले आहे.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

साहेब, आपण ह्या प्रोसीजरसाठी पाठपुरावा करा. आपण प्रतिनियुक्तीने डॉक्टर मागवले ते येणार की, नाही. हा विषय लवकर न होण्यासारखा आहे. म्हणून पाहिजे तर येथील सन्मा. नगरसेवक, गटनेते जावून तिथे रिक्वेस्ट करायची आहे. त्यांना रिक्वेस्ट करू.

**मिलन म्हात्रे :-**

मा. महापौर साहेब, उत्तनला पाली येथे जे डॉक्टर शवविच्छेदन करत आहेत.

**डॉ. राजेंद्र जैन :-**

आयुक्त साहबने अभी एक पत्र का रेफरन्स दिया और जवाब दिया, उसमे कहा गया की, हर एक एम.बी.बी.एस. डॉक्टर यह नहीं कर सकता। उसके लिए शासन से ऑर्डर लेना पड़ता है। उनका पहिले एक जवाब दिया, दुसरा उन्होंने पत्र का रेफरन्स दिया है, उसमे यह बोला गया है की, हमने दो वैद्यकिय

अधिकारी के नियुक्ती की माँग की है। मैं यह जानना चाहता हूँ की, उस लेटर के अंदर वह पी.एम. मे सक्षम है या नहीं इसकी माँग की गई है या नहीं की गई है। अगर इसकी माँग नहीं की गई है, इसमें आपने नहीं बोला। इसबारेमें अभी आपने बढकर बोला, चुकी क्या होता है .....

**मा. आयुक्त :-**

इसमें मैं आपको बता देता हूँ की, मैंने जो लेटर गर्ह्रमेनटको लिखा है उसमें यह लिखा है। अगर समझो, आपके पास डॉक्टर है। हमने यह पी.एम. के लिए ही माँग की है।

**मिलन म्हात्रे :-**

आपल्या येथील डॉक्टर आहेत ते विच्छेदन करतील. तसेच, पाली येथील डॉक्टर शवविच्छेदन करतील पण आपल्या येथील डॉक्टरांना तसे राईट्स नाही. आपल्याला ही जागा मिळालेली आहे.

**मिलन पाटील :-**

मा. महापौर साहेब, माझे सहकारी श्री. बर्नड यांनी जो प्रश्न विचारलेला आहे त्यांच्या त्या प्रश्नाला कलाटणी दिलेली आहे.

**प्रशांत पालांडे :-**

आजचा हा विषय पी.एम.सी. ची व्यवस्था आहे की, नाही असा आहे.

**मिलन पाटील :-**

आयुक्त साहेब, आपण सन्मा. नगरसेवक श्री. बर्नड यांच्या प्रश्नाचे उत्तर द्या. ते गाववाले आहेत त्यांना तेथील स्थानिक लोक सारख विचारतात.

**मा. आयुक्त :-**

मी त्या डॉक्टरांशी बोललो.

**मिलन पाटील :-**

जिथे रूग्णांचे शवविच्छेदन केले जाते आपण ते तेथून हटवून त्वरित दुसऱ्या रूममध्ये शिफ्ट करा. एका दिवसामध्ये केबिन शिफ्ट होऊ शकते. सन्मा. नगरसेवकांचे म्हणणे आहे की, तेथील खिडक्या बंदिस्त करा.

**हेलन गोविंद :-**

आमचा ह्याला विरोध आहे. आमच्या येथे नाहीच पाहिजे.

**प्रशांत पालांडे :-**

आयुक्त साहेब, हे जे शव विच्छेदनाचे केंद्र आहे त्याच्याकरिता आपण नविन डॉक्टर मागवणार आहात पण साधारणपणे आपल्या महापालिकेचे शवविच्छेदन केंद्र कधीपर्यंत पूर्ण चालू होणार आहे. ह्याचे स्पष्टीकरण द्यावे. त्यानंतर ही चर्चा संपवावी.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

आपण शासनाकडे प्रतिनियुक्तीने डॉक्टर मागविले आहेत व शासनाने त्या पदावर अजून ती व्यक्ती किंवा तो अधिकारी पाठविलेला नाही. तर आपण ८५ च्या अधिकाराचा वापर करून जाहिर नोटीस प्रसिद्ध करावी. शैक्षणिक पात्रतेचा विषय आहे. शासनाच्या अधिन राहून आपण याला पूर्णपणे मान्यता द्याल.

**मा. आयुक्त :-**

कायद्याची तरतुद सर्वांना बंधनकारक आहे आणि आपण कायद्याच्या बाहेर जावून तशी कृती करू शकत नाही. एखादा निर्णय जर माझ्या स्तरावर घ्यायचा असेल तर तो निर्णय मी पूर्णपणे घेईल.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

८५ च्या (१) चा वापर आपण करू शकता.

**मा. आयुक्त :-**

आपण शासनाला विनंती केलेली आहे की, हे जे नियुक्त केलेले एम.बी.बी.एस. डॉक्टर आहेत त्यांना तुम्ही पोस्टमार्टम करायला अॅथोराईज करा.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

पण अॅथोराईज केले नाहीतर?

**मा. आयुक्त :-**

अॅथोराईज केले नाहीतर, आपण काय करणार?

**प्रफुल्ल पाटील :-**

आयदर यु हॅव टू चेंज सबसिट्युट डॅट पर्सन.

**मा. आयुक्त :-**

कुठल्या?

**प्रफुल्ल पाटील :-**

जे नियुक्ती केले आहे.

**मा. आयुक्त :-**

हे आपल्याकडे प्रायमरी हेल्थ सेंटर कार्यरत आहे. आज आपण प्राथमिक आरोग्य केंद्र ज्या ज्या ठिकाणी चालविले आहे. त्याच्यासाठी आपण जो काही पदनिर्मितीचा प्रस्ताव पाठविलेला होता तो पदनिर्मितीचा प्रस्ताव मंजूर झाल्यानंतर त्याच्यावर त्या नियुक्त्या झालेल्या आहेत. त्या स्टाफच्या बाबतीमध्ये मी बोलत आहे.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

म्हणजे आपण जसे म्हणालात की, सगळ्याच एम.बी.बी.एस. डॉक्टरांना पोस्टमार्टम करता येत नाही. म्हणून कदाचित आपल्या डॉक्टरांना आपल्याकडचे जे एम.बी.बी.एस. आहेत त्यांना करता येईल की नाही. याची मागणी केलेली आहे का?

**मा. आयुक्त :-**

याची मागणी आपण केलेली आहे.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

समजा, जर त्यांना अपात्र ठरविले तर आपण त्यांना सबसिट्युट करणार आहोत का?

**मा. आयुक्त :-**

अजूनपर्यंत त्याच्या बाबतीमध्ये शासनाने काहीच निर्णय घेतलेला नाही.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

म्हणूनच आपल्याला निर्णय घ्यायला पाहिजे ना किंवा तुम्ही जर देत नसाल.....

**मा. आयुक्त :-**

सन्मा. सदस्य आपले जे अधिकार आहेत ते आपले अधिकार आपणच वापरू परंतु जे अधिकार आपल्याला नाही आणि ते वापरायचे असतील तर त्याला आपण शासनाची मंजूरी घ्यावी लागेल.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

इटस नॉट अॅकॉरडींग एनी कन्सेप्ट. जर आपल्याला शासन देत नसेल तर अशा पात्र अधिकाऱ्यांची नेमणूक आम्ही का करू शकत नाही. ती नेमणूक करावी आणि पुढच्या मान्यतेसाठी पाठवावी.

**मधुसुधन पुरोहित :-**

साहेब, शासनातर्फे कमिटी गठीत करणे गरजेचे आहे. आपल्याला त्वरीत कार्यवाही करायची असेल किंवा मिरा भाईंदर शहराच्या लोकांचा हा जो रोष आहे या रोषाला जर थांबवायचे असेल तर ह्याच्यावर त्वरीत कार्यवाही करण्यासाठी कमिटी गठीत करणे गरजेचे आहे. त्यासाठी वेळ कशाला घालवता. ती कमिटी अगोदर गठीत करा. तुम्ही त्याबद्दल काय करू शकता? कारण आम्हालाही जनतेला उत्तर देण गरजेचे आहे. याबद्दलची आपण एम.बी.बी.एस. डॉक्टर्सची नेमणूक करू शकतो का? शासनाकडून आपल्याला काय सहकार्य मिळेल कारण आपल्याला ह्याच्याबद्दल कुठलाही पाठपुरावा करता येत नाही. कित्येक महिन्यांपासून तिथे पोस्टमार्टम बंद केलेले आहे. त्याबद्दल आपण काय कार्यवाही केलेली आहे. प्रशासनाकडून आपण पूर्ण उत्तर घेऊ शकत नाही तर कमिटी गठीत करा. त्याबद्दल त्यांना सांगा, नियम कानून काय आहेत? आपण काय करू शकतो. कारण तुम्ही फक्त चर्चा करता आणि त्या चर्चेचे उत्तर येत नाही. निष्कर्ष येत नाही. येथे बसून दोन दोन तास फक्त चर्चा होते. त्या विषयावर निष्कर्ष निघत नाही. मी नविन आहे. पण मागच्या दोन्ही मा. महासभेत मी बघितले आहे. फक्त चर्चा सत्र चालू असते. ह्याच्यावर निर्णय येत नाही. कारण आपल्याकडे याच्यामधला मार्ग नाही. आम्ही प्रश्न विचारतो आणि त्याच्यावर आपण गोलमोल उत्तर देता. आम्ही त्याच्यावर अजून प्रश्न विचारतो आणि आम्हांला त्याची उत्तर मिळत नाही. याच्यावर त्वरित कार्यवाही काय करण्यांत येणार आहे हे सांगा. ही अखेरची गोष्ट आहे. माणूस मेल्यानंतर दुसरा काहीही पर्याय नाही. एका घरच्या बाईला बघितले ती तिथे १३ तास बसली होती. पण तिथे पोस्टमार्टम झालेले नाही. ज्या बाईचा नवरा गेला, तिच्यापुढे आता काही काही नाही. पण त्याबद्दल आपण या महापालिकेकडून काय करत आहोत.

**मिलन म्हात्रे :-**

माझी अशी सुचना आहे की, आकृतीबंध, नोकरभरती याला एक आठवड्यात मंजूरी कशा पटापट येतात. अधिकारी धावतात-पळतात गाड्या सगळी बोटकी घेऊन मंत्रालयात जातात. तशी मंजूरी लवकर आणा आणि अदयापासून सुरु करा.

**मधुसुधन पुरोहित :-**

आतापर्यंत जे काही विषय चालले आहे ते विषय आतापर्यंत मानवाच्या कल्याणासाठी कुठलाही विषय झालेला नाही. हा जो विषय आहे, याबद्दल मा. महापौर साहेब हाथ दाखवत आहेत. तुम्ही अपुरे उत्तर देत आहात. या चर्चासत्राला निष्कर्ष देणे गरजेचे आहे. तुम्ही उत्तर द्या की, ह्याचे काय होणार? त्वरित कार्यवाही करा.

**चंद्रकांत वैती :-**

सन्मा. नगरसेवक पुरोहितजी, आपण सांगता त्यापद्धतीने कमिटी गठीत होणार नाही. त्याबाबतीत आयुक्तांनाच काम करायचे आहे आणि आज सकाळपासून सर्व अधिकारी, कर्मचारी आणि खुद्द प्रशासन त्याचे हेड आयुक्त साहेब हे पोस्टमार्टमबाबत चर्चा नाही तर आज प्रशासनाच्या कामाचे पोस्टमार्टम चालू आहे आणि

असेच चालू राहणार आहे. आपल्याला आपल्यामध्ये सुधारणा करावीच लागणार आहे. या डायसवर एका नविन मॅडमला मी पाहत आहे त्यांची ओळख सभागृहाला करून दयावी.

**मा. आयुक्त :-**

नियुक्ती वगैरे नाही. डॉ. पडवळ आज हजर नाही व ज्या फाईलवर चर्चा सुरु होती त्या अनुषंगाने ती फाईल मागितली होती त्यांनी ती फाईल मला आणून दिलेली आहे. ते स्टाफ आहे.

**मधुसुधन पुरोहित :-**

आयुक्त साहेब, आम्ही जी मागणी केलेली आहे त्याच्यावर त्वरित काय कार्यवाही करण्यांत येणार आहे?

**एस. ए. खान :-**

तर त्यांनी फाईल देवून जायला पाहिजे का, तिथे बसायला पाहिजे.

**मधुसुधन पुरोहित :-**

त्वरीत काय कार्यवाही करण्यांत येईल ते सांगावे.

**अनिल सावंत :-**

सन्मा. नगरसेवक प्रशांत पालांडे यांनी जी लक्षवेधी मांडली ती खरोखरच महत्त्वाचे आणि आज मिरा भाईंदर शहरातला एक नंबरचा विषय आहे. त्यादिवशी एस.पी.साहेब, श्री. नवल बजाज यांनी भाईंदरला एक मिटींग बोलावली होती तिथे मी गेलो होतो आणि उत्तनची ही काही लोक आली होती. उत्तनच्या लोकांनी परटीक्युरली असे सांगितले की, यापुढे एखादयाची बॉडी पोस्टमार्टम करिता आमच्या येथे आली तर आम्ही रस्त्यावर उतरून बॉडी अडवू. बॉडी हलवून देणार नाही. हा लॉ अॅन्ड ऑर्डरचा फार मोठा प्रश्न आहे. प्रश्न असा आहे की, सध्या जे तुम्ही पोस्टमार्टम करता तिथे सुरक्षा आणि स्वच्छता आहे का? साडे तीनशे करोड रुपयाची महानगरपालिका जर त्या पोस्टमार्टम रुमला दोन खिडक्या लावण्यासाठी पत्रव्यवहार करणार असेल चर्चा करणार असेल तर मला वाटत नाही की बसायला लायक आहोत या सभागृहामध्ये बसायला. प्रथम तिथे स्वच्छता आणि सुरक्षा या गोष्टीची ताबडतोब अरेंजमेंट या उत्तन परिसरामध्ये करावे. संपूर्ण रहिवासी क्षेत्रामध्ये पोस्टमार्टम आहे. ताबडतोब करा.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

मा. महापौर साहेब, तुम्हाला मी स्पष्टपणे सांगतो. खरोखर मनापासून आपल्याला हे काम करायचे असेल तर महापालिकेला ४५(१) खाली अधिकार दिलेले आहेत. जे पात्र, जे पोस्टमार्टम करू शकतात. त्यांच्याकडे जी शैक्षणिक पात्रता आहे अशाप्रकारचे वैदयकिय अधिकारी आपण ताबडतोब भरती करा. त्याला सहा सहा महिन्याची टेम्पररी नेमणुक देवू शकतो. एक्सटेन्शन देवू शकतो.

**मिलन पाटील :-**

आता तिथे जे शवविच्छेदन करतात ते डॉक्टर पुकुल सध्या ते डॉक्टर पोस्टमार्टम करत आहेत. त्यांची मागणी ही आहे की, तुम्ही त्वरित ते आतमध्ये करा. ज्या चार चार बॉडया खाली राहतात. ते बंदिस्त करा. तिथे खिडक्या लावा.

**हेलन गोविंद :-**

ह्याला आमचा विरोध आहे. आम्हांला ते तिथे नकोच आहे.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

महापौर साहब, आप ऐसा निर्णय लिजीए। आप चारो गटनेता और आयुक्त, जिल्हापरिषदेच्या डिपार्टमेंटकडे...

**नयना म्हात्रे :-**

आयुक्त साहेब, गटनेता किती असेल ते सांगा.

**मा. आयुक्त :-**

सन्मा. सदस्य मिलन पाटील आपण आता जी काय सुचना केलेली आहे, ह्यापूर्वी त्याठिकाणी ज्या काही दुरुस्त्या करायच्या असतील त्याकरिता मी दूपारपासून आदेश देतो आणि आज दूपारपासूनच दुरुस्ती करायला सुरुवात करतो.

**हेलन गोविंद :-**

सन्मा. आयुक्त साहेब, तुम्ही दुरुस्ती करणार. परत ते तिथेच ठेवणार. आपण प्रत्यक्ष सिस्टरांच्या, बायकांच्या तोंडून ऐकले आहे. त्यांनी तुम्हांला फक्त पंधरा दिवसाचा अवधी दिलेला आहे. कारण त्यादिवशी तिथे मी होते. मला माहित आहे की, तिथल्या बायका किती चिडलेल्या आहेत आणि लोक किती चिडलेली आहेत. तिथे सोय केली तर ते तिथेच ठेवणार. म्हणून आम्हांला याचा पूर्ण विरोध आहे.

**मा. आयुक्त :-**

मॅडम, ह्याच्यामध्ये दोन इश्यू आहेत. सन्मा. सदस्य मिलन पाटील यांनी जो प्रश्न उपस्थित केलेला होता. सन्मा. सदस्यांना विचारून.....

**मिलन पाटील :-**

कायमची नाही. पंधरा दिवसाचे सांगितले. कायमची मागणी केली नव्हती.

**डिमेंलो बर्नड :-**

पंधरा दिवसासाठी सोय करायला सांगितलेले होते.

**हेलन गोविंद :-**

आपण तिथे कायमची व्यवस्था करूच नका. तिथल्या लोकांना आळी कसे तरी समजावलेले आहे.

**मा. आयुक्त :-**

कायम स्वरूपी पोस्टमार्टम आपल्या टेम्बा हॉस्पिटलमध्ये शिफ्ट करण्याबद्दलचा जो प्रस्ताव आहे त्याच्या बद्दल मी बोललो, सांगितले ही चर्चा सुरु असताना मा. महापौरांना मी विनंती केलेली आहे की, त्या डॉक्टरांनी येउन पोस्टमार्टम करावे.

**मिलन पाटील :-**

ठिक आहे.

**हेलन गोविंद :-**

साहेब, टेम्बा हॉस्पिटल ती आपलीच जागा आहे ना.

**अनिल सावंत :-**

आयुक्त साहेब, आपण माहिती दिली एम.बी.बी.एस. डॉक्टर पोस्टमार्टम करू शकत नाही. ही माहिती एकदम चुकीची आहे. एम.बी.बी.एस. डॉक्टर पोस्टमार्टम करू शकतो. एम.बी.बी.एस. परिक्षेच्या अगोदर अजून एक पोस्टमार्टमची परिक्षा असते ती क्लिअर केल्यानंतरच एम.बी.बी.एस. होता येते. त्यामुळे एम.बी.बी.एस. डॉक्टर आपल्याजवळ असतील.

**मा. महापौर :-**

एम.बी.बी.एस. डॉक्टर पोस्टमार्टम करू शकतो. पण शासनाची परवानगी त्यांना अधिकार दिल्यानंतरच.

**डॉ. राजेंद्र जैन :-**

मा. आयुक्त साहेब, हमारे पास सक्षम एक ऑफिसर है। जो की उत्तन मे काम कर रहा है। हमारे पास मे एक जगह है जहापर पहिले पी.एम. होता था।

**मा. महापौर :-**

हमारे पास नही जिल्हा परिषद के पास।

**डॉ. राजेंद्र जैन :-**

जी हा जिल्हा परिषद के पास वह डॉक्टर हमारे पास है और जगह भी हमारे पास है। हमने उनको जगह उधार दि है। क्या हम उस डॉक्टर को टेम्बा हॉस्पिटल मे शिफ्ट नही कर सकते क्या?

**मा. महापौर :-**

वही बात चल रही है की, उनके जिल्हाध्यक्ष से निवेदन करके.....

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

मा. महापौर साहेब, आप आश्वासन दिजिए की, हमलोग जा रहे है।

(नगरसचिवांनी प्रकरण क्र. ८ चे सभागृहासमोर वाचन केले.)

**प्रकरण क्र. ८ :-**

महानगरपालिका कर्मचाऱ्यांना दिवाळीनिमित्त सानुग्रह अनुदान देणेबाबत.

(सन्मा. सदस्य श्री. एस. ए. खान यांनी प्रकरण क्र. ८ च्या ठरावाचे सभागृहासमोर वाचन केले.)

**प्रकरण क्र. ८ :-**

महानगरपालिका कर्मचाऱ्यांना दिवाळी निमित्त सानुग्रह अनुदान देणेबाबत.

राज्य शासनाने शासकिय कर्मचाऱ्यांना गेले काही वर्षापासून बोनस देण्याचे बंद केलेले असुन महानगरपालिका कर्मचारी बोनस अॅक्ट नुसार बोनस मिळणेस पात्र नाही. त्यामुळे महानगरपालिका कर्मचाऱ्यांना बोनस शासनाच्या निर्णयाशिवाय देता येत नाही. शासनाकडून शासकिय/निमशासकिय कर्मचाऱ्यांना सानुग्रह अनुदान देणेबाबत कोणताही निर्णय जाहिर झालेला नाही. मात्र यापुर्वी राज्य शासन नगरविकास विभाग यांचेकडील पत्र क्र. जीईएन/१०९७/प्र.क्र.२६१/नवि-२४, दि. २७/११/२००२ अन्वये मा. मुख्यमंत्री यांच्या अध्यक्षतेखाली व श्री. महाबळ शेटी, निमंत्रक, महाराष्ट्र राज्य, महानगरपालिका कामगार कर्मचारी संघटना व सर्व महानगरपालिका आयुक्त यांचेसमवेत दि.३१/१०/२००२ रोजी बैठक झालेली होती. सदर बैठकीत महानगरपालिकांनी सानुग्रह अनुदान देणेबाबत आपल्या स्तरावर निर्णय घ्यावा व त्यासाठी शासनाची पुर्वपरवानगी घेण्याची गरज नाही असा निर्णय झाला आहे.

गेल्यावर्षी मा. महासभा दि. १२/१०/२००६ ठराव क्र. ६१ अन्वये महानगरपालिकेच्या वर्ग १ ते ४ संवर्गातील अधिकारी व कर्मचारी यांना रु. ४,८००/- महापालिका शिक्षकांना रु. ३,०००/- व रोजंदारी कर्मचारी व सुवर्ण जयंती कर्मचारी ठोक वेतन व मानधनावरील कर्मचारी यांना रु. २,८००/- बालवाडी शिक्षकांना रु. १३००/- याप्रमाणे सानुग्रह अनुदान अदा केलेले आहे.

सन २००६-०७ या वर्षात महानगरपालिका अस्थापनेवर कार्यरत असलेल्या अधिकारी / कर्मचारी ह्यांना सदरचे अनुदान देय आहे. त्यानुसार सन २००७-०८ च्या मंजूर अल्पसंकल्पीय अंदाजपत्रकात सानुग्रह अनुदानाकरीता लेखाशिर्ष “संकीर्ण” “फ” (१८) मध्ये रू. एक कोटीची तरतुद आहे.

सन २००६-०७ या वर्षाकरिता महानगरपालिका आस्थापनेवरी वर्ग १ ते ४ संवर्गातील अधिकारी व कर्मचारी ह्यांना रू. ५,३००/- मिरा भाईंदर प्राथमिक शाळा शिक्षक वर्ग रू.३,५००/- बालवाडी शिक्षक रू. ३,३००/- सुवर्ण जयंती कर्मचारी, रोजंदारी कर्मचारी, ठोक वेतन व मानधनावरील कर्मचारी ह्यांना रू. १८००/- प्रमाणे दिवाळीपूर्वी सानुग्रह अनुदान अदा करण्यात यावे, असा ठराव मी महासभेपुढे मांडत आहे. कर्मचाऱ्यांनी प्रत्यक्ष काम केलेले दिवसांच्या संख्येच्या प्रमाणात त्याचे वाटप करावे.

**याकुब कुरेशी :-**

सदर ठरावाला माझे अनुमोदन आहे.

**जयंत पाटील :-**

सन्मा. सदस्यांचे मराठी एवढे चांगले आहे की, ते या सभागृहात कोणालाही कळत नाही. सभागृहामध्ये किती कोणाला अनुदान दिले ते आम्हाला कळले पाहिजे.

**चंद्रकांत वैती :-**

ज्या ठरावाचे सभागृहात वाचन केले त्या ठरावाचे वाचन सचिवांनी करावे.

**जयंत पाटील :-**

ठरावाला आमचा विरोध नाही. परंतु, महापालिकेचे जे एक कोटीचे बजेट आहे त्याच्यामध्ये हे सगळ बसते का?

**मा. महापौर :-**

सन्मा. सदस्यांना ठराव वाचायला मंजुरी दिली नव्हती. त्याकरिता तुम्ही तुमचे काय म्हणणे आहे ते मांडा.

**चंद्रकांत म्हात्रे :-**

मतदान घ्या.

**जयंत पाटील :-**

मी ठराव मांडलेला नाही.

**चंद्रकांत वैती :-**

अशापद्धतीने तुम्हाला (माईक बंद करून) लोकशाहीचा गळा दाबता येईल का? ही कोणती पद्धत आहे.

**मा. महापौर :-**

आपण मला शिकवू नका मी त्यांना परवानगी दिलेली नव्हती तरी ते उठून बोलले. परवानगी घेवून बोला ना.

**चंद्रकांत वैती :-**

आम्ही तुमची परवानगी घेणार नाही. आम्ही वाचणार. हा लोकशाहीचा आवाज आहे असे कसे बंद करणार?

**मा. महापौर :-**

म्हणून परवानगी घ्यायची नाही का?

**चंद्रकांत वैती :-**

कशाला? जर तुम्हाला अमान्य करायचे असेल तर अमान्य करा आम्ही विरोधीपक्ष आहोत आणि विरोधी पक्ष तुमच्या परवानगीची वाट कशाला बघणार?

**एस. ए. खान :-**

तुमच्या परवानगीची वाट बघण्याची गरज नाही.

**चंद्रकांत वैती :-**

सभाशास्त्र निट समजून घ्या. दिलेल्या ठरावाचे सचिवांनी वाचन करावे. मा. सभागृहाचे लक्ष वेधू इच्छितो की, सभागृह अनुदान देण्याबाबतचा ठराव उशिराने का होईना पण मिरा भाईंदर महानगरपालिकेने केलेला आहे. मात्र सचिव साहेब मा. महापौर साहेब, मा. आयुक्त साहेबआपण कुठच्याच प्रकारची प्रतिक्रिया दिलेली नाही तर आपली इच्छा देवू नये असे मत आहे का? मग ठरावाचे वाचन करा. आमचा ठराव स्विकारला नाही असे म्हणा आम्ही लेखी ठराव दिलेला आहे. वाचन करा. दुसरा ठराव यायचा आहे तो येईल. मग काय घ्यायचे ते करू, पण ठराव तर वाचा.

**नगरसचिव :-**

दोन्ही ठराव एकदम वाचतो. मतदानाला घ्यावे लागणार.

**निर्मला सावळे :-**

ठरावाला सुचक आणि अनुमोदन झालेले आहे. सचिवांनी तो ठराव वाचायला पाहिजे.

**नगरसचिव :-**

दोन्ही ठराव एकदम वाचतो.

**निर्मला सावळे -**

तुम्ही दोन्ही ठराव येण्याची वाट कशाला बघता?

**जयंत पाटील :-**

मी ठराव मांडत आहे. त्यांच्या ठरावामध्ये सुचना, जर माझे योग्य असतील तर आपण ते अँड करावे.  
(सन्मा. सदस्य श्री. जयंत पाटील यांनी प्रकरण क्र. ८ च्या ठरावाचे सभागृहासमोर वाचन केले.)

**प्रकरण क्र. ८ :-**

महानगरपालिका कर्मचाऱ्यांना दिवाळी निमित्त सानुग्रह अनुदान देणेबाबत ...

मिरा भाईंदर महानगरपालिकेच्या कर्मचारी कामगार संघटनांनी कर्मचाऱ्यांना दिवाळीपूर्वी बोनस व सानुग्रह अनुदान देणेबाबत विनंती केली आहे. परंतु, मागील पाच वर्षांपासून शासनाने कर्मचाऱ्यांना बोनस देण्याचे बंद केलेले असून महानगरपालिका कर्मचारी बोनस अँक्टनुसार बोनस मिळण्यास पात्र नाहीत. त्यामुळे महानगरपालिका कर्मचाऱ्यांना बोनस शासनाच्या निर्णयाशिवाय देता येत नाही. मात्र यासंदर्भात नगरविकास विभाग, मंत्रालय, मुंबई यांचेकडील पत्र क्र. जीईएन-१०९७/प्र.क्र.-२६७/नवि-२४, दि. २७/११/२००२ च्या अनुषंगे दि. ३१/१०/२००२ रोजी श्री. महाबळ शेटी, निमंत्रक महाराष्ट्र राज्य महानगरपालिका कर्मचारी कामगार संघटना व इतर यांच्या मागण्याबाबत मा. मंख्यमंत्री महोदय, महाराष्ट्र राज्य यांचे अध्यक्षतेखाली संपन्न झालेल्या बैठकीतील कार्यवृत्तामध्ये नमुद केल्याप्रमाणे महानगरपालिका स्तरावर आर्थिक परिस्थितीनुसार सानुग्रह अनुदान किती द्यावे याबाबत निर्णय घेण्यात यावा. मात्र राज्य शासन महानगरपालिका कर्मचाऱ्यांना वेतनासाठी कोणत्याही प्रकारचे अनुदान देत नसल्यामुळे सानुग्रह अनुदान देण्याबाबत निर्णय घेण्यासाठी महानगरपालिकेने राज्य शासनाची पूर्व परवानगी घेण्याची आवश्यकता नाही.

त्याचप्रमाणे सन २००६ चे वर्षासाठी महानगरपालिकेच्या महासभेत महानगरपालिका कर्मचाऱ्यांना फक्त सानुग्रह अनुदान देण्याबाबत ठराव पारीत करण्यात येउन वर्ग-१ व वर्ग-४ च्या कर्मचाऱ्यांना रु. ४८००/- प्रदान करण्यास तसेच रोजंदारी कर्मचारी व सुवर्ण जयंती रोजगार योजनेचे कर्मचारी यांना प्रत्येकी रु. २८००/-, बालवाडी शिक्षिका यांना रु. १३००/- तसेच महानगरपालिका शिक्षकांना रु. ३०००/- सानुग्रह अनुदान मंजूर करण्यास मंजुरी दिली होती. त्यानुसार यावर्षी सन २००७ मध्ये दिवाळी निमित्त कर्मचाऱ्यांना सानुग्रह अनुदान मागील वर्षापेक्षा अधिक मिळणेबाबत कामगार संघटनांनी मागणी केलेली आहे.

तरी २००६-०७ या आर्थिक वर्षात सहा महिने पेक्षा अधिक कालावधीत नगरपालिकेच्या आस्थापनेवर काम केलेल्या पुढील अधिकारी / कर्मचारी यांना सन २००७-०८ चे अंदाजपत्रकात लेखाशिर्ष 'फ' संकिर्ण अनु. क्र. (१९) "महानगरपालिका कर्मचारी सानुग्रह अनुदान" लेखाशिर्ष कोड नं. २१४७ मध्ये रु. १००.०० लाख इतकी तरतुद शिल्लक असून सदर तरतुदीपैकी वर्ग-१ ते वर्ग-४ च्या प्रतिनियुक्तीसह कर्मचाऱ्यांना रु. ६०००/-, रोजंदारी कर्मचारी व सुवर्ण जयंती रोजगार योजनेचे कर्मचारी तसेच ठोक वेतन व मानधनावरील कर्मचाऱ्यांना रु. ३०००/-, बालवाडी शिक्षिका यांना ३३००/- व संगणक चालक मानधनावर कार्यरत रु. २०००/- तसेच महानगरपालिका शिक्षकांना रु. ३५००/- दिवाळी निमित्त सानुग्रह अनुदान देणेस ही सभा मंजुरी देत आहे.

**भगवती शर्मा :-**

या ठरावाला माझे अनुमोदन आहे.

**शशिकांत भोईर :-**

मा. महापौरांच्या परवानगीने बोलत आहे, सानुग्रह अनुदानाचा जो विषय आहे. त्याच्यामध्ये कर्मचाऱ्यांसाठी शासन निर्णय क्र. संकिर्ण २००६/५१२/प्र.क्र.८९/२००७ नवि - २०, मंत्रालय मुंबई - ४०००३२ दि. १६ जुलै २००७ चा शासनाचा निर्णय आहे की, जेव्हा सार्वत्रिक निवडणूका होतात तेव्हा ते जे कर्मचारी या सार्वत्रिक निवडणूकांमध्ये काम करतात त्यांना मानधन द्यायचे असते. पण ह्याच्यात कधीच नमुद केलेले नाही. शासनाचा निर्णय आहे की, मानधन ज्या ज्या कर्मचाऱ्यांनी सार्वत्रिक निवडणूकांमध्ये काम केलेले आहे. आताच आपली मिरा भाईंदर महापालिकेची निवडणूक पार पडली त्याच्यामध्ये ज्या ज्या कर्मचाऱ्यांनी काम केलेली आहेत त्यांना ही मानधन द्यावे असे आमच्या ठरावामध्ये नमुद करावे अशी माझी सुचना आहे.

**प्रभात पाटील :-**

मा. महापौर साहेब, सन्मा. सदस्य खान साहेबांचे मराठी मला कळले नाही. तो ठराव वाचतील. परंतु, संगणक चालक ज्यांना आता आपण पुन्हा कंटीन्यु केले आहे. त्यांचा समावेश त्याच्यामध्ये असावा. असेल तर चांगल आहे आणि आपण आस्थापनेवर आरोग्य खात्याचे काही कर्मचारी भरले आहे व आपल्या सी.एफ.सी. मध्ये काही कर्मचारी भरले आहेत. त्यांना सहा महिन्यापेक्षा जास्त कालावधी झालेला आहे. ते कर्मचारी आस्थापनेवर आहेत. त्यांचा ही ह्याच्यामध्ये समावेश करून घ्यावा अशी माझी विनंती आहे. आरोग्य विभाग आणि सी.एफ.सी. मध्ये जे कर्मचारी आहेत ते आस्थापनेवर आहेत त्यांचा सहा महिन्याचा पिरियड झालेला आहे. त्यांचा ही या ठरावामध्ये समावेश करण्यात यावा.

**चद्रकांत वैती :-**

मा. महापौर साहेब, दोन ठराव आलेले आहेत. आपण ते ठराव मतदानाला घ्या.

**मा. महापौर :-**

एकच ठराव आलेला आहे. सन्मा. सदस्य खान साहेब आपण आपला ठराव वाचावा.

**चद्रकांत वैती :-**

आम्ही आमचा ठराव दिलेला आहे. आम्ही ठराव वाचला. तुम्ही मार्किट बंद केला ती आमची चुक नाही. आम्ही लेखी ठराव दिला आहे.

**मा. महापौर :-**

आपण परत वाचून घ्या.

**चद्रकांत वैती :-**

सचिवांनी ठराव वाचावा.

**नयना म्हात्रे :-**

मा. महापौर साहेब आता जे परमनंट कर्मचारी आहेत त्यांचा विषय या सभागृहामध्ये आला. त्यांना आपण सानुग्रह अनुदान देणार देखिल आहोत. आपल्याकडे झाडू कामगार, सफाई कामगार आहेत. आपल्याला जो रस्ता एकदम स्वच्छ दिसतो तो त्यांच्यामुळेच दिसतो. आज आपले कर्मचारी पाच - सहा हजार रूपये पगार घेतात व ए.सी. मध्ये हवा खातात पण तीन हजार रूपयामध्ये आपल्या मिरा भाईदरची ते सेवा करतात. म्हणून सगळ्या ठेकेदारांना व गटनेत्यांना तुमच्या दालना बोलवून विचार करण्यात यावा.

**मा. महापौर :-**

मी पहिलेच सांगितले की, ठेकेदाराने प्रत्येक कर्मचाऱ्याला जो पगार बाकी आहे तो द्यायचा आहे आणि नियमाप्रमाणे साडे आठ टक्के, सव्वा आठ टक्के जो काय बोनस आहे तो ही त्यांना द्यावा.

**नयना म्हात्रे :-**

साहेब, येथे बोलून चालणार नाही. ठेकेदार येथे उपस्थित नाही. तुम्ही त्यांना तुमच्या दालनामध्ये बोलवा.

**मा. महापौर :-**

मी अधिकाऱ्यांना तसे आदेश दिलेले आहेत. त्याप्रमाणे त्यांचा पुढच्या महिन्याचा पेमेन्ट करू नये. जिथपर्यंत ते बोनस आणि सॅलरी देत नाही.

**नयना म्हात्रे :-**

साहेब पण ती तेवढी तुमचीही जबाबदारी आहे.

**मा. महापौर :-**

जबाबदारी पूर्ण केली आहे आणि अजून काय करू.

**नयना म्हात्रे :-**

साहेब, तुम्ही ठेकेदारांना तुमच्या दालनामध्ये बोलावा.

**मा. महापौर :-**

गरज काय आहे?

**नयना म्हात्रे :-**

साहेब, त्याशिवाय ते ऐकणार नाहीत. ठेकेदार त्यांची कशी गंमत करतात ते मला माहित आहे. हे ठेकेदार केवढे माजले आहेत ते मला विचारा.

**मा. महापौर :-**

अधिकाऱ्यांना स्पष्ट सांगितले आहे.

**नयना म्हात्रे :-**

साहेब, आपली दिवाळी आली की, ठेकेदार त्यांना पगार देणार नाही आणि काहीच देणार नाही. त्यांचे आईवडील आमच्या घरी येतील ते गरीब लोक आहेत.

**मा. महापौर :-**

मग त्यांचे ही पेमेन्ट आपण देणार नाही.

**नयना म्हात्रे :-**

साहेब, आपण सर्व ठेकेदारांना बोलवा आणि सांगा अधिकाऱ्यांचे ते ऐकणार नाहीत.

**मा. महापौर :-**

ठेकेदार जोपर्यंत त्यांची थकबाकी पगार देत नाही तिथपर्यंत त्यांचे पेमेन्ट केले जाणार नाही आणि त्यांना बोनसही दिले जाईल.

**नगरसचिव :-**

दोन ठराव आलेले आहेत. मी एक एक करून दोन्ही ठराव वाचून दाखवित आहे. दुसऱ्या ठरावाचे पहिल्यांदा वाचन करत आहे.

(नगरसचिवांनी एक एक करून दोन्ही ठरावाचे सभागृहासमोर वाचन केले.)

**प्रकरण क्र. ८ :-**

महानगरपालिका कर्मचाऱ्यांना दिवाळी निमित्त सानुग्रह अनुदान देणेबाबत.



राज्य शासनाने शासकिय कर्मचाऱ्यांना गेले काही वर्षांपासून बोनस देण्याचे बंद केलेले असून महानगरपालिका कर्मचारी बोनस अॅक्ट नुसार बोनस मिळणेस पात्र नाही. त्यामुळे महानगरपालिका कर्मचाऱ्यांना बोनस शासनाच्या निर्णयाशिवाय देता येत नाही. शासनाकडून शासकिय/निमशासकिय कर्मचाऱ्यांना सानुग्रह अनुदान देणेबाबत कोणताही निर्णय जाहिर झालेला नाही. मात्र यापुर्वी राज्य शासन नगरविकास विभाग यांचेकडील पत्र क्र. जीईएन/१०९७/प्र.क्र.२६१/नवि-२४, दि. २७/११/२००२ अन्वये मा. मुख्यमंत्री यांच्या अध्यक्षतेखाली व श्री. महाबळ शेटी, निमंत्रक, महाराष्ट्र राज्य, महानगरपालिका कामगार कर्मचारी संघटना व सर्व महानगरपालिका आयुक्त यांचेसमवेत दि.३१/१०/२००२ रोजी बैठक झालेली होती. सदर बैठकीत महानगरपालिकांनी सानुग्रह अनुदान देणेबाबत आपल्या स्तरावर निर्णय घ्यावा व त्यासाठी शासनाची पुर्वपरवानगी घेण्याची गरज नाही असा निर्णय झाला आहे.

गेल्यावर्षी मा. महासभा दि. १२/१०/२००६ ठराव क्र. ६१ अन्वये महानगरपालिकेच्या वर्ग १ ते ४ संवर्गातील अधिकारी व कर्मचारी यांना रु. ४,८००/- महापालिका शिक्षकांना रु. ३,०००/- व रोजंदारी कर्मचारी व सुवर्ण जयंती कर्मचारी ठोक वेतन व मानधनावरील कर्मचारी यांना रु. २,८००/- बालवाडी शिक्षकांना रु. १३००/- याप्रमाणे सानुग्रह अनुदान अदा केलेले आहे.

सन २००६-०७ या वर्षात महानगरपालिका अस्थापनेवर कार्यरत असलेल्या अधिकारी / कर्मचारी ह्यांना सदरचे अनुदान देय आहे. त्यानुसार सन २००७-०८ च्या मंजुर अल्पसंकल्पीय अंदाजपत्रकात सानुग्रह अनुदानाकरीता लेखाशिर्ष "संकीर्ण" "फ" (१८) मध्ये रु. एक कोटीची तरतुद आहे.

सन २००६-०७ या वर्षाकरिता महानगरपालिका आस्थापनेवरी वर्ग १ ते ४ संवर्गातील अधिकारी व कर्मचारी ह्यांना रु. ५,३००/- मिरा भाईंदर प्राथमिक शाळा शिक्षक वर्ग रु.३,५००/- बालवाडी शिक्षक रु. ३,३००/- सुवर्ण जयंती कर्मचारी, रोजंदारी कर्मचारी, ठोक वेतन व मानधनावरील कर्मचारी ह्यांना रु. १८००/- प्रमाणे दिवाळीपुर्वी सानुग्रह अनुदान अदा करण्यात यावे, असा ठराव मी महासभेपुढे मांडत आहे. कर्मचाऱ्यांनी प्रत्यक्ष काम केलेले दिवसांच्या संख्येच्या प्रमाणात त्याचे वाटप करावे.

**सुचक :- श्री. शफिक अहमद सादत खान. अनुमोदक :- श्री. याकुब कुरेशी.**

**प्रकरण क्र. ८ :-** महानगरपालिका कर्मचाऱ्यांना दिवाळी निमित्त सानुग्रह अनुदान देणेबाबत.

मिरा भाईंदर महानगरपालिकेच्या कर्मचारी कामगार संघटनांनी कर्मचाऱ्यांना दिवाळीपुर्वी बोनस व सानुग्रह अनुदान देणेबाबत विनंती केली आहे. परंतु, मागील पाच वर्षांपासून शासनाने कर्मचाऱ्यांना बोनस देण्याचे बंद केलेले असून महानगरपालिका कर्मचारी बोनस अॅक्टनुसार बोनस मिळण्यास पात्र नाहीत. त्यामुळे महानगरपालिका कर्मचाऱ्यांना बोनस शासनाच्या निर्णयाशिवाय देता येत नाही. मात्र यासंदर्भात नगरविकास विभाग, मंत्रालय, मुंबई यांचेकडील पत्र क्र. जीईएन-१०९७/प्र.क्र.-२६७/नवि-२४, दि. २७/११/२००२ च्या अनुषंगे दि. ३१/१०/२००२ रोजी श्री. महाबळ शेटी, निमंत्रक महाराष्ट्र राज्य महानगरपालिका कर्मचारी कामगार संघटना व इतर यांच्या मागण्याबाबत मा. मुख्यमंत्री महोदय, महाराष्ट्र राज्य यांचे अध्यक्षतेखाली संपन्न झालेल्या बैठकीतील कार्यवृत्तामध्ये नमुद केल्याप्रमाणे महानगरपालिका स्तरावर आर्थिक परिस्थितीनुसार सानुग्रह अनुदान किती द्यावे याबाबत निर्णय घेण्यात यावा. मात्र राज्य शासन महानगरपालिका कर्मचाऱ्यांना वेतनासाठी कोणत्याही प्रकारचे अनुदान देत नसल्यामुळे सानुग्रह अनुदान देण्याबाबत निर्णय घेण्यासाठी महानगरपालिकेने राज्य शासनाची पूर्व परवानगी घेण्याची आवश्यकता नाही.

त्याचप्रमाणे सन २००६ चे वर्षासाठी महानगरपालिकेच्या महासभेत महानगरपालिका कर्मचाऱ्यांना फक्त सानुग्रह अनुदान देण्याबाबत ठराव पारीत करण्यात येउन वर्ग-१ व वर्ग-४ च्या कर्मचाऱ्यांना रु. ४८००/- प्रदान करण्यास तसेच रोजंदारी कर्मचारी व सुवर्ण जयंती रोजगार योजनेचे कर्मचारी यांना प्रत्येकी रु. २८००/-, बालवाडी शिक्षिका यांना रु. १३००/- तसेच महानगरपालिका शिक्षकांना रु. ३०००/- सानुग्रह अनुदान मंजुर करण्यास मंजुरी दिली होती. त्यानुसार यावर्षी सन २००७ मध्ये दिवाळी निमित्त कर्मचाऱ्यांना सानुग्रह अनुदान मागील वर्षापेक्षा अधिक मिळणेबाबत कामगार संघटनांनी मागणी केलेली आहे.

तरी २००६-०७ या आर्थिक वर्षात सहा महिने पेक्षा अधिक कालावधीत नगरपालिकेच्या आस्थापनेवर काम केलेल्या पुढील अधिकारी / कर्मचारी यांना सन २००७-०८ चे अंदाजपत्रकात लेखाशिर्ष 'फ' संकीर्ण अनु. क्र. (१९) "महानगरपालिका कर्मचारी सानुग्रह अनुदान" लेखाशिर्ष कोड नं. २१४७ मध्ये रु. १००.०० लाख इतकी तरतुद शिल्लक असून सदर तरतुदीपैकी वर्ग-१ ते वर्ग-४ च्या प्रतिनियुक्तीसह कर्मचाऱ्यांना रु. ६०००/-, रोजंदारी कर्मचारी व सुवर्ण जयंती रोजगार योजनेचे कर्मचारी तसेच ठोक वेतन व मानधनावरील कर्मचाऱ्यांना रु ३०००/-, बालवाडी शिक्षिका यांना ३३००/- व संगणक चालक मानधनावर कार्यरत रु. २०००/- तसेच महानगरपालिका शिक्षकांना रु. ३५००/- दिवाळी निमित्त सानुग्रह अनुदान देणेस ही सभा मंजुरी देत आहे.

**सुचक :- श्री. जयंत महादेव पाटील. अनुमोदक :- श्री. भगवती शर्मा.**

**हेलन गोविंद :-**

साहेब, तुमच्या ठरावामध्ये संगणक चालकांचा उल्लेख नाही.

**एस. ए. खान :-**

आहे.

**प्रभात पाटील :-**

काँग्रेसच्या ठरावामध्ये माझी एक उपसुचना आहे आणि संयुक्त आघाडीच्या ठरावामध्ये त्यांनी आस्थापनेवर गेलेले जे आरोग्य विभागाचे आणि सी.एफ.सी. चे कर्मचारी आहेत. त्यांचा समावेश त्यामध्ये नाही. ज्यांना सहा महिने पूर्ण झालेली आहेत. तर वर्ग १ ते वर्ग ४ मधील ती पदे आहेत. त्यांना वर्ग १ ते ४ त्यांना तुम्ही जे सानुग्रह अनुदान मंजूर केलेले आहे. ते त्यांनाही त्यांच्यात करण्यांत यावे अशी त्यात माझी उपसुचना आहे.

**जयंत पाटील :-**

कोणती रक्कम?

**प्रभात पाटील :-**

वर्ग १ ते वर्ग ४ ला सहा हजार रुपये दिले आहे. ती सगळी पदे वर्ग १ ते वर्ग ४ ची आहेत.

**मा. महापौर :-**

जे संगणक चालक जे आहेत. त्यांना दयायचे आहे ना.

**प्रभात पाटील :-**

संगणक चालक वेगळे आहेत. हो त्यांना दयायचे आहे. त्यांच्यात म्हटले आहे की, संगणक चालक त्यांनी म्हटले आहे की मानधनावरचे.

**मा. महापौर :-**

मी यासाठी विचारले की जुने जे आपण रेफरन्स घेतलेले आहे. त्याआधी सुवर्णजयंती मध्ये दोन जण आपल्याकडे मानधनावरती होती. आता जी आहेत ते पण त्यातच आहेत का?

**प्रभात पाटील :-**

सुवर्ण जयंती मधील कर्मचारी वेगळे केलेले आहेत. आणि मानधनावरचे कर्मचारी वेगळे केलेले आहेत.

**मा. महापौर :-**

गेल्या वर्षाचे जे रेफरन्स आहेत. त्या फक्त दोन व्यक्तींसाठी होत्या म्हणून मी विचारले.

**प्रभात पाटील :-**

मग मला असे वाटते की, आपल्या ठरावामध्ये सुवर्णजयंती मधील ज्या दोन लोकांना वेगळे केले आहेत आणि तुम्ही मानधनावरचे वेगळे केलेले आहेत. त्यांच्यात उल्लेख केलेला आहे. फक्त माझे असे म्हणणे आहे की, त्या कर्मचाऱ्यांना सहा महिने झालेले आहेत. वर्ग १ ते वर्ग ४ मधील पदे त्यांना त्यांच्यामध्ये सामावून घेण्यात यावे.

**शशिकांत भोईर :-**

मा. महापौर साहेब, माझी ही काँग्रेसच्या ठरावामध्ये उपसुचना होती. की एक शासन निर्णय आहे की, सार्वत्रिक निवडणुकीमध्ये ज्या ज्या कर्मचाऱ्यांनी कामे केलेली आहेत. त्यांना जे मानधन आहे, तेही त्यांना देण्यात यावे. अशी मी सुचना केलेली आहे. सार्वत्रिक निवडणुकीमध्ये महापालिकेच्या ज्या ज्या कर्मचाऱ्यांनी या निवडणुकीसाठी काम केलेले आहे. त्या कर्मचाऱ्यांना मानधन देण्याबाबतचा एक शासन निर्णय आहे. त्यानुसार त्यांनाही मानधन देण्यांत यावे. अशी त्यामध्ये माझी उपसुचना आहे.

**मा. महापौर :-**

कुठल्या ठरावामध्ये सुचना आहे?

**शशिकांत भोईर :-**

काँग्रेसच्या ठरावामध्ये सुचना आहे.

**शानू गोहिल :-**

मा. महापौर साहेब, पिछली बार मा. माजी महापौर सौ. निर्मला सावळे जी के केबीन में गटनेता की मिटींग ली गई थी। और मिटींग के अंदर कॉन्ट्रक्टर जीतने भी थे। सफाई कामगार, पानीके, उनको बुलाया गया था। और उन सभी को ये इनस्ट्रक्शन दिए गए थे की, हर एक कर्मचारी जो काम करते हैं उनको रु. १०००/- देना चाहिए। लेकिन उसके बावजूद भी उनको रु. ३००/- और एक मिठाई का डिब्बा दे दिया गया था। पर इस बार मेरी ऐसी सुचना है की, सौ. निर्मला सांबळे जी जब मा. महापौर थी तब की बात है।

**मा. महापौर :-**

अब ऐसा नहीं होगा।

**शानू गोहिल :-**

तो इस बार ऐसा नहीं लेना चाहिए ऐसी आपसे अपेक्षा है, ऐसी मेरी सुचना है और उस मिटींग में मा. आयुक्त साहाब भी उपस्थित थे। और सभी गटनेता भी उपस्थित थे।

**मा. महापौर :-**

उनको कितना देने का हजार रुपया देने का क्या?

**शानु गोहिल :-**

जो नियम के अनुसार होगा वो आप दिजीए। पिछली बार जे हुआ था। वो मे आपको बता रही हूँ।

**मा. महापौर :-**

सव्वा आठ टक्के के हिसाब से करिबन रु. २०००/- किसीका रु. २,५००/-, किसीका रु. ३,०००/- ऐसे बनेगा तो लेट दें इन्जास।

**मिलन म्हात्रे :-**

मा. महापौर साहेब, आघाडी तर्फे जो ठराव दिलेला आहे. त्याच्यात एक सुचना आहे.

**मा. महापौर :-**

आता सन्मा. सदस्य श्री. शशिकांत भोईर साहेब, म्हणाले की, काँग्रेस तर्फे तर तो ठराव कोणातर्फे आहे?

**मिलन म्हात्रे :-**

संयुक्त लोकशाही आघाडी . साहेब, या ठरावामध्ये माझी एक सुचना अंतर्भूत करा की, आपण अनुदान सानुग्रह अनुदान जे काही देतोय महापालिकेच्या वतीने गेल्या एक वर्षामध्ये उपस्थिती व्यवस्थित असावी.या करिता ही एक माझी दुरुस्ती त्यामध्ये नोंद करुन घ्या. जिकडे जिकडे आपली कार्ड पंचीग मशिन लावलेली आहे त्या त्या अधिकाऱ्यांना माहिती आहे की, आपल्याला कार्ड पंचीग हे सगळे करुन गेले पाहिजे. थम इप्रेसन करुन गेले पाहिजे. परंतु, असे अधिकारी ते जाणुन बुजुन ते करत नाहीत. काही अधिकारी कामावरती दोन दोन , तीन तीन तास लेट येतात. आणि जातांना लेट येतात आणि जातांना जेट जातात. कायद्यात तशी तरतुद नाही. साडे पाच ला त्यांचा वर्किंग टाईम संपतो. असे जे कोणी अधिकारी असतील. त्यांना मेहरबानी करुन ह्याच्यातील ही सुविधा त्यांना देवु नये. जेणे करुन कामात सुसुत्रता येईल नागरिकांच्या कामाकरिता ते उपलब्ध असतील. ही माझी सुचना आहे ती आपण यात अंतर्भूत करावी.

**मा. महापौर :-**

एकुण दोन ठराव आलेले आहेत. राष्ट्रवादी पक्षाकडुन आणि संयुक्त लोकशाही आघाडी पक्षाकडुन दोन ठराव आल्यामुळे मतदान घेणे गरजेचे आहे. आणि त्यापेक्षा हा कर्मचाऱ्यांचा विषय आपसांत होवु नये म्हणुन एक ठराव कसा होईल? एकमत कसे होईल त्याच्यावर आपण विचार केला तर बरे होईल.

**चंद्रकांत वैती :-**

त्यांचा ठराव तुम्ही मागे घ्यावा. आमचा ठराव स्विकारावा.

**जयंत पाटील :-**

ठराव मागे घेणे न घेणे.

**चंद्रकांत वैती :-**

नाहीतर मतदान घ्या.

**जयंत पाटील :-**

मा. महापौर साहेब, माझे असे म्हणणे आहे की, त्यांच्या आणि आमच्या ठरावामध्ये किती तफावत आहे? ते बघुन घ्या. कर्मचाऱ्यांना बोनस देण्यासंबंधी आमचे कोणतेही कॉन्सलेशन होउ नये. मी यामताचा आहे. ठराव आले. मतदान घेतले. तीकडे संख्या जास्त आहे. इकडे संख्या थोडी कमी आहे. तर तसा तो विषय नाही. तर याच्यामध्ये एकत्र बसुन जे काही ठरावामध्ये फरक इकडे - तिकडे करता येईल ठराव कोणी मांडला हे महत्वाचे नाही? ठराव कोणी मांडला हा माझ्या दृष्टीने महत्वाचा विषय नाही. कर्मचाऱ्यांना बोनस मिळणे हे महत्वाचे आहे.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

मा. महापौर साहेब, यामध्ये आणखीन एक उल्लेख आहे. मा. महासभेत ह्यांच्यामध्ये वाद झाले तर निर्णय शासनाकडे जाईल म्हणुन आपल्याला निर्णय इकडेच करायचा आहे. वाद निर्माण करायचा नाही.

**चंद्रकांत वैती :-**

याच्यामध्ये वाद घालण्यासारखे काय आहे? आपण काय बोलत आहात? काहीतरी बोलले पाहिजे. म्हणुन बोलताय की काय? वाद घालायचा तरी आहे का?

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

तुमच्याकडे संख्या जास्त आहे. सुचना तरी घेणार की नाही?

**मिलन पाटील :-**

महापौर साहेब, आमची एक उपसुचना आहे जे बालवाडी शिक्षक आहेत. त्यांना आम्ही पहिल्यांदा रु. २,५००/- केले होते. ते आता रु. ३,३००/- करावे. अशी आमची उपसुचना आहे. एवढे समाविष्ट करुन घ्यावी. बाकी सगळे बरोबर आहे. त्यांना मतदानाला टाकायचे आहे तर टाकु आमचा काही प्रश्न नाही. आम्ही कर्मचाऱ्यांच्या विषयी सहानुभुती देवुन जास्तीत जास्त केलेले आहे. त्यांना काही कमी करायचे असतील. तर कमी करु द्या. मतास टाकायचे असेल तर मतास टाकु देवु द्या. आमचा काही प्रश्न नाही.

**चंद्रकांत वैती :-**

प्रत्यक्ष मतदानाची प्रक्रिया सुरु करावी.

**मा. महापौर :-**

सचिव साहेब, दोन ठराव आल्यामुळे मतदान घेणे गरजेचे आहे. मतदान घ्यावे.

**शरद पाटील :-**

दोन्ही ठराव वाचून दाखवावे.

**मा. महापौर :-**

ठराव वाचलेले आहेत.

**शरद पाटील :-**

दुरुस्ती आलेली आहे. ती दुरुस्ती वाचून दाखवावी.

**मा. महापौर :-**

दुरुस्ती वाचून दाखवावी.

**मिलन पाटील :-**

आमची उपसुचना यामध्ये समाविष्ट करून घ्यावी.

**मा. महापौर :-**

ठरावातील उपसुचना वाचून दाखवावी.

**चंद्रकांत वैती :-**

प्रत्यक्षात दोन ठराव आलेले आहेत. एक ठराव त्यांना मागे घ्यावा लागेल. एक ठराव मागे घ्या. मग उपसुचना करा. सभा शास्त्र बघा. ठरावाचे वाचन झाले. दोन्ही ठरावाचे वाचन झाले. म्हणजे एक ठराव मागे नको का घ्यायला?

**जयंत पाटील :-**

ठरावामध्येच उपसुचना आहे.

(नगरसचिवांनी दोन्ही ठरावाचे एक एक करून वाचन केले.)

**चंद्रकांत वैती :-**

तुम्ही आधी ठराव वाचला त्याची आकडेवारी वेगळी होती. आताची आकडेवारी बदलली का? हे बघा, रु. ६०००/-, रु. ३५००/-, १,५००/- रु. आणि रु. २०००/- असे बदललेले आहे.

**चंद्रकांत मोदी :-**

साहेब उन्होने फेरबदल किया है।

**नगरसचिव :-**

एकाच ठिकाणी बदल केलेला आहे. सुचक:- श्री. जयंत पाटील, अनुमोदन:- श्री. भगवती शर्मा या ठरावाच्या बाजूने जे कोणी असतील त्यांनी हात वर करायचे आहेत. ठरावाच्या बाजूने ३४ व विरोधात ४० सदस्य आहेत. तसेच, सुचक :- शफीक अहमद खान, अनुमोदन :- याकूब कुरेशी या ठरावाच्या बाजूने जे कोणी असतील त्यांनी हात वर करायचे आहेत. ठरावाच्या बाजूने ४० व विरोधात ३४ सदस्य आहेत.

**प्रकरण क्र. ८ :-**

महानगरपालिका कर्मचाऱ्यांना दिवाळी निमित्त सानुग्रह अनुदान देणेबाबत.

मिरा भाईंदर महानगरपालिकेच्या कर्मचारी कामगार संघटनांनी कर्मचाऱ्यांना दिवाळीपूर्वी बोनस व सानुग्रह अनुदान देणेबाबत विनंती केली आहे. परंतु, मागील पाच वर्षांपासून शासनाने कर्मचाऱ्यांना बोनस देण्याचे बंद केलेले असून महानगरपालिका कर्मचारी बोनस अॅक्टनुसार बोनस मिळण्यास पात्र नाहीत. त्यामुळे महानगरपालिका कर्मचाऱ्यांना बोनस शासनाच्या निर्णयाशिवाय देता येत नाही. मात्र यासंदर्भात नगरविकास विभाग, मंत्रालय, मुंबई यांचेकडील पत्र क्र. जीईएन-१०९७/प्र.क्र.-२६७/नवि-२४, दि. २७/११/२००२ च्या अनुषंगे दि. ३१/१०/२००२ रोजी श्री. महाबळ शेटी, निमंत्रक महाराष्ट्र राज्य महानगरपालिका कर्मचारी कामगार संघटना व इतर यांच्या मागण्याबाबत मा. मंख्यमंत्री महोदय, महाराष्ट्र राज्य यांचे अध्यक्षतेखाली संपन्न झालेल्या बैठकीतील कार्यवृत्तामध्ये नमुद केल्याप्रमाणे महानगरपालिका स्तरावर आर्थिक परिस्थितीनुसार सानुग्रह अनुदान किती द्यावे याबाबत निर्णय घेण्यात यावा. मात्र राज्य शासन महानगरपालिका कर्मचाऱ्यांना वेतनासाठी कोणत्याही प्रकारचे अनुदान देत नसल्यामुळे सानुग्रह अनुदान देण्याबाबत निर्णय घेण्यासाठी महानगरपालिकेने राज्य शासनाची पूर्व परवानगी घेण्याची आवश्यकता नाही.

त्याचप्रमाणे सन २००६ चे वर्षासाठी महानगरपालिकेच्या महासभेत महानगरपालिका कर्मचाऱ्यांना फक्त सानुग्रह अनुदान देण्याबाबत ठराव पारीत करण्यात येउन वर्ग-१ व वर्ग-४ च्या कर्मचाऱ्यांना रु. ४८००/- प्रदान करण्यास तसेच रोजंदारी कर्मचारी व सुवर्ण जयंती रोजगार योजनेचे कर्मचारी यांना प्रत्येकी रु. २८००/-, बालवाडी शिक्षिका यांना रु. १३००/- तसेच महानगरपालिका शिक्षकांना रु. ३०००/- सानुग्रह अनुदान मंजूर करण्यास मंजुरी दिली होती. त्यानुसार यावर्षी सन २००७ मध्ये दिवाळी निमित्त कर्मचाऱ्यांना सानुग्रह अनुदान मागील वर्षापेक्षा अधिक मिळणेबाबत कामगार संघटनांनी मागणी केलेली आहे.

तरी २००६-०७ या आर्थिक वर्षात सहा महिने पेक्षा अधिक कालावधीत नगरपालिकेच्या आस्थापनेवर काम केलेल्या पुढील अधिकारी / कर्मचारी यांना सन २००७-०८ चे अंदाजपत्रकात लेखाशिर्ष 'फ' संकिर्ण अनु. क्र. (१९) "महानगरपालिका कर्मचारी सानुग्रह अनुदान" लेखाशिर्ष कोड नं. २१४७ मध्ये रु. १००.०० लाख इतकी तरतुद शिल्लक असून सदर तरतुदीपैकी वर्ग-१ ते वर्ग-४ च्या प्रतिनियुक्तीसह कर्मचाऱ्यांना रु. ६०००/-,

रोजंदारी कर्मचारी व सुवर्ण जयंती रोजगार योजनेचे कर्मचारी तसेच ठोक वेतन व मानधनावरील कर्मचाऱ्यांना रु ३०००/-, बालवाडी शिक्षिका यांना ३३००/- व संगणक चालक मानधनावर कार्यरत रु. २०००/- तसेच महानगरपालिका शिक्षकांना रु. ३५००/- दिवाळी निमित्त सानुग्रह अनुदान देणेस ही सभा मंजूरी देत आहे.

सुचक :- श्री. जयंत महादेव पाटील. अनुमोदक :- श्री. भगवती शर्मा.

| अ.क्र. | तरावाच्या बाजूने                              | अ.क्र. | तरावाच्या विरोधात                                | तटस्थ |
|--------|-----------------------------------------------|--------|--------------------------------------------------|-------|
| १      | पाटील जयंत महादेव                             | १      | खान शफीक अहमद सादत                               |       |
| २      | नरेंद्र मेहता                                 | २      | म्हात्रे मिलन वसंत                               |       |
| ३      | मेंडोन्सा स्टीवन जॉन                          | ३      | शानू जो. गोहिल                                   |       |
| ४      | दिव्या अशोक तिवारी                            | ४      | पाटील उमाताई शाम                                 |       |
| ५      | वैती नर्मदा यशवंत                             | ५      | शेटी गणेश गोपाळ                                  |       |
| ६      | सिंह मदन उदितनारायण                           | ६      | वेतोसकर राजेश शंकर                               |       |
| ७      | जाधव मोहन महादेव                              | ७      | पाटील सुनिता कैलास                               |       |
| ८      | पाटील प्रविण मोरेश्वर                         | ८      | पाटील प्रभात प्रकाश                              |       |
| ९      | म्हात्रे राजेश हरिश्चंद्र                     | ९      | पुरोहित मधुसुदन मनोहरलाल                         |       |
| १०     | म्हात्रे कल्पना महेश                          | १०     | पाटील धनेश परशुराम                               |       |
| ११     | पाटील शरद केशव                                | ११     | व्यास सुधा वासुदेव                               |       |
| १२     | अग्रवाल ओमप्रकाश गंगाधर (गाडोदिया)            | १२     | रॉड्रीक्स मॉरिस जोसेफ                            |       |
| १३     | पाटील ध्रुवकिशोर मन्साराम                     | १३     | म्हात्रे नयना गजानन                              |       |
| १४     | पाटील मिलन गोविंदराव                          | १४     | सावळे निर्मला बाबुराव उर्फ कांबळे निर्मला विष्णू |       |
| १५     | पाटील अनंत रामचंद्र                           | १५     | कुरेशी याकुब ईस्माईल                             |       |
| १६     | गोविंद हेलन जॉर्जी                            | १६     | भोईर शशिकांत जगन्नाथ                             |       |
| १७     | डिमेलो बर्नड आल्बर्ट                          | १७     | भोईर सुनिता शशिकांत                              |       |
| १८     | बाविघर सिसिलीया विजय                          | १८     | पाटील प्रेमनाथ गजानन                             |       |
| १९     | परेरा टेरी पॉल                                | १९     | पाटील प्रफुल्ल काशीनाथ                           |       |
| २०     | परेरा कॅटलीन ऍन्थोनी                          | २०     | म्हात्रे तुलसीदास दत्तात्रेय                     | निरंक |
| २१     | वर्षा भानुशाली                                | २१     | शेख मुसरतबानु इब्राहिम                           |       |
| २२     | डॉ. राजेंद्र भवरलाल जैन                       | २२     | जंगम लक्ष्मण गणपत                                |       |
| २३     | शर्मा भगवती                                   | २३     | सपार उमा विश्वनाथ                                |       |
| २४     | पाटील वंदना मंगेश                             | २४     | इनामदार जुबेर अब्दुल्ला                          |       |
| २५     | सिंग श्रीप्रकाश जिलेदार                       | २५     | पुजारी कांचन शेखर                                |       |
| २६     | पांडे स्नेहा शैलेश                            | २६     | मुंज वासुदेव भास्कर                              |       |
| २७     | पालांडे प्रशांत भगवंतराव                      | २७     | सय्यद नुरजहाँ नझर हुसैन                          |       |
| २८     | दुबे रामनारायण सदानंद                         | २८     | शेख नुर मोहम्मद अहमद                             |       |
| २९     | चक्रे वंदना रामदास                            | २९     | भाटकर प्रेरणा प्रमोद                             |       |
| ३०     | माळी हेमा रविंद्र                             | ३०     | डिसा मर्लिन मर्विन                               |       |
| ३१     | हसनाळे जोत्सना जालींदर उर्फ शिंदे पूजा प्रताप | ३१     | वैती विजया हेमचंद्र                              |       |
| ३२     | यादव मिरादेवी रामलाल                          | ३२     | ठाकूर कल्पना हरिहर                               |       |
| ३३     | गावंड मंदाकिनी आत्माराम                       | ३३     | म्हात्रे चंद्रकांत खंडोजी                        |       |
| ३४     | म्हात्रे मोहन गोपाळ                           | ३४     | मोदी चंद्रकांत भिकालाल                           |       |
|        |                                               | ३५     | भट दिप्ती शेखर                                   |       |
|        |                                               | ३६     | वैती चंद्रकांत सिताराम                           |       |
|        |                                               | ३७     | सावंत अनिल दिवाकर                                |       |
|        |                                               | ३८     | भोईर राजू यशवंत                                  |       |
|        |                                               | ३९     | शेख सलिम दाउद                                    |       |
|        |                                               | ४०     | हरिश्चंद्र जगन्नाथ म्हात्रे                      |       |

**प्रकरण क्र. ८ :-**

महानगरपालिका कर्मचाऱ्यांना दिवाळी निमित्त सानुग्रह अनुदान देणेबाबत.

राज्य शासनाने शासकिय कर्मचाऱ्यांना गेले काही वर्षांपासून बोनस देण्याचे बंद केलेले असून महानगरपालिका कर्मचारी बोनस अॅक्ट नुसार बोनस मिळणेस पात्र नाही. त्यामुळे महानगरपालिका कर्मचाऱ्यांना बोनस शासनाच्या निर्णयाशिवाय देता येत नाही. शासनाकडून शासकिय/निमशासकिय कर्मचाऱ्यांना सानुग्रह अनुदान देणेबाबत कोणताही निर्णय जाहिर झालेला नाही. मात्र यापुर्वी राज्य शासन नगरविकास विभाग यांचेकडील पत्र क्र. जीईएन/१०९७/प्र.क्र.२६१/नवि-२४, दि. २७/११/२००२ अन्वये मा. मुख्यमंत्री यांच्या अध्यक्षतेखाली व श्री. महाबळ शेटी, निमंत्रक, महाराष्ट्र राज्य, महानगरपालिका कामगार कर्मचारी संघटना व सर्व महानगरपालिका आयुक्त यांचेसमवेत दि.३१/१०/२००२ रोजी बैठक झालेली होती. सदर बैठकीत महानगरपालिकांनी सानुग्रह अनुदान देणेबाबत आपल्या स्तरावर निर्णय घ्यावा व त्यासाठी शासनाची पुर्वपरवानगी घेण्याची गरज नाही असा निर्णय झाला आहे.

गेल्यावर्षी मा. महासभा दि. १२/१०/२००६ ठराव क्र. ६१ अन्वये महानगरपालिकेच्या वर्ग १ ते ४ संवर्गातील अधिकारी व कर्मचारी यांना रु. ४,८००/- महापालिका शिक्षकांना रु. ३,०००/- व रोजंदारी कर्मचारी व सुवर्ण जयंती कर्मचारी ठोक वेतन व मानधनावरील कर्मचारी यांना रु. २,८००/- बालवाडी शिक्षकांना रु. १३००/- याप्रमाणे सानुग्रह अनुदान अदा केलेले आहे.

सन २००६-०७ या वर्षीत महानगरपालिका अस्थापनेवर कार्यरत असलेल्या अधिकारी / कर्मचारी ह्यांना सदरचे अनुदान देय आहे. त्यानुसार सन २००७-०८ च्या मंजुर अल्पसंकल्पीय अंदाजपत्रकात सानुग्रह अनुदानाकरीता लेखाशिर्ष “संकीर्ण” “फ” (१८) मध्ये रु. एक कोटीची तरतुद आहे.

सन २००६-०७ या वर्षीकरिता महानगरपालिका आस्थापनेवरी वर्ग १ ते ४ संवर्गातील अधिकारी व कर्मचारी ह्यांना रु. ५,३००/- मिरा भाईंदर प्राथमिक शाळा शिक्षक वर्ग रु.३,५००/- बालवाडी शिक्षक रु. ३,३००/- सुवर्ण जयंती कर्मचारी, रोजंदारी कर्मचारी, ठोक वेतन व मानधनावरील कर्मचारी ह्यांना रु. १८००/- प्रमाणे दिवाळीपुर्वी सानुग्रह अनुदान अदा करण्यात यावे, असा ठराव मी महासभेपुढे मांडत आहे. कर्मचाऱ्यांनी प्रत्यक्ष काम केलेले दिवसांच्या संख्येच्या प्रमाणात त्याचे वाटप करावे.

**सुचक :- श्री. शफिक अहमद सादत खान.**

**अनुमोदक :- श्री. याकुब कुरेशी.**

| अ.क्र. | ठरावाच्या बाजून                                  | अ.क्र. | ठरावाच्या विरोधात                  | तटस्थ |
|--------|--------------------------------------------------|--------|------------------------------------|-------|
| १      | खान शफीक अहमद सादत                               | १      | पाटील जयंत महादेव                  | निरंक |
| २      | म्हात्रे मिलन वसंत                               | २      | नरेंद्र मेहता                      |       |
| ३      | शानू जो. गोहिल                                   | ३      | मॅडोन्सा स्टीवन जॉन                |       |
| ४      | पाटील उमाताई शाम                                 | ४      | दिव्या अशोक तिवारी                 |       |
| ५      | शेटी गणेश गोपाळ                                  | ५      | वैती नर्मदा यशवंत                  |       |
| ६      | वेतोसकर राजेश शंकर                               | ६      | सिंह मदन उदितनारायण                |       |
| ७      | पाटील सुनिता कैलास                               | ७      | जाधव मोहन महादेव                   |       |
| ८      | पाटील प्रभात प्रकाश                              | ८      | पाटील प्रविण मोरेश्वर              |       |
| ९      | पुरोहित मधुसुदन मनोहरलाल                         | ९      | म्हात्रे राजेश हरिश्चंद्र          |       |
| १०     | पाटील धनेश परशुराम                               | १०     | म्हात्रे कल्पना महेश               |       |
| ११     | व्यास सुधा वासुदेव                               | ११     | पाटील शरद केशव                     |       |
| १२     | रॉड्रीक्स मॉरिस जोसेफ                            | १२     | अग्रवाल ओमप्रकाश गंगाधर (गाडोदिया) |       |
| १३     | म्हात्रे नयना गजानन                              | १३     | पाटील ध्रुवकिशोर मन्साराम          |       |
| १४     | सावळे निर्मला बाबुराव उर्फ कांबळे निर्मला विष्णू | १४     | पाटील मिलन गोविंदराव               |       |
| १५     | कुरेशी याकुब ईस्माईल                             | १५     | पाटील अनंत रामचंद्र                |       |
| १६     | भोईर शशिकांत जगन्नाथ                             | १६     | गोविंद हेलन जॉर्जी                 |       |
| १७     | भोईर सुनिता शशिकांत                              | १७     | डिमेलो बर्नड आल्बर्ट               |       |
| १८     | पाटील प्रेमनाथ गजानन                             | १८     | बाविघर सिसिलीया विजय               |       |
| १९     | पाटील प्रफुल्ल काशीनाथ                           | १९     | परेरा टेरी पॉल                     |       |
| २०     | म्हात्रे तुलसीदास दत्तात्रेय                     | २०     | परेरा कॅटलीन ऍन्थोनी               |       |
| २१     | शेख मुसरर्तबानु इब्राहिम                         | २१     | वर्षा भानुशाली                     |       |
| २२     | जंगम लक्ष्मण गणपत                                | २२     | डॉ. राजेंद्र भवरलाल जैन            |       |

|    |                             |    |                                               |
|----|-----------------------------|----|-----------------------------------------------|
| २३ | सपार उमा विश्वनाथ           | २३ | शर्मा भगवती                                   |
| २४ | इनामदार जुबेर अब्दुल्ला     | २४ | पाटील वंदना मंगेश                             |
| २५ | पुजारी कांचन शेखर           | २५ | सिंग श्रीप्रकाश जिलेदार                       |
| २६ | मुंज वासुदेव भास्कर         | २६ | पांडे स्नेहा शैलेश                            |
| २७ | सय्यद नुरजहाँ नझर हुसैन     | २७ | पालांडे प्रशांत भगवंतराव                      |
| २८ | शेख नुर मोहम्मद अहमद        | २८ | दुबे रामनारायण सदानंद                         |
| २९ | भाटकर प्रेरणा प्रमोद        | २९ | चक्रे वंदना रामदास                            |
| ३० | डिसा मर्लिन मर्विन          | ३० | माळी हेमा रविंद्र                             |
| ३१ | वैती विजया हेमचंद्र         | ३१ | हसनाळे जोत्सना जालींदर उर्फ शिंदे पूजा प्रताप |
| ३२ | ठाकूर कल्पना हरिहर          | ३२ | यादव मिरादेवी रामलाल                          |
| ३३ | म्हात्रे चंद्रकांत खंडोजी   | ३३ | गावंड मंदाकिनी आत्माराम                       |
| ३४ | मोदी चंद्रकांत भिकालाल      | ३४ | म्हात्रे मोहन गोपाळ                           |
| ३५ | भट दिप्ती शेखर              |    |                                               |
| ३६ | वैती चंद्रकांत सिताराम      |    |                                               |
| ३७ | सावंत अनिल दिवाकर           |    |                                               |
| ३८ | भोईर राजू यशवंत             |    |                                               |
| ३९ | शेख सलिम दाउद               |    |                                               |
| ४० | हरिश्चंद्र जगन्नाथ म्हात्रे |    |                                               |

#### मा. महापौर :-

सन्मा. सदस्य श्री. जयंत पाटील साहेबांनी जो ठराव मांडलेला आहे. त्या ठरावाच्या बाजूने एकूण ३४ नगरसेवक आहेत आणि ठरावाच्या विरोधात एकूण ४० नगरसेवक आहेत आणि सन्मा. सदस्य श्री. एस. ए. खान साहेबांनी जो ठराव मांडला. त्या ठरावाच्या बाजूने एकूण ४० नगरसेवक आहेत आणि ठरावाच्या विरोधात ३४ नगरसेवक आहेत आणि सन्मा. सदस्य श्री. एस.ए. खान साहेबांनी जो ठराव मांडलेला आहे. त्या ठरावाला मी मंजूरी देत आहे. याचबरोबर लंच टाईमची सुट्टी घोषित करत आहे.

#### प्रकरण क्र. ८ :-

महानगरपालिका कर्मचाऱ्यांना दिवाळी निमित्त सानुग्रह अनुदान देणेबाबत.

#### ठराव क्र. १० :-

राज्य शासनाने शासकिय कर्मचाऱ्यांना गेले काही वर्षांपासून बोनस देण्याचे बंद केलेले असून महानगरपालिका कर्मचारी बोनस अॅक्ट नुसार बोनस मिळणेस पात्र नाही. त्यामुळे महानगरपालिका कर्मचाऱ्यांना बोनस शासनाच्या निर्णयाशिवाय देता येत नाही. शासनाकडून शासकिय/निमशासकिय कर्मचाऱ्यांना सानुग्रह अनुदान देणेबाबत कोणताही निर्णय जाहिर झालेला नाही. मात्र यापुर्वी राज्य शासन नगरविकास विभाग यांचेकडील पत्र क्र. जीईएन/१०९७/प्र.क्र.२६१/नवि-२४, दि. २७/११/२००२ अन्वये मा. मुख्यमंत्री यांच्या अध्यक्षतेखाली व श्री. महाबळ शेटी, निमंत्रक, महाराष्ट्र राज्य, महानगरपालिका कामगार कर्मचारी संघटना व सर्व महानगरपालिका आयुक्त यांचेसमवेत दि.३१/१०/२००२ रोजी बैठक झालेली होती. सदर बैठकीत महानगरपालिकांनी सानुग्रह अनुदान देणेबाबत आपल्या स्तरावर निर्णय घ्यावा व त्यासाठी शासनाची पुर्वपरवानगी घेण्याची गरज नाही असा निर्णय झाला आहे.

गेल्यावर्षी मा. महासभा दि. १२/१०/२००६ ठराव क्र. ६१ अन्वये महानगरपालिकेच्या वर्ग १ ते ४ संवर्गातील अधिकारी व कर्मचारी यांना रु. ४,८००/- महापालिका शिक्षकांना रु. ३,०००/- व रोजंदारी कर्मचारी व सुवर्ण जयंती कर्मचारी ठोक वेतन व मानधनावरील कर्मचारी यांना रु. २,८००/- बालवाडी शिक्षकांना रु. १३००/- याप्रमाणे सानुग्रह अनुदान अदा केलेले आहे.

सन २००६-०७ या वर्षात महानगरपालिका अस्थापनेवर कार्यरत असलेल्या अधिकारी / कर्मचारी ह्यांना सदरचे अनुदान देय आहे. त्यानुसार सन २००७-०८ च्या मंजुर अल्पसंकल्पीय अंदाजपत्रकात सानुग्रह अनुदानाकरीता लेखाशिर्ष “संकीर्ण” “फ” (१८) मध्ये रु. एक कोटीची तरतुद आहे.

सन २००६-०७ या वर्षाकरिता महानगरपालिका आस्थापनेवरी वर्ग १ ते ४ संवर्गातील अधिकारी व कर्मचारी ह्यांना रु. ५,३००/- मिरा भाईंदर प्राथमिक शाळा शिक्षक वर्ग रु.३,५००/- बालवाडी शिक्षक रु. ३,३००/- सुवर्ण जयंती कर्मचारी, रोजंदारी कर्मचारी, ठोक वेतन व मानधनावरील कर्मचारी ह्यांना रु. १८००/- प्रमाणे दिवाळीपुर्वी सानुग्रह अनुदान अदा करण्यात यावे, असा ठराव मी महासभेपुढे मांडत आहे. कर्मचाऱ्यांनी प्रत्यक्ष काम केलेले दिवसांच्या संख्येच्या प्रमाणात त्याचे वाटप करावे.

सुचक :- श्री. शफिक अहमद सादत खान.

अनुमोदक :- श्री. याकुब कुरेशी.

ठराव बहुमताने मंजुर.

सही/-

महापौर

मिरा भाईदर महानगरपालिका

लंच टाईम :- दू. २ वा. ३५ मि.

मा. महापौर :-

सचिवजी सभेच्या कामकाजाला सुरुवात करावी.

नगरसचिव :-

सभेच्या कामकाजाला सुरुवात होत आहे.

(नगरसचिवांनी प्रकरण क्र. ९ चे वाचन केले.)

प्रकरण क्र. ९ :-

मोकळ्या जागांवर कर आकारणी करणे.

(सन्मा. सदस्य श्री. शशिकांत भोईर यांनी प्रकरण क्र. ९ च्या ठरावाचे सभागृहासमोर वाचन केले.)

प्रकरण क्र. ०९ :-

महानगरपालिका हद्दीत मोकळ्या जागेवर कर आकारणी करणेस मंजूरी मिळणेबाबत.

मिरा भाईदर महानगरपालिका हद्दीतील मोकळ्या जागांवर (बीनशेती झालेल्या व बीनशेतीसाठी ना हरकत दाखला मिळालेल्या) मालमत्ता कर आकारणी करणे बाबतचा प्रस्ताव महासभेपुढे प्रकरण ९ नुसार ठेवण्यात आला आहे.

प्रकरण क्र. ९ बाबत महानगरपालिका प्रशासनाने गोषवारा सादर केलेला आहे. सदर गोषवाच्यामध्ये मिरा भाईदर महानगरपालिका क्षेत्रातील मोकळ्या जागांचे वर्गीकरण रहीवास क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, विविध आरक्षणाखालील क्षेत्र, ना विकास क्षेत्र, सी.आर.झेड. बाधित क्षेत्र, पाण्याखालील क्षेत्र, अनधिकृत बांधकाम झालेले क्षेत्र ह्याबाबत कोणतेही विवरण प्रशासनाने महासभेपुढे सादर केलेले नाही.

तसेच गोषवाच्यानुसार मोकळ्या जागांवर (बिनशेती झालेल्या व बीनशेतीसाठी ना हरकत दाखला मिळालेल्या) मालमत्तांवर कर प्रस्तावित करून त्याद्वारे अंदाजे रू. १.५ कोटी ते २ कोटी उत्पन्न अपेक्षित धरले आहे.

वास्तविकतः बीनशेती झालेल्या जमिनींचे व बिनशेतीसाठी ना हरकत दिलेल्या जमिनींचे संपुर्ण तपशिल प्रशासनाकडे उपलब्ध असतानाही प्रशासनाने तो तपशील सादर केलेला नाही. ज्याअर्थी रू. १.५ कोटी ते २ कोटी उत्पन्न अपेक्षित धरले आहे त्या अर्थी असा तपशिल महानगरपालिकेने प्रत्यक्ष सर्व्हे करून आजच्या महासभेपुढे सादर करावयास पाहिजे होता. त्यामुळे सदरचा गोषवारा सदोष आहे.

आपल्या महानगरपालिकेमध्ये मालमत्ता कर आकारताना करमुल्य निर्धारण अधिकाऱ्यांनी विविध क्षेत्रासाठी करपात्र मुल्य ठरविले आहे. त्याचाही तपशील गोषवाच्यामध्ये दिलेला नाही.

गोषवाच्यामध्ये खरेदी विक्रीचे दस्तावेज नोंदणी करताना शासनाने मुद्रांक शुल्कासाठी सर्व्हे निहाय जमिनीचा दर निच्छित केला आहे, तो दर मोकळ्या जमिनीची किंमत ठरविण्यासाठी लागू होईल असे नमुद केले आहे. या दरांची तुलना करमुल्य निर्धारण अधिकाऱ्याने विविध क्षेत्रासाठी निच्छित केलेल्या वार्षिक भाडे मुल्य व करपात्र मुल्यांशी होणे आवश्यक आहे व त्यामध्ये तफावत येत असल्यास कोणता दर लागू करावा ह्याबाबत गोषवाच्यामध्ये स्पष्टीकरण होणे आवश्यक आहे.

वरील बाबी विचारात घेता प्रशासनाने सादर केलेला गोषवारा सदोष असून त्याशिवाय वरील प्रमाणे अनेक बाबींच्या तपशिलाचा अभाव असल्याने प्रत्यक्ष निदर्शनास येते.

तरी प्रशासनाने वरील सर्व तपशिलांच्या बाबींची पुर्तता करून त्याप्रमाणे सर्व समावेशक बाबींसह असलेला तपशिल व बीनशेती झालेल्या व बीनशेती साठी ना हरकत दाखला मिळालेल्या परंतु जागेवर प्रत्यक्ष बांधकाम न झालेल्या मालमत्तांच्या सर्व्हेचे विवरण गोषवाच्यामध्ये देउन पुन्हा सदरचा विषय महासभेपुढे आणावा. तसेच शैक्षणिक संस्थाना कर सवलत देणाराही प्रस्ताव सोबत आणावा.

प्रकरण क्र. ९ नुसार महानगरपालिका हद्दीत मोकळ्या जागांवर कर आकारणी करणेबाबतचा प्रस्ताव गोषवात्यातील सदोष बाबी व वरील प्रमाणे आवश्यक तपशिल नमुद केलेले नसल्यामुळे फेटाळण्यात येत आहे. असा मी ठराव मांडत आहे.

उमा पाटील :-

सदर ठरावाला माझे अनुमोदन आहे.

मिलन पाटील :-

मा. महापौर साहेब, विरोधाला विरोध होत आहे.



**मा. महापौर :-**

मला स्वतःला ह्या विषयांवर बोलायचे आहेत. सन्मा. सदस्य श्री. शशिकांत भोईर साहेब, आपण जी माहिती दिलेली नाही. जे सांगितले नाही. आपण हे जे कर लावणार आहोत. ज्या महापालिकेने ज्या विकासकाला आय.ओ.डी. किंवा एन.ए.आय.ओ.डी. झाली. त्यानंतर सी.सी. होते आय.ओ.डी. पासून ज्या दिवसापासून आपण तो रस्ता, आरक्षण, आणि ज्या जमिनीला आपण परवानगी दिलेली आहे. तेवढे वगळून त्यांच्यावर आपण हा कर लावणार आहोत. दूसरे मते सन्मा. सदस्य श्री. चंद्रकांत वैती साहेब आपण सांगितले होते की, आपल्या इकडे अधिकारी टॅक्स लावतांना वेगवेगळी रक्कम मागतात. ह्याच्याने आपल्याला हा एक फायदा होईल की, ज्यावेळी आपण आय.ओ.डी. दिली सी.सी. घ्यायच्या अगोदर बिल्डरने तो कर लावून घ्यायचा आहे आणि ते कर लावल्यानंतर जिथपर्यंत ती बिल्डींग ऑक्युपाईड होत नाही. म्हणजे एखाद्या महापालिकेच्या नजर चुकीमुळे एखादी बिल्डींग राहिली. तरी आपल्याला कराच्या माध्यमातून रक्कम येत राहिल. त्याने मिरा भाईदरमध्ये एक मोठे उत्पन्न वाढणार आहे. कारण आज मिरा भाईदर मध्ये वत्याच ठिकाणी आपण रस्ते तयार केलेले आहेत. आणि बिल्डरचे ट्रान्सपोर्टेशन हे जात असतांना माती वगैरे आणून ते रस्ते खराब होतात. त्यांच्याकडून आपल्याला कुठल्याही प्रकारचे उत्पन्न होत नाही. दोन दोन, तीन तीन, चार चार वर्ष तुमचे प्रोजेक्ट पूर्ण होत नाही. त्यांचे टॅकर जातात, मातीच्या गाड्या जातात. त्यामुळे मोठा रस्ता खराब होते. तर त्यांच्याकडून आपल्याला एक मोठी म्हणजे मिरा भाईदर महानगरपालिकेला कमीत कमी श्री. अजित पाटील साहेबांनी सांगितले की, दिड ते दोन करोड रुपये आपली इनकम होणार आहे. ह्यांनी जी अंदाजित रक्कम धरलेली आहे. ते परटिक्युलर ह्या वर्षात आपण किती प्लान पास केले? पण सन १९९५ पासून आपण ज्यांना आय. ओ. डी. आणि सी. सी. दिलेली आहे. त्यांचा आपण पेंडींग बॅकलॉक काढला तर कमीत कमी दोन करोड रुपये आपल्याला त्यांच्याकडून वसुली होईल. म्हणजे साधारण रू. तीन ते चार करोड रुपये उत्पन्न आपल्या मिरा भाईदर महानगरपालिकेचे उत्पन्न वाढेल आणि ह्यांचे कुठल्याही नागरिकांवर भुर्दंड पडणार नाही. तर आपण परत पुन्हा यावर फेर विचार करा. हा एक फार मोठा उत्पन्नाचा भाग आहे.

**मिलन पाटील :-**

मा. महापौर साहेब, हा विरोधाला म्हणून विरोध आहे.

**शशिकांत भोईर :-**

मा. महापौर साहेब, मी त्या ठरावामध्ये स्पष्टीकरण केलेले आहे. ज्या ज्या त्रुटी आहेत त्या त्या दाखविल्या गेलेल्या आहेत. पुढील सभेत मागवा आणि दाखवा.

**चंद्रकांत वैती :-**

सन्मा. सदस्य श्री. मिलन पाटील साहेब त्याला विरोध केलेला नाही. तुम्ही ठराव व्यवस्थीत ऐकला नाही. तुम्ही बोलायचे म्हणून बोलता आजच त्यात काय लिहिले आहे की, ओपन क्षेत्र किती? एन.ए. झालेले प्लॉट किती? एन.ए. साठी प्रस्तावित झालेले प्लॉट किती? मिठागरासाठी किती प्लॉट आहेत? पाण्याखाली किती प्लॉट आहेत? वनखात्याच्या प्रॉपर्टी वरती किती प्लॉट आहेत? इल-लिगल कन्स्ट्रक्शन झालेले आहेत? त्याच्याखाली किती प्लॉट आहेत? हे सगळे मुद्दे त्याच्यात आहेत आणि ह्याचा कुठल्याही प्रकारचा अभ्यास न करता अतिशय मोघमपणे अंदाज दिड ते दोन करोड रुपये जमतील. असे सांगितलेले आहे. तर त्याच्यात स्पष्ट लिहले आहे की, ह्या सगळ्या बाबींचा स्पष्ट अहवाल सादर करावा त्याबद्दल माहिती घावी. आणि मग तो टॅक्स लावण्यासाठी आणावा असे स्पष्ट म्हटलेले आहे.

**मा. महापौर :-**

सन्मा. सदस्य श्री. वैती साहेब हे एरिया रोजच्या रोज चेन्ज होतात. हे एरिया तुम्हाला दिले तरी माहिती तरी दिली. रोजच्या रोज हे चेन्ज होणार आहे. एखादा प्लॉट आज आपण नॉन अॅग्रीमेंट, उद्या तो अॅग्रीकल्चर होईल. आणि आपल्याला फक्त पॉलिसी डिस्मिशन करायचे आहे की आपल्याला किती परसेन्ट त्यावर कर लावायचा आहे?

**मिलन पाटील :-**

साहेब त्याच्यात आधी तुम्ही सुचना करा.

**जयंत पाटील :-**

सन्मा. सदस्य श्री. शशिकांत भोईर साहेबांनी नक्की काय ठराव मांडलेला आहे की, गोषवारा बरोबर नाही. गोषवाऱ्याची किंमत त्यांना दि. १७/१०/२००७ च्या मिटींगमध्ये कळली नव्हती. ती आज कळली. एकूण ९ चे २१ करतांना सन्मा. सदस्य प्रफुल्ल पाटील आणि सन्मा. सदस्य श्री. अॅड. एस.ए.खान ह्यांनी गोषवाऱ्याला काही अर्थ नाही. काही किंमत नाही. हे त्यावेळेला सांगितले होते. आणि आज त्यांना गोषवाऱ्याची किंमत कळली आहे. गोषवारा खूप महत्त्वाचा आहे. अधिकारी जर ह्या विषयांवर कोणी असतील तर त्यांच्याकडून तुम्ही माहिती घ्या. त्यांच्याकडून आम्हांला माहिती द्या. कशाप्रकारचे उत्पन्न मिळणार आहे हे ते सांगतील ना.

**अजित पाटील :-**

मा. पिठासिन अधिकाऱ्यांच्या परवानगीने बोलतो, मिरा भाईदर महानगरपालिकेने विकास कामासाठी विविध प्रकारे ९४ कोटी रुपयाचे कर्ज घेतलेले आहे. त्या कर्जाची परतफेड करण्याकरता महानगरपालिकेचे उत्पन्न वाढविणे आवश्यक आहे. त्या अनुषंगाने मुंबई प्रांतिक महानगरपालिका अधिनियम १९४९ चे कलम १२९

आणि १३२ नुसार इमारत आणि मोकळ्या जागेवर कर लावण्याची तरतुद आहे. त्यानुसार नगरपालिकेने इमारतींना टॅक्स लावलेले आहेत. मोकळ्या जागेवर कर लावण्याचा प्रस्ताव नगरपालिकेचे उत्पन्न वाढविण्याच्या दृष्टीने सादर केलेले आहे. ह्यामध्ये मोकळ्या जागेचे डेफीनेशन टिपणीमध्ये दिलेले आहे. ज्या मोकळ्या जागा एन.ए. झालेल्या आहेत. आणि ज्या बिनशेतीकडे वर्ग झालेल्या आहेत आणि एन.ए. करण्याकरिता जे प्लॉट मंजूर केलेले आहेत. त्या मोकळ्या जागा कर आकारणीसाठी पात्र राहतील. ह्या अनुषंगाने ज्या शहरांमध्ये मोकळ्या जागा आहेत. त्या किती आहेत? ह्या संदर्भामध्ये नगररचना विभागाकडून माहिती मागविलेली आहे. काल त्यांच्याकडून माहिती प्राप्त झालेली आहे आणि आणखिन अधिकृत माहिती काढण्याची कार्यवाही चालू आहे. एकंदरीत २ लाख ६३ हजार ७७८ चौ.मी. इतका क्षेत्राला मंजूरी दिल्याची माहिती काल नगररचना विभागाकडून प्राप्त झालेली आहे. ती माहिती आहे दि. एप्रिल २००७ ते ऑक्टोबर २००७ पर्यंत डिटेल माहिती काढण्याचे काम चालू आहे आणि हा जो कर लावणार आहे. हा नगरपालिकेने ज्या मोकळ्या जागा आहेत. मोकळ्या जागांचे डेफीनेशन सिद्ध झाल्यानंतर ज्या दुय्यम निबंधक ह्यांनी जे मार्केट रेट फिक्स केलेले आहेत. महानगरपालिका क्षेत्रातील चेन्ना ते उत्तन भागातील त्या मार्केट रेटच्या अनुषंगाने बाजारभाव निश्चित करून त्या जागेची किंमत काढणार आहे. किंमत काढल्यानंतर त्या जागेपासून वार्षिक वेतन किती अपेक्षित येणार आहे? त्यानुसार ती वार्षिक किंमत ठरविण्यांत येणार आहे. वार्षिक किंमत ठरविल्यानंतर आपण नगरपालिकेने जो प्रस्तावित टॅक्स लावलेला आहे. मालमत्ता कर २८टक्के, वृक्षकर १८टक्के, आणि अग्निशमन १८टक्के हा प्रस्तावित करणार आहे. ती व्हॅल्यूएशन झाल्यानंतर जशी मालमत्ताला आकारणी करतो. त्याप्रमाणे आकारणी करण्यांत येणार आहे. आकारणी केल्यानंतर आमच्या अंदाजाप्रमाणे दोन ते तीन कोटी रुपयांचे उत्पन्नांमध्ये नगर पालिकेच्या वाढ होईल. ह्याविषयी मी हा प्रस्ताव सादर केलेला आहे.

### प्रफुल्ल पाटील :-

सन्मा. सदस्य श्री. जयंत पाटील (दादा) यांनी सन्मा. सदस्य श्री. शशिकांत भोईर साहेबांचे कौतुक केले. त्यासाठी त्यांचे अभिनंदन केले पाहिजे. आणि त्यांनी बरोबर सांगितले की गोषवारा मान्य नाही. म्हणून सन्मा. सदस्य श्री. शशिकांत भोईर यांनी तो गोषवारा सदोष ठरवूनच हा ठराव मांडलेला आहे. त्यांना तो बरोबर कळलेला आहे. या ठिकाणी आता तुम्ही एक फिगर सांगितलेली आहे. २ लाख, ६४ हजार, ७७८ चौ.मी. अशी काहीतरी एक फिगर सांगितली, ती फिगर आज तुमच्याकडे अव्हेलेबल आहे.

### अजित पाटील :-

गोषवारा आपण कधी दिलेला आहे. काल संध्याकाळी हा नगररचना विभागाकडून फिगर अव्हेलेबल झालेली आहे. म्हणून गोषवारा देताना ही माहिती देता आली नाही. काल संध्याकाळीच फिगर उपलब्ध झालेला आहे.

### प्रफुल्ल पाटील :-

म्हणूनच हा शेवटी पॉलिसी डिस्मिशन आहे. एकदा तुम्ही अशाप्रकारचा निर्णय घेतला की तो वर्षानुवर्षे तो डिस्मिशन आम्हाला पुन्हा बदलण्यासाठी किंवा फेरबदल करण्यासाठी मा. महासभेपुढे येणार नाही. आता एकदा ठरले की मोकळ्या जागांवरती बिनशेती झालेल्या किंवा आय.ओ.डी. दिलेल्या किंवा सी.सी. दिलेल्या पण बांधकाम न झालेल्या अशा मोकळ्या जागांवरती टॅक्स लावण्याचा एकदा डिस्मिशन झाला की नंतर प्रशासन आमच्याकडे ढुकून बघणार नाही. साधा टॅक्स मध्ये काही प्रॉब्लेम असेल तर बघत नाही. तर काय? टॅक्स लावल्यानंतर अजून किती लोकांच्या तक्रारी आहेत? नावांपासून एक प्रॉपर्टी मी स्वतः रजिस्टर करून घेतलेले आहे. मी जेव्हा टॅक्सची पावती काढली तर बघतो तर कोणीतरी नविन भलतेच काहीतरी नाव त्याठिकाणी होते. मला आश्चर्य वाटले. ही प्रॉपर्टी बदलली तरी कशी? मी चौकशी केली तर त्यांच्याकडे खरेदीच्या व्यवहाराचा पण भाग नाही. मी एवढ्या डिटेलमध्ये बोलणार नाही. आजची जी आमची करपद्धती आहे ती किती सदोष आहे? हे तर आपल्याला माहिती आहे. कर लावण्यामध्ये बिले काढण्यामध्ये किती चुका होतात? दरवर्षी आम्ही तेच बोलतो, कोणाचे नाव बदलले जाते, तर कोणाचा पत्ता, तर कोणाचा एरिया, तर कोणाला पैसे दिलेले असतात. तरी परत परत बिले दिली जातात. आम्ही एखादे धोरण ठरवितो. धोरणाला निश्चितपणे विरोध नाही. पण धोरण ठरवितांनाच ते धोरण सुसंगत जर असले तर त्याची अंमलबजावणी प्रशासन व्यवस्थित करील. आम्ही मोघम ठराव दिला की, ह्यांनी काय करायचे? ए टू झेड सगळ्यांना नोटीसा पाठवायच्या मग त्याच्यामधला झेड येईल. मधलाच ए, बी, सी, डी येईल. मधलाच क्यू येईल. आणि सांगेल हे आमचे चुकीचे आहे आणि मग नंतर काय सुरु होते? हे आपल्याला माहिती आहे सभागृहातील सर्वांना माहिती आहे की, टॅक्स डिपार्टमेंटमध्ये कशा पद्धतीचे काम सुरु आहे? मी तर तुम्हांला म्हणतो. तुमच्या आत्ताचा टॅक्स मालमत्ता कराची जी पद्धती आहे. बिल कधी गेली ते बघा. मा. महापौर साहेब, तुम्हाला एकट्यांनाच काळजी आहे की ह्या शहराचे उत्पन्न वाढावे. ही तुमची प्रामाणिक भूमिका आहे. असे मी मानतो. त्यात तुम्ही असेही बोललात की मी मारवाडी आहे. पै-पै जमा करून ह्या शहराचा विकास करीन. पण जेव्हा एखादया माणसाकडे एखादी अशी मानसिकता असते. त्यादृष्टीने ते पाउल उचलतात. तुम्ही बिल सहा महिने गेली आहे. हे फायनॅशियल वर्ष सुरु झालेले आहे. सहा महिने गेले आणि आता तुमची टॅक्सची बिले गेली. तुम्ही विचारा. मग जर तुमची पद्धत ज्या टॅक्स लावायला ऑलरेडी तुमच्या सुरु आहेत. ज्या प्रोसेस सुरु आहेत. खाली एवढे मोठे सेंटर बनविलेले आहे. मॉडेनायझेशन केलेले आहे. संगणक चालक आणलेले आहेत. त्यांना ट्रेनिंग दिलेले

आहे. ट्रेन आणले. नविन घेतोय. सगळ्या आस्थापनेवर असताना देखिल सहा सहा महिने तुमची बिले जात नाही. आणि मग त्या आर्थिक वर्षात ती वसूली काय होणार? जेव्हा तुम्ही नविन एखादे धोरण करता आम्ही स्पष्ट ठरावामध्ये कुठल्या प्रकारे विरोध केलेला नाही. आम्ही पहिल्यांदा म्हटले की, आज श्री. अजित पाटील साहेब, म्हणतात की काल त्यांना पत्र प्राप्त झाले. ती तेवढी संख्या आहे. त्यांच्यानंतर आम्ही जे ठरवायचे की, आम्हांला इतके उत्पन्न होणार आहे. आम्हाला हेही कळले पाहिजे की, ह्या महापालिकेच्या हद्दीमध्ये एकूण किती क्षेत्र वापरायला तुम्हांला किती वाव आहे? तुमचे धोरण काय आहे? की उत्पन्न वाढवायचे? उत्पन्न कशा पद्धतीने वाढवायचे? टॅक्स लावून उत्पन्न वाढवायचे. वेगवेगळ्या प्रकारचे टॅक्स लावून त्याच्यामध्ये ह्या मोठ्या जागेवर टॅक्स लावून उत्पन्न वाढवायचे आहेत. मग हा तुमचा प्रामाणिक हेतू, खरोखरच पार पाडायचा असेल तर तुमच्याकडे डॅटा तर पाहिजे ना। आज तुमच्याकडून कुठलाही प्रकारचा डॅटा ह्या गोषवाऱ्यामध्ये आलेली नाही. म्हणून बोलतोय, आता त्यांनी सांगितले की ही संख्या मिळाली. तेवढ्यावरती चालणार आहे का? तुम्ही ही संख्या लक्षात घेतल्यानंतर तुमचा नेक्स्ट मुद्दा कुठे जातो? रेटेबल व्हॅल्यू ठरवायचा. हाउ यूअर गोईंग टू डिसाईड द रेटेबल व्हॅल्यू. करपात्र मूल्य तुम्ही कसे ठरविणार? त्याचे वार्षिक भाडे तुम्ही जे प्रस्थापित केलेले आहे. हे भाडे तुम्ही कनव्हॅन्टच्या डॉक्युमेंट वरती म्हणजे ज्या भागांमध्ये टॅक्स लावायचा आहे. त्या भागामध्ये कुठल्या दरामध्ये कनव्हॅन्स होतो? स्टॅम्पड्युटी भरली जाते? आता तुम्हांला माहिती आहे की, कनव्हॅन्स तुमच्या भाईदरमध्ये काय प्रॉब्लेम आहे? कोणाची जमिन कोण कनव्हॅन्स करतो? कोण स्टॅम्प ड्युटी करतो? आपण विसरून जा. वि आर अलटिमेटली गोईंग टू सी ऑक्युपाय नॉट द ओनर. आम्ही असे म्हणू ओनर दुसरा सन्मा. सदस्य श्री. वैती साहेब आहेत. ऑक्युपायर मी आहे मी जबरदस्तीने त्यांच्या जमिनीवर जावून बसतोय आणि मग सांगतोय की मला टॅक्स लावा अॅण्ड बाय वरच्यु ऑफ दॅट डॉक्युमेंट आय एम गोईंग प्रूव्ह माय ओनरशिप. हे तुम्ही कुठेतरी डिसाईड करायला पाहिजे. हा एक कायदयाचा मुद्दा झाला. दुसरा मुद्दा करमूल्य, करयोग्य मूल्य ठरविताना कनव्हॅन्सची जर तुम्ही स्टॅम्प ड्युटीची रक्कम घेतलीत, तर त्याच्या कोणाशीतरी तुलना तुम्हांला करावी लागेल. खारीगांवातील प्रॉपर्टीचा कनव्हॅन्सचा रेट तुम्हांला माहिती आहे. खारीगांवातील कनव्हॅन्सचा रेट रु. ६०००/- च्या वर नाही. इतर ठिकाणच्या जागेचा रु. ७०००/- ते रु. १००००/- पर्यंत आहे. खारीगांवातील तुमचे टॅक्सबेल व्हॅल्यू ज्या प्रॉपर्टी एक्झिस्टंट मध्ये आहेत किंवा आता ज्या नव्याने झालेल्या आहेत. तिथे तुमचा मॅक्झिमम घरपट्टीचा रेट आहे. म्हणजे करमूल्य निर्धारण अधिकाऱ्यांने याच्यासाठी तुम्हांला काय करावे लागेल? कर मूल्य निर्धारण अधिकाऱ्यांनी जे काही रेट ठरविलेले आहे. त्यांनी क्षेत्र वाईज ठरविलेले आहे. बरोबर आहे की नाही. मग तुम्ही त्या दरांची तुलना केलेली आहे का? उदा. मिरारोडमध्ये नयानगरमध्ये जर आज तुम्ही प्रॉपर्टीची व्हॅल्यू कनव्हॅन्सच्या हिशोबाने काढायला गेलात. तर ती निघाली रु. १००००/- पर स्वचे.मी. आणि करमूल्य निर्धारण अधिकाऱ्यांनी सांगितले की ते की आम्ही रु. ५०००/- ठरवूनच १.९ मॅक्झिमम रेट तुमचा होवू शकतो. तरही तफावत तुमच्या लक्षात कशी येईल? जर उदया त्याठिकाणी हायरने कनव्हॅन्स दिड चा स्टॅम्प ड्युटीचा आधार घेवून जर तुम्ही रेटेबल व्हॅल्यू ठरविली आणि त्याठिकाणी जर इमारत उभी राहिली तर त्या इमारतीला तुम्ही त्याच रेटने लावणार हे कशावरून? तेव्हा तुम्ही म्हणणार करमूल्य निर्धारण अधिकाऱ्यांनी दिलेला डिसिझन नाही. मग टॅक्स लावतांना कारण शेवटी हा मालमत्ता कर, तेव्हा तुम्ही एक व्याख्या सांगितली ती मला आवडली. त्यांनी सुंदर व्याख्या सांगितली ह्याच्यापेक्षा सुंदर व्याख्या मोकळ्या जागेसाठी नाही. आणि खरोखर ती व्याख्या बी.पी.एम.एल. अॅक्ट मध्ये विहित केल्यानंतर मोकळी जागा म्हणजे काय? आणि इमारत झालेली जागा म्हणजे काय? दोन्ही लावतांना टॅक्स काय येतो? तो मालमत्ता कर, मग मालमत्ता कर एका ठिकाणी तुम्ही एका बिल्डींगला जेथे मोकळी जागा आहे. जिथे बिल्डींग प्रस्थापित केलेल्या, परमिशन दिलेल्या बिनशेती झालेली आहे. तिथे तुम्ही कनव्हॅन्टच्या रेटच्या हिशोबाने टॅक्स लावणार आणि त्याच्या बाजूला बिल्डींगला टॅक्स असणार आहे. तुमच्या रेटेबल व्हॅल्यूच्या हिशोबाने हे कुठेतरी डिफ्रेन्शीएट झाले पाहिजे. ह्याची कुठेतरी तुलना झाली पाहिजे. आणि म्हणून तशाप्रकारचा तुलनात्मक तक्ता अधिकाऱ्यांनी सादर करायला पाहिजे होता. शहराला उत्पन्न वाढविण्यासाठी अनेक गोष्टी असतील मी त्याबद्दल बोलत नाही. पण सर्वसाधारणपणे असा कुठलाही सर्व्हे न करता कुठल्याही ठिकाणी रेटेबल व्हॅल्यू कर मूल्य निर्धारण अधिकाऱ्यांनी किती ठरविले? हे कुठेहि रेकॉर्डवर न आणता तुम्ही हा गोषवारा सादर केलेला आहे. ह्या गोषवाऱ्यामध्ये एक महत्वाची बाब तुमच्याकडून अशी राहून गेली की, अनधिकृत बांधकामाच्या क्षेत्राचे तुम्ही काय करणार आहात? आज त्याचा वापर होतोय, त्याला टॅक्स लावला जातो व टॅक्स कुठल्या रेटने लावला जातो आणि तुम्ही डि.सी. रूल केले, डेव्हलपमेंट कंट्रोल रूल्स केलेत, डेव्हलपमेंट कंट्रोल रूलचा तुम्हाला रूल ५, १, २ ह्यामध्ये स्पेसिफाय केले. जेव्हा तुमचे उत्पन्न वाढविण्याचा विषय येतो. तेव्हा या शहरातील उत्पन्न कशाला वाढवायचे? कशा पद्धतीने वाढवायचे? असा पण अग्रक्रम मा. महापौर साहेब ठरला पाहिजे. मोकळ्या जागेवरती टॅक्स लावायचे प्रस्थापित कोणी केले? ठाणे महानगरपालिकेने केले, कल्याण - डॉबिवली महानगरपालिकेने केले. ठाणे महानगरपालिका किती वर्षांची आहे? आणि त्यांनी लेटेस्ट आता केले. ठाणे महानगरपालिकेमध्ये देण्यात येणाऱ्या सोयीसुविधा किती? आणि आम्ही किती सोयीसुविधा देतोय? सकाळी पोस्टमार्टम झाले. अजून सन्मा. सदस्य श्री. मिलन म्हात्रे साहेबांनी रिपोर्ट दिलेला नाही. वीष प्रयोग आहे की नक्की कसला प्रयोग आहे? तर अशा पद्धतीने या सोयीसुविधा नसलेल्या शहरामध्ये आम्ही एकदम हायर टॅक्सला जातो आणि एकीकडे अनधिकृत बांधकाम चाललेली आहेत.

त्याच्यावर बिल्डींग उभ्या राहिल्या आहेत. त्याच्यावर आम्ही टॅक्स लावतो आणि त्या अनधिकृत बांधकामावरती वाढीव टॅक्स लावायची प्रोव्हिजन तुम्ही डी.सी. रूलच्या पाच मध्ये केलेली आहे. हे प्रोव्हिजन तुम्हाला वाचून दाखवतो. (सदर प्रोव्हिजनचे सभागृहासमोर वाचन करण्यात आले.) या ठिकाणी सी.सी. घेतल्या, बिल्डींग बांधल्या ओ.सी. घ्यायला कोणी तुमच्याकडे येत नाही. प्रॉब्लेम होतो. त्या रहिवाश्यांना, अशा लोकांना जर तुम्ही बिल्डर, डेव्हलपरला किंवा ऑक्युपायरला ५० टक्के अॅडीशनल टॅक्स लावा. असे आम्ही सी.सी. डेव्हलपमेंट डी.सी. रूलमध्ये केले. त्याच्यावर काही अंमलबजावणी नाही. त्यातील २ चे वाचन करतो. (सदर प्रोव्हिजनचे सभागृहासमोर वाचन करण्यात आले.) जेव्हा अशाप्रकारे उत्पन्न वाढीसाठी दंडात्मक कार्यवाही करून म्हणून आपण अशा प्रोव्हिजन, तरतुदी करतो. त्याच्या तरतुदीचे जे काही पालन होत नाही. आपण कसे करायचे या शहरामध्ये की, जो सज्जन माणूस आहे त्याच्या डोक्यावर जास्तीत जास्त टॅक्स लावावा त्याने चुक केली तो आला त्याने तुमच्याकडून आय.ओ.डी. घेतली त्याच्या नंतर बिनशेती केली. त्यानंतर बिनशेती परमिशन घेतली. नंतर सी.सी. घेतली आणि काही कामासाठी किंवा भाववाढ होईल म्हणून थांबून बसला. त्याने पाप तर केले नाही. तो तर सज्जन आहे. त्या सज्जनावरती आम्ही टॅक्स लावतो आणि जे अनधिकृत बांधकाम करू पळायला लागले, जे वाढीव एफ.एस.आय. बांधकाम करू पळायला लागलेले आहेत, त्यांना आम्ही सज्जन समजतो. त्यांना टॅक्स लावायचे बाजूला ठेवतो आणि एकीकडे आम्ही ह्यांना टॅक्स लावतो. ह्या शहरामध्ये किती अनधिकृत कार्यवाह्या चाललेल्या आहेत? कार्यवाह्या किती झालेल्या आहेत? रस्त्यावर बसतात, भाजी विकतात, मच्छी विकतात, सगळा कचरा तुमच्या तोंडावर फेकून जातात. परत रहायला कुठे? मुंबईला किती फेरिवाले स्थानिक आहेत? त्यांच्यावर आम्ही काय करतो? त्यांना आम्ही लायसन्स दिलेले आहेत का? त्यांच्याकडून आम्ही काही फी वसूल केलेली आहे का? नॉमीनल बाजार फी म्हणून वसूल करतो. त्याच्या तुलनेत त्यांचे उत्पन्न किती आहे? कितीतरी लोकांचे ना हरकत दाखले तुमच्याकडे पडून आहेत, हजारो नाहरकत दाखले ह्या प्रशासनाकडे पडून आहेत. वरून ते त्यांना कुठल्या ना कुठल्या पद्धतीची किंवा कुठल्या ना कुठल्या प्रोसीजर सांगून त्यांना थांबवले जाते म्हणजे उत्पन्नाच्या बाबी बोलायचे झाले तर मी काही बजेटवर बोलत नाही. बजेटवर आणखीन बरेच विषय आहेत. तर अशा अनेक बाबींचे उत्पन्न आपल्याला घेता येईल किंवा घेवू शकतो. हे सगळे बाजूला ठेवून आज हा विषय अचानक आला तरी ह्या विषयाला आमचा अजिबात विरोध नाही. आम्ही म्हटले त्याप्रमाणे ठरावात म्हटल्याप्रमाणे की, त्यांनी खरेदी-विक्रीला किंमती ठरवून खरेदी-विक्रीच्या किंमती कनव्हेन्स करताना ज्या लागलेल्या आहेत. त्याच्या डिटेल्स तयार करून त्या एरियामध्ये आम्हीसुद्धा काय टॅक्स रेट लावतोय? याचासुद्धा तुलनात्मक तक्ता तयार करावा. याच्यानंतर आतापर्यंत दिलेल्या सगळ्या मालमत्तेचे अमुक एक इत्तंभूत बांधकाम झालेले आहे किंवा त्या संदर्भात आता त्यांनी आकडेवारी सांगितली. ती कदाचित उद्या बदलेल सुद्धा कारण की, ती आकडेवारी काल आलेली आहे. आपल्याकडे रोजचे बदलणारे चक्र आहे. लेट्स एक्सप्लेन फॉर बेटर, आपण चांगल्यासाठी अपेक्षा करतो. असे म्हणण्यास काहीही हरकत नाही. तर ह्या विषयाला आमचा विरोध नाही. आम्ही असे म्हटलेले आहे की, हा विषय पुन्हा मा. महासभेसमोर ठेवावा. आता शैक्षणिक संस्थेच्या बाबतीत आम्ही बोलतो तुम्ही दरवेळा आम्हाला प्रोव्हिजन करून तोंडाला पानं पुसता की, रु. ३० लाखांची, रु. ५० लाखाची १ करोडची तुम्ही नाही मा. महापौर म्हणून तुमचा अनुदान देण्याचा टर्म यायचा आहे की, अगोदरपूर्वी असेच व्हायचे की, ठिक आहे. आम्ही अनुदान देऊ. बजेट प्रोव्हिजन होते. चांगल्या वाईट सगळ्या शाळा इथे आहेत. ज्या तुमच्या मेरीटमध्ये बसतील. त्यांना तुम्हाला अनुदान देणे, गरजेचे असुनसुद्धा दिले जात नाही. आज शाळा जे चालवितात त्यांना महापालिका कमर्शियल रेटने टॅक्स लावतो. इजी द कर्मशियल ऑक्युपेन्सी, एज्युकेशन इज नॉट अ ट्रेड इज मे बी अ प्रोफेशन आणि प्रोफेशनला तर तुम्ही तसा वेगळा टॅक्स लावत नाही. मग अशा संस्थांशी सुद्धा कर माफ सवलतीची तुम्ही प्रस्ताव सोबत आणायला पाहिजे होतो. श्री. अजित पाटील साहेब, तुम्ही माहिती द्या की, जर दुसऱ्या महानगरपालिकेमध्ये सवलती दिल्या जातात तसे आपल्या येथे आहे का? एस. एन. कॉलेज करोडो रुपयाचे उत्पन्न भरत आहे असा प्रस्ताव आपण आणायला पाहिजे आणि म्हणून आम्ही असा ठराव याठिकाणी मांडलेला आहे. फक्त श्री. अजित पाटील साहेबांना एवढीच विनंती करतो की, त्यांनी अशा शैक्षणिक संस्थांना कर सवलती देता येते की नाही ते बघावे आणि हा विषय पूर्ण गोषवारा म्हणजे पूर्ण माहिती गोषवाच्यामध्ये आम्ही जी माहिती मागीतलेली आहे त्या माहितीस्तव सादर करावी १०० टक्के आम्ही सभागृह त्या ठरावाला मंजुरी देवू.

#### ओमप्रकाश अग्रवाल :-

मा. महापौर साहेब, मा. आयुक्त साहेब माझ्या विषयाकडे जरा लक्ष द्या हा जो विषय महापालिकेमध्ये, सभागृहमध्ये आलेला आहे. हा ठराव झाल्यानंतर सर्वात पहिल्यांदा मी अधिकारी वर्गाचे अभिनंदन करतो. कारण सन जुन २००३ मध्ये मी हा विषय मा. महासभेच्या प्रश्न उत्तरांमध्ये आणलेला आहे आणि त्यावेळी त्याला प्रशासनाने दिलेले उत्तर मी वाचून दाखवितो.

प्रश्न उत्तरांमधील प्रश्न क्र. १) मुंबई महानगरपालिका अधिनियम १९४९ चे कलम १३२ अन्वये सामान्य कर कोणत्या जागेवर बसविता येतो? प्रश्न उत्तरांमधील प्रशासनाने दिलेले उत्तर :- मुंबई प्रांतिक महानगरपालिका अधिनियम १९४९ चे कलम १३२ अन्वये सामान्य कर रेखांकन केलेल्या व मोकळ्या असलेल्या बिगरशेती, प्लॉट वर आकारणी करण्यात येते. म्हणजे पहिली गोष्ट आपल्या नियमाप्रमाणे जर सभागृह आहे

तर सभागृहाची दर सुची मान्यता घेवून सभागृह नसेल तर प्रशासकिय अधिकाऱ्यांनी अशा जागेवर कर लावणे नियमाप्रमाणे हा त्यांना बंधनकारक आहे. सन २००३ साली हा प्रश्न उपस्थित केलेला आहे आणि आज सन २००७ साल चालू आहे. आज अधिकारी वर्गांनी २ कोटी रूपयांचे उत्पन्न दाखविलेले आहे. पहिली गोष्ट म्हणजे जर सन २००३ आणि सन २००७ हे चार वर्ष काउन्ट केले तर महापालिकेचे १० ते १५ कोटीचे नुकसान झालेले आहे. म्हणजे अधिकारी सक्षम आहेत. नियमाप्रमाणे त्यांनी कर लावला पाहिजे. त्यांनी कबुल केलेले आहे. त्यांनी कर लावलेले नाही. पण आज सभेत विषय आलेला आहे. दुसऱ्या प्रश्नांचे उत्तर देतांना त्यांनी मला सांगितलेले आहे की,

प्रश्न उत्तरांमधील प्रश्न २ ) इमारती किंवा जमिन व त्याचे भाग ज्याला कोणताही व्यापार किंवा धंदा चालविला जातो अशा इमारतीत किंवा जमिन किंवा त्याचे भाग आणि ज्यापासून भाडे मिळते अशा जमिनी किंवा त्यात भाग महापालिका क्षेत्रात असे किती आहे की ज्याच्यात कर वसूल महापालिका करते? त्याचा तपशिल द्यावा? प्रश्न उत्तरांमधील प्रशासनाने दिलेले उत्तर :- महानगरपालिका क्षेत्रातील निवासी, बिगर निवासी, बांधकामास करायची आकारणी, निवासी, बिगर निवासी मिळकत किंवा जागेवर मा. प्रतीकृत निर्धारित अधिकारी तथा सहा. संचालक नगररचना ठाणे यांनी प्रस्तावित केलेल्या त्या त्या वेळेला भाडे मुल्य दराने कर आकारणी करण्यात आलेली आहे. अशाप्रकारे आकारणी केलेल्या जागेचा तपशील कार्यालयात उपलब्ध आहे. कार्यालयीन वेळेत सदर तपशिल आपणांस उपलब्ध आहे.

मला प्रशासनाने हे सांगावे की, हा जो प्रश्न विचारला त्याला तुम्ही खोटे उत्तर दिलेले आहे किंवा कर आकारणी सुरु आहे. हा विषय आणण्याची काय प्रोव्हीजन आहे. याचा अर्थ मला जे सन २००३ साली प्रशासनाने उत्तर दिलेले आहे. त्यावेळी हा प्रश्न उपस्थित केला होता. मोकळ्या जागेसंदर्भात महापालिकेचा खर्च वाढलेला आहे. त्याला उत्पन्नाचा स्त्रोत मी विषयांतर करतोय अशाच पद्धतीचा महापालिकेचा १०० गाळे भुई भाड्याने दिलेले आहेत १०० गाळे भुई भाड्याचे १५/- रु आपण महिना टॅक्स घेत होतो. त्याला ही आपण रु. ५००/- आणि रु. ८००/- दराने कर आकारणी केली. मागच्या मा. महासभेत पण मी विचारले होते. त्यावेळी त्या १०० गाळ्यांचा पैसा महापालिकेने वसूल केलेला नाही. जेव्हा तुम्ही मला उत्तर देता सन २००३ साली अशी आकरणी सुरु आहे आणि तुमचा तपशिल महापालिका कार्यालयात बघावा. म्हणजे खरोखर इकडे अधिकारी वर्ग आम्हाला असे उत्तर देवून दिशाभूल करत आहेत का? म्हणून आजचा हा जो १३२ कलम आहे. तुम्हाला प्रशासनाला बंधनकारक आहे की, खुली मोकळी जागा एन.ए. किंवा जे काही नियम आहे यावर टॅक्स लावायचा तुमचे काम होते. ते काम तुम्ही केलेले नाही. उलट त्यावेळेला आम्हाला चुकीचे उत्तर दिलेले आहे. म्हणून मा. आयुक्त साहेब, यांवर पहिल्यांदा खुलासा व्हावा की, ही जबाबदारी आपली आहे. जेव्हा प्रशासन अन्य कर लावते. तुम्हाला सांगतो जेव्हा ही महापालिका हे सभागृह एस्टॅब्लिश नव्हते. त्यावेळेला मा. आयुक्त श्री. शिवमूर्ती नाईक साहेबांनी भाईदरच्या व्यापारांवर एनओसी घेण्यासाठी लायसन्स घेण्यासाठी भरमसाठ फी, म्हणजे एक साधा किराणा मालाचा व्यापारी जो किराणा मालाचे दुकान चालवितो. त्याला ३,०००/- रु लायसन्स फी एम दुधवाला दूधकेंद्र चालवितो त्याला लायसन्स फी ५,०००/- रु. आणि तुम्हाला माहिती आहे की तुम्ही आता सहा महिन्यापुर्वीच त्यांना नोटीसा काढल्या होत्या त्यांना तुम्ही बंधनकारक केले होते की हा प्रशासकिय ठराव आहे. तुम्हाला पैसे भरावेच लागतील. तुम्ही बार, सोने, चांदीच्या दुकानदारांवर गुन्हा दाखल केला होता त्यांना कोर्टात जावून जामिन द्यावा लागला. जेव्हा तुम्ही प्रशासकिय राजवटीमध्ये असे नियम बनवू शकता तेव्हा हा नियम तुम्हाला बंधनकारक असताना ह्या मा. महासभेमध्ये आणण्याचे प्रोसेस काय आहे? ही पहिली गोष्ट आणि दर सुची ठरवायची असेल त्या तुम्ही प्रशासकिय राजवटीमध्ये ठरवू शकत होता. सन २००३ साली म्हणजे जसे आमचे सन्मा. सदस्य श्री. मिलन म्हात्रे साहेब नेहमी म्हणायचे की, आरोग्य केंद्र ताब्यात घ्या. नाही घेतले त्यासाठी कोर्टात जावे लागले. याच पद्धतीने या महापालिकेच्या उत्पन्नामध्ये आपण प्रशासकिय अधिकारी हे नुकसान कारक आहे. आज हे इकडे सिद्ध झालेले आहे म्हणून आमचे असे मत आहे. जो गोषवारा दिलेला आहे. त्याच्यात काही नियमाप्रमाणे काही ठरवायचे असेल की, मोकळी जागा किंवा आर.जी. जागा आहे. जो काही त्याच्यावर नियमाप्रमाणे सुट द्यायची आहे. ती सुट तुम्ही द्यावी आणि महापालिकेच्या उत्पन्नाच्या दृष्टीने आपण आज जो हा ठराव दिलेला आहे तो ठराव मा. महासभेमध्ये जर आपण पास नाही केला. तर आम्ही प्रशासकिय अधिकाऱ्यांना कोर्टात खेचू म्हणजे हे खरोखरच तुम्ही महापालिकेचे ४ वर्षांमध्ये नुकसान केलेले आहे. माझा आजच्या प्रश्नाला सन जुन २००३ सालापासुनच्या ४ वर्षांमध्ये उत्तर दिलेले नाही. कर आकारणी सुरु आहे. म्हणून मा. आयुक्त साहेबांनी यावर खुलासा करावा. आणि माझी अशी विनंती आहे की, काँग्रेसच्या सर्व गटनेत्या, महापालिकेच्या उत्पन्नाचे साधन बघून जी काही सुधारणा त्यात करता येईल. तर आपण ती सुधारणा त्यात करूया यापुर्वी असे आपण ठराव केलेला आहे. जे काही पेचप्रसंग निर्माण झाले त्यावेळी अधिकाऱ्यांवरती सोपविलेले आहे की याच्यामध्ये जे काही त्रुट्या आहेत. त्या त्रुट्यांमध्ये सुधारणा करून आणि हा ठराव मंजूर झालेला आहे आहे असे अनेक ठराव या महापालिकेत पारित झालेले आहेत. म्हणून माझी अशी विनंती आहे की, यामध्ये जे सन्मा. सदस्य श्री. प्रफुल्ल पाटील साहेबांनी जो काही उल्लेख केलेला आहे. त्याच्यामध्ये प्रशासनाकडून ज्या काही त्रुटी आहेत. त्या त्रुट्यांची सुधारण करून हा टॅक्स लागू करण्यास संमंती द्यावी असा आम्ही आग्रह धरतो आहे. आता आम्ही यामध्ये ठराव ही मांडणार आहोत.

**मा. महापौर :-**

पाटील साहेब, आपण मघाशी दोन तीन मुद्दे याठिकाणी उपस्थित केले की, एक मुद्दा असा की, बिले वेळेवर जात नाही आणि दुसरा मुद्दा असा होता की, सन्मा. सदस्य श्री. शशिकांत भोईर साहेबांचा जागेची पूर्ण माहिती मिळालेली नाही. सॉल्ट डिपार्टमेंट किती? एन. ए. झालेल्या जागा किती? सी.सी झालेल्या जागा किती? अँग्रीकल्चर लॅन्ड किती? नंतर आपला असा एक मुद्दा होता की, रेट जो आपण रेडी रेट ने ठरविलेले आहेत. त्याच्यामध्ये काही चेंजेस करायचे आहेत का? पण बिले जात नाही म्हणून आपण हा करायचा नाही किंवा अनधिकृत बांधकाम आहेत. त्याच्यावर टॅक्स लागत नाही. म्हणून आपण हा घ्यायचा नाही आणि अनधिकृत बांधकामावर टॅक्सचा काही संबंधच नाही. आपण मोकळ्या जागा ओपन लँड वर ज्याला आय.ओ.डी. आणि एन.ए. साठी जातो. आपण त्यांना टॅक्स लावतो. परत हे लांब होत जाईल आणि आपला विचार होता की, १ एप्रिल २००७ पासून हा कर लावावा आत १ वर्ष आणखीन मागे जाईल. आणि जी काही पॉलिसी ठरवायची आहे की, परटीक्युलर उत्तरांमध्ये हा रेट असावा. मिरा रोडमध्ये हे असावे ते आपण आता ठरवून ठरावामध्ये तशा प्रकारची दुरुस्ती करून द्या. वॉरमंट च्या रेडी आहेत. त्या अतिरिक्त तुम्हाला असे काय वाटते? कि चेंजेस करायला पाहिजे उत्तनमध्ये हा रेट पाहिजे खारीगांमध्ये हा रेट पाहिजे. गोडदेव मध्ये हा रेट पाहिजे.

**मॉरस रॉड्रीक्स :-**

श्री. अजित पाटील साहेबांनी आपल्याला सांगितले की हा टॅक्स आकरणी प्रकरणी आपल्याला फायदा होईल. हा फायदा आपण बजेट मध्येही घेवू शकतो. ह्याला गोषवारा देण्यासाठी आपल्याकडे अजून चार महिने बाकी आहेत. आणि आपल्या महापालिकेला कसे कमवायचे आणि कसे गमवायचे? आपण पुढे ठरवू शकतो. परंतु, ह्या मिरा भाईंदर महानगरपालिकेमध्ये ५० टक्के अनधिकृत बांधकामे आहेत. त्यांच्याकडून आपण असे वसूल करता ह्याचा खुलासा दाखवा ते मी सांगतो आपल्याला ३ करोड रुपये नाहीतर १० करोड रुपये उत्पन्न येईल. कारण हा टॅक्स त्या लोकांवर डबल लागला जातो. मुंबई महानगरपालिकेमध्ये हा टॅक्स डबल लावला जातो. आज आपण सिंगल टॅक्स लावतो. तो तरी लावला आहे की नाही? तेही माहिती नाही ह्या ५० टक्के लावतो १०० टक्के आकारणी केली तर १० कोटी उत्पन्न होईल पहिल्यांदा अनधिकृत बांधकामावर आकारणी करा नंतर ह्यावर विचार करा.

**मा. महापौर :-**

आपण बरोबर बोललात अनधिकृत बांधकामावर डबल टॅक्स लागलाच पाहिजे. हे माझेही मत आहे पण त्यासाठी आपण तो ही एक विषय आणू पण ह्या विषयाला थांबवू नका. दुसरे फॉर एफ.एस.आय. व्हॅल्युएशन एखाद्याला आपण ज्यावेळी हा कर लावला. बिल्डर कधीही लवकरात लवकर येईल की माझा हाउस टॅक्स लावून घ्या. कारण ते नंतर हाउस ओनरवर ट्रान्सफर होणार आहे. म्हणून तो लवकरात लवकर टॅक्स लावून घेणार. नाहीतर आता बिल्डर टॅक्स लावण्याकरिता टाळाटाळ करतात. २ – २ वर्ष आपला टॅक्स राहून जातो.

**मॉरस रॉड्रीक्स :-**

त्या बिल्डरने बांधलेच नाही. बनवले नाही तर तो कसे काय टॅक्स लावणार? त्या पेक्षा जी अनधिकृत बिल्डींग बनली आहे त्याच्यावर टॅक्स लावा.

**मा. महापौर :-**

तुमचे असे म्हणणे आहे का की त्यांच्यावर टॅक्स लावायचाच नाही.

**मॉरस रॉड्रीक्स :-**

आधी टॅक्स लावा. नंतर बजेट आल्यानंतर आपले किती प्रॉफिट होते ते दाखवा.

**चंद्रकांत वैती :-**

आमचे म्हणणे आम्ही आपल्यापुढे व्यक्त केलेले आहे. मा. सभागृहासमोर आणलेले आहे. त्याच्यात ज्या त्रुटी आहेत. त्या त्रुटी आपल्याला आणता येतील. श्री. अजित पाटील साहेबांनी सांगितले की, आपल्याला शासनाकडून पत्र आलेले आहे. त्याविषयी आपले निश्चित पॉलिसी धोरण ठरवायचे. आणि पुढील सभेसमोर आपण लवकरांत लवकर आणावा. त्याला निश्चितपणे आपण सहकार्य करू. आम्ही आमचे मत व्यक्त केलेले आहे. आपल्याला ते पटत नसेल तर आपण आपले मत मांडावे. तसे नसेल तर पुढचा विषय घ्यावा.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

मा. महापौर साहेब, आमचा ठराव तयार आहे. मला प्रथम अधिकारी वर्ग, मा. आयुक्त साहेब सन जून २००३ मा. महासभेत उत्तर दिलेले आहे. ते उत्तर आम्ही खोटे समजायचे का?

**प्रफुल्ल पाटील :-**

मा. महापौर साहेबांच्या विनंतीचा आदर करुन बोलतो, की आपण जी विनंती केलेली आहे. आज पॉलिसी ठरवायला. मी मघाशी म्हटल्याप्रमाणे की करमूल्य निर्धारक अधिकाऱ्यांनी दिलेल्या क्षेत्राप्रमाणे हे एरियाप्रमाणे जे कराची करमूल्य दर ठरविलेले आहेत. आज त्याची माहितीच नाही. आणि तुम्ही कनव्हेन्स, स्टॅम्प ड्युटीच्या बेसीसवर जाल. तर त्यामध्ये फार मोठी तफावत येईल. म्हणून तुम्ही तसा तो तुलनात्मक तक्ता तयार करा. पुढच्या मा. महासभेसमोर ठेवा. आम्ही त्याला मंजूरी देवू.

### अजित पाटील :-

मा. पिठासिन अधिकाऱ्यांच्या परवानगीने बोलतो, सन्मा. सदस्य श्री. प्रफुल्ल पाटील साहेब यांनी करमूल्य निर्धारण फिक्स करण्याचे सांगितलेले आहे. त्या संदर्भामध्ये कल्याण कॉर्पोरेशन कडून मी माहिती घेतली होती. कल्याण कॉर्पोरेशनने मोकळ्या जागेवर सन १९९१ साली टॅक्स लावलेला आहे. तो टॅक्स लावत असताना एन.ए. झालेल्या जमिनी आणि एन.ए करण्याकरिता दिलेल्या जमिनी ह्याला जमिनीचे डेफीनेशन केलेले आहे. आणि ज्या जमिनीचे भाव रजिस्टर ऑफीसने एरिया वाईज फिक्स केलेले आहेत. ते भाव त्या जमिनीला पात्र करून त्याच्यावर वार्षिक रिटन किती येवू शकेल? ह्या हिशोबाने त्यांनी १०टक्के प्रमाणे वार्षिक भाडे येवू शकेल. असा अंदाज केलेला आहे आणि त्याप्रमाणे रिटन १०टक्के करून अमाउंट येईल. त्यामधून १०टक्के डिडक्शन करून जी रेटेबल व्हॅल्यू असेल त्यावर त्यांनी २८टक्के त्यांचा टॅक्स नंतर १टक्के वृक्षकर, शिक्षणकर, रोजगार मी सर्व कर लावलेले आहे. आपल्या ह्याच्यामध्ये जमिनीची लँड पकडून आपण ५टक्के चे प्रस्थापित केलेले आहेत. रिटन येईल. ह्या हिशोबाने त्या हिशोबाने तो प्रस्थापित आहे. रिटन जे वार्षिक भाडे मूल्य आहे. ती जमिनीची किंमत आहे. त्याच्यावर ५टक्के वार्षिक रिटन येईल, ह्या हिशोबाने वार्षिक भाडे मूल्य करणार आहे आणि १०टक्के स्टॅण्डर्ड डिडक्शन करून जी अमाउंट येईल ती करपात्रमूल्य होणार आहे. ह्यावरून जो आपण रेट फिक्स कराल. तो ह्यावर टॅक्स लागणार आहे. कल्याण कॉर्पोरेशन १०टक्के पकडलेली आहे. आपल्या प्रस्तावामध्ये आपण ५टक्के वार्षिक रिटन्स अपेक्षित केलेले आहे. कल्याण डोंबिवली मनपाने १०टक्के टॅक्स चालू आहे. त्यांचा संपूर्ण टॅक्स आहे. १०टक्केच्या अग्नेस्ट आपण ५टक्के टॅक्स प्रस्थापित केलेला आहे. ह्याच्यामध्ये निबंधकांनी जो भाव फिक्स केलेला आहे. तो रेडी रेटने त्या जागेवर आपण वार्षिक भाडे मूल्य करण्यासाठी लागू करणार आहोत.

### ज्योत्सना हसनाळे :-

मा. महापौर साहेबांच्या परवानगीने बोलते. सन्मा. सदस्य श्री. शशिकांत भोईर साहेबांनी आता एक ठराव मांडला. त्यामध्ये त्यांनी म्हटले आहे की, गोषवारा सभागृहासमोर येवू द्या. आणि मग नंतर हा विषय मंजूरीला घ्यावा. सन्मा. सदस्य श्री. प्रफुल्ल पाटील साहेब ह्यांनी सुद्धा ह्या विषयांवर चर्चा केली आणि माझेही असे म्हणणे आहे की, सदर विषय तुम्ही पुढच्या मिटींगला घ्यावा आणि गोषवारा प्रशासनातर्फे मागवून घ्यावा.

### ओमप्रकाश अग्रवाल :-

मा. महापौर साहेब, मला प्रथम मा. आयुक्त साहेबांनी ह्याचे उत्तर द्यावे की, आज मला जे उत्तर दिले ते खोटे आहे का? साहेब शेवटी ह्या शहराच्या उत्पन्नाचा विषय आहे. जेव्हा आपण एका व्यापारावरती प्रशासकीय काळामध्ये जे पाहिजे ते करता. इकडे सगळे उदयोगधंदे चौपट चाललेले आहे. बिल्डर लोक लाखो रुपये कमवितात. आज त्याच्यावर काहीच नाही. बंदिस्त बाल्कनीचा रेट कमी केला. त्याच्यावर मेहरबानी केली म्हणून माझा असा आग्रह आहे की, मा. आयुक्त साहेब, आपण हे मला जे उत्तर दिलेले आहे एकतर आपण ह्या नियमाशी बंधनकारक आहे. आपण ह्या नियमामध्ये मोकळ्या जागेवर कर लावणे. आपण बंधनकारक असताना आपण दिले केलेले आहे. दिले करून आपण मला उत्तरही दिलेले आहे. चालू आहे. मग हा विषय आज सभेसमोर आणायची गरज काय होती? तुम्ही ह्यावर आणखी प्रोसीजर केली पाहिजे. पण आपण सभागृहाची भूल केलेली आहे. ह्या शहराचे नुकसान केलेले आहे. आमचे ठाम मत आहे. म्हणून एकतर माझ्या प्रश्नाचे उत्तर द्या. मग ठराव आम्ही आमच्या पद्धतीने मांडणार आहोत. शेवटी शहराचे उत्पन्न आम्हांला वाढवायचे आहे. तेव्हा कुठला सत्ताधारी पक्ष वापरणार आहे. आम्ही त्यावेळीही भुईभाड्याचा विषय मांडला आहे. आम्ही सत्तेवर नव्हतो. पण शेवटी ह्या शहराचे उत्पन्न वाढले पाहिजे. त्या हेतूने तो विषय मांडला होता. आज हा विषय आलेला आहे. तुम्ही हॉस्पिटल चालू करता, तुम्ही गटारे बंदिस्तीची चालू करणार आहात पैसा कुठून आणणार आहे? यापूर्वी आपण अनेक ठराव केलेले आहेत. ठरावामध्ये प्रशासकीयांना असा अधिकार दिलेला आहे. ज्या काही त्रुटी आहेत त्यांना सुधारित करू. म्हणजे आता विषय एवढाच आहे. कर लावायचा आहे. या सभेमध्ये तुम्ही कर लावण्याची परवानगी द्या. आणि कर किती लावायचा? जर त्याच्यावर काय चुकभूळ असेल तर अधिकाऱ्यांची संमती करून करा. पण खुल्या मोकळ्या जागेवर कर लावायचा. हा ठराव आजच्या सभेमध्ये संमत झाला पाहिजे. नाहीतर प्रशासकीय अधिकाऱ्यांनी ह्याची चूक केलेली आहे. म्हणजे आपली जबाबदारी पार पाडण्यांत चूक केलेली आहे. आम्ही असा विषय ठरावात मांडणार आहोत.

### प्रफुल्ल पाटील :-

माझे असे म्हणणे आहे की, कनव्हेंस डिल ज्या ठिकाणी झालेले आहेत. खरेदी-विक्रीचे व्यवहार करताना कनव्हेंस घेतले. स्टॅम्प ड्युटी होते. त्याठिकाणी जमिनीचा दर हा फिक्स केलेला आहे. आज जमिनीचा दर फिक्स केल्यानंतर त्याचे वार्षिक भाडे ५टक्केनुसार काढायचे? आणि त्या वार्षिक भाड्यावरती १०टक्के सुट देवून उरलेल्या रक्कमेवरती म्हणजे ती रेटेबल व्हॅल्यू आली. त्या रक्कमेवरती विविध टॅक्स लावायचे हा तुमचा मूळ प्रस्ताव आहे. मगाशी मी असे म्हटल्याप्रमाणे की एखादया खारीगावामध्ये जेव्हा आम्ही कनव्हेंस करतो. तेव्हा त्या ठिकाणी रु. ६०००/- चा रेट आहे. गोडदेवमध्ये रु. ७०००/- चा रेट आहे. मिरारोडमध्ये रु. १००००/- रेट आहे. पण खारीगावमध्ये आपण बिल्डींगचा टॅक्स पकडला. तर त्याठिकाणी हायर रेटेबल व्हॅल्यू आहे. करमूल्य निर्धारण अधिकाऱ्यांनी जे विविध क्षेत्रासाठी करमूल्य दर ठरविलेले आहेत.

ते ह्याच्याशी सुसंगत असले पाहिजे. आमचे असे म्हणणे आहे आणि जर ते सुसंगत नसतील. तर तो तुलनात्मक तक्ता सभागृहासमोर आणून जे मॅक्झीमम घ्यायचं. ते आपणांस घेता येतील.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

मा. महापौर साहेब, तो तक्ता ह्या अधिकाऱ्यांकडे आहे. मी बघितलेले आहे. उत्तनचा रेट, राई-मुर्धाचा रेट, भाईदरचा रेट श्री. अजित पाटील साहेब, तुमच्याकडे ह्यांचे रेट आहेत. उत्तनचा रेटमध्ये आणि भाईदरच्या रेटमध्ये खूप मोठी तफावत आहे. म्हणजे त्यात कोणाचे नुकसान होत नाही.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

जर रेटमध्ये तफावत आहे. उत्तनमध्ये खरेदी-विक्रीचे व्यवहार होतात. तेव्हा रेट किती लावला जातो? ते बघा. भाईदर ईस्टला किती ठिकाणी कनव्हेन्स ड्युटीचा रेट आहे.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

भाईदर पश्चिमेला फ्लॅट दर रु. ४०००/- रुपयाला विकला जातो. उत्तनचा दर रु. २०००/- मध्ये विकला जातो. तर रेट त्या पद्धतीने जाणार तुमच्याकडे यादी आहे मी बघितलेले आहे.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

सन्मा. सदस्य श्री. ओमप्रकाश अग्रवाल जी फ्लॅटच्या विक्रीची किंमत धरत नाही. जमिनीचे दर फिक्स केलेले आहेत. त्या दरानुसार तुम्ही वार्षिक भाडे ठरविणार आहात. आणि त्या बाजूला आजूबाजूला बिल्डिंगी झालेल्या आहेत. त्या ठिकाणी तुम्हांला रेटेबल व्हॅल्यू काय धरावी? ते करमूल्य निर्धारक अधिकाऱ्यांनी तुम्हांला फिक्स करून दिलेले आहे. त्याचा तुम्ही तुलनात्मक तक्ता द्या. तुम्ही ह्या ५टक्के च्या हिशोबाने जर तो टॅक्स लावला. तो कमी आला आणि करमूल्य निर्धारक अधिकाऱ्यांनी जास्त कर ठरविलेला असेल तर मग त्याठिकाणी आम्ही त्या लोकांना कसे काय न्याय देणार? एखादया वेळी असेही होऊ शकेल की कनव्हेन्स चा रेट जास्त आहे. आणि करमूल्य निर्धारक अधिकाऱ्यांनी रेटेबल व्हॅल्यू कमी केलेली आहे. तुमचा हा टॅक्स नंतर ट्रान्सफरबल टू द प्रपोज सोसायटी होईल, बिल्डर किती टॅक्स भरतात? हे तुम्हांला माहिती आहे का? कदाचित ते टॅक्स घेऊ पण करायचा प्रयत्न करतील किंवा ते येणाऱ्या सोसायटीवरती टाकतील. मग त्या सोसायटीची बिल्डिंग झाल्यानंतर रेटेबल व्हॅल्यू वेगळी आणि बिल्डिंग बांधून पूर्ण व्हायच्या आधी रेटेबल व्हॅल्यू वेगळी हि तुमची विषमता होणार आहे आणि ही विषमता दूर करण्यासाठी तुम्ही तुलनात्मक तक्ता सादर करा. आम्ही कुठल्याही गोष्टीला नाही म्हटलेले नाही. पूढच्या सभेला आणा तुम्हाला जास्त वेळ लागणार नाही. तुम्हाला दूय्यम निबंधकाकडे प्रत्येक एरिया व्हाईज जमिनिचे दर निश्चित करून दिलेले आहे.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

ते त्यांच्याकडे आहे.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

करमूल्य निर्धारक अधिकाऱ्यांनी जे ठरविलेले आहे ते तुमच्याकडे एरिया व्हाईज आहेत का? त्याच्याशी तुम्ही तुलना करायला पाहिजे आणि ते गोषवाऱ्यामध्ये समोर ठेवायला पाहिजे.

**तुळशीदास म्हात्रे :-**

मा. महापौर साहेबांनी म्हटले होते की, सी.आर.झेड.....

**मा. महापौर :-**

सी.आर.झेड मध्ये आपण परवानगी कुठे देतो? इकडे बांधकामाविषयी टॅक्स नाही.

**तुळशीदास म्हात्रे :-**

जो कर भरतो त्याला कायदा लागतो आणि जो चोरी करतो त्याला काहीच नाही.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

आता तेच आहे. आता बिल्डर लोकांनी लाखो रुपयांच्या जमिनी खरेदी केलेली आहे. जमिनी एन. ए. करून ठेवलेल्या आहेत. त्या जमिनिवर बिल्डिंग बांधत नाही. ते मजा लुटतात. रोड वापरतात. टॅकर वापरतात. त्यांना काही नाही. आम्ही तेच बोलतो.

**चंद्रकांत वैती :-**

आपण ठराव मांडा.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

आपण संख्याबळावर ह्या शहराचे नुकसान करायचे ठरविले असेल तर आमचे काही म्हणणे नाही. प्रत्येक गोष्टीला तुम्ही संख्याबळावर मोजता. हे शहराच्या दृष्टीने बरोबर नाही मला सांगा की मला दिलेले उत्तर खोटे आहे. तुम्ही बोलतात की, मोकळ्या जागेत कर आकारणी सुरू आहे. हे खोटे आहे का? आणि मा. महापौर साहेब, आधीही असेच ठराव झालेले आहेत. ह्याच्यात काही सुधारणा करायची आहे का? मोकळ्या जागेवर कर लावायचा असे तुम्ही आजच्या मा. महासभेमध्ये नक्की करा. त्याच्यात काही फेरफार करायचे आहेत तर एक कमिटी नेमा. असे अनेक ठराव यापुर्वी झालेले आहेत. मला पहिल्यांदा प्रशासनाने त्यावेळी उत्तर दिलेले होते. आता माझ्या हातात आहे. म्हणजे तुमची कार्यकारणी सुरू आहे. तुम्ही मला असेही सांगितले होते की, कार्यालयात येवून तक्ता बघा. म्हणजे मला या प्रश्नामध्ये खोटी रिपोर्टिंग दिलेली आहे का?



**अजित पाटील :-**

३९ नंबरचा प्रश्न आहे की, सन्मा. सदस्य श्री. ओमप्रकाश अग्रवाल :- मुंबई प्रांतिक महानगरपालिका अधिनियम १९४९ चे कलम १३२ अंतर्गत सामान्य कर कोणकोणत्या जागेवर बसविता येतो? ३९ क्र. च्या प्रश्नाचे उत्तर :- मुंबई प्रांतिक महानगरपालिका अधिनियम १९४९ चे कलम १३२ अन्वये सामान्य कर रेखांकन केलेल्या व मोकळ्या असलेल्या बिगर फ्लॅट वरती आकारणी करण्यात येते. याठिकाणी कायद्यातील तरतुद दाखविलेली आहे.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

तुमची ड्युटी आहे ना, तुमची ड्युटी आहे तर मग प्रशासनाने प्रश्न याठिकाणी का आणला?

**अजित पाटील :-**

याबाबत आपल्याला पुढे सांगतो की, कशाकरिता विषय आणला आहे.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

तुम्ही टिपणी दिलेली आहे. या शहरात खर्च वाढणार आहे. हॉस्पिटल पाहिजे म्हणून आणलेला आहे. हे बरोबर आहे ना. आता हा प्रश्न सभागृहासमोर आणलेला आहे. तुमची प्रशासनाची ड्युटी होती. हे कर लावायची तुम्ही कलम १३२ अंतर्गत लावण्याचा तुमचा अधिकार होता. तुम्ही ७ वर्ष वाट का बघितली? आणि आता तुम्ही ह्या सभेमध्ये हा प्रश्न आणायचे कारण काय आहे? रेट ठरवायचे तर ह्या आधीही आपण प्रशासकिय काळात अनेक आणलेले होते आणि अनेक निर्णय घेतलेले आहे. पार्किंग बाबतचे निर्णय घेतलेले आहे, नो पार्किंग बाबतचे निर्णय घेतलेले आहेत. व्यापाऱ्यांच्या एन.ओ.सी. बाबतचे निर्णय घेतलेले आहेत किती विषय घेतलेले आहेत. ह्याचा अर्थ तुम्हाला हा विषय आणायचाच नाही. श्री. अजित पाटील साहेब तुम्ही सांगा की, आमची ड्युटी होती आम्ही यामध्ये कमी पडलेलो आहोत आणि आता हा कर आम्ही प्रशासकिय अधिकारामध्ये लावून घेणार नाही तर मग आम्हाला आमच्या पद्धतीने कायदेशीर कार्यवाही करावी लागेल.

**अजित पाटील :-**

मोकळ्या जागेवर कर लावायची तरतुद आहे. कर लावायला पाहिजे. मोकळ्या जागेवर कर लावण्याकरिता त्या जागेचे वार्षिक भाडे मुल्य ठरविणे आवश्यक आहे. वार्षिक भाडे मुल्य ठरविण्याकरिता रजिस्टर ऑफिसने जे रेट दिलेले आहेत. त्याच्यानुसार वार्षिक भाडे मिळविण्याचा प्रस्ताव मा. महासभेसमोर ठेवलेला आहे.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

साहेब, तुम्ही मला दुसरे उत्तर काय दिलेले आहे? मोकळ्या भाडे मुल्य दराने कर आकारणी करण्यात आलेली आहे. अशा प्रकारे आकारणी केल्याच्या जागेचा तपशिल कार्यालयात उपलब्ध आहेत. कार्यालयीन वेळेत सदर तपशिल आपणांस अवलोकनार्थ उपलब्ध होईल. म्हणजे तुम्ही एकतर सांगा की, आम्ही कर आकारणी केलेलीच नाही. हे उत्तर खोटे दिलेले आहे आणि केली असेल तर हे ठरवण्याचा प्रश्न कुठे येतो?

**अजित पाटील :-**

सन्मा. सदस्य श्री. ओमप्रकाश अग्रवालजी तुम्ही ऐकून घ्या, आताचा जो दुसरा प्रश्न आहे त्याच्यामध्ये प्राधिकृत.....

**चंद्रकांत वैती :-**

ही प्रश्न उत्तरे कधीची आहेत. आता तुम्ही हे सुरु करता आहात काय? सचिवजी विषयला पुढे सुरुवात करा. त्यांना जे काही उत्तर द्यायचे आहे ते लेखी द्या. ती तुमची जबाबदारी आहे. तुम्ही अपूर्ण माहितीनुसार आणलेला हा ठराव आहे. आम्ही ठराव मांडलेला आहे. त्याच्यामध्ये ज्याठिकाणी सुधारणा करायची आहे ती सुधारणा तुम्हाला सांगितलेले आहे. तुमचे जे काही मत असेल ते मांडा. ह्या शहराच्या हिताच्या संबंधीत विषय आहे व पुढचा विषय घ्या. अजिबात चालणार नाही. तुमचा ठराव मांडा.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

मा. महापौर साहेब, मला फक्त मा. आयुक्त साहेबांकडून एवढे उत्तर पाहिजे आहे की, कलम १३२, १३९ अन्वये तुम्हाला कर लावण्याचा अधिकार होता. तुम्ही लावलेला नाही. ह्या शहराचे तुम्ही नुकसान केलेले आहे. ही गोष्ट खरी आहे किंवा नाही. हे मला सांगा आणि या सभागृहामध्ये हा विषय आणायचा हेतु काय आहे? शेवटी हेतु काय आहे? मला याचे उत्तर पाहिजे आहे. जी गोष्ट प्रशासनाने केली पाहिजे ती गोष्ट सभागृहात का आणलेली आहे? मला याचे उत्तर पाहिजे.

**चंद्रकांत मोदी :-**

मा. महापौर साहेब, ज्यादा टाईम हो गया है। केबीन मे बुलाके उनको उत्तर दिजिए।

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

मा. आयुक्त साहेबांकडून मला ह्याचे उत्तर पाहिजे.

**एस. ए. खान :-**

मा. महापौर साहेब, आपण वेळ वाया घालवू नका. पुढचा विषय घ्या २००३ सालापासून का थांबलो होतो? का कार्यवाही केली नाही?

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

मा. महापौर साहेब, मला ह्याचे उत्तर दिलेले आहे की कार्यवाही सुरु आहे. अवलोकनात बघा.

**एस. ए. खान :-**

तुम्हाला हिम्मत असेल तर कायदेशीर कार्यवाही करा. सन २००३ सालापासून का बसला आहात? चुकीचे उत्तर दिले म्हणून कायदेशीर कार्यवाही करा.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

आम्ही बसलेलो नाही. प्रशासनाची कार्यवाही सुरु आहे.

**एस. ए. खान :-**

कोर्टात जायचे असेल तर कोर्टात जा. ह्यांच्यावर कार्यवाही करायची असेल तर कार्यवाही करा.  
(सभागृहात गोंधळ.)

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

आम्हांला प्रशासनाकडून उत्तर पाहिजे आहे की, जेव्हा तुमचा अधिकार होता. या कलमाखाली तुम्हाला मोकळ्या जागेवर टॅक्स लावण्याचा अधिकार होता आणि आज तुम्ही सभागृहामध्ये मला उत्तर दिलेले आहे.

**शरद पाटील :-**

यावर प्रशासनाने उत्तर दयावे.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

एकतर तुम्ही आतापर्यंत कुठल्याही मोकळ्या जागेवर करआकारणी केलेली नाही. असे बोला. आणि आम्ही बंधनकारक नाही. मा. महासभा जोपर्यंत ठरवत नाही. तोपर्यंत आम्ही करू शकत नाही. नंतर बघू आम्ही काय करायचे ते? मा. महासभेत उत्तर दया. आम्ही कुठे बोलत आहोत.

**प्रेमनाथ पाटील :-**

श्री. अजित पाटील साहेब लवकर उत्तर दया.

**एस. ए. खान :-**

कुठल्या अधिकाऱ्यांने चूक केली. त्याचे नाव सांगा...

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

महापालिकेचे १० करोड रुपयांचे नुकसान केलेले आहे. मागच्या ७ वर्षांपासून महापालिकेचे १० ते १२ कोटी रुपयांचे नुकसान झालेले आहे.

**मा. महापौर :-**

सन्मा. सदस्य श्री. ओमप्रकाश अग्रवाल जी आपको अगर लगता है की, लगना चाहिए, तो आपण ठराव मांड दिजीए।

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

साहब, पहिली बात तो ये है की, उन्होंने मुझे उत्तर दिया है की, यह कार्यवाही शुरु है। और आप अपने ऑफिस मे आकर वो अवलोकनार्थ आप देख सकते हो। उन्होंने ये उत्तर दिजीए। आज वो विषय ला रहे है की, उन्होंने कर लगाया नहीं है। देखो उन्होंने कर लगाया है या कर नहीं लगाया है। इसका जवाब चाहिए।

**प्रफुल्ल पाटील :-**

मा. महापौर साहेब ह्यांना काय उत्तर पाहिजे आहे. माहिती आहे का? की हा विषय मा. महासभेसमोर न आणता. तुम्ही कर लावू शकता. त्यांचे असे म्हणणे आहे. तसे करायचे असेल तर तसे करावे.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

नाही.

**मा. महापौर :-**

त्यांचे असे म्हणणे आहे की, प्रशासनाने तसे उत्तर दिलेले आहे.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

प्रशासनाने काय उत्तर दिले की, असा असा टॅक्स लावू शकतो. डॉट इज अ प्रोव्हीजन इन द लॉ की, थिस टॅक्स कॅन बी लेवीड. हॉउ मेनी टॅक्स कॅन बी लेवीड तर त्यांचे त्यांनी विवरण दिलेले आहे की, टॅक्स लावू शकतो.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

आणि नंतर असे उत्तर दिलेले आहे की, टॅक्स लावलेला आहे.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

जेव्हा त्यांना असे उत्तर दिले की, मोकळ्या जागेवर टॅक्स लावला असेल. तर तुम्ही त्यांना उत्तर दया की मोकळ्या जागेवर दिलेले आहे. आणि आता प्रशासनाला जर मा. महासभेपुढे विषय न आणता टॅक्स लावायचा असेल तर त्यांच्या मताप्रमाणे जरूर टॅक्स लावा हे पॉलिसी डिसेजन आहे. ते त्यांना माहित नाही. ते त्यांना समजून सांगा.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

मा. महापौर साहेब एक बात बताता हूँ, आप को भी अगर शहर का भला चाहिए, तो आप यह ठराव को भले आप बोलिए, इसमें ऐसा रखीए की इस में जोभी त्रुटीयाँ है, उस त्रुटीया को अधिकारी वर्गाने सुधार करके, और यह प्रस्ताव जगह पर लगना चाहिए। इससे पहिले भी हमने अनेक प्रस्ताव पास किए हैं। ऐसी कभी कभी त्रुटीयां आती है। तब प्रस्ताव पास करके लिया है। और जब इतिवृत्तांत आएगा उस समय आप दे दिजीए। इस में यह सुधार किया है। इसमें यह किया है। हमारा बोलना क्या है। मोकळी जगह पर टॅक्स लगाना चाहिए। इसमें कुछ चिजें में डिफरन्स है। वह अधिकारी वर्गाने नक्की किजीए।

**मा. महापौर :-**

मेरा आप से यह बोलना है की, आपको अगर इस विषय ठराव मांडना है तो आप ठराव मांडीए आयुक्त साहेब, तुमच्या अधिकारामध्ये टॅक्स लावायच्या पॉवर्स असतील तर आपण टॅक्स लावून घ्यावे.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

म्हणूनच मी मा. आयुक्त साहेबांना विचारले. कलम १३२, १२९ अंतर्गत तुम्हांला टॅक्स लावण्याचे अधिकार आहेत का? मला त्यांनी उत्तर द्यावे की हा जुन्या महासभेचा विषय आहे. यह मा. महासभे का विषय है? मा. महासभेमें बोले बिगर हम नहीं लगा सकते है। ऐसा बोलो और विषय खत्म हो गया।

**मा. महापौर :-**

मा. आयुक्त साहेब आपण त्यांना उत्तर दया की, कर लावता येईल का नाही?

**मा. आयुक्त :-**

आपल्याला कराची कर आकारणी करायची आहे त्याकरिता विषय आणला आहे.

**अजित पाटील :-**

मोकळ्या जागेवर कर लावण्याची तरतुद आहे. परंतु मोकळ्या जागेवर कर लावतांना त्याची रेटेबल व्हॅल्यू फिक्स करण्याकरिता जागेचे वार्षिक भाडेमूल्य निश्चित करायचे असते. निश्चित करण्याकरिता दुय्यम निबंधकानी जे रेट दिलेले आहेत. त्या रेटप्रमाणे वार्षिक भाडेमूल्य करावे. अशी मा. महासभेची मंजूरी घेवून वार्षिक भाडेमूल्य निश्चित झाल्यानंतर कर आकारणी करण्यांत येईल.

**मा. महापौर :-**

मा. महासभेच्या मंजूरी शिवाय करता येत नाही.

**अजित पाटील :-**

वार्षिक भाडेमूल्य मा. महासभा ठरवून देणार आहे.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

याचा अर्थ तुम्ही मला दिलेले प्रश्न क्र. ३९ चे उत्तर आज खोटे आहे.

**अजित पाटील :-**

खोटे कसे काय? अशी तरतुद आहे.

**मा. महापौर :-**

सदरचा हा विषय पुढच्या मिटींगला आणावा.

**प्रकरण क्र. ०९ :-**

महानगरपालिका हद्दीत मोकळ्या जागेवर कर आकारणी करणेस मंजूरी मिळणेबाबत.

**ठराव क्र. ११ :-**

मिरा भाईदर महानगरपालिका हद्दीतील मोकळ्या जागांवर (बीनशेती झालेल्या व बीनशेतीसाठी ना हरकत दाखला मिळालेल्या) मालमत्ता कर आकारणी करणे बाबतचा प्रस्ताव महासभेपुढे प्रकरण ९ नुसार ठेवण्यात आला आहे.

प्रकरण क्र. ९ बाबत महानगरपालिका प्रशासनाने गोषवारा सादर केलेला आहे. सदर गोषवाच्यामध्ये मिरा भाईदर महानगरपालिका क्षेत्रातील मोकळ्या जागांचे वर्गीकरण रहीवास क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, विविध आरक्षणाखालील क्षेत्र, ना विकास क्षेत्र, सी.आर.झेड. बाधित क्षेत्र, पाण्याखालील क्षेत्र, अनधिकृत बांधकाम झालेले क्षेत्र ह्याबाबत कोणतेही विवरण प्रशासनाने महासभेपुढे सादर केलेले नाही.

तसेच गोषवाच्यानुसार मोकळ्या जागांवर (बिनशेती झालेल्या व बीनशेतीसाठी ना हरकत दाखला मिळालेल्या) मालमत्तांवर कर प्रस्तावित करून त्याद्वारे अंदाजे रु. १.५ कोटी ते २ कोटी उत्पन्न अपेक्षित धरले आहे.

वास्तविकतः बीनशेती झालेल्या जमिनीचे व बिनशेतीसाठी ना हरकत दिलेल्या जमिनीचे संपुर्ण तपशिल प्रशासनाकडे उपलब्ध असतानाही प्रशासनाने तो तपशील सादर केलेला नाही. ज्याअर्थी रु. १.५ कोटी ते २ कोटी उत्पन्न अपेक्षित धरले आहे त्या अर्थी असा तपशिल महानगरपालिकेने प्रत्यक्ष सर्व्हे करून आजच्या महासभेपुढे सादर करावयास पाहिजे होता. त्यामुळे सदरचा गोषवारा सदोष आहे.

आपल्या महानगरपालिकेमध्ये मालमत्ता कर आकारताना करमुल्य निर्धारण अधिकाऱ्यांनी विविध क्षेत्रासाठी करपात्र मुल्य ठरविले आहे. त्याचाही तपशील गोषवाच्यामध्ये दिलेला नाही.

गोषवाच्यामध्ये खरेदी विक्रीचे दस्तावेज नोंदणी करताना शासनाने मुद्रांक शुल्कासाठी सर्व्हे निहाय जमिनीचा दर निच्छित केला आहे, तो दर मोकळ्या जमिनीची किंमत ठरविण्यासाठी लागू होईल असे नमुद केले आहे. या दरांची तुलना करमुल्य निर्धारण अधिकाऱ्याने विविध क्षेत्रासाठी निच्छित केलेल्या वार्षिक भाडे मुल्य व करपात्र मुल्यांशी होणे आवश्यक आहे व त्यामध्ये तफावत येत असल्यास कोणता दर लागू करावा ह्याबाबत गोषवाच्यामध्ये स्पष्टीकरण होणे आवश्यक आहे.

वरील बाबी विचारात घेता प्रशासनाने सादर केलेला गोषवारा सदोष असून त्याशिवाय वरील प्रमाणे अनेक बाबींच्या तपशिलाचा अभाव असल्याने प्रत्यक्ष निदर्शनास येते.

तरी प्रशासनाने वरील सर्व तपशिलांच्या बाबींची पुर्तता करून त्याप्रमाणे सर्व समावेशक बाबींसह असलेला तपशिल व बीनशेती झालेल्या व बीनशेती साठी ना हरकत दाखला मिळालेल्या परंतु जागेवर प्रत्यक्ष बांधकाम न झालेल्या मालमत्तांच्या सर्व्हेचे विवरण गोषवाच्यामध्ये देउन पुन्हा सदरचा विषय महासभेपुढे आणावा. तसेच शैक्षणिक संस्थाना कर सवलत देणाराही प्रस्ताव सोबत आणावा.

प्रकरण क्र. ९ नुसार महानगरपालिका हद्दीत मोकळ्या जागांवर कर आकारणी करणेबाबतचा प्रस्ताव गोषवात्यातील सदोष बाबी व वरील प्रमाणे आवश्यक तपशिल नमुद केलेले नसल्यामुळे फेटाळण्यात येत आहे. असा मी ठराव मांडत आहे.

**सुचक :- शशिकांत जगन्नाथ भोईर.**

**अनुमोदक :- श्रीमती. उमाताई श्याम पाटील.**

**ठराव सर्वानुमते मंजूर.**

**सही/-**

**महापौर**

**मिरा भाईदर महानगरपालिका**

(नगरसचिवांनी प्रकरण क्र. १० चे वाचन केले.)

**प्रकरण क्र. १० :-**

मिरा भाईदर महानगरपालिकेचे मिरारोड येथील हॉस्पिटल करीता कर्मचारी आकृतीबंधास मंजुरी देणे. (सन्मा. सदस्य श्री. अनिल सांवत यांनी प्रकरण १० च्या ठरावाचे सभागृहात वाचन केले.)

**प्रकरण क्र. १० :-**

मिरा भाईदर महानगरपालिकेचे मिरारोड येथील हॉस्पिटल करीता कर्मचारी आकृतीबंधास मंजुरी देणे.

मिरा भाईदर महानगरपालिकेच्या विकास आराखड्यात आरक्षण क्र. १९१/१९२ मध्ये हॉस्पिटल, वाचनालय, शवागृह व रक्त पेढी साठी प्रस्तावित करण्यात आलेले आहे. सदर आरक्षण विद्यमान आमदार हुसैन यांच्या मार्गदर्शनाखाली तत्कालीन अधिकारी व लोक प्रतिनिधी यांच्या प्रयत्नाने आरक्षण क्र. १९१/१९२ प्रस्तावित करण्यात आले. सदर जागेत आमदार निधीतून हॉस्पिटल, रक्तपेढी, वाचनालय आणि शवागृहाची इत्यादी सिव्हील कामे अजून पर्यंत सुरू आहेत. त्याशिवाय विद्युतीकरण, फर्निचर, वातानुकुलीकरण, रंगकाम, अंतर्गत व बाह्य सुशोभिकरणाची कामे प्रलंबित आहेत. त्यामुळे आजमितीस ही इमारत रूग्णालयाच्या वापरासाठी सुसज्ज झालेली नाही.

इमारत वापरण्याजोगी तयार झाल्यानंतर सदर इमारतीमध्ये रूग्णालय, रक्तपेढी, वाचनालय आणि शवागृह सुरू करणे प्रस्तावित आहे.

रूग्णालय सुरू करावयाचे झाल्यास सदर रूग्णालयांमध्ये किती खाटा असतील ह्याबाबतची बिनचुक माहिती प्रशासनाकडे नाही. तसेच रूग्णालयांमध्ये कोणत्या वैद्यकिय सेवा पुरविण्यात याव्यात तसेच कोणते वैद्यकीय कक्ष असावेत ह्याबाबत महानगरपालिकेचे धोरण निश्चित झालेले नाही. तसेच गोषवाच्यामध्ये सुद्धा कोणत्या प्राकरच्या रूग्ण सेवा सुरू करावयाच्या किंवा त्यामध्ये संबंधीत कोणते वैद्यकिय कक्ष असावेत त्याबाबतची माहिती दिलेली नाही. विशेष म्हणजे मा. महासभा सुचना क्र. ३ मधील प्रकरण क्र. १० मध्ये मिरा भाईदर महानगरपालिकेचे मिरा रोड येथील हॉस्पिटल करीता कर्मचारी आकृतीबंधास मंजुरीदेणे बाबतचा विषय व या प्रकरणासाठी प्रशासनाने दिलेल्या गोषवारा हा मिरा रोड येथील रूग्णालय व रक्तपेढी साठी कर्मचारी वर्गाची नेमणूक करणेबाबतचा आहे. त्यामुळे सदर गोषवारा हा सदोष असून लोकप्रतिनिधींची दिशाभूल करणारा आहे असे स्पष्ट होते.

वरील प्रमाणे धोरण ठरवीण्यापुर्वी कर्मचारी वर्गाचे नेमणूक करण्यास प्रशासन अतिउत्साही असल्याचे दिसून येते.

रूग्णालय / रक्तपेढी सुरू करणेसाठी शासनाकडून लागणाऱ्या परवानग्या किंवा त्याबाबतचा प्रस्ताव प्रशासनाने सादर केला आहे किंवा नाही. तसेच प्रस्ताव सादर केला असल्यास त्याची मंजुरी मिळाली आहे किंवा नाही ह्याबाबतचा कोणताही तपशिल गोषवाच्यामध्ये दिलेला नाही.

आजमितीस महापालिकेमध्ये आरोग्य अधिकारी हे पद रिक्त असून ते भरण्यात आलेले नाही.

रूग्णालयासाठी ११२ पदे व रक्तपेढीसाठी १४ पदे अशा एकूण १२६ पदांवर कर्मचाऱ्यांची नेमणूक करण्याबाबतचा प्रस्ताव गोषवाच्यानुसार मा. महासभेपुढे ठेवण्यात आलेला आहे. परंतु, विषयाप्रमाणे कर्मचाऱ्यांच्या आकृतीबंधाचा प्रस्ताव सेवाप्रवेश नियमांसह तयार करून प्रथम प्रशासनाने महासभेपुढे आणावयास

पाहिजे होता व त्यानंतर शासनाकडे मंजूरीसाठी पाठवून मंजुरी आल्यानंतर नेमणूकी करण्याबाबतचा गोषवारा महासभेपुढे ठेवावयास पाहिजे होता.

गोषवाऱ्यातील नमुद केलेली पदे ही १०० खाटांच्या रुग्णालयासाठी प्रस्तावित केली असल्याचे निदर्शनास येते. परंतु, १०० खाटांचे रुग्णालय मंजूर किंवा परवानगी असल्याबाबतची कोणतीही माहिती नमुद केलेली नाही. त्यामुळे सदर प्रकरणामधील प्रशासनाने दिलेला गोषवारा सदोष व लोकप्रतिनिधींची दिशाभूल करणारा आहे.

रुग्णालय प्रत्यक्षात सुरु करणे, त्यामध्ये देण्यात येणाऱ्या वैद्यकिय सेवा निश्चित करणे व वैद्यकिय सेवा देण्यासाठी वैद्यकिय कक्ष सुरु करणे ह्या बाबींची पुर्तता न करता गोषवाऱ्यानुसार थेट कर्मचाऱ्यांच्या नेमणूका करणे बाबतचा प्रस्ताव महासभेपुढे आणणे हे आकालिक तसेच उतावळेपणाचे लक्षण आहे.

रुग्णालय व रक्तपेढीच्या इमारतीचे बांधकाम पुर्ण हाउन वापारण्यायोग्य झालेले नाही. तसेच रुग्णालयामध्ये कोणत्या वैद्यकिय सेवा देण्यात याव्यात व त्या सेवा देण्यासाठी कोणते वैद्यकिय कक्ष सुरु करावेत ह्यापैकी कोणतेही महानगरपालिकेचे धोरण ठरले नसताना, तसेच पदे दर्शवून त्यावर कर्मचारी वर्गाची नेमणूक करणारा गोषवारा प्रकरण क्र. १० मध्ये सादर केल्याने सदर प्रकरणातील प्रस्ताव ही सभा फेटाळून लावत आहे.

सदोष गोषवारा सादर करून लोकप्रतिनिधींना चुकीची माहिती देउन हेतुपरस्पर लोकप्रतिनिधींची दिशाभूल करून सक्षम अधिकाऱ्यांचा गैरवापर करून आरोग्य अधिकारी ह्या पदाचा कार्यभार संभाळित असलेले प्रभारी आरोग्य अधिकारी डॉ. प्रमोद विठ्ठलराव पडवळ, मुंबई महानगरपालिका अधिनियम १९४९ चे कलम ५६ (१) अन्वये त्यांनी केलेल्या नियमांचा भंग, ठरविण्यात येउन त्वरीत निलंबित करण्यात येत आहे असा ठराव मांडीत आहे. मुंबई प्रांतिक महानगरपालिका अधिनियम १९४९ चे कलम ५६ नुसार डॉ. प्रमोद विठ्ठलराव पडवळ ह्यांच्या निलंबनानंतर सदर कलम ५६ खालील पुढील कारवाई मा. आयुक्तांनी करावी व तसा अहवाल महासभेपुढे सादर करावा.

त्याचप्रमाणे सदर प्रभारी आरोग्य अधिकारी ह्यांची नेमणूक महानगरपालिकेत कंत्राटी तत्वावर करण्यात आली होती त्यानंतर त्यांना ज्या पद्धतीने महानगरपालिकेच्या आस्थापनेवर कायमस्वरूपी नेमणूक करण्यात आली. ह्या नेमणूकीबाबत संशकता असल्याने मा. आयुक्तांनी त्याबाबत चौकशी करून रीतसर अहवाल महासभेपुढे ठेवावा. असा मी ठराव मांडत आहे.

**राजेश वेतोसकर :-**

या ठरावास माझे अनुमोदन आहे.

**चंद्रकांत वैती :-**

आरक्षण क्र. १९० आणि १९१ याठिकाणी महाराष्ट्रामध्ये आमदार निधीतून काय काम व्हावे? याचे आदर्श उदाहरण कोणी दिले असेल? तर या सभागृहातील माजी उपमहापौर आणि विद्यमान आमदार श्री. मुझफ्फर हूसेन साहेबांनी महाराष्ट्राला एक आदर्श उदाहरण घालून दिलेले आहे की आमदार निधीतून काय काम केले पाहिजे? अतिशय सुंदर कामकाज सुरु केले ६० बेडसाठी रुग्णालये बाजूला रक्तपेढी त्याच्या बाजूला शवगृह आणि वर लायब्ररी मग रुग्णालय आणि रक्तपेढी त्यांवरचेच कर्मचारी दिसले का? पुढच्या ठरावात त्याची मशनरी आणि औषध दिसली का? तुम्हांला लायब्ररी का दिसली नाही? ह्या शहरांमध्ये ज्ञानगंगा आली असती. असे तुम्हांला वाटले नाही. मॉरझमची शहराला गरज आहे. ते आणायची तुम्हांला इच्छा भासली नाही का? त्यात कर्मचारी नाही म्हणून ते ठराव घेतले नाही. आपण काय करतो आहोत? कुठपर्यंत करत आहोत? किती दिवस आणि कोणाकोणाची दिशाभूल करणार आहात? अशाप्रकारचे ठराव करून आपण काय साध्य करू इच्छिता? हे आम्हांला कळलेले नाही. ज्यावेळी आमदार निधीतून ह्या हॉस्पिटलचे काम चालू होत असता मा. स्थायी समितीने ८ ते ९ वेळा तो ठराव फेटाळून लावला होता. मा. आयुक्त साहेब आपण किती वेळा गेलात? आपले अधिकारी किंवा ते डॉक्टर प्रत्यक्ष किती वेळा गेले? त्या हॉस्पिटलच्या इमारतीचे कामकाज कसे चालू आहे? ह्याची काही माहिती घेतली आहे का? ह्या हॉस्पिटलची निर्मिती करायची आहे. मोघम ठराव दिला. १०० खाटांचे रुग्णालय प्रस्तावित करत आहे. मग त्यासाठी किती डॉक्टर असावेत? आपण नेमके काय सुरु करणार आहोत? जर आपण त्याठिकाणी मॅटर्निटी नर्सिंग होम सुरु करणार आहोत. तर त्यासाठी तज्ञ डॉक्टर त्याठिकाणी आणणार आहोत का? याचा विचार केला नाही? आपण तिथे कुठच्याही प्रकारचा विचार न करता. आपण याठिकाणी आपल्या कामाला सुरुवात केली. मग त्या हॉस्पिटलच्या माध्यमांतून आपण जनरल मेडीसीन देणार आहोत. टि.बी. ची औषधे देणार आहोत. सायक्रोट्रिकचाही इलाज करणार आहोत. स्किन आणि व्हिडी इलाज करणार आहोत. पिडीयाट्रीक इलाज असतील कायझीयॉलॉजी असेल नेगथिरोजा असेल. न्युरोलॉजी असेल. इंडोस्कोपी असेल. कसली सर्जरी आपण करणार आहोत? ट्रॉमा सेक्शन असेल. ओ.पी.डी. असेल आपण कशाच्याबाबत ह्याच्यामध्ये काय धोरण ठरविलेले नाही. वास्तविक हा या सदनाचा धोरणात्मक निर्णय व्हायला पाहिजे की आपल्या हॉस्पिटलमध्ये आपण कुठच्या प्रकारची औषधे देणार आहोत? आपण किती प्रकारचा खर्च करणार आहोत? उदया तुम्ही कॅन्सरच्या पेंशन्टचा तिथे इलाज करणार आहात का? एडसची औषधे तुम्ही तिथे देणार आहात का? आपण काय करणार आहोत? आपण त्याठिकाणी बायपास सर्जरी करणार आहात का? त्याचा कसलाही विचार

झालेला नाही. वास्तविक हा निर्णय घेतांना ह्या हाउसमध्ये हा विषय आणायला पाहिजे होता. ह्या हाउसमध्ये चर्चा व्हायला पाहिजे होती की, आपण आपल्या हॉस्पिटलमध्ये कुठल्या प्रकारचे ट्रिटमेंट देणार आहोत? जी ९ आरोग्यकेंद्र आपल्या महापालिकेमार्फत चालविली जातात. गेल्या मागच्या सार्वत्रिक निवडणुकीपासून मा. स्थायी समिती अस्तित्वात नाही. म्हणून त्या सार्वजनिक आरोग्य केंद्रामध्ये औषधे नाहीत. आणि प्रशासकीय कारकिर्दीमध्ये औषधे तरी मागवायचा. निदान या मा. महासभेमध्ये त्या औषधांसाठी तरी विषय आणायचा. आपण त्या ९ आरोग्य केंद्रामध्ये औषधे नाहीत. त्याबद्दल विचार करत नाहीत. ज्या आमदारांच्या निधीतून ह्या हॉस्पिटल सुरु झाले. त्या आमदारांशी आपण मा. आयुक्त म्हणून चर्चा केलेली आहे का? किंवा डॉक्टरांनी प्रभारी आरोग्य अधिकारी म्हणून चर्चा केली. हॉस्पिटलचे काम कुठपर्यंत झालेले आहे. ब्लड बँकेसाठी आपल्याला किती प्रकारच्या एन.ओ.सी. लागतात? डिपेटी डेथ कंट्रोल, सी.डी.एस.सी.ए, जी.डी.एस. डिसपेन्ससरी, डिसपेन्ससरी बिल्डिंग वडाळा येथे आपण जा.क्र. एम.एन.पी./पी.डब्ल्यू.डी./५९३ दि. ४/५/२००७ रोजी ह्या ब्लड बँकेच्या अॅप्रुव्हलसाठी आपण अर्ज केलेला आहे. ह्याची तुम्हांला माहिती आहे का? मा. आयुक्त साहेब, आपल्या सहीने अॅप्रुव्हलसाठी आपण अर्ज केलेला आहे. त्याच्या अॅप्रुव्हल आपल्याला मिळालेले नाही. त्यानंतर सहाय्यक संचालक आरोग्य विभाग, राज्य रक्त संक्रमण, परिक्षक ह्यांच्याकडे आपण महाराष्ट्र शासनाच्या ह्या डिपार्टमेंटकडे मनपा, सार्वजनिक बांधकाम ८९६/१९९/२००७ ह्याठिकाणी आपण ह्या रक्त संक्रमण शिबिरासाठी परवानगी मागितलेली आहे. ही परवानगी आपल्याकडे आलेली नाही. डॉ. पडवळ यांना आम्ही विचारले की, आपण हॉस्पिटलसाठी नेमका टर्मरुल काय? एका पेंशटला किती जागा लागणार आहे? तर त्या खॉटसाठी टर्मरुल काय असतो? तर त्यांनी सांगितले की, ३ फूट जागा, ३ फूट जागेमध्ये एक पेंशट तुम्ही अॅडमिट करणार आहात का? म्हणजे आपला उद्देश काय? सकाळी पोस्टमार्टमच्या आधी विषय झाला. त्याच्यामध्ये आपण सांगितले की, इथे ३५८कडे पेक्षा जास्त आस्थापनेचा खर्च वाढलेला आहे. आपण किती मोठया खर्चात टाकणार आहोत? आपण इलाज कसला करणार आहोत? हे आपल्याला माहित नाही. मात्र मशीनरी आणण्याची आपली तयारी आहे. व या शहरांमध्ये पोस्टमार्टम करायचे झाले तर ब्लड बँकेची आवश्यकता लागेल तेही आपल्याला माहित नाही. आपण डॉक्टर, नर्स, ड्रायव्हर, सर्व सामान मागितले आहे. पण धोरण निश्चित केले नाही. ह्यांना आपण कोणता डिपार्टमेंट देणार आहोत ते आपल्याकडे नाही. अशाप्रकारे आपल्या येथील डॉ. पडवळ साहेबांनी चुकीचा ठराव आणला आहे. आपल्या महापालिकेत हॉस्पिटल पाहिजे याकरिता जनहित याचिका दाखल केली होती व या याचिकेवर कोर्टाने ऑर्डर दिल्यानंतर आपण हॉस्पिटल सुरु करू शकतो. पण ज्यांच्या प्रयत्नामुळे मिरा भाईंदर शहरामध्ये हॉस्पिटल सुरु होणार आहे त आमदारांबरोबर साधी चर्चा सुद्धा केली जात नाही ही खेदाची बाब आहे.

#### जयंत पाटील :-

प्रकरण क्र. १०, मिरा रोड येथील रुग्णालय व प्रत्येकवेळी कर्मचारी वर्गाची नेमणूक करणेबाबत. माझा प्रश्न थोडा वेगळा आहे. मला माहिती हवी आहे की, या रुग्णालयाला आतापर्यंत किती खर्च झालेला आहे आणि त्याला कोणी कोणी अनुदान दिलेले आहे, निधी दिलेले आहे. म्हणजे मा. श्री. मुझफ्फर हुसैन या आमदारांनी दिला. महापालिकेने काय दिलेले नाही का? मला याची माहिती द्या की, इतर कोणकोणत्या आमदारांनी, कोणकोणत्या खासदारांनी निधी दिलेला आहे?

#### चंद्रकांत वैती :-

याबाबतीमध्ये आम्ही आपल्याला माहिती देवू इच्छितो की, मा. श्री. गणेश नाईक साहेबांनी .....

#### जयंत पाटील :-

मी प्रशासनाला हा प्रश्न विचारलेला आहे.

#### मिलींद वाणी :-

मा. महापौर साहेबांच्या परवानगी बोलत आहे की, सदर मिरारोड येथे आपले जे नियोजित रक्तपेढी, शवागृह, ओ.पी.डी. वाचनालय आहे. सदरचे रक्तपेढी, शवागृह हॉस्पिटल व वाचनालय इमारतीसाठी आपला जो निधी दिलेला आहे त्याची माहिती मी आपल्याला सादर करतो. उपेक्षित खर्च ३ कोटी ७ लक्ष रुपये आतापर्यंत प्रत्यक्ष खर्च १ कोटी, ५७ लाख, ५१ हजार रुपये झालेला आहे. साधारणपणे ते बांधकाम डिसेंबर अखेरपर्यंत पूर्ण होईल. त्याच्यानंतर त्याच्यासाठी जो निधी प्राप्त झालेला आहे तो मा. आमदार श्री. मुझफ्फर हुसैन यांनी ८०.६८ लाख रुपये दिलेला आहे. मा.श्री. गणेशजी नाईक साहेब यांनी २९.९८ लक्ष दिलेला आहे आणि मा. श्रीम. फँजीया खान यांनी १ लक्ष रुपये असे एकूण १११.६६ लक्ष रुपये निधी दिलेला आहे. महापालिकेच्या निधीतून एकूण २ कोटी २ लाख रुपये खर्च होणार आहे. एकूण जे ३ कोटी ७ लक्ष रुपये आहेत त्यातले ११ लक्ष रुपये आमदार निधीतून मिळालेला आहे आणि उर्वरित खर्च आपला आहे. महापालिकेस एकूण करावयाचा खर्च ३४९ लाख आहे आणि त्यातून १११.६६ लाख रुपये आमदार फंडातून मिळालेला आहे आणि २०२.९२ लक्ष रुपये आपण आपल्या निधीतून खर्च करणार आहोत.

#### मा. आयुक्त :-

या संपूर्ण मिरारोड नियोजित रक्तपेढी, शवागृह, ओ.पी.डी., वाचनालय इमारत याचे जे काम सुरु आहे. त्याचा एकूण होणारा खर्च हा ४ कोटी ६० लाख ९९ हजार ५५८ रुपये आहे. आजपर्यंत झालेला खर्च ३ कोटी १४ लाख ५८ हजार १५७ रुपये. महापालिका निधीतून खर्च केलेली रक्कम २ कोटी २ लाख ९२ हजार

१५७ रुपये. आमदार निधीतून केलेला खर्च १ कोटी ११ लाख ६६ हजार रुपये आणि महापालिकेला पुढे करावयाचा जो खर्च आहे तो साधारण १ कोटी ४६ लाख ४१ हजार ४०१ रुपये. ह्याच्यामध्ये रक्तपेढी करिता होणारा जो खर्च आहे तो ह्याच्या व्यतिरिक्त ५ लाखाचा आहे. शवागृहाकरिता होणारा खर्च २७ लाख ९४ हजार ९०८ रुपये लिफ्टकरिता होणारा खर्च २४ लाख ७५ हजार रुपये आणि आमदार निधीतून निवन प्रस्तावित केलेले १० लक्ष मरच्युरीसाठी कॅबिनेटसाठी मागितलेले आहे. अशाप्रकारे संबंध इमारतीचा जो बिल्डअप एरिआ आहे तो पहिल्या मजल्या वर ९७१.६७ चौ.मी आणि दुसऱ्या मजल्यावर ९७१.६७ चौ.मी. आहे. ग्राउन्ड फ्लोरला ९७१.२२ चौ. मी. आहे.

### जयंत पाटील :-

म्हणजे मला हे सांगायचे आहे की, हे रुग्णालय बनवताना साधारण सर्वांचा त्याच्यामध्ये सहभाग आहे. महापालिकेचा मोठा सहभाग आहे. महापालिकेने २ कोटी २ लाख रुपयाच्यावर दिलेले आहे. मा. आमदार श्री. मुझफ्फर हुसैन यांनी ८० लाखाच्या आसपास चांगला निधी दिल्याबद्दल त्यांचे आभार मानू शकतो. त्यांचे अभिनंदन करू शकतो. परंतु, दुसऱ्या आमदारांनी त्याच्यामध्ये पैसे दिलेले आहेत. मगासपासून असे भासविण्यात येत आहे की, श्री. मुझफ्फर हुसैन यांच्या आमदार निधीतून हे काम झालेले आहे. पण हा तसा प्रकार नाही. हे सर्वांच्या सहाय्याने रुग्णालय झालेले आहे. तेव्हा जर चर्चा करायची झाली तर आमदार श्री. मुझफ्फर हुसैन यांच्या सोबत तुम्हाला ज्या ज्या आमदारांनी, मा. पालकमंत्री श्री. गणेशजी नाईक साहेब आहेत यांनी जो निधी दिलेला आहे त्यांच्याशी चर्चा करायला पाहिजे. त्यांच्यासोबत मा. श्रीम. फैजीया खान आहेत त्यांच्याशी चर्चा करा आणि नंतर एकत्र काय करायचे आहे ते आपण करून घ्या आणि या मध्ये महापालिकेचा मोठा खर्च आहे.

### ओमप्रकाश अग्रवाल :-

मा. महापौर साहेब, या विषया संदर्भामध्ये सन्मा. सदस्य श्री चंद्रकांत वैती साहेबांनी मा. श्री. मुझफ्फर हुसैन साहेब यांचे नाव घेतले आणि आदरणीय सन्मा. खरोखर त्यांनी आमदार निधी आल्यावर दिले नंतर खुलासा झाला अजून चार आणणार होते. त्या अतिरिक्त मी आपल्या मा. महासभेचे दोन ठराव येथे वाचत आहे. म्हणजे या सभागृहाने किती मोठेपणा दाखविला आहे त्याची नोंद झाली पाहिजे. पहिला ठराव दि. ०५/०५/२००५ चा आहे. त्यामध्ये एकूण ६० कामे प्रस्तावित केली होती. १३ नंबरका जो काम है, आरक्षण क्र. १९२,१९३ मध्ये नागरिकांकरिता रक्तपेढी, वातानुकूलित सभागृह, दवाखाना व वाचनालयाकरिता इमारत बांधणे, आमदार निधी १ कोटी ३२ लाख रुपये जेव्हा हा ठराव मंजूर करण्यात आला आणि ठराव एकमताने दिलेला आहे. या ठरावामध्ये शेवटी असे लिहिलेले आहे की, अनु. क्र. १०,११,१२ ही कामे महापालिका निधीतून करण्यात यावी व दलितवस्ती सुधारणा योजनेतून निधी प्राप्त झाल्यानंतर महापालिकेच्या निधीत जमा करण्यात यावी. अनु. क्र. १४ कामी आमदार निधी उपलब्ध होणार आहे. उपलब्ध झालेला नाही. म्हणून आम्ही जेव्हा कुठलाही आमदार फंड आला नाही त्यावेळी या सभागृहाने नक्कीच आमदार फंड देतील म्हणून आम्ही त्यांना एकमताचा ठराव दिला. म्हणून फक्त मा. श्री. मुझफ्फर हुसैन साहेबांनी केलेले आहे. या मागच्या सभागृहाने काही केलेले नाही असे म्हणणे चुकीचे होणार. माझ्याकडे अजून दुसरा ठराव आहे तो एक वर्षानंतरचा आहे. हा दि. ०५/०५/२००५ व हा दि. १८/०५/०६ म्हणजे पूर्ण एक वर्ष त्यामध्ये पुन्हा आपण प्रकरण क्र. २२ ठराव क्र. २० विकास आराखड्यातील आरक्षण क्र. १९२,१९३ मधील नियोजित रक्तपेढी, वातानुकूलित शवागृह, दवाखाना व वाचनालय इमारती व दवाखाना प्रभाग कार्यालयातील वाढीव दोन मजले बांधणे कामाचा विचार विनिमय करून निर्णय घेणे. हा ठराव ही सर्वानुमते दिलेला आहे. पहिल्या ठरावामध्ये आमचे आत्ताचे गटनेते श्री. खान साहेबांची सही आहे. श्री. महेंद्रसिंग चौहाण हे सभागृहात नाही त्यांची सही आहे. यामध्ये जे नमुद केलेले आहे ते तुम्हाला वाचून दाखवितो प्रभाग ४ करिता प्रभाग कार्यालयाकरिता अपुऱ्या पडणाऱ्या जागेची अडचण संपणार आहे. सन २००६-०७ या वर्षाच्या अर्थसंकल्पात सदर कामाकरिता तरतुद करण्यात आलेली आहे. तसेच आमदार निधीतून निधी उपलब्ध होणार आहे. उपलब्ध झालेले नाही. पण एक वर्षानंतर उपलब्ध होणार आहे. तरी त्यावेळी हा ठराव सर्वानुमते दिलेला आहे. आता सांगायचा अर्थ ठिक आहे. प्रशासनाने टिपणी देताना मी पडवळ डॉक्टरांना भेटलो तुम्ही एवढी घाई का केली. तुमच्याकडे सर्व व्यवस्था नसताना तुम्ही हा विषय आणलेला आहे. ठिक आहे. ह्याच्यावर खाजगीकरण, प्रायव्हेट किंवा ५०-५० काहितरी धोरण ठरवून तुम्ही सभागृहात हा विषय आणला पाहिजे होता. जर याच्याशी संबंधित असेल की, क्रेडीट घ्यायला आणि भाईदर वाल्यांना दाखवायला की आम्ही हॉस्पिटल चालू करत आहोत असा उद्देश कोणाचाही नाही. आमचाही नाही. हा उद्देश सर्वांच्या मनी होता, जेव्हा महापालिकेची निवडणूक लढवत होतो तेव्हा सार्वत्रिक दृष्टीमध्ये होता. आम्हालाही तेव्हा वाटले की, हा असा घाईघाईने विषय का आला? पण प्रशासनाला असे अनेकवेळा आपण प्रशासकिय मंजूरी दिलेली आहे. घनकचरा प्रकल्प स्थापन करण्यासाठी आपल्याला तांत्रिक सल्लागार पाहिजे. आपण डॉ. बावीस्करांना बोलावले त्यांना महिन्याला ३२ हजार - ४० हजार रुपये पगार दिला. पण आज आपण हे हॉस्पिटल सुरू करत आहोत. हे नक्की आहे की, हॉस्पिटल चालू करण्यामध्ये अजून वेळ जाणार आहे. जर महापालिका हॉस्पिटल सुरू करणार आहे. त्यावेळी अधिकारी वर्ग, कर्मचारी वर्ग लागणार आहेत आणि अनेकवेळा श्री. वैती साहेब आपण स्वतः होते. जेव्हा मी विरोध करत होतो तेव्हा ही फक्त प्रशासकिय मंजूरी आहे. यह प्रोसिजर को दो महिना दो साल लगेगा ऐसा कहकर मुझे "काका" बैठा

देते थे की, नहीं, अपनेको विरोध नहीं करने का। आज हा सभागृह फक्त महाराष्ट्र शासनाकडून ही पद मंजूर करून घेत आहेत. याच्यामध्ये आपल्याला किती घ्यायची, किती घ्यायची नाही, कधी घ्यायची. काल प्रस्ताव पाठविला तर आपल्याला आज प्रस्ताव मिळालेला आहे. ही बाब पण नाही. पण का, विरोध आहे हे माहित नाही. प्रत्येकवेळी तुम्ही त्यावेळी त्या डायसवर होते. असे प्रस्ताव तुम्ही मंजूर करून घेत होता आणि जेव्हा खरोखर हॉस्पिटल तयार आहे व तुमचे आमदार तुम्ही स्वतः बोलता की, आमचे आमदार जर तुमच्या आमदारांकडून ते हॉस्पिटल सहा महिन्यांनंतर सुरू होणार आहे. घाईघाईने प्रस्ताव आलेला आहे. पण या प्रशासकिय अधिकारी वर्गाची मागणी आपण महाराष्ट्र शासनाकडे करत आहोत. यात काहीही चुकीचे नाही. असे अनेक ठराव झालेले आहेत. पणशेवटी संख्याबळ तुमच्याकडे आहे. आता तुम्ही हे सांगणार की ठराव मांडा. ठराव आम्ही मांडणार नाही पण तुम्ही चुकीचा मॅसेज या सभागृहामध्ये देत आहात. म्हणजे त्यांचा राज कळला नाही. प्रशासकिय अधिकार्यांनी फक्त कर्मचारी वर्ग हवेत अशी मागणी केलेली आहे. आपण मागितली आणि ह्यांनी दिली आणि त्यांनी दिली तेवढी आपण घेतली हा विषय ही नाही. म्हणून अजूनही आपण विचार करा. डॉक्टर पडवळ यांचा आपण हा प्रस्ताव मांडलेला आहे की, त्यांना निलंबित करावे. शेवटी अधिकारीच मरत आहेत. डॉ. पडवळ यांना मी सांगितले ही तुम्ही ही जी टिपणी दिलेली आहे ती चुकीची दिलेली आहे. टिपणी देण्याचा अधिकार तुम्हाला नव्हता. पण आयुक्तांचा मान ठेवून त्यांनी एखाद्यावेळी दिली असेल. म्हणून आज त्यांच्यावर ही गदा आलेली आहे. सन्मा. नगरसेवक वैती साहेब आणि काँग्रेस गटाला माझी विनंती आहे या प्रशासकीय ठरावाला तुम्ही मान्यता द्या. डॉ. पडवळ यांची जी काय चुकी झाले आहे त्यांना माफ करून तुम्ही त्यांचे निलंबन मागे घ्या. अशी आमची विनंती आहे. मग तुम्ही जे ठरवाल ते तुमचे कार्यवाहीचे बोललो नाही. तो विषय वेगळा आहे. दहा कोटीचे नुकसान केलेले आहे आणि सन्मा. नगरसेवक वैती साहेब बसलेले आहेत. आम्ही त्याला प्रशासकिय मंजूरी दिलेली आहे. प्रशासनाकडून मागस मागवायला किती मंजूरी दिली आहे?

**मा. महापौर :-**

पुढचा विषय घेण्यात यावा.

**शरद पाटील :-**

मा. महापौर साहेब, मला दोन शब्द बोलायचे आहे. आता सगळे एकदम सुन्न झालेले आहेत आणि सुन्न होते. प्रशासनाकडून आपल्याला जे गोषवारे येतात ते आता पुर्णपणे एकदम स्वच्छ असे यायला पाहिजेत. कारण सर्वाना समजायला लागले आहेत की, गोषवारे चुकीचे असतात. त्याच्यामुळे ते बरोबर यायला पाहिजे. असे गोषवाऱ्यांच्या हिशोबाने प्रत्येकवेळी विषय पुढे पुढे यायला लागले तर मला वाटते की, पाच वर्षात एकही विषय पुर्ण होणार नाही. म्हणून प्रशासनाला माझी विनंती आहे की, आपण गोषवारे करताना पुर्णपणे कायद्याचा किस काढून तसे गोषवारे पाठवावे. जी सभा एक महिन्यात घेता ती सभा दोन महिन्यात घ्या. पुर्ण गोषवारे एकदम स्वच्छरित्या आले पाहिजे अशा पद्धतीने घ्या अशी माझी प्रशासनाला विनंती आहे.

**मॉरस रॉड्रीक्स :-**

सन्मा. सदस्य शरद पाटील ह्यांनी सांगितले ते बरोबर आहे. गोषवारा पुर्ण आहे. गोषवाऱ्यात काहीही चुक नाही. खाली घाई आहे, फक्त दुकान खोलण्याची ती कल्पना आहे.

**मा. महापौर :-**

कोणते दुकान?

**मॉरस रॉड्रीक्स :-**

ते माहित नाही. गोषवारा तर आहे.

**शरद पाटील :-**

गोषवारा अपुर्ण आहे म्हणून हा विषय पुढे चालला आहे.

(सभागृहात गोंधळ.)

**मा. महापौर :-**

सन्मा. नगरसेवक मॉरस रॉड्रीक्स साहेब, मला आतापर्यंत माहित नव्हते की, येथे दुकान चालू होते. मला वाटते की, कामानिमित्त ठराव या हिशोबाने आणले होते. तुम्ही दुकान म्हणून चालवले होते हे मला माहित नव्हते.

**मॉरस रॉड्रीक्स :-**

मी दुकान चालवलेच नाही. मी विषय आणतो त्यावेळी विषय घ्यायचा आहे. विषय आणायचा आणि विषय घ्यायचा. पण विषय पुर्ण झालाच नाही तर विषय कुठे आणता?

**एस. ए. खान :-**

डॉक्टरांना आपण विचारा की, त्यांनी जाउन बघितले का, अजूनपर्यंत हॉस्पिटल कुठे आहे?

**चंद्रकांत मोदी :-**

अभी बिल्डींग का काम बाकी है।

**एस. ए. खान :-**

६० खाटाच्या हॉस्पिटलला त्यांनी १०० खाटा असे दिलेले आहे हे काय आहे?



(सभागृहात गोंधळ.)

**मा. महापौर :-**

आमची भुमिका फक्त एवढी होती की, सायमनटेनियसली सर्व काम करावी म्हणजे हॉस्पिटल लवकरात लवकर कसे सुरु करता येईल.

**मॉरस रॉड्रीक्स :-**

सुरु कुठून करणार पहिले तयार तर करा.

**मा. महापौर :-**

श्री. गिरीश प्रधान, आर्किटेक्ट आणि बांधकाम विभागाकडून माहिती घेतली होती. त्यानंतर १५ डिसेंबर.....

**चंद्रकांत मोदी :-**

मा. महापौर साहेब, यहापर डॉक्टर नाही है।

**प्रफुल्ल पाटील :-**

मा. महापौर साहेब, याठिकाणी या चर्चेवरून सभागृहाचा समज असा झाला असेल की, या विषयाला विरोध होत आहे. आपण पत्रिकेवरील विषय वाचा. विषय पत्रिकेवर विषय काय आहे ते बघा. आकृतीबंद हा कर्मचाऱ्यांच्या आकृतीबंधासमंजुरी द्यायची आणि गोषवाऱ्यावर विषय काय आहे ते बघा, रुग्णालय व रक्तपेढी साठी करिता कर्मचारी वर्गाची नेमणूक करणे. आकृतीबंधाला मंजुरी देण्याचा जर प्रस्ताव आला होता तर त्याच्यामध्ये साधारणपणे काय अपेक्षा असायची की, आकृतीबंध म्हणजे काय हे पण आम्हाला प्रशासनाला कळाले की नाही ते कळत नाही. जर ते डॉक्टरांनी तयार केले असेल. आकृतीबंधास ठरवताना तुम्हाला कुठली पद भरायची आहेत. ती पद भरताना त्याची शैक्षणिक पात्रता काय असावी. त्याच्यासोबत सेवाप्रवेश नियम पाहिजे असा सगळा प्रस्ताव यायला पाहिजे. आता कुठली पद भरायची हे जेव्हा तुम्ही निश्चित कराल तेव्हा त्याच्यापुर्वी काय निश्चित केले पाहिजे की, त्या रुग्णालयामध्ये कुठल्या सेवा देणार आहोत? ज्या सेवा देणार आहोत तेच वैद्यकिय कक्ष तुम्ही उघडणार एक्स-रे वाला तिथे मॅटरनिटी होममध्ये काय करणार? सोनोग्राफीवाला करेल. हार्ड वैद्य मॅटरनिटी होममध्ये काय करणार? हाड मोडणार आहे. जन्माला येणाऱ्या बाळाची. उदा. असे आहे की, आकृतीबंधाचा प्रस्ताव असताना याठिकाणी नेमणूकीचा गोषवाऱ्यामध्ये बघा किती गंमत आहे. पहिल्यांदा आकृतीबंध तयार व्हायला लागतो. सेवाप्रवेश नियम, शैक्षणिक पात्रता फायनल व्हावी लागते. त्याच्यानंतर तुमचा स्केल किती पगार देणार. पण ह्याच्यामध्ये पगार ही ठरवून मोकळे झालेले आहेत. वैद्यकिय अधिक्षक वर्ग - १ - १०,०००-३२५-१५,२००, त्याची शैक्षणिक पात्रता काय तर एस.एस.सी नापास. जेव्हा तुम्ही नेमणूकीचा गोषवारा दिला तरीपण तो अशापद्धतीने द्यायचा आणि ह्याच्यामध्ये बघा. शासनाचा निर्णयाचा त्यांनी उल्लेख केलेला आहे. शासन निर्णय क्र. जॉब, बप-२००१, सी.आर - ८३, सी.आर - ९३, जावक अ. ४, असा तो शासनाचा जी. आर माझ्याकडे उपलब्ध आहे. शासनाच्या जी.आर. मध्ये स्पष्ट लिहिलेले आहे की, ५० खाटांचे रुग्णालय असेल तर कुठली पद असणार आहे. त्यांची संख्या किती? १०० खाटांचे असले तर किती पदे असणार आहेत त्यांची संख्या किती? आता डॉ. पडवळ यांनी जरी असा गैरसमज करून घेतला असेल की ५० च्या जागी आम्ही १०० प्रस्तावित करू. मग या जी.आर. प्रमाणे तरी तुमचा तो गोषवारा पाहिजे. या जी.आर. मध्ये त्यांनी स्पष्ट लिहिलेले आहे की, स्वयंपाकी हा कंत्राटी पद्धतीने भरायचा आहे. यांनी काय केले तर, डायरेक्ट आस्थापनेवर घेतले आहे. भांडारपालाचे पद एक आहे. त्याठिकाणी दोन पद दिली आहेत म्हणजे डॉक्टर १५० खाटांवर पोहचले. ५० खाटांचे ६० खाटांचे हॉस्पिटल आहे. १०० खाटांचा जी.आर. जोडतात आणि गोषवाऱ्यांमध्ये सरळ सरळ कंत्राटपद्धतीने भांडारपाल एक नेमायच्या ऐवजी डायरेक्ट दोन नेमतात. तही आस्थापनेवर. त्याच्यापुढे आणखिन महत्वाचे म्हणजे पहारेकरी हे पण डायरेक्ट आस्थापनेवर जी.आर. मध्ये काय लिहिले आहे की, ते कंत्राटी पद्धतीने असावेत. म्हणजे अशाप्रकारे नुसता या जी.आर.चा आधार घ्यायचा. आपल्या मनाला वाटेल त्याप्रमाणे ती पदे लिहायची. कुठली पद भरायची ती लिहायची. याची मंजुरी मिळाली की, जसे सन्मा. नगरसेवक मॉरस रॉड्रीक्स म्हणाले की, काय सुरु करायचे त्याचा नारळ फोडायचा. असा त्याचा अर्थ आम्ही घ्यायचा का? घेत नाही. पण घ्यायचे का? असे तुम्हाला विचारतो. तुम्ही सुझ आहात. मुळ विषयामध्ये आकृतीबंधाचा प्रस्ताव असताना याठिकाणी नेमणूकी करण्याचा गोषवारा दिला. नेमणूकीचा गोषवारा देवून त्या नेमणूकीच्या गोषवाऱ्यामध्ये सुध्दा चुकीची माहिती दिली. म्हणून पहिल्यांदा आपण हा विषय आणा. आपल्या कारकीर्दीमध्ये हॉस्पिटल सुरु व्हावे अशी आपली सदृच्छा असेल तर खरोखर माझे असे म्हणणे आहे की, हॉस्पिटलचे पहिले सिव्हील काम, इंटेरीअर, डेकोरेशनचे काम, बाह्य डेकोरेशनचे काम, विद्युतीकरण, वातानुकूलीकरण या सगळ्या गोष्टी केल्यानंतर मा. महासभेमध्ये आपण विषय आणा की, ह्याच्यामध्ये कुठल्या आरोग्य सेवा आम्ही देणार आहोत. जर तुम्ही पुढचा विषय वाचला तर बहुतेक सर्वांना गॅसवर ठेवून वेन्टीलेटर लावावा लागेल. अशी परिस्थिती वाटते. पुढच्या विषयात उपकरणांची काय मागणी केलेली आहे तर वेन्टीलेटर, वाय दी वेन्टीलेटर इज रिक्वायर. मला वाटते वेन्टीलेटर म्हणजे वेनेशियल ब्लॅन्ड वगैरे असा काय डॉक्टर समज झालेला आहे की काय? लग्नाआधी वरात असा काहीतरी प्रकार चालला आहे. शिवाय, हा विषय फेटाळून लावण्याचे कारण म्हणजे फेटाळायचा, विरोध करायचा म्हणून विरोध करत नाही. हा इमॅच्युअर्ड विषय आहे. प्री-मॅच्युअर्ड बेबी डॅट शुल्ड नॉट बी अ फ्री-

मॅच्युअर्ड बेबी बॉन इन हॉस्पिटल जर झाली तर काय करायला लागते त्याला गरम पेटीमध्ये ठेवावे लागते. असे निर्णय घेणे चुकीचे होते म्हणून याठिकाणी हा असा ठराव मांडलेला आहे.

**मा. महापौर :-**

स्टाफ पॅटर्न मंजूर करायचे होते व त्यासाठी आपण हा विषय ऑलरेडी फेटाळला आहे. तुम्ही डॉक्टरांवर आरोप केलेले आहेत आणि त्यांना निलंबनाची परवानगी मागितलेली आहे. सन्मा. नगरसेवक पाटील साहेब, मला वाटते हे योग्य नाही.

**अनिल सावंत :-**

मा. महापौर साहेब, साडे आठ लाख वस्तीतील शहराच्या लोकांच्या भावनांशी त्यांच्याशी खेळणाऱ्या डॉक्टरांवर कार्यवाही ही झालीच पाहिजे. एवढा निष्काळजीपणा. एक हॉस्पिटल चालू करायचे आहे. तिथे चांगल्या सोयीसुविधा द्यायच्या आहेत. मगाशी आयुक्तांनी सन्मा. सदस्य प्रशांत पालांडे यांच्या प्रश्नावर की तिथे पोस्टपार्टम ही चालू होणार आहे. ते तुम्ही कधी ठरवले. जबाबदार अधिकाऱ्याने असा गोषवारा देणे हे लोकांच्या जीवाशी खेळणे आहे त्यांना ही शिक्षा झालीच पाहिजे. तुम्ही विचार करा.

**जुबेर इनामदार :-**

मा. महापौर साहेब, चर्चेमध्ये त्यांना विचारण्यात आले की, तुम्ही कुठल्या इन्स्टीट्यूटमधून हॉस्पिटल मॅनेजमेन्ट करण्यात आलेले आहे. तर ते म्हणतात की, मला ते आठवत नाही. मला त्या इन्स्टीट्यूटचे नाव आठवत नाही. अशा पध्दतीचे डॉक्टर आमच्या महानगरपालिकेचे साडे आठ लाख लोकवस्तीच्या जीवाशी खेळत आहेत ना. आजच्या तारखेमध्ये आम्हाला ह्याची गरज आहे.

**मा. महापौर :-**

आपण आता डॉक्टर अपॉईन्ट केलेले नाही.

**जुबेर इनामदार :-**

आज अपॉईन्टमेन्ट केलेले नाही. २००५ साली नेमणूक केली असेल किंवा २००३ साली नेमणूक केलेली असेल. तेव्हा त्या वस्तुचा विचार का करण्यात आलेला नाही.

**चंद्रकांत म्हात्रे :-**

मा. महापौर साहेब, आत्ताच आमच्या सेक्टर-६ शांतीनगरमध्ये डॅंग्युची लागण झालेले दोन रुग्ण आहेत. पण त्यांची साधी विचारणा करायला ज्यावेळेला माहित झाले त्यावेळी कोणतरी महिला कर्मचारी त्याठिकाणी फक्त विचारणा करायला गेली, पण डॉक्टर कोणीही गेलेले नाही. डॅंग्युची लागण झालेली आहे.

**प्रकरण १० :-**

मिरा भाईंदर महानगरपालिकेचे मिरारोड येथील हॉस्पिटल करीता कर्मचारी आकृतीबंधास मंजुरी देणे.

**ठराव क्र. १२ :-**

मिरा भाईंदर महानगरपालिकेच्या विकास आराखड्यात आरक्षण क्र. १९१/१९२ मध्ये हॉस्पिटल, वाचनालय, शवागृह व रक्त पेढी साठी प्रस्तावित करण्यात आलेले आहे. सदर आरक्षण विद्यमान आमदार हुसैन यांच्या मार्गदर्शनाखाली तत्कालीन अधिकारी व लोक प्रतिनिधी यांच्या प्रयत्नाने आरक्षण क्र. १९१/१९२ प्रस्तावित करण्यात आले. सदर जागेत आमदार निधीतून हॉस्पिटल, रक्तपेढी, वाचनालय आणि शवागृहाची इत्यादी सिव्हील कामे अजुन पर्यंत सुरु आहेत. त्याशिवाय विद्युतीकरण, फर्निचर, वातानुकुलीकरण, रंगकाम, अंतर्गत व बाह्य सुशोभिकरणाची कामे प्रलंबित आहेत. त्यामुळे आजमितीस ही इमारत रुग्णालयाच्या वापरासाठी सुसज्ज झालेली नाही.

इमारत वापरण्याजोगी तयार झाल्यानंतर सदर इमारतीमध्ये रुग्णालय, रक्तपेढी, वाचनालय आणि शवागृह सुरु करणे प्रस्तावित आहे.

रुग्णालय सुरु करावयाचे झाल्यास सदर रुग्णालयांमध्ये किती खाटा असतील ह्याबाबतची बिनचुक माहिती प्रशासनाकडे नाही. तसेच रुग्णालयामध्ये कोणत्या वैद्यकिय सेवा पुरविण्यात याव्यात तसेच कोणते वैद्यकीय कक्ष असावेत ह्याबाबत महानगरपालिकेचे धोरण निश्चित झालेले नाही. तसेच गोषवाऱ्यांमध्ये सुद्धा कोणत्या प्राकरच्या रुग्ण सेवा सुरु करावयाच्या किंवा त्यामध्ये संबंधीत कोणते वैद्यकिय कक्ष असावेत त्याबाबतची माहिती दिलेली नाही. विशेष म्हणजे मा. महासभा सुचना क्र. ३ मधील प्रकरण क्र. १० मध्ये मिरा भाईंदर महानगरपालिकेचे मिरा रोड येथील हॉस्पिटल करीता कर्मचारी आकृतीबंधास मंजूरीदेणे बाबतचा विषय व या प्रकरणासाठी प्रशासनाने दिलेल्या गोषवारा हा मिरा रोड येथील रुग्णालय व रक्तपेढी साठी कर्मचारी वर्गाची नेमणूक करणेबाबतचा आहे. त्यामुळे सदर गोषवारा हा सदोष असून लोकप्रतिनिधींची दिशाभूल करणारा आहे असे स्पष्ट होते.

वरील प्रमाणे धोरण ठरवीण्यापुर्वी कर्मचारी वर्गाचे नेमणूक करण्यास प्रशासन अतिउत्साही असल्याचे दिसून येते.

रुग्णालय / रक्तपेढी सुरु करणेसाठी शासनाकडून लागणाऱ्या परवानग्या किंवा त्याबाबतचा प्रस्ताव प्रशासनाने सादर केला आहे किंवा नाही. तसेच प्रस्ताव सादर केला असल्यास त्याची मंजूरी मिळाली आहे किंवा नाही ह्याबाबतचा कोणताही तपशिल गोषवाऱ्यामध्ये दिलेला नाही.

आजमितीस महापालिकेमध्ये आरोग्य अधिकारी हे पद रिक्त असून ते भरण्यात आलेले नाही.

रुग्णालयासाठी ११२ पदे व रक्तपेढीसाठी १४ पदे अशा एकूण १२६ पदांवर कर्मचाऱ्यांची नेमणूक करण्याबाबतचा प्रस्ताव गोषवाच्यानुसार मा. महासभेपुढे ठेवण्यात आलेला आहे. परंतु, विषयाप्रमाणे कर्मचाऱ्यांच्या आकृतीबंधाचा प्रस्ताव सेवाप्रवेश नियमांसह तयार करून प्रथम प्रशासनाने महासभेपुढे आणावयास पाहिजे होता व त्यानंतर शासनाकडे मंजूरीसाठी पाठवून मंजूरी आल्यानंतर नेमणूकी करण्याबाबतचा गोषवारा महासभेपुढे ठेवावयास पाहिजे होता.

गोषवाच्यातील नमुद केलेली पदे ही १०० खाटांच्या रुग्णालयासाठी प्रस्तावित केली असल्याचे निदर्शनास येते. परंतु, १०० खाटांचे रुग्णालय मंजूर किंवा परवानगी असल्याबाबतची कोणतीही माहिती नमुद केलेली नाही. त्यामुळे सदर प्रकरणामधील प्रशासनाने दिलेला गोषवारा सदोष व लोकप्रतिनिधींची दिशाभूल करणारा आहे.

रुग्णालय प्रत्यक्षात सुरू करणे, त्यामध्ये देण्यात येणाऱ्या वैद्यकिय सेवा निश्चित करणे व वैद्यकिय सेवा देण्यासाठी वैद्यकिय कक्ष सुरू करणे ह्या बाबींची पूर्तता न करता गोषवाच्यानुसार थेट कर्मचाऱ्यांच्या नेमणूका करणे बाबतचा प्रस्ताव महासभेपुढे आणणे हे आकालिक तसेच उतावळेपणाचे लक्षण आहे.

रुग्णालय व रक्तपेढीच्या इमारतीचे बांधकाम पूर्ण हाउन वापारण्यायोग्य झालेले नाही. तसेच रुग्णालयामध्ये कोणत्या वैद्यकिय सेवा देण्यात याव्यात व त्या सेवा देण्यासाठी कोणते वैद्यकिय कक्ष सुरू करावेत ह्यापैकी कोणतेही महानगरपालिकेचे धोरण ठरले नसताना, तसेच पदे दर्शवून त्यावर कर्मचारी वर्गाची नेमणूक करणारा गोषवारा प्रकरण क्र. १० मध्ये सादर केल्याने सदर प्रकरणातील प्रस्ताव ही सभा फेटाळून लावत आहे.

सदोष गोषवारा सादर करून लोकप्रतिनिधींना चुकीची माहिती देउन हेतुपरस्पर लोकप्रतिनिधींची दिशाभूल करून सक्षम अधिकाऱ्यांचा गैरवापर करून आरोग्य अधिकारी ह्या पदाचा कार्यभार संभाळित असलेले प्रभारी आरोग्य अधिकारी डॉ. प्रमोद विठ्ठलराव पडवळ, मुंबई महानगरपालिका अधिनियम १९४९ चे कलम ५६ (१) अन्वये त्यांनी केलेल्या नियमांचा भंग, ठरविण्यात येउन त्वरीत निलंबित करण्यात येत आहे असा ठराव मांडीत आहे. मुंबई प्रांतिक महानगरपालिका अधिनियम १९४९ चे कलम ५६ नुसार डॉ. प्रमोद विठ्ठलराव पडवळ ह्यांच्या निलंबनानंतर सदर कलम ५६ खालील पुढील कारवाई मा. आयुक्तांनी करावी व तसा अहवाल महासभेपुढे सादर करावा.

त्याचप्रमाणे सदर प्रभारी आरोग्य अधिकारी ह्यांची नेमणूक महानगरपालिकेत कंत्राटी तत्वावर करण्यात आली होती त्यानंतर त्यांना ज्या पद्धतीने महानगरपालिकेच्या आस्थापनेवर कायमस्वरूपी नेमणूक करण्यात आली. ह्या नेमणूकीबाबत संशकता असल्याने मा. आयुक्तांनी त्याबाबत चौकशी करून रीतसर अहवाल महासभेपुढे ठेवावा. असा मी ठराव मांडत आहे.

**सुचक :- श्री. अनिल दि. सावंत. अनुमोदक :- श्री. राजेश शंकर वेतोसकर.**

**ठराव बहुमताने मंजूर.**

**सही/-**

**महापौर**

**मिरा भाईंदर महानगरपालिका**

**प्रेमनाथ पाटील :-**

प्रकरण क्र. १० चे काय झाले?

(नगरसचिवांनी प्रकरण क्र. १० व ११ चे वाचन केले.)

**प्रकरण १० :-** मिरा भाईंदर महानगरपालिकेचे मिरारोड येथील हॉस्पिटल करीता कर्मचारी आकृतीबंधास मंजूरी देणे.

**प्रकरण क्र. ११ :-** मिरारोड येथील हॉस्पिटल करीता लागणारे आवश्यक साहित्य खरेदी बाबत विचार विनिमय करणे.

**मा. महापौर :-**

प्रकरण क्र. १० व ११ हे दोन्ही एकच विषय आहे. त्याकरिता प्रकरण क्र. ११ मी फेटाळत आहे.

**भगवती शर्मा :-**

मा. महापौर महोदय, मी तुम्हाला एक पत्र देत आहे.

**मा. महापौर :-**

राष्ट्रवादी पक्षाचे गटनेते श्री. भगवती शर्मा यांच्याकडून नेता नियुक्तीबाबत सभागृहात पत्र आलेले. सचिवजी आपण त्या पत्राचे सभागृहासमोर वाचन करावे.

(नगरसचिवांनी सदर पत्राचे सभागृहासमोर वाचन केले.)

**नगरसचिव :-**

मा. महापौरांच्या परवानगी सभागृह नेता याबाबत श्री. भगवती शर्मा यांचे पत्र आहे. वरील विषयास अनुसरून आपणंस विनंती करतो की, मिरा भाईंदर महानगरपालिकेमध्ये राष्ट्रवादी काँग्रेस पार्टी, भारतीय जनता पार्टी, शिवसेना व अपक्ष यांनी सत्ता स्थापन केलेली आहे. राष्ट्रवादी काँग्रेस पार्टी यासर्वामध्ये मोठा पक्ष असल्यामुळे श्री. जयंत महादेव पाटील यांची सभागृह नेता म्हणून दि. ०१/११/२००७ रोजीच्या मा. महासभेत

नियुक्ती होणेस विनंती आहे. तसेच श्री. भगवती शर्मा राष्ट्रवादी काँग्रेस पार्टीचे गटनेता म्हणून नाव आलेले आहे.

**मा. महापौर :-**

मिरा भाईंदर महानगरपालिका सभागृह नेता पदावरील नियुक्तीस मान्यता देणे संदर्भ १) मिरा भाईंदर महानगरपालिका दि. २८/०८/२००७ रोजीच्या सभेत मा. महापौर, मा. उपमहापौर यांच्या निवडणूकीद्वारे केलेल्या नियुक्त्या. २) श्री. भगवती शर्मा, गटनेता, राष्ट्रवादी काँग्रेस पार्टी यांनी दि. ०१/११/२००७ च्या पत्रान्वये श्री. जयंत महादेव पाटील यांची सभागृह नेता पदी नियुक्ती जाहिर करणेस केलेली विनंती. मुंबई प्रांतिक महानगरपालिका अधिनियम १९४९ मधील कलम १९(१) अन्वये सभागृह नेतेपदी नेमणूक करणेस मान्यता देणे. असा मी आदेश करित आहे. वरील संदर्भिय १ मधील राष्ट्रवादी काँग्रेस पार्टी, भारतीय जनता पार्टी, शिवसेना व अपक्ष व इतर सन्मा. नगरसेवकांनी आम्हाला म्हणजेच श्री. नरेंद्र मेहता यांना महापौर पदी व श्री. स्टीवन मेन्डोसा यांना उपमहापौर पदी निवडणूकीद्वारे निवड केली व सत्ता स्थापन केली. सभागृहाची एकूण सभासद संख्या ७९ असून सत्ताधारी पक्षाकडे ४१ सदस्य आहेत व विरोधी पक्षाकडे काँग्रेस पक्ष व इतर मिळून ३८ आहेत. संदर्भ २ अन्वये श्री. भगवती शर्मा, गटनेता, राष्ट्रवादी काँग्रेस पार्टी यांनी सत्ताधारी पक्षाकडे सर्वात मोठा पक्ष असलेल्या राष्ट्रवादी काँग्रेस पक्षाचे सन्मा. नगरसेवक श्री. जयंत महादेव पाटील यांची सभागृह नेता पदी नियुक्ती करणेस जाहिर विनंती केलेली आहे. संदर्भ ३ अन्वये मुंबई प्रांतिक महानगरपालिका अधिनियम १९४९ मधील १९(१) अन्वये तरतुदीनुसार सभागृहा नेता पदावर नियुक्तीस मान्यता देणेबाबतचा अधिकार मा. महापौर यांच्याकडे आहे. मुंबई प्रांतिक महानगरपालिका अधिनियमातील तरतुदी व संदर्भातील वस्तुस्थितीचा सारकतेचा एकत्रितपणे विचार करता तसेच लोकशाहीतील सत्ताधारी पक्ष व विरोधी पक्षाची रचना विचारात घेता सत्ताधारी पक्षाला आपल्या धोरणात्मक बाबी सभागृहात सभागृह नेत्याच्या माध्यमातून सभागृहात ठेवणे आवश्यक आहे व गरजेचे आहे. सभागृहाचा कारभार चालविण्याच्या दृष्टीने योग्य होईल असा निर्णय घेणे आमच्यावर असल्याने सभागृह नेता हे पद सत्ताधारी पक्षाकडे असणे आवश्यक आहे. व अधिनियमाच्या तरतुदीनुसार तसा हेतु आहे. अशी आमची पक्की खात्री आहे म्हणून अधिनियमाच्या तरतुदीनुसार मला प्राप्त झालेल्या अधिकाराअन्वये मुंबई प्रांतिक महानगरपालिका अधिनियम १९४९ मधील कलम १९(१) अन्वये मिरा भाईंदर महानगरपालिका सभागृह नेतापदी श्री. जयंत महादेव पाटील यांची नेमणूक करून त्यास मान्यता देत आहे असा मी आदेश जाहिर करत आहे. आपल्याकडील विरोधी पक्षाच्या बाबतीत पत्र असेल तर तेही द्यावे.

**जयंत पाटील :-**

मा. महापौर साहेबांनी, माझ्या नावाची सभागृह नेता म्हणून घोषणा केली आणि माझ्यावर विश्वास दाखवला त्याबद्दल मी मा. महापौरांचा आभारी आहे आणि राष्ट्रवादी, भारतीय जनता पक्ष, शिवसेना आणि अपक्ष व अर्थात आमचे मित्रपक्ष या सर्वांचा मी आभारी आहे.

**याकुब कुरेशी :-**

मा. महापौरांनी, सन्मा. नगरसेवक जयंत पाटील यांची सभागृह नेता म्हणून नियुक्ती केली त्याबद्दल मी त्यांच्या अभिनंदनाचा ठराव मांडत आहे.

**शरद पाटील :-**

अनुमोदन आहे.

**एस. ए. खान :-**

मा. महापौर महोदय, सन्मा. नगरसेवक जयंत पाटील यांना सभागृह नेता म्हणून घोषित केले म्हणून मी त्यांचे आमच्या संयुक्त लोकशाही आघाडीतर्फे अभिनंदन करतो.

**अभिनंदन ठराव ०९ :-**

सन्मा. नगरसेवक जयंत पाटील यांना सभागृह नेता म्हणून घोषित केले म्हणून मी त्यांचे आमच्या संयुक्त लोकशाही आघाडीतर्फे अभिनंदन करतो.

**सुचक :- श्री. एस. ए. खान.**

**अनुमोदक :- श्री. चंद्रकांत मोदी.**

**ठराव सर्वानुमते मंजूर.**

**सही/-**

**महापौर**

**मिरा भाईंदर महानगरपालिका**

(नगरसचिवांनी प्रकरण क्र. १२ चे वाचन केले.)

**प्रकरण क्र. १२**

मिरा भाईंदर महानगरपालिकेच्या गटनेत्यांना सोईसुविधा देणेबाबत धोरण ठरविणे.

(सन्मा. नगरसेवक मधुसुदन पुरोहित ह्यांनी प्रकरण क्र. १२ च्या ठरावाचे सभागृहासमोर वाचन केले.)

**प्रकरण क्र. १२ :-**

मिरा भाईंदर महानगरपालिकेच्या गटनेत्यांना सोईसुविधा देणेबाबत धोरण ठरविणे.

सन २००७ चे महाराष्ट्र अध्यादेश क्र. २ मधील प्रकरण १ मध्ये महाराष्ट्र महानगरपालिका सुधारणा अध्यादेश व प्रकरण तीन मध्ये मुंबई प्रांतिक महानगरपालिका अधिनियमामध्ये सुधारणा केल्याप्रमाणे नवनिर्वाचित पालिका सदस्यांनी एकत्र येवून आघाडी किंवा फ्रंट तयार करणे व अशा आघाडीची किंवा फ्रंटची नोंदणी संबंधित विभागीय आयुक्त यांचेकडे निवडणुकीचा निकाल अधिसूचित झाल्याच्या दिनांकापासून एक महिन्याच्या आंत करण्याच्या तरतुदीप्रमाणे मिरा भाईंदर महानगरपालिकेच्या नवनिर्वाचित सदस्यांनी वेगवेगळ्या आघाड्या स्थापन केलेल्या आहेत व त्याची नोंदणी मा. विभागीय आयुक्त कोकण विभाग ह्यांच्या कार्यालयात केली आहे.

मा. विभागीय आयुक्त कोकण विभाग ह्यांचे क्र. साशा/का-३/नपा/पक्षनोंद/मिभामनपा/०७ दि. २७/०९/२००७ च्या पत्रानुसार पक्षनिहाय नगरसेवक संख्या त्यांचे गटनेते व ज्या पक्षाला पाटींगा दिला त्या पक्षांच्या नावांची माहिती दिलेली आहे. सदर पत्रानुसार एकूण १० गटनेत्यांच्या नावांची माहिती दिलेली आहे. प्रकरण १२ मध्ये प्रशासनाने दिलेल्या गोषवाच्यानुसार गटनेत्यांना दालन, वाहन, भ्रमणध्वनी इत्यादी व्यवस्था उपलब्ध करण्याची मागणी गटनेत्यांनी केलेली आहे. महापालिकेकडे आजमितीस एकूण ५ दालने उपलब्ध आहेत व एकूण १० गटनेते आहेत.

वरीलप्रमाणे १० गटनेत्यांना प्रत्येकी एक दालन, वाहन, भ्रमणध्वनी, संगणक, प्रिंटर, संगणक चालक व कार्यालयीन कर्मचारी व शिपाई इत्यादी सुविधा देण्यात याव्यात. उपलब्ध असलेल्या दालनाचे आकरमानानुसार प्रत्येक पक्षाच्या नगरसेवकांच्या संख्याबळाप्रमाणे तुलना करून मोठे संख्याबळ असलेल्या पक्षास मोठे दालन ह्या प्रमाणे दालनांचे वाटप करण्यांत यावे. असा मी ठराव मांडत आहे.

**नयना म्हात्रे :-**

या ठरावाला माझे अनुमोदन आहे.

**मिलन पाटील :-**

सचिव साहेब, आपल्या येथे गटनेते किती आहेत?

**मा. महापौर :-**

कोणी कोणी मागणी केलेली आहे ते सांगा.

**नगरसचिव :-**

कोकण विभागाचे पत्र आहे ते मी वाचून दाखवित आहे.

**जयंत पाटील :-**

ते पत्र वाचून दाखवू नका. आम्हाला हे पत्र वाचून दाखवा की, संयुक्त लोकशाही आघाडीचे गटनेते अॅड. एस. ए. खान साहेब यांनी जे पत्र महापालिकेला दिलेले आहे ते वाचा.

**मिलन पाटील :-**

मी प्रश्न विचारला आहे की, गटनेते किती?

**जयंत पाटील :-**

संयुक्त लोकशाही आघाडीचे गटनेते अॅड. एस. ए. खान यांनी जे पत्र आपल्याला दिलेले आहे त्यांच्या गटनेत्यांची नेमणूक झाल्याबद्दल ते वाचा.

**चंद्रकांत वैती :-**

आपल्याकडून आयुक्तांकडून काय कळविले आहे ते पहिल्यांदा वाचा.

**नगरसचिव :-**

आयुक्तांकडचा गोषवारा आहे. कोकण विभागाचे पत्र आहे. त्यांच्याकडून दोन पत्र आलेली आहेत. आयुक्तांनी दिलेला गोषवारा आपणा सर्वांकडे आहे तो वाचून दाखवू का?

**चंद्रकांत वैती :-**

नको. कोकण आयुक्तांकडून जे पत्र आलेले आहे ते वाचून दाखवा.

**नगरसचिव :-**

कोकण आयुक्तांचे २७/०९/२००७ रोजीचे पत्र आहे.

(सदर पत्राचे नगरसचिवांनी सभागृहासमोर वाचन केले.)

**अनंत पाटील :-**

आयुक्त महोदय, या गटनेत्याचा खरा अर्थ काय? एकाचा गटनेता होऊ शकतो की, दोघांचा गटनेता होऊ शकतो? व्याख्या काय? त्याचे स्पष्टीकरण करावे.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

ती व्याख्या कोकण आयुक्तांनीच दिलेली आहे ना. श्री. टेरी परेरा हे एकटे आहेत त्यांच्या नावासमोर गटनेता असे लिहले आहे. ही व्याख्या कोकण आयुक्तांनी ठरविली. आम्ही ठरवलेली नाही.

**मा. महापौर :-**

हे कोकण आयुक्तांनी द्यायच्या अगोदरचे होते. ते दिल्यानंतर गटनेते तुम्ही झालात.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

कोकण आयुक्तांनी तुम्हाला नंतर पत्र दिलेले आहे की, कोण कोण गटनेता आहे?

**जयंत पाटील :-**

सन्मा. नगरसेवक अॅड. एस. ए. खान यांनी जे पत्र दिलेले आहे त्या पत्राचे आपण वाचन करा. कोकण विभागीय आयुक्तांना संयुक्त लोकशाहीच्या लेटरहेडवर अॅड. एस. ए. खान, गटनेते आणि त्याच्या सोबत भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस, महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना आणि लोकभारती या सर्वांचे सह्या असलेले पत्र श्री. एस. ए. खान यांचे आपल्याकडे पत्र आहे का? नाही तर, मी वाचून दाखवितो. पत्राची तारीख ११/१०/२००७ अशी आहे. मा. विभागीय आयुक्त साहेब, कोकण विभाग, कोकण भवन, नवी मुंबई. लेटर हेडवर संयुक्त लोकशाही आघाडी आहे. विषय - संयुक्त लोकशाही आघाडीच्या गटनेता नियुक्तीबाबत.

(सदर विषयांकित पत्राचे सभागृहासमोर वाचन केले.)

म्हणजे ४० सदस्यांच्या गटाने एकच गटनेता निवडलेला आहे. मा. महापौर साहेब, सचिव साहेब, अॅड. शफीक अहमद साजीद खान यांचे याबाबत महापालिकेला एक पत्र आहे. त्या पत्रात तसा उल्लेख केलेला आहे की, आमचा सर्वात मोठा गट असल्यामुळे आम्हाला मोठी केबिन देण्यात यावी अशातऱ्हेचे त्यांनी आपल्याला पत्र दिलेले आहे.

**मिलन म्हात्रे :-**

सचिव साहेब, सन्मा. सभागृह नेते जयंत पाटील (दादा) यांनी आपल्याला प्रश्न विचारला की, कोणी पत्र दिले का तर आपण नाही म्हणून सांगितले. अन्य कुठल्या गटनेत्यांनी पत्र दिले का? तर आपण नाही म्हणून सांगितले.

**नगरसचिव :-**

जे पत्र त्यांनी वाचले ते पत्र माझ्याकडे नाही.

**मिलन म्हात्रे :-**

त्यांनी आपल्याला विचारले, मी स्पष्ट ऐकले. आपण नाही म्हणून बोललात. अन्य कुठल्या गटनेत्यांनी पत्र दिलेतर आपण नाही म्हणून सांगितले.

**नगरसचिव :-**

अन्य गटनेत्यांची पत्र आहेत.

**मिलन म्हात्रे :-**

ती पत्र वाचून दाखवा. रेकॉर्डवर आहेत ना.

**भगवती शर्मा :-**

मा. महापौर साहेब, सचिव महोदय को मैने राष्ट्रवादी के गटनेता के हिसाब से एक पत्र दिया था, उसी तरीके से संयुक्त लोकशाही आघाडी के अॅड. एस. ए. खान साहबने भी एक पत्र दिया था की, हमको यह सुविधा वगैरे मिलनी चाहिए। एस पत्र का यह जिक्र कर रहे हैं, वह पत्र आपको दिया गया है वह पत्र पढकर के सुनाईए।

**प्रफुल्ल पाटील :-**

वह हम मानते हैं, वह सब बात हम मानते हैं। कमिशनर साहब के पास लेटर दिया है वह भी मानते हैं।

**जयंत पाटील :-**

त्यांनी आपल्याला मोठी केबिन मिळावी असे पत्र दिलेले आहे. मोठी केबिन का?

**चंद्रकांत वैती :-**

४० माणसात ३३ जागा निवडून आल्यातर ३३ लोकांना बसायला मोठी केबिन मागणारच ना.

**जयंत पाटील :-**

आम्ही ४० चे म्हणत आहोत. तुम्ही ३३ का म्हणता?

**एस. ए. खान :-**

गटनेता म्हणून कामकाजासाठी सचिवांना एक पत्र दिले होते.

**चंद्रकांत वैती :-**

तुम्हाला काय म्हणायचे आहे, गटनेते नाहीत असे म्हणायचे आहे का? त्या पक्षातून ते निवडून आलेले आहेत आणि त्यांच्याकडे गटनेता म्हणून नोंद आहे. त्यांनी काँग्रेसला साथ, पाठिंबा दिलेला आहे. मात्र कोकण आयुक्तांकडून आलेल्या पत्रामध्ये स्पष्टपणे गटनेता म्हणून त्यांचा उल्लेख केलेला आहे.

**जयंत पाटील :-**

मग हे पत्र काय, जयंत पाटील यांनी लिहलेले नाही.

**चंद्रकांत वैती :-**

पत्र लिहले आहे ते मान्य आहे. आम्ही कुठे नाकारतो?

**जयंत पाटील :-**

मी तेच म्हणत आहे हे पत्र अॅड. एस. ए. खान यांनी लिहलेले आहे. तेच वाचतोय आणि त्यांनी दिलेले पत्रच मी वाचायला सांगत आहे ते वाचा.

**एस. ए. खान :-**

ह्याच्याकरिता पत्र दिलेले आहे की, आम्ही ४० जण आहोत. गटनेत्यांच्या मिटींगसाठी आम्ही एकत्र बसू.

**नगरसचिव :-**

आयुक्तांना दिलेले ते पत्र आहे. गटनेत्यासाठी मोठी केबिन बनणेबाबत. आपल्या माहितीसाठी माहिती देण्यात येते की, संयुक्त लोकशाही आघाडीचे ४० नगरसेवक आहेत. आपल्याला विनंती करण्यात येते की, आपण जातीने लक्ष घालून मोठी केबिन देण्यात यावी. असे अॅड. शफीक अहमद खान (गटनेता), संयुक्त लोकशाही आघाडी यांचे पत्र आहे. आयुक्तांना दिलेले पत्र आहे. मला नाही.

**एस. ए. खान :-**

आम्ही नुसती केबिन मागितली आहे.

**मधुसुदन पुरोहित :-**

त्याच्यात संख्या कुठे लिहलेली आहे. केबिनची संख्या कुठे लिहली आहे. मोठी केबिन देण्यात यावी असे आहे. आम्ही कुठे बोललो की, एक केबिन द्या की चार केबिन द्या.

**ज्योत्सना हसनाळे :-**

पक्षाला पक्षाचे काम करण्याची संधी मिळेल. ती तुम्ही करा आणि येथे जे आपल्याला करायचे आहे ते करा.

**जयंत पाटील :-**

तुम्ही ज्यावेळेस हा गट बनवला तेव्हा तुम्ही तुमचे स्वातंत्र्य हरवून बसलात.

**ज्योत्सना हसनाळे :-**

त्याच्यामध्ये तुम्ही ४० संख्याबळाचा डायरेक्ट उल्लेख केलेला आहे.

**मधुसुदन पुरोहित :-**

त्यांनी संख्या असे लिहलेले नाही. मोठी केबिन देण्यात यावी असे आहे. एका अधिकाऱ्याला भरपूर मोठे केबिन असते. याचा अर्थ असा थोडा होतो की, आम्ही एक केबिन या दोन केबिन बोललो आहोत. संख्या कुठे ही लिहलेली नाही.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

याठिकाणी महत्वाची बाब अशी आहे की, कोकण आयुक्तांकडे .....

**नयना म्हात्रे :-**

त्यांनी स्पष्ट लिहू दे. पण आमच्याकरिता ही कोकण भवनवरून पत्र आलेले आहे ना.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

महत्वाची बाब अशी आहे की, आयुक्तांकडे आम्हाला काय कार्यवाही करायची होती, याला महत्व द्या. संख्याबळ ठरवण्यासाठी आयुक्तांकडे तुम्ही गटाची नोंदणी करा. अशा पध्दतीची मागणी होती आणि गटाची नोंदणी करताना जे जे पक्ष एकत्र आले त्या लोकांनी या पक्षाला, त्या पक्षाला पाठिंबा असे करून एकत्र गट करण्याची, तर एकत्र गट का करायचा संख्याबळ ठरवण्यासाठी. ही गोष्ट लक्षात ठेवा की, स्थानिक प्राधिकरण सदस्य अनर्हता अधिनियम यामध्ये कुठलाही गट जो सामील झालेला आहे. मनसे, जनता दल, लोकभारती, बसपा आहे ह्यांनी काय केले तर पाठिंबा दर्शविलेला आहे. देअर इज नो मर्जर. विलीनीकरण नाही.

**मधुसुदन पुरोहित :-**

या पत्रामध्ये लिहलेले ही आहे. गटनेता म्हणून तुम्हीच लिहून दिलेले आहे.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

त्यांनी पाठिंबा दर्शविलेला आहे. आमचा एकत्र गट करा ते कशासाठी, तर संख्याबळ ठरवण्यासाठी आणि हे केल्यानंतर आयुक्तांच्या पत्रामध्ये स्पष्ट आहे. पक्षाचे नाव, नगरसेवक, गटनेता आणि पाठिंबा. पाठिंबा दिलेला पक्ष. विलीनीकरण झालेला पक्ष नव्हे. जर विलीनीकरण झाले असते. १०० टक्के आम्ही विलीनीकरण करू शकलो असतो. सदस्यता, अनर्हता, अधिनियम आम्हाला याठिकाणी लागू झाला नसता. मनसेच्या सर्वच्या सर्व नगरसेवकांनी काँग्रेस पक्षाला पाठिंबा दिला. बसपा, जनता दल, लोकभारती सर्वांनी पाठिंबा दिला. पण १०० च्या १०० टक्के लोक आल्यामुळे हा नियम आम्हाला लागू होत नव्हता. तरीही त्यांनी विलीनीकरण केलेले नाही. याउलट मर्ज विथ अस. ते मर्ज झालेले नाही. त्यांनी विलीनीकरण न केल्यामुळे त्यांचे स्वतंत्र अस्तित्व राहिले आणि म्हणूनच मा. कोकण आयुक्त साहेबांनी याची बरोबर नोंद घेउन काय म्हटले आहे तर पाठिंबा देणारा पक्ष. कुठल्या पक्षाला पाठिंबा दिलेला आहे तर काँग्रेस पक्षाला पाठिंबा दिलेला आहे. काँग्रेस पक्षाने संयुक्त लोकशाही आघाडीला पाठिंबा दिलेला आहे. म्हणून प्रत्येकाच्या गटनेत्याचे अस्तित्व कायम ठेवलेले आहे. याठिकाणी जर तशापध्दतीने करायचे असेल तर संयुक्त लोकशाही आघाडी असा एक पक्ष घेउन त्यांनी फक्त श्री. एस. ए. खान साहेबांचे नाव गटनेता म्हणून देवून नमुद केले असते. ज्याअर्थी आयुक्त साहेबांनी १० गटनेते दिले त्याअर्थी १० गटनेते आहेत. मग ते १ असो किंवा १० असो आम्ही जे ठरावामध्ये मागणी केलेली आहे की, ज्या ज्या पक्षाची जसे काँग्रेस पक्ष आहेत त्यांचे सदस्य जास्त आहेत. तर त्यांच्या

सदस्यांचा संख्येनुसार मोठे दालन द्या. अशी आम्ही मागणी केलेली आहे. कुठेही पत्र दिलेले आहे ते मागणीकरणाचे नाही.

**अनंत पाटील :-**

मा. महापौर महोदया, संयुक्त आघाडीचा अर्थ की, संयुक्त आघाडीमध्ये आलेल पक्ष आणि त्यांची केलेली आघाडी त्याचा गटनेता. आमची येथे भारतीय जनता पार्टी स्वतंत्र आहे.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

आपण कोकण आयुक्तांना विचारा की, तुम्हाला वेड लागले आहे की, आपण अशी वेगवेगळी नाव दिलेली आहेत.

**चंद्रकांत वैती :-**

सन्मा. नगरसेवक अनंत पाटील साहेब, या सगळ्या गोष्टींचा अभ्यास करून प्रत्येक गटाचा वेगळा नेता पहिल्यांदा बनविला. मिटींग घेतली. त्याच्यामध्ये सभेचे प्रोसेडिंग बनवले आणि त्याच्यामध्ये प्रत्येक गटाचा वेगळा गटनेता बनविला आणि ह्या गटनेत्यांनी त्यांच्या पक्षाचे नगरसेवक हे काँग्रेस पक्षाला पाठिंबा देत आहे. अशा आशयाचे प्रत्येक पार्टीने आपले वेगळे पत्र दिलेले आहे. या सगळ्या गोष्टींचा अभ्यास करून माहिती घेऊन प्रत्येक पक्षाचे अस्तित्व वेगळे राहिल. गटनेता वेगळा राहिल. मात्र तुलानात्मक दृष्ट्यातून तौलानिक संख्येतून आमची ४० ची संख्या राहिल याची रचना केलेली आहे आणि आपल्याला जे पत्र आलेले आहे ते पत्र कोकण आयुक्तांकडून आलेले आहे. स्थायी समितीची स्ट्रेन्थ कोणाच्या पत्रामुळे उरली, तर कोकण आयुक्तांच्या पत्रामुळे उरली. समित्यांची स्ट्रेन्थ त्यांच्यामुळे उरले आणि गटनेते आहे हे ही उरलेले आहेत ते तुम्हाला उरविता येणार नाही.

**अनंत पाटील :-**

संयुक्त आघाडीमध्ये तुम्ही त्यांना गटनेता म्हणून ठेवले आहे ना. पत्र बघा. काय आहे?

**मधुसुदन पुरोहित :-**

महापालिकेच्यावतीने जेव्हा कोणतेही पत्र येते तेव्हा त्या पत्रामध्ये लिहलेले असते. गटनेता - मधुसुदन एम. पुरोहित, नगरसेवक कंसामध्ये गटनेता असे लिहलेले असते. असे लिहण्यामागचा उद्देश काय आहे. आम्ही पक्षाच्यावतीने गटनेता आहोत. कोकण आयुक्तांच्यावतीने आम्हाला असे सांगितलेले आहे. किंवा असे लिखित दिलेले आहे. त्याचा विरोध करण्याकरिता तुमचा उद्देश काय हे कळत नाही?

**अनंत पाटील :-**

आपण स्वतंत्र गट केलाच नाही. आपण संयुक्त लोकशाही आघाडीमध्येच आहात.

**चंद्रकांत वैती :-**

पण तुम्हाला अडचण काय आहे? आमचे गटनेते असू नयेत असे वाटते का?

**जयंत पाटील :-**

मा. महापौर साहेब, माझे असे म्हणणे आहे की, पत्र देण्यासाठी श्री. एस. ए. खान यांनी एवढी घाई का केली? लोकशाहीचे आमचे ४० सदस्य आहेत.

**नयना म्हात्रे :-**

मा. महापौर साहेब, हा निर्णय कोकण आयुक्तांनी दिलेला आहे. मग येथे कशाला बडबड करता? कोकण आयुक्तांचे पत्र आहे की, आम्ही गटनेता आहोत.

**मा. महापौर :-**

गटनेत्याला गट पाहिजे की, नाही?

**एस. ए. खान :-**

मतदान घ्या.

(सभागृहात गोंधळ)

**जयंत पाटील :-**

सचिव साहेब, आपण ह्यांचे पत्र परत वाचा.

**चंद्रकांत वैती :-**

ते काँग्रेस पक्षाचे गटनेते आहेत असे स्पष्ट लिहले आहे. सोबत संयुक्त आघाडीचे गटनेते आहेत असे ही लिहलेले आहे. तुम्ही काय साधु इच्छिता.

**जयंत पाटील :-**

तुम्ही चुक केलेली आहे.

**चंद्रकांत वैती :-**

काय चूक केलेली आहे?

**जयंत पाटील :-**

मग पत्र वाचा.

**चंद्रकांत वैती :-**

आम्हांला तेवढे कळते.



**प्रशांत पालांडे :-**

मा. महापौर साहेब, आयुक्तांचे जे पत्र आहे त्याच्यावर तारीख आहे. दि. २७/९/०७ चे पत्र आहे.

**मा. महापौर :-**

सचिवजी आयुक्तांना दिलेल्या पत्राचे वाचन करा.  
(नगरसचिवांनी सदर पत्राचे सभागृहासमोर वाचन केले.)

**जयंत पाटील :-**

सहीच्या खाली काय लिहिलेले आहे?

**नगरसचिव :-**

अॅड. शफीक अहमतद खान गटनेता, संयुक्त लोकशाही आघाडी.

**चंद्रकांत वैती :-**

जे लिहिलेले आहे ते मान्य करत आहे ते गटनेता आहेत त्याची माहिती दिलेली आहे.

**प्रशांत पालांडे :-**

मा. महापौर साहेब, कोकण आयुक्तांकडून गटांच्या संदर्भात जे पत्र आलेले आहे. त्याची तारीख २७/९/२००७ आहे आणि अॅड. खान साहेबांनी कोकण आयुक्तांना जे पत्र लिहिलेले आहे ते १० व्या महिन्यामधले पण आहे. ह्याच्यानंतर त्यांनी कोकण आयुक्तांना त्यांचा निर्णय कळवलेला आहे. त्याप्रमाणे आपण संयुक्त लोकशाही आघाडीचा एकच गटनेता नेमावा आणि त्याला परवानगी द्यावी.

**अनिल सावंत :-**

आपण चुकीचे इंटरपिटेशन करत आहात. मा. सदस्य प्रशांत पालांडे कोकण आयुक्त इज अ हायर अॅथोरिटी आणि सभागृहातले जे सदस्य आहेत त्यांनी हायर अॅथोरिटी आहे. अॅड. एस. ए. खान यांनी जे पत्र दिलेले आहे त्यावेळी ते त्यांच्या गटाचे नेते.

**मधुसुदन पुरोहित :-**

आम्ही निवेदन केलेले आहे आणि कोकण आयुक्तांनी दुसरे पत्र लिहिलेले आहे त्यांनी आम्हाला गटनेते म्हणून सांगितलेले आहे.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

मा. महापौर साहेब आम्ही तुमच्याशी कुठलाही पत्रव्यवहार केला आणि त्यांनी उद्या पंतप्रधानांच्या नावाने सही केली. कॅन नॉट व्हाईलेड धिज ऑर्डर त्याच्या पत्राने कमिशनची ऑर्डर व्हाईलेड होत आहे का?

**अनंत पाटील :-**

परंतु, तुम्हाला आता गटनेत्यांना गाड्या पाहिजेत म्हणून सगळ्यांना गाड्या असा तुमचे सपशेल आहे.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

गटनेते म्हणून स्वतंत्रपणे मागणी केलेली आहे. श्री. मिलन म्हात्रे यांची मागणी आहे.

**नयना म्हात्रे :-**

माझी ही मागणी आहे.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

बसपाची आहे. लोकभारतीची आहे. मनसेची ही तुमच्याकडे स्वतंत्र मागणी आहे.

**मा. महापौर :-**

मी ठराव विषयक बोलत आहे. आपण १० गटनेत्यांची मागणी केलेली आहे. ५ ह्या बाजुला आणि ५ त्या बाजुला आहेत. इक्वल आहेत. असे काही नाही की, त्यांना भेटणार आणि तुम्हाला भेटणार नाही. सकाळी आपले एवढे पोस्टमार्टम झाले होते की, आपण ४२ टक्के वर पोहचलेलो होतो. आता हे गाडी, संगणकचालक, संगणक असे एक एक गटनेत्यांना साधारणपणे ३० ते ४० हजार रुपयांचा महिन्याला खर्च होईल आता वर्षाला कमीतकमी ५० लाख रुपये, आपण पाचवर्षामध्ये अडीच ते तीन करोड रुपये आपण ह्याच्यामध्ये खर्च करणार आहोत. ते ४२ चे ४३ होतील माझी आपल्याला विनंती आहे की, परत विचार करा. आणि कमीत कमी गटनेता कसे होईल ते बघा. दुसरे महत्वाचे म्हणजे, सिंगलला गटनेता ते कुठल्या गटाची मिंटींग घेणार?

**प्रफुल्ल पाटील :-**

मा. महापौर साहेब, या ठिकाणी महत्वाचे आहे की, तुम्ही म्हणता ते खरोखर विचार करण्यासारखे पण तुम्ही आम्हांला सांगा की, एक नविन पक्ष याठिकाणी येतो.

**मा. महापौर :-**

मग यामुळे काय होईल. अपक्षवाला एखादा बाहेर निघेल आणि म्हणेल मी आहे. मी माझा गटनेता आहे. मला केबिन द्या.

(सभागृहात गोंधळ )

**मधुसुदन पुरोहित :-**

म्हणजे तुम्ही मान्य केले की, आम्ही आमच्या पक्षाच्यावतीने गटनेता आहोत हे मान्य केलेले आहे.

**मा. महापौर :-**

एखाद्या पक्षातुन जर तुम्हांला काढुन टाकले तर तो काय करणार आम्ही पाठिंबा दिलेला आहे.

**मधुसुदन पुरोहित :-**

याचा अर्थ तुम्ही मानता. होणार नाही ही गोष्ट ठिक आहे. कोण बाहेर जाणार नाही. पण तुम्ही मानात की, तो तुमच्याकडे मागणी करू शकतो. मग आम्ही मागणी केली तर काय चुकीचे आहे?

**मा. महापौर :-**

माझे तेच म्हणणे आहे की, हे कुठे संपणार नाही मग सिंगल सिंगल प्रत्येकाला द्यावे का?

**मधुसुदन पुरोहित :-**

तुम्ही स्वतः याच्याबद्दल संमती देत आहात की, माझ्यामधला एखादा बाहेर गेला तर आम्हाला त्याला द्यावे लागेल. मग आम्ही मागणी केली तर आम्हाला त्याला द्यावे लागेल. मग आम्ही मागणी केली तर त्यात चुकीचे काय?

**चंद्रकांत वैती :-**

आता ज्या नोंदी झालेल्या आहेत त्या तुमच्या अपक्षाच्या बदलू शकत नाही.

**मा. महापौर :-**

अपक्ष म्हणून नाही.

**प्रफुल्ल पाटील :-**

बहुजन समाजपार्टी ही नॅशनल लेवलची पार्टी आहे. त्यांचा एकजरी नगरसेवक असला तरी त्यापक्षाला काम करायला ऑफीस पाहिजे ना.

**मा. महापौर :-**

ती नॅशनल लेवलची पार्टी आहे म्हणून पाहिजे का?

**प्रफुल्ल पाटील :-**

होय. नॅशनल लेवलच्या पार्टी आहेत म्हणून आम्ही म्हटलेलं आहे.

**मधुसुदन पुरोहित :-**

बाकी क्षेत्रीय पार्टींना दिले आहे म्हणून आम्हालाही देणे गरजेचे आहे.

**मा. महापौर :-**

ह्याने मोठा भार पडणार आहे. ५० लाख रुपयाचा खर्च वाढणार आहे.

**मिलन म्हात्रे :-**

मा. महापौर साहेब, मला या विषयावर बोलायचे आहे. आपण बोललात की, भार पडणार आहे. आम्ही पाच वर्ष गटनेत्याचे कार्यालय वापरले. नियम कायद्यामध्ये सगळं होत. इतर महापालिकांची माहिती माहितीच्या अधिकारात माझ्याकडे आहे. तिथे क्लर्क वगैरे सर्व अप्रुव्ह होते म्हणजे द्यायला पाहिजे होते. पण दिले नाही. आम्ही त्याच्यामध्ये काही कमतरता मानली नाही. आम्ही बसून लोकांची जी काम करायची होती ती केली आज प्रशासनाने जसे आम्हाला ठेवले तसे आम्ही राहिलो. चार-चार दिवस झाडूवाला आला नाही. तर आम्ही आमचे केबिन हाताने साफ केले. प्युन तर कधीच नव्हता. अशा परिस्थितीत पाच वर्षे आम्ही लोकांची कामे केली लोकांना त्याचा फायदा झाला. आज तुम्ही जे म्हणालात की, बजेटवर परिणाम होईल खर्च होईल. आमचे म्हणणे नाही की, तुम्ही आम्हाला काही अवास्तव असे द्या. पण मंत्रालयामध्ये सचिव आणि मंत्री केबिनेट मिनिस्टर इव्हन द चीफ मिनिस्टर, गृहमंत्री माहितीच्या आधिकारामध्ये अशी माहिती मिळालेली आहे की, त्यांना स्वतःचे अॅन्टीचेंबर असावे असे कुठेही कायद्यात तरतुद नाही. केबिनेट मिनिस्टर, राज्यमंत्री, स्टेट मिनिस्टर, केबिनेट मिनिस्टर यांना किंवा सचिव कुठेही अॅन्टीचेंबर ही संज्ञा नाही. जर मंत्रालयातून आपला नियम लागतो तो आपल्या इथले कालचे जे इंजिनिअर, सगळ्यांना आठ बाय दहाचे चेंबर आहे. सोफे आहे, कारपेट आहे. त्याला पार्टीशन आहे. एवढं गुप्तगु काय चालते? ह्याचा खर्च कोणी बघितला का? त्याला एक सेपरेट ए.सी. त्याला सेपरेट संडास, बाथरूम, त्या अधिकाऱ्याने केबिनमध्ये गेल्यावर बाहेरच पडायचे नाही. इंटीरिअर वेगळे. दर सहा महिन्याला इंटीरिअर बदलते. खुर्ची इथली तिथे, तिथली येथे पूर्व-पश्चिम नैऋत्र वगैरे वास्तुशास्त्रानुसार कोण आले की देवून जातो.

**मा. महापौर :-**

त्याचा प्रस्ताव द्या आणि तसा ठराव मांडा.

**मिलन म्हात्रे :-**

ठराव येणार आहे. ठरावाची चिंता करू नका. आपण याच्यावर वक्तव्य केले का? एकदा तुमच्या ऑफीसचे रिपेरिंग झाले की, तिथे दोन वर्षे करायचे नाही. तीन महिन्याला कारपेट बदलते. तुमचा आमचा पब्लिकचा पैसा आहे. कराल तर मापदंड सगळीकडे सारखा लावा. आम्हाला कार्यालय दिलेले नाही. बाहेर आम्ही उन्हामध्ये टेबलावरही बसायची ताकद आहे. आम्ही रस्त्यावरचे कार्यकर्ते आहोत. संख्या किती आहे ते महत्वाचे नाही. बहुसंख्य असलेल्यांनी जी काम केलेली आहेत ती काम करून दाखवलेली आहेत. हा आमच्या पक्षामध्ये दम आहे. हे कोणी बोलू नये. संख्येने काही होत नाही. बहुमताने केलेले ठराव सुद्धा आम्ही रद्द करून आणलेले नाही. मंत्रालयातून करून आणलेले आहेत. न्यायालयातून करून आणलेले आहे. कशाला तुम्ही मापदंड लावता? प्रश्न तो नाही. तुम्ही म्हणत असाल तर तुमच्या मताशी मी सहमत आहे. पहिल्यांदा प्रशासनामध्ये सुधारणा करा. आयुक्तांनी एक फतवा काढला आहे. साडे पाच वाजता लाईट बंद. दिवसभर

सर्वांच्या केबिनला ए.सी. पंखे सगळे चालू असते. दुरध्वनी कर्मचारी आणि बाकीचे फालतु लोक वापरत असतात. ह्याच्यावर कोणी नियंत्रण आणायचे. ह्याच्यावर आम्ही भरपूर पत्रव्यवहार केला. कोणीही नियंत्रण आणले नाही. तीन महापौरांपैकी आपण तिसरे आहात. तुमच्याकडून मी आशा व्यक्त करतो की, तुम्ही ह्याच्यावर कंट्रोल आणा आणि आमचा जो काही ठराव होईल त्याला तुम्ही चॅलेंज करा. भरपूर मार्ग आहेत. आम्ही कोणाकडे क्षमा याचना करणार नाही. माझा गट मान्य आहे की नाही. आपल्या बाजूला सचिव बसले आहेत. ते २९/०८/०७ दिलेले पत्र रेकॉर्डवर आणत नाही. माझ्या स्वतःचे सगळ्यात पहिले लेटर आहे. इंग्लीशचा फॉरमेट, फॉर्म नं. १ आणि रूल नं. ३/१-ए-१ दि. २९/०९/०७ ची महापालिकेची पोच आहे. हे बाकीच्या नगरसेवकांच्या हातात का आली नाही? आम्ही व्यक्तीगत मागणी केली आहे. तुम्ही नाकारा स्विकारा. तो भाग निराळा आहे. पण आज तुम्ही ज्यावेळेला बचतीच्या गोष्टी करतात. तेव्हा सगळीकडे व्यवस्थित मापदंड लावावा. आपल्या केबिनमध्ये सुद्धा आपण नसताना विजेचा दुरुपयोग होतो. फॅन, ए.सी. लाईट वापरले जाते. तुम्ही जर बचतीच्या गोष्टी केल्यातर स्वतःपासून सुरु करा.

**मा. महापौर :-**

मला चांगले माहित आहे की, मी नसताना माझे केबिन बंद असते.

**मिलन म्हात्रे :-**

तुम्ही आता वर आहात पण खाली का? त्याचे बोला. मी आता खालून जाऊन आलो.

**मा. महापौर :-**

मी माझ्या व्यक्तिगत केबिनबद्दल बोलत आहे.

**मिलन पाटील :-**

गटनेत्यांची व्याख्या सांगा.

**जयंत पाटील :-**

गट म्हणजे काय तर समुह. ज्याला आपण इंग्लिशमध्ये ग्रुप म्हणतो म्हणजे गट. मीच राजा मीच प्रजा. पाठ थोपटून घेत आहे. गाडी पाहिजे, घोडे पाहिजे हत्ती पाहिजे. तुम्ही तेव्हा तीन होते आणि तीनचे आता एक राहिलात. कोकण आयुक्तांकडून माहिती घ्या. आम्हाला गटनेत्यांना केबिन द्यायला हरकत नाही. पण एक हा गट होऊ शकत नाही असे आमचे म्हणणे आहे. कोकण आयुक्तांकडून माहिती घ्या. त्यांनी द्यायला सांगितले तर आमची काहीच हरकत नाही.

**मा. महापौर :-**

कोकण आयुक्तांकडून माहिती घेण्यात येईल. आयुक्त साहेब कोकण आयुक्तांकडून माहिती घेउन आणि त्या ठरावाला मंजूरी देवू.

(नगरसचिवांनी प्रकरण क्र. १३ चे वाचन केले.)

**प्रकरण क्र. १३ :-**

राष्ट्रीय महामार्ग क्र. ८ वर मिरा गावठण, महाजनवाडी, मिरागाव, मुन्शी कंपाउंड, कृष्णस्थळ, अमिष पार्क भागातील पावसाळी पाण्याचा निचरा होण्याकरीता आर.सी.सी. नाला बांधणे कामाबाबत विचार विनिमय करून निर्णय घेणे.

(सन्मा. सदस्य जुबेर इनामदार यांनी प्रकरण क्र. १३ च्या ठरावाचे सभागृहासमोर वाचन केले.)

**प्रकरण क्र. १३ :-** राष्ट्रीय महामार्ग क्र. ८ वर मिरा गावठण महाजनवाडी, मिरागाव, मुन्शी कंपाउंड, कृष्णस्थळ, अमिषपार्क भागातील पावसाळी पाण्याचा निचरा होण्याकरिता आर.सी.सी. नाला बांधणे कामाबाबत विचार विनिमय करून निर्णय घेणे.

मिरा भाईंदर महानगरपालिकेने जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय नागरी पुनरुत्थान अभियांतर्गत शहर विकास आराखड्यात एकात्मिक नाले विकास प्रकल्प अंतर्गत मिरा भाईंदरच्या सर्व नाल्यांचा समावेश केला आहे. त्यास मा. महासभा दि. १७/११/२००६ मधील प्रकरण ८६ परिशिष्ट अ अनुक्रमांक १५ नुसार एकात्मिक नाले प्रकल्पासाठी रु. २२२.२६ कोटी इतकी रक्कम खर्च करावयाची आहे.

शहर विकास आराखड्यातील सर्व प्रकल्पाकरिता केंद्रशासनाकडून ३५ टक्के, राज्यशासनाकडून १५ टक्के, व उर्वरित ५० टक्के महानगरपालिकेस करावयाचा आहे.

प्रकरण क्र. १३ मधील विषय हा एकात्मिक नाले प्रकल्पांतर्गत येत असून सदर प्रकल्पाचा सविस्तर प्रकल्प अहवाल प्रशासनाने राज्य शासनाकडे पाठवलेला आहे. परंतु, त्याची प्रत सदर गोषवाच्या सोबत दिलेली नाही.

गोषवाच्यानुसार मिरा गावठण महाजनवाडी, मिरागाव, मुन्शी कंपाउंड, कृष्णस्थळ, अमिषपार्क ह्या भागातील पावसाळी पाण्याचा निचरा होण्याकरिता नाल्यांचे पक्के आर.सी.सी. बांधकाम, छत्रपती शिवाजी महाराज मार्गावरील कलवटची रुंदी वाढविणे इ. कामे करण्यासाठी रु. ५,२९,७४,०००/- च्या खर्चास मंजूरी मागितलेली आहे.

वरील विभागासाठी आर.सी.सी. नाला बांधण्याचे प्रस्तावित केलेले आहे. त्याठिकाणी पूर्वापार नैसर्गिक नाले होते. परंतु सदर नैसर्गिक नाल्यांचे रेखांकन विकास आराखड्यामध्ये रहिवास क्षेत्राखाली दाखविल्यामुळे अनेक इमारत विकासकांना ह्या नैसर्गिक नाल्यांच्या जागेवर अतिक्रमण करून नाले बंद केलेले आहेत.

शहर विकास आराखड्यामध्ये नैसर्गिक नाल्यांचे रेखांकन करण्यासाठी महाराष्ट्र प्रादेशिक व नगररचना अधिनियम १९६६ चे कलम ३७ अन्वये तत्कालीन नगरपरिषदेने तसेच महानगरपालिकेने ठराव पारित केला होता. ह्या ठरावानुसार पुढील कार्यवाही करण्याचे काम प्रशासनाचे होते. त्या संदर्भात कोणताही तपशिल प्रशासनाने गोषवाच्यामध्ये दिलेला नाही.

विषयानुसार प्रस्तावित केलेला नाला प्रत्यक्षात पक्क्या स्वरूपाचा बांधावयाचा झाल्यास त्या जागेवर काय वस्तुस्थिती आहे ह्याचा अहवाल सार्वजनिक बांधकाम खात्याने दिलेला नाही.

एकात्मिक नाले प्रकल्पामध्ये शहरातील सर्व नाले समाविष्ट असताना व त्यापैकी काही नैसर्गिक नाले प्रत्यक्ष आहेत त्याच स्वरूपात असताना त्या नाल्यांचे पक्के बांधकाम करण्याचे प्रशासनाने प्रस्तावित न करता विशिष्टपणे वरील नाल्यांचे बांधकाम प्रस्तावित का केले आहे ह्याचे स्पष्टीकरण होत नाही.

गोषवाच्यानुसार जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय नागरी पुर्नरुस्थान अभियाना अंतर्गत तयार केलेली योजना २०३१ सालापर्यंत राबवायची असल्या कारणाने या योजनेस विलंब होईल हे कारण पुढे करून वरील कामास प्राधान्य दिल्याचे नमूद केले आहे. प्रत्यक्षात सदरच्या योजनेस मंजूरी मिळाली असून निधी वर्ग झाल्यास त्वरीत या योजनेअंतर्गत येणारी विकास कामे पुढील आर्थिक वर्षात हाती घेता येतील अशी वस्तुस्थिती असतानाही ती योजना २०३१ सालापर्यंत होईल असे गोषवाच्यात नमूद करून प्रशासन लोकप्रतिनीधीची दिशाभूल करित आहे.

गोषवाच्यात दिलेल्या माहितीनुसार महानगरपालिका सदर कामासाठी निधी हा सन २००८-०९ आर्थिक वर्षातील तरतुदीनुसार खर्च करण्याचे प्रस्तावित करत आहे. परंतु, सदर कामाची प्रशासकीय व आर्थिक मंजूरी चालू आर्थिक वर्षात मागत आहे.

चालू आर्थिक वर्षात प्रशासकीय व आर्थिक मंजूरी घ्यावयाची झाल्यास चालू वर्षाच्या अर्थसंकल्पीय अंदाजपत्रकात तशी तरतुद असणे आवश्यक आहे. ह्याची माहिती प्रशासनास नाही काय? किंवा त्यांनी विधी सल्लागाराकडून किंवा अंतर्गत लेखा परिक्षकाकडून सल्ला घेतलेला दिसत नाही.

सार्वजनिक बांधकाम विभागाने सदर विषयाच्या कामासाठी येणाऱ्या एकूण ५,२९,७४,०००/- या रक्कमपैकी महानगरपालिकेच्या निधीतून करावयाचा खर्च त्या खर्चासाठी चालू आर्थिक वर्षात असलेली शिल्लक आर्थिक तरतुद राज्य शासनाकडून मिळणारी रक्कम व केंद्र शासनाकडून मिळणारी रक्कम ह्याचा तपशिल किंवा शासनाकडून आजमितीस निधी उपलब्ध झालेला आहे किंवा नाही ह्याची माहिती दिलेली नाही.

सन २००८-०९ ह्या आर्थिक वर्षात ह्या बांधकामाला सुरुवात करावयाची आहे त्यासाठी त्या वर्षीच्या अर्थसंकल्पीय अंदाजपत्रकात तरतुद करावी लागेल. सन २००८-०९ चे अंदाजपत्रक तयार झालेले नाही. सन २००७-०८ च्या अंदाजपत्रकात त्या लेखाशिर्षाखाली तरतुद नाही किंवा गोषवाच्यामध्ये तशी नोंद नाही. पुढील वर्षाच्या अंदाजपत्रकात तरतुदीस अधिन राहून पुढील वर्षामध्ये हाती घ्यावयाच्या कामास चालू वर्षात आर्थिक व प्रशासकीय मंजूरी देणे बेकायदेशीर व नियमबाह्य असल्यामुळे ही सभा प्रकरण क्र. १३ मधील आर.सी.सी. नाला व कलवर्टच्या बांधकामाला आर्थिक व प्रशासकीय मंजूरी नाकारत आहे. असा मी ठराव मांडत आहे.

#### नयना म्हात्रे :-

या ठरावाला माझे अनुमोदन आहे.

#### ज्योत्सना हसनाळे :-

मा. महापौर मॅडमच्या परवानगीने बोलत आहे की, आज या सभागृहामध्ये राष्ट्रीय महामार्ग क्र. ८ वर मिरा गावठण महाजनवाडी मिरा गाव, मुन्शी कंपाउन्ड, कृष्णस्थळ, अमिष पार्क तसेच विषय क्र. १४ मधिल क्वीन्स पार्क ते केनवुड पार्क, रामदेव पार्क, श्रीराम नगर हे तीन नाले बनविणेबाबत या सभेमध्ये प्रस्ताव आलेला आहे. नाले बनवायला पाहिजे. परंतु, सदर नालेच या मिरा भाईंदर क्षेत्रामध्ये नसून इतर ठिकाणी सुद्धा नाले आहेत ते करणे सुद्धा गरजेचे आहे. म्हणून हे दोन विषय आणून संपुर्ण विभागाचे काम पुर्ण होणार नाही. पावसाळा आला की, सर्वच नगरसेवक आरडा ओरड सुरू करतात की, पाणी तुंबलय, पाणी भरलेले आहे आणि मग प्रशासनालाही धावावे लागते. शिवाय नगरसेवकांना ही तिथे जावे लागते अशावेळेला तातडीने कुठलाही निर्णय घेता येत नाही. म्हणून नाल्याचे बांधकाम हे झालेच पाहिजे. परंतु केवळ ह्याच नाल्याचे बांधकाम व्हायला पाहिजे असे नाही. आपण जी परिस्थिती येथे मांडलेली आहे. जे खरोखर गरजेचे आहे. कृष्णस्थळ, मुन्शी कंपाउन्ड हा माझा वॉर्ड नाही. तरीसुद्धा मी या ठिकाणी म्हणून, त्याठिकाणी पाणी साचते. पाण्याचा निचरा व्हायला पाहिजे. तसेच राष्ट्रीय हायवे मार्गावर लक्ष्मीबाग या गावात सुद्धा पाणी साचते. तिथल्याही पाण्याचा निचरा व्हायला पाहिजे. मिरा भाईंदर क्षेत्रामध्ये अनेक भाग असे आहेत की, ज्याठिकाणी दोन दोन दिवस पाणी उतरत नाही. यासाठी प्रशासनातर्फे संपुर्ण नाल्याचा सर्व्हे करण्यात यावा. आवश्यक असलेल्या नाल्यांना प्राधान्य देवून नाले बांधण्याचा प्रस्ताव आपण केला पाहिजे आणि नंतर टप्प्याटप्प्याने ती काम हाती घेतली पाहिजे. आज सन २००८-०९ च्या आर्थिक बजेटमध्ये याची आपल्याला तरतुद करायची आहे. मग एवढ्या घाईघाईने आजचा विषय आणायला नको होता. उत्तन, मिरा रोड, भाईंदर (पु.) यासर्व ठिकाणी नाल्यांची गरज आहे. प्रशासनाने विषय आणून येथे सभागृहात काय दाखविले आहे, मला तर वाटले की, या सभागृहामध्ये फार मोठी चर्चा होईल. कारण पावसाळा आला की, नगरसेवक खुपच आरडाओरड करत असतात. तुम्ही हे टप्प्याटप्प्याने घ्या आणि मी तर म्हणून की, पुढच्यावर्षी प्राधान्य म्हणून नाल्याचे काम हाती घ्या आणि महापौर साहेब, तुम्हाला मी विनंती करते की, खरोखर जी नाल्यांची गरज आहे ते प्रत्येक

विभागामध्ये जावून प्रत्यक्ष पाहणी करा. आयुक्तांनीही वेळ दिला पाहिजे. आपल्याकडे वेळही फार कमी आहे. आता नोव्हेंबर महिना सुरु होत आहे. डिसेंबर, जानेवारी, फेब्रुवारी, मार्च या चार ते पाच महिन्यामध्ये आपल्याला ही काम करायची आहेत. या बजेटमध्ये प्राधान्य देवून त्याची तरतुद करून ही काम तुम्ही हातामध्ये घ्या. तसेच (सिल्व्हर पार्कमधील) काशी गावातील जो नाला जो खाडीपर्यंत आपल्याला करायचा आहे. तो कशाप्रकारे काढता येईल याचाही अभ्यास होणे महत्वाचे आहे. तरी विषय क्र. १३ आणि विषय क्र. १४ हे दोन्ही विषय पुढील मा. महासभेमध्ये संपुर्ण एस्टीमेट तयार करून घेण्यात यावे असे मी आपणांस विनंती करत आहे.

#### चंद्रकांत वैती :-

आता जो ठराव मांडलेला या भारत वर्षामध्ये यु.पी.ए.चे गर्डरमेंट काम करत असताना १ लाख करोड रूपयाचा निधी निर्माण केला गेला आणि ६४ शहरांना जोडण्याचे काम या जवाहरलाल नेहरू नॅशनल अरबन रिन्युअल मिशनच्या माध्यमातून सुरु केले गेले. त्या योजनेतून केंद्र सरकारकडून ३५ टक्के राज्य शासनाकडून १५ टक्के आणि स्थानिक स्वराज्य संख्येकडून ५० टक्के ही रक्कम उभी करायची ठरले आणि ह्याच सभागृहामध्ये आयुक्त साहेब आपण स्वतः त्यावेळेला आपला गौरव करून घेतला की, ह्या शहराला आपण १,९२५ करोड रूपयाचा सी.डी.पी. मंजूर करून दिला. मा. मुख्यमंत्र्यांनी आपल्या सी.डी.पी. स्विकारला आणि आपण या शहरामध्ये एकात्मिक नाले विकास योजना आणि जे नैसर्गिक नाले आहेत ते डेव्हलपमेंट प्लानमध्ये घेतले. डी.पी. मध्ये घेतले. त्याच्यात ३७ खाली प्रोव्हीजन केली हे सगळे केले आणि ही जवाहरलाल नेहरू नॅशनल अरबन रिन्युअल मिशन आपण पहिले आयुक्त आहात की, गोषवाऱ्यामध्ये असे लिहिता की, हे मिशन आम्हाला २०३१ पर्यंत पुर्ण करायचे आहे. म्हणजे तुम्ही केंद्र सरकारच्या योजनेवर हा अविश्वास प्रकट केलेला आहे. तुम्ही केलेल्या परिहार्य एक्झिक्यूटिव्ह इंजिनियर केलेल्या याच्यावर आमचा ठराव झालेला आहे. त्या ठरावामध्ये दोन ओळ्या अजुन मर्ज करून घ्यायचे आहे की, प्रकरण क्र. १३ मध्ये सार्वजनिक बांधकाम विभागाने प्रशासनाला दिलेला गोषवारा सदोष असून लोकप्रतिनिधींची दिशाभूल करणारा आहे. तसेच गोषवाऱ्याच्या अनुषंगाने मा. महासभेला आर्थिक व प्रशासकिय मंजूरी द्यावी ही बाब बेकायदेशिर व नियमबाह्य असून लोकप्रतिनिधींना भविष्यात अडचणीत आणणारे आहे. सदोष गोषवारा तसेच लोकप्रतिनिधींची करण्यात येणारी दिशाभूल आर्थिक प्रशासकिय मंजूरी देण्याबाबतचा कायद्याचे व नियमांचे उल्लंघन करणेकरिता लोकप्रतिनिधींना भाग पाडणे, मुंबई प्रांतिक महानगरपालिका अधिनियम १९४९ चे कलम ५६ च्या (१) अन्वये नियमांचा भंग करणे, कर्तव्यात निष्काळजीपणा करणे व हयगय करणे याप्रकरणी सार्व. बांधकाम विभागाचे कार्यकारी अभियंता श्री. दिपक खांबित यांना दोषी ठरवून त्वरीत निलंबित करण्यात येत आहे असा मी ठराव मांडत आहे. मुंबई प्रांतिक महानगरपालिका अधिनियम १९४९ चे कलम ५६ च्या तरतुदीस अधिन राहून श्री. दिपक खांबित यांच्या निलंबनानंतर सदर कलम ५६ खाली पुढील कार्यवाही मा. आयुक्तांनी करावी. तसा अहवाल मा. महासभेसमोर सादर करावा असा ठराव मी मांडीत आहे.

#### एस. ए. खान :-

या ठरावाला माझे अनुमोदन आहे.

#### जयंत पाटील :-

साहेब, श्री. दिपक खांबित यांनी नक्की काय केले त्याची माहिती आपण द्यावी. नक्की दिशाभूल काय केली हे आम्हाला माहित नाही आणि त्याच्यावर ५६ खाली कार्यवाही होऊ शकते का? कारण झाले काय की, शेवटी आम्ही राहणार आहोत. बाकी सगळे अधिकारी घरी जाणार आहेत असा आपण ठराव करू शकतो का? कारण विषय कुठला आहे? विषय नाल्याचा आहे. ठराव करतो श्री. दिपक खांबितला काढायचा.

#### चंद्रकांत वैती :-

नाल्याची योजना त्यांनीच राबवली आहे. हा गोषवारा कोणी बनवला आहे? नाहीतर सिटी इंजिनियरला काढून टाका.

#### जयंत पाटील :-

या गोषवाऱ्यावर कोणाची सही आहे?

#### चंद्रकांत वैती :-

आयुक्तांची सही आहे. आयुक्तांनी सांगू दे कोण आहे?

#### जयंत पाटील :-

मग आयुक्तांनाच काढा.

#### चंद्रकांत वैती :-

तसे करा. तुम्ही तसा ठराव तुमच्याकडून मांडा.

#### जयंत पाटील :-

कुठल्याही तऱ्हेचे चुकीचे ठराव केले तर त्याला आमची मान्यता मिळणार नाही. साहेब, आम्हांला या संदर्भात माहिती द्या.

**मा. आयुक्त :-**

विषय क्र. १३ व १४ च्या बाबतीमध्ये मिरा भाईंदरमध्ये ज्या ज्या ठिकाणी पाणी साचते व त्या तिथल्या लोकांना, नागरिकांना त्रास होतो. हे आपण जवळ जवळ दोन-तीन वर्षांपासून फार मोठया प्रमाणावर अनुभवले आहे. २६ जूलैचा जो महापूर आला त्यात मोठया प्रमाणात, त्याच्यामुळेही आपल्याला या शहरामध्ये बऱ्याच नागरिकांना वाईट घटनेला सामोरे जावे लागले होते आणि ह्याबाबतीमध्ये मागच्या वर्षी ज्या ज्या ठिकाणी पाणी साचले होते त्या त्या ठिकाणचा अहवाल तयार करायला विभागीय अधिकाऱ्यांना सांगितले होते. त्याप्रमाणे प्रत्येक चार विभागांचे अहवाल प्राप्त झालेले आहेत. काही सन्मा. नगरसेवकांनी सुद्धा मागणी केलेली आहे. ज्या ज्या ठिकाणी पाणी साचते त्या त्या ठिकाणी महापालिकेने कुठच्या प्रकारची कार्यवाही करणे अपेक्षित आहे. त्या ठिकाणी नाला काढायला पाहिजे. नाला काढायचा असेल तर नालासुद्धा बांधायला पाहिजे की, जेणेकरून नागरिकांना कुठच्याही प्रकारचा त्रास होऊ नये. अशाप्रकारची सन्मा. नगरसेवकांची पत्रसुद्धा आपल्याकडे प्राप्त झालेली आहेत. या सगळ्या गोष्टींचा विचार करून आणि सन्मा. नगरसेवक चंद्रकांत वैती साहेबांनी सांगितल्याप्रमाणे की, जे.एन.ए.आर.एम. प्रमाणे १,९२५ कोटीचा आपल्या मिरा भाईंदर शहराचा प्रकल्प तयार केलेला आहे आणि तो प्रकल्प आपल्याला केंद्राच्या मदतीने, राज्य शासनाच्या मदतीने आणि आपल्या महापालिकेच्या आर्थिक निधीतून जवळ जवळ २०३१ सालापर्यंत आपल्याला हा प्रकल्प पूर्ण करायचा आहे. त्याच्यामध्ये जी काही प्रगती झालेली आहे ही प्रगती वेळोवेळी आपल्याला सांगितलेली आहे. मी माझी स्वतःची पाठ कधी थोपटवून घेतलेली नाही. जे काय बोलला असाल ते आपणच सभेमध्ये बोलला असाल. परंतु, राष्ट्रीय महामार्ग क्र. ८ मिरा गावठण महाजनवाडी, मिरा गाव मुन्शी कंपाउंड हे जे प्रकरण क्र. १३ मध्ये समाविष्ट केलेली जी ठिकाण आहेत. त्या ठिकाणच्या बाबतीमध्ये मी आपल्याला फक्त एवढेच सांगू इच्छितो की, ज्या ज्या ठिकाणी जास्त प्रमाणामध्ये हानी झाली त्या त्या ठिकाणचा हा नाला आपल्या मंजूरीसाठी ठेवण्यात आलेला आहे. त्याच्यामध्ये फक्त प्रशासकीय मंजूरी द्यायची आहे. त्याच्यामध्ये आपल्याला आर्थिक तरतुद करायची आहे. आपण हा ठराव पारित केल्यानंतर त्याच्यावर लगेच कार्यवाही वगैरे करतोय अशातला भाग नाही. परंतु, हे करणे आवश्यक आहे. कारण प्रशासकीय कामकाजाला विलंब होत आहे आणि प्रत्यक्ष काम सुरु व्हायला बराचसा कालावधी निघून जातो आणि तेवढ्यामध्ये पावसाळा येतो आणि त्या पावसाळ्याला आपल्याला परत सामोरे जावे लागते. सन्मा. सदस्य बरेच उपस्थित आहेत. ज्यांच्याबरोबर मी स्वतः पावसाळ्यामध्ये फिरलेलो आहे. प्रत्येक घराघरामध्ये पाणी जावून लोकांचे जे नुकसान झालेले आहे ते उघडया डोळ्याने पाहिलेले आहे आणि हे सगळं असताना, हे सर्व अनुभवल्यानंतर मी अशाप्रकारचा प्रस्ताव सांगितलेला आहे की, हे जे दोन नाले आहेत ते दोन नाले तरी आपण या पावसाळ्याच्या आधी पूर्ण करायचे आहे. जेणेकरून नागरिकांना जो काय त्रास होत आहे तो त्रास कमी करायचा आहे. १,९२५ कोटीमध्ये आपण जवळ जवळ २२० कोटीचा प्रस्ताव एक वेगळा नालेप्रकल्प म्हणून प्रस्तावित केलेला आहे. तर त्याला वेळ लागणारच आहे. त्याचे अजून डी.पी.आर. तयार व्हायचे आहे. ते तयार झाल्यानंतर महाराष्ट्र शासनाकडे आपण पाठवणार व महाराष्ट्र शासनाकडून केंद्र सरकारकडे पाठवणार. हे सगळं आपण २२० कोटीमध्ये घेतलेले आहे. परंतु, नागरिकांना जो काय त्रास होत आहे किंवा नागरिकांच्या ज्या अडीअडचणी आपल्या नजरेसमोर येतात. आपण डोळ्याने प्रत्यक्ष पाहिलेले आहे. म्हणून हा प्रस्ताव आलेला आहे.

**चंद्रकांत वैती :-**

मागच्या दोन स्थायी समितींचा आपला अनुभव लक्षात घेता, स्थायी समितीमध्ये बजेट आधीच संपलेला असायचा. आपला अर्थसंकल्प व्हायचा आहे. २००८-०९ सालचा अर्थसंकल्प व्हायचा आहे आणि त्याच्या आधीच तुम्ही त्याच्यावर नजर मारली. त्याच्यावर लगेच तरतुद करून मोकळे हे कशासाठी? श्री. दिपक खांबीत साहेब अतिशय विद्वान माणूस आहे. आमचे श्री. लक्ष्मण जंगम, नवनिर्वाचित नगरसेवक त्यांच्याकडे २७ तारखेला एक माणूस आपला इंजिनियर पाठवला. आपल्याकडे गटर बनवायला लागेल असा एक प्रस्ताव सादर करा. आमचे नगरसेवक श्री. लक्ष्मण जंगम यांनी २७ तारखेला एक पत्र मा. आयुक्तांना लिहिले की, अशी गटार बनवा आणि २९ तारखेला लगेच ४ करोड ६९ लाखाचा प्रस्ताव तयार झाला. आपले महापालिका प्रशासन एवढे फास्ट आहे का? दोन दिवसामध्ये ४ करोड ६९ लाख रुपयाचा प्रस्ताव तयार झाला. पत्र बनवायला ही आपलाच माणूस पाठवला. अशाप्रकारे तुम्ही महापालिकेमध्ये काय साधणार आहात? मागे सन्मा. नगरसेवक तुळशीदास म्हात्रे साहेब, सभापती असताना बजेट प्रोव्हीजन बरीचसी संपली होती. मा. उपमहापौर साहेब श्री. स्टिवन मॅडोसा सभापती असताना, सन्मा. नगरसेवक तुळशीदास म्हात्रे साहेबांच्या वेळेला अधिकाऱ्यांनी ती प्रोव्हीजन तिथे लावली होती. जी जिथे प्रोव्हीजन खर्च करायची आहे तिथे करा. अर्थसंकल्पामध्ये आपण तरतुदी करतो तर का करतो? आज याला मान्यता मिळाली असती तर तुम्ही काय केले असते? येथे तिथे उरलेले बजेट आहे त्याचे रिअॅप्रोप्रिएशन केले असते आणि ते त्या हेडमध्ये टाकून दिले असते. आपल्याला नालेच बांधायचे आहे. आपल्याकडे सी.डी.पी. तयार आहे. आपल्याकडे नैसर्गिक नाल्याचा उतार तो ही आहे. बरेच नाले अस्तित्वात आहेतच. काही नाल्यांची रुंदी वाढवायची आहे. त्यांची कार्यक्षमता वाढवायची आहे. पाणी वाहून नेण्याची क्षमता वाढवायची आहे. मग अशा नाल्यासाठी आपण बजेट प्रोव्हीजन करताना त्या हेडखालीच जास्तच प्रोव्हीजन केली पाहिजे. अर्थसंकल्पाला आता अवधी आहे. आताच २००८-०९ सालातील अर्थसंकल्पावर डल्ला मारण्याचा उद्देश काय? म्हणजे याला लगेच मान्यता मिळाली, हॉस्पिटलच्या निविदेला

मान्यता मिळाली असती म्हणजे आपण काय केलं असते, बजेटचा बराचसा भाग अॅडव्हान्समध्ये संपवून टाकला असता. आपण हे कुठंपर्यंत करणार आहात आणि केंद्र सरकारची एवढी चांगली योजना ह्याच्यावर आपण अविश्वास प्रकट करतो. तो अधिकारी कोण? ते सांगतात २०३१ पर्यंत करायचे आहे. म्हणजे तोपर्यंत आपण कामच करणार नाही. त्याच्या निधीतून मागितला आहे का? त्यातला ५० टक्के निधी आपण खर्च करणार आहोत? त्याच्यासाठी आपली तरतुद काय केली? आपली तजवीत केली काय? ५० टक्के खर्च आपण करणार आहोत. पण त्याचा काय कुठे उल्लेख नाही. आम्ही जसे चालवू तसे प्रशासन चालेल. आम्ही सांगू त्यांच्या बदल्या होतील. आम्ही सांगू त्याला बढती देवून टाकू. हे करणारे अधिकारी काय ते सगळी धीरुभाई अॅन्ड कंपनी झाली का? हे असे चालणार नाही. कोणाला कशी दालने दयावीत त्याच्याबद्दल आम्ही काही सांगणार नाही. परंतु, हे करताना आपण इतर खर्च करतो तसे या शहराच्या हितामध्ये शासन आणि प्रशासन दोन्ही सोबत चालले पाहिजे. प्रशासन म्हणून आपण काम करत असाल तेव्हा लोकप्रतिनिधींना देखिल तशा सोयी सुविधा दिल्या पाहिजेत. प्रशासनाच्या मनात येईल तसे वागायचे का? अॅडव्हान्समध्ये तुम्ही निविदा मंजूर करता. हे दोनच नाले शहरामध्ये आहे का? एकात्मिक नाले विकास योजना आपण कधी राबवली? त्याच्या मंजूऱ्या कधी घेतल्या? मागच्या सभेत ह्या गटारांच्या देखिल मंजूऱ्या घेतल्या. मग आता आर्थिक प्रशासकीय मंजूरी मागण्याचे कारण काय? तर लोक खुशीने लगेच देतील. जेव्हा पाणी भरते तेव्हा तुमचे अधिकारी सापडत नाही. प्रत्येक गटारावर आम्ही उभे राहिलेला आहोत. आपल्याला कळवल्यानंतर आयुक्त साहेब आपण पोहचता. तोपर्यंत कोणाचा ठिकाणा नसतो. आपण येथे व्हिजीलन्स कमिटी बनवली होती. पण हे व्हिजीलन्सवाले कधीच नसायचे. आपत्कालीन प्रकल्प बनवले होते. हे कधीच जागेवर नसायचे. ह्यांचे अधिकारी जागेवर नाही. सुट्टीच्या दिवशी ज्याचे काम आहे तो नसायचाच नसायचा. असला तर स्वतःच्या कामासाठी यायचा. अशाप्रकारचे कामकाज चालायचे त्याच्यामुळे आपण एवढे सक्षम झालो आहोत. त्याच्यासाठी आपण योजना किंवा याच्यावर चर्चा विनिमय करण्यासाठी विषय आणला असता. तर आम्ही तुमचा हेतू चांगला आहे असे मानले असते. पण तो आर्थिक प्रशासकीय मंजूरीसाठी का म्हणून आणता. ते पत्र बघा. तुम्ही ते पत्र आमच्या लोकप्रतिनिधींना दाखवा. लोकप्रतिनिधींना ते शिकण्यासारखे आहे की, अधिकारी आपल्याकडून पत्र का मागतो? २७ तारखेला पत्र मागतो आणि दोन दिवसात प्रस्ताव तयार करतो. छान पझेसन आहे.

#### मा. आयुक्त :-

आपल्याकडे ह्याच्यामध्ये जे कृष्णस्थळ आहे ते संकूल रहिवासी, विकास मंडळ त्यांचे दि. २८/०३/०७ चे पत्र आहे. त्याच्यानंतर कृष्णस्थळ द्वारका असोसिएशनचे दि. १२/७/०७ चे पत्र आहे, मिरा गाव रहिवासी संघ श्री. सुर्यकांत अनंतराव भोईर त्यांचे ही एक पत्र आहे. मिराधाम एल्लर मित्रमंडळ त्यांचे दि. १३/३/०७ चे पत्र आहे. त्याचप्रमाणे श्रीम. सय्यद नुरजहाँ नझर हुसैन त्यांचे ही दि. १२/१२/०६ चे पत्र आहे. श्री. जयाबाई भोईर यांचे दि. १७/२/०७ चे पत्र आहे. श्री. सलीम दाउद शेख यांचे दि. ५/९/०७ व दि. १/१०/०७ चे पत्र आहे. श्री. हरेशचंद्र जगन्नाथ म्हात्रे यांचे ही पत्र आहे. अशाप्रकारे जे काही सन्मा. नगरसेवकांनी आपल्याकडे ज्या ज्यावेळेला मागणी केली व स्थानिक रहिवाश्याने आपल्याकडे मागणी केल्यानंतर हा सगळा प्रस्ताव तयार करून आपल्यासमोर ठेवण्यांत आलेला आहे.

#### लक्ष्मण जंगम :-

आयुक्त साहेब, केनवर्क पार्क, क्वीन्स पार्क, रामदेव पार्क ते श्रीराम नगरकडे जाणारा हा रस्ता मला असे वाटते की, या रस्त्याची हद्द ही अजून कम्प्लीट नाही. त्या रस्त्यावर अतिक्रमण आहे. त्या रस्त्यावरून आपल्या मिरा भाईंदर महानगरपालिकेची बससेवा चालू आहे. त्याच्यासाठी तुम्हाला मी दोनवेळा भेटलो. त्यानंतर गणपती मार्बलवाल्याने रस्त्यामध्ये मार्बल ठेवले आहे. त्याचीही मी दोन पत्र दिली आहेत. त्याची कार्य कार्यवाही झाली नाही. ते पत्र दिले. मला वाटले श्री. खांबित साहेब आमच्यावर जाम खुश आहेत. बरे झाले म्हणून आणखिन एक हिडन रोझच्या प्रायव्हेट कॉम्प्लेक्सचे दिले आणि नंतर आमच्या लक्षात आले की, हे इतक्या घाईने आमच्या ५१ नंबरमध्ये सगळा बजेट टाकणार आहे असे वाटते आणि आम्हांला काय माहिती नव्हती. आम्ही पत्र दिलं पण या पत्राच्या बाबतीत सभागृहाला जी चर्चा करायची आहे ती करू दया व कोणाला जे बोलायचे असेल ते बोलू दया. पण या रस्त्यावर प्रामुख्याने जे अतिक्रमण आहे त्याच्याबाबतीत माझी दोन पत्र आहेत. मी तुम्हांला दोन वेळा भेटलो. त्याच्यामध्ये काही होत नाही. मी बांधकाम खात्याला नगररचनेला हा रस्ता किती फुटाचा आहे त्यासंदर्भात पत्र लिहिलेले आहे. त्याच्या बाबतीत ही काही होत नाही. ह्याचा अर्थ असा होतो की, महत्त्वाचे जे विषय आहेत त्याच्याकडे दुर्लक्ष केले जाते आणि खरोखरच फक्त ठेकापद्धतीच्या हिशोबाकडे जास्त लक्ष आहे असा त्याचा अर्थ होत आहे. असे याठिकाणी माझे मत आहे.

#### मिलन पाटील :-

मा. महापौर साहेबांच्या परवानगीने बोलत आहे. आज संयुक्त आघाडीचा आणि श्री. वैती साहेबांचा मुड निलंबनाचा आहे. त्यांनी ठरवूनच आलेले आहेत की, दोन तीन तरी अधिकारी आपण आज निलंबित करायचे किंवा पाडायचे. कारण आज त्यांचे गणित जमले आहे. गणित जमल्या असल्याकारणाने त्यांनी बरोबरच ते साधलेले आहे.

#### लक्ष्मण जंगम :-

सन्मा. नगरसेवक मिलन पाटील साहेब आमचे तसे काही गणित नाही.

**मिलन पाटील :-**

आपण बोलत असताना आम्ही गप्प बसलो ना आणि मी आयुक्तांना किंवा मा. महापौरांना सांगत आहे. साहेब, ठराव करावा. कोणताही अधिकारी प्रशासनाकडून ठराव आणतात. आणि मा. महासभेमध्ये त्याची पुर्तता करतात, कोणत्या अधिकाऱ्यांची प्रॉपर्टी आहे आणि....

**मिलन पाटील :-**

त्या प्रॉपर्टीवर त्यांचा काही अधिकार होणार नाही तर कशा करिता ते काही करत नाही. तर हे निलंबन कशाकरिता करायचे? साहेब कलम ४५१ बघा कोणत्याही अधिकाऱ्यांनी जर कोणती इजा केली असेल त्रास दिला असेल शांततेचा भंग केला असेल, किंवा नाल्यातून कोणाला अपघात घडला असेल, तर त्याच्यावर निलंबनाची कार्यवाही होवू शकते. आयुक्त करू शकतात असे कोणतेही काम ह्याच्यात झालेले नाही. जे दोन्ही अधिकारी निलंबित केलेले आहे? तर त्याच्यावर ४५१ खाली त्याने असे कोणते गांभिर्य केलेले आहे? त्यांनी कोणाला जखमी केलेले आहे? त्यांनी कोणाला उद्धट उत्तर दिलेले आहे? व त्याच्यामुळे असे किती लोक जखमी झालेले आहेत? निलंबनाचे कारण काय आहे? तुम्ही ठराव आणा. तुम्ही ठराव फेटाळून लावा. पुढच्या वेळेला घ्या. त्यांना तुम्ही सांगा की, योग्य तो ठराव आणा. या माकगच्यावेळी कसे बोलले? तर ते बोलल्याच्या नंतर मागच्या वेळेला तुम्ही जसे सांगितले होते की, आम्हाला ह्या पद्धतीने ठराव पाहिजे. त्यापद्धतीने तुम्ही ठराव मागा. आम्ही सुद्धा करतो आम्ही मागच्या वेळेला ठरावामध्ये पण काही त्रुटी होत्या त्या त्रुटी आम्ही मान्य केल्या की नाही आता नाही तर पुढच्या वेळेला व्यवस्थित घेवून या चांगल्या पद्धतीने घेउन या. आता सन्मा. सदस्य श्री. प्रफुल्ल पाटील साहेबांनी सांगितले होते, ते व्यवस्थित सांगितले होते. त्याला आम्ही काही विरोध केला होता का? जर महापालिकेचे उत्पन्न वाढत असेल दोन दिवस लेट झाला तरी आम्हाला काही हरकत नाही. पण एखाद्या प्रामाणिक अधिकाऱ्याला जर तुम्ही ताबडतोब निलंबन कराल कारण त्याने तुमचे एवढेसे काम केले नाही आणि गेल्या पाच वर्षांपासून तुम्ही काय केले? तेव्हा श्री. खांबित साहेब तुमची सगळी कामे करत होते. तेव्हा ते तुम्हाला चांगले होते. मिरारोडची सगळी कामे होत होती. पण तुम्ही परिस्थिती बघा. जेव्हा आपल्याकडे पुर आलेले आहेत. जेव्हा महाजन वाडीमध्ये आपली दोन दोन, चार चार, माणसे वाहून गेलेली आहेत. कलवर्ट किती लहान आहे? साहेब, तुमचाच ठराव आहे ना? सन्मा. सदस्य श्री. तुळशीदास म्हात्रे साहेबांनी सांगितले होते की, कलवर्ट किती लहान आहे? ते बघा त्यामुळे हा पुर येतो. सन्मा. सदस्य श्री. तुळशीदास म्हात्रे साहेबांनी मागच्या सभेमध्येही सांगितले होते. जेव्हा आम्ही तुम्ही एकत्र होतो त्यावेळेला तुम्हाला श्री. खांबित साहेब चांगले होते. पण आपण ठराव केला होता की कलवर्ट लहान आहेत. आणि त्यावेळेला एवढा पाउस पडला होता की संपूर्ण मिरा रोड पाण्याखाली होते मग मॅडमनी पत्र का लिहिले? ह्या पावसाळ्यात २६ तारखेला संपूर्ण मिरा रोड पाण्याखाली होते मग आपण त्याचा विचार करायला नको का? आताच्या आता जरी पाउस पडला ना. ह्या गेल्या मागच्या दोन महिन्यामध्ये तेव्हा सुद्धा झाले होते. ह्याच्यामध्ये केंद्रशासनाचा काहीही अपमान झालेला नाही आणि आपण केंद्रशासनाचे काय केले? आपल्याला उलट केंद्रशासनाचा पैसा पाहिजे आहे येउ दे आपण तर सांगतो जवाहरलाल नॅशनल अर्बन मिशन योजने अंतर्गत सांगतात. किती दिवसानंतर पैसा येणार? हे काँग्रेसचे राज्य आहे. आम्ही सुद्धा त्याच्यात सामिल आहोत. येईल तेव्हा येईल. तो येईल तेव्हा आपल्या महानगरपालिकेला ही पैसा पाहिजे. केंद्र शासनाचा कुठेही उल्लेख नाही किंवा त्यांच्या कोणताही अपमान झालेला नाही. आपल्याला तर सन्मा. सदस्य श्री. चंद्रकांत वैती साहेब आणि आमदार श्री. मुझफ्फर हुसैन साहेबांनी मदत करावी. आपल्याकडे केंद्र शासनाचा पाहिजे तेवढा पैसा येवू द्या. आज तुम्ही ह्यावेळा बघता किती त्रास होतो? किती पाउस पडतो? किती वाहने उभी असतात? प्रत्येक रस्त्यावर वाहनांची कामे चालू असतात. प्रत्येक ठिकाणी बघा तिथे तुमच्याकडे नगरसेवक निवडून आले नाहीत त्याला आमचा अपवाद काय? प्रजा आहे प्रजा म्हणून त्यांच्याशी असे करायचे? त्याठिकाणी नाले होवू द्यायचे नाही. महाजन वाडी मध्ये आमचे नगरसेवक आहेत किंवा इतर ह्याच्यामध्ये आहेत मग असे कशाला करायचे? मिरा रोड मध्ये पाणी साचले होते तेव्हा आम्ही काही बोललो का? असे काही नाही. हा रोष कुठे काढू नका हे गावाचे काम आहे. शहराचे काम आहे. त्या शहराच्या दृष्टीकोनातून बघा तिकडे राष्ट्रवादीचे नगरसेवक आहेत. त्या एरियात आपल्याला काम करायचे नाही. हा जर तुम्ही विडाच उचलला असेल तर आज गणित तुमच्या बाजूने आहे. मग तुम्ही विडाच उचलला असला तर काही होवू शकते. अशाप्रकारचा काही भाग नाही. आज तुमचे आहे. उद्या आमचे सुद्धा येईल आणि ह्याच्या मागच्या ५ वर्षांमध्ये तुम्ही आमच्या जोडीला होते. तुमच्याच लोकांची ही कामे आहेत आणि तुम्हीच ही कामे सुचविलेली आहेत. मा. आयुक्त साहेबांनी ती कामे आज दाखविली किती लोकांची काय काय पत्रे आहेत? कधी पासूनची पत्रे आहेत? सन्मा. सदस्य श्री. तुलशीदास म्हात्रे साहेबांनी सांगावे की कलवर्ट लहान आहेत की नाही? आता आपण जे प्रोव्हिजन केले ते पुढे चार वर्षांमध्ये होवून जाईल. कलवर्ट मोठी होतील शहराचा विकास होईल. त्याच्यामध्ये कोणाचे काय आहे? त्याबद्दल तुम्हाला वॉईट कशाला वाटायला पाहिजे? चांगल्या कामाला आम्ही सुद्धा समर्थन करतो. तुम्हीही चांगल्या कामाचे समर्थन केले पाहिजे. तुम्हाला कोणत्या पद्धतीचा ठराव पाहिजे तो सांगा. जर अधिकाऱ्याची चुक काढायची असेल तर चुक काढा. अधिकाऱ्याला फासावर चढवून निलंबनाची कार्यवाही करता? निलंबन करण्यासारखे असा त्यांनी काय गुन्हा केलेला आहे? तुम्ही हतबल (असे) करता. जर दोन अधिकारी गेले तुम्ही अधिकाऱ्यांना हतबल करता. चांगले प्रशासन आहे. प्रशासनाने अधिकाऱ्यांच्या मागे उभे



राहायला पाहिजे. तुम्ही काम करून घ्यायला पाहिजे असे कोणते अधिकारी बसतील? आजपर्यंत ते ए.सी. मध्ये बसतात. पुढेही ते ए.सी. मध्ये बसतील आपल्याला काही करायचे नाही. ठरावामध्ये बघा जी कामे व्हायची आहेत ती होतील मग बघू तुम्ही ठराव करा असेच काम होवून जाईल आपण प्रत्येक अधिकाऱ्याला निलंबन कराल का? उद्या तुम्ही आरोग्याचा कोणी अधिकारी घ्याल. इकडे सगळीकडे आरोग्याची तकलिफ आहे. पुढच्या मिटींगला आरोग्याचा अधिकारी घ्याल सस्पेंड कराल आरोग्याचा अधिकारी गेला. म्हणजे महानगरपालिकेमध्ये कोणी कामच करू नये का? तुमचा अधिकार आहे म्हणून तुम्ही निलंबित करत बसाल काय? ४५१ खाली निलंबन करण्याचा अधिकार फक्त मा. आयुक्त साहेबांनाच आहे. काही होवू शकत नाही. तुम्ही निलंबनाचा ठराव करा. त्या ठरावाला आमचा विरोध राहिल. ठरावामध्ये ते निलंबित होवू शकत नाही. मा. आयुक्त साहेबांचे ४५१ खाली अधिकार आहेत त्यांना काय करायचे असेल? तर ते करतील अशी परिस्थिती जर उदभवली. तर मा. आयुक्त साहेब करतील. तुम्ही काही करू शकत नाही. तुम्ही जो ठराव केलेला आहे. त्याला आमच्या राष्ट्रवादी पक्षाचा सर्वांचा विरोध आहे.

**हेलन गोविंद :-**

जेव्हा तुम्ही स्वतःच व्यासपिठावर होते. उपमहापौर साहेब आणि महापौर मॅडम होत्या. तेव्हा तुम्हाला मिरची झोंबली नाही. मग आता का मिरची झोंबायला लागली? एखाद्या अधिकाऱ्याला किंवा कुठल्याही कर्मचाऱ्यांना ताबडतोब सस्पेंड करता. तो त्यांच्या रोजी रोटीचा तो प्रश्न आहे. त्यांच्या पोटावर पाय घालू नका. त्यांच्यावर अन्याय करू नका.

**मॉरस रॉड्रीक्स :-**

सन्मा. सदस्या सौ. जोत्सना हसनाळे मॅडम चांगल्या बोलल्या मी त्यांना शाबासकी देतो आणि मी ह्या मा. आयुक्त साहेबांना आणि मा. महापौर साहेबांना सांगतो की सर्व शहरात नाले करा हे पाच वर्षांपासून होत नाही. मी सभापती असताना सुद्धा नाल्याचे काम घेतले होते. हे सन्मा. सदस्य श्री. मिलन पाटील साहेब, काय बोलतो...

**जयंत पाटील :-**

सौजन्याची भाषा वापरा.

**हेलन गोविंद :-**

तुमचे चांगले काम, तुमच्या म्हणण्याप्रमाणे झाले नाही तर अधिकारी हे तुम्हाला चुकीचे वाटतात. तुमची ही भाषा चुकीची आहे.

(सभागृहात गोंधळ.)

**मॉरस रॉड्रीक्स :-**

आपने मिरा भाईंदर शहरकी सब नालेसफाई करने का विषय पाच वर्षसे हमेशा मा. स्थायी समिती मे लेते थे फिर वह नही होते है। पाच साल से वही चल रहा है। की हम काम लेते है वो काम की कुछ हालचाल ही नही होता है। क्योंकि अपने को महाराष्ट्र शासन के पास जाने के लिए किसीके पास टाईमही नही है। अपना सॅक्शन हुआ पैसा लगाओ। अपनाही पैसा लगाकर चालू करनेका।

**मा. महापौर :-**

चार पाच बार लिआ था।

**मॉरस रॉड्रीक्स :-**

वही बैंक से हम लोन ले सकते थे। एक साल मे पुरा किजीए। मै कहा ना बोल रहा हु।

**मा. महापौर :-**

आपने नाले का विषय चार पाच बार दिया था। आपने बोला था मा. स्थायी समितीचे चार पाच बार नाले का विषय लिया था लेकिन वह तो सॅक्शन नही हुआ।

**मॉरस रॉड्रीक्स :-**

मा. स्थायी समितीमे लेते है। मैने खुदने लिए थे।

**मा. महापौर :-**

उसपर क्या हुआ।

**मॉरस रॉड्रीक्स :-**

क्या पता?

**मा. महापौर :-**

उसपर निर्णय क्या हुआ?

**मॉरस रॉड्रीक्स :-**

निर्णय मैने पास किये है। लेकिन कामकज चालू नही हुआ है।

**मा. महापौर :-**

ऐसे कैसे हो सकता है?

**मॉरस रॉड्रीक्स :-**

बजेट नही होता है। अभी चार करोड का बजेट है....

**मा. महापौर :-**

उस टाईम जब नालेका विषय चला था। तब आपने कितने अधिकारीयो को सस्पेंड किया था? बजेट नही था फिर भी आपने नाले का....

**मॉरस रॉड्रीक्स :-**

अगर मेरे हाथ मे रहता तो आज भी करता था।

**मा. महापौर :-**

तबभी आपके हाथ मे था।

**मिलन पाटील :-**

मा. महापौर साहेब, जब यह सभापती थे तो वही श्री. खांबित इनको अच्छा लगता था।

**हेलन गोविंद :-**

सन्मा. मॉरस रॉड्रीक्स साहेब आपण जेव्हा स्थायी समिती सभापती होता. तुम्ही आता सांगता की माझ्या हातात असते तर मी केले असते.

**नगरसचिव :-**

आजचे सभाकाज संपायला शेवटचे पाच मिनटे आहेत.  
(सभागृहात गोंधळ.)

**जोत्स्ना हसनाळे :-**

मा. महापौर साहेब, शेवटची पाच मिनिटे राहिलेली आहेत. आपण रूलिंग द्यावे.

**मॉरस रॉड्रीक्स :-**

हमने जो ठराव मांडा है। वह ठराव पर आप रूलिंग दिजीए।

**मा. महापौर :-**

मुन्शी कंपाउन्ड रामदेव पार्कचा नाला.....

**जयंत पाटील :-**

मा. महापौर साहेब, शेवटचे पाच मिनिटे आहेत. अधिकाऱ्याला काढण्याच्या ठरावाच्या विरोधात आहोत.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

एक विषयामध्ये दोन ठराव आहेत. एकमध्ये निलंबनाचा ठराव आहे आणि एक नाल्याचा कुठला ठराव घेणार आहात.

**जयंत पाटील :-**

अधिकाऱ्याला काढण्याच्या ठरावाच्या आम्ही सगळे विरोधात आहोत.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

एक विषयामध्ये दोन ठराव आहेत. एकमध्ये निलंबनाचा ठराव आहे आणि एक नाल्याचा कुठला ठराव घेणार आहात?

**जयंत पाटील :-**

बजेट प्रोव्हिजन नसेल तर पुढे न्यायला आमची काही हरकत नाही. वैयक्तिक हेवेदावे काढण्याचे हे ठिकाण नाही.

**ओमप्रकाश अग्रवाल :-**

एका विषयामध्ये दोन ठराव होत नाही.

**मा. महापौर :-**

जे मुन्शी कंपाउन्डचे नाले आणि केनवुड पार्कचे रामदेव पार्कचे नाले आपण घेतलेले आहेत. ते यासाठी महत्वाचे आहे तिथे सन्मा. सदस्य श्री. म्हात्रे साहेबही त्याठिकाणी नगरसेवक होते. आता त्या ठिकाणी सन्मा. सदस्य जयंत साहेब नगरसेवक आहेत. त्याठिकाणी तीन तीन दिवस पाणी निघत नाही. १० मिनिटे जरी पाउस पडला तरी तिन दिवस पाणी निघत नाही. मुन्शी कंपाउन्डचा विषय महत्वाचा आहे. त्या संदर्भात मा. नगरसेविका सय्यद नझरहुसैन यांना मम्मीचे देखील पत्र आहे. श्री. सलिम शेख यांचे देखील पत्र आहे. म्हणून हे तातडीने प्रायरेटी ठरवून की, आम्हाला वाटले हे दोन योग्य आहे. मी प्रशासनाला की जे दोन महत्वाचे नाले आहेत सांगितले ते तरी ह्या म्हणजे कमीत कमी मिरा भाईंदर हे पुढच्यावर्षी पाण्याखाली जाणार नाही. अशी काहीतरी व्यवस्था करा आणि इव्हन आरोग्य विभागाचीही मागणी होती की हे नाले झालेच पाहिजे. त्या हिशोबाने हा विषय इकडे आलेला आहे. तर कुठल्या अधिकाऱ्यावरती बोट दाखवून चालणार नाही. कारण हे नाले मंजूरी करताना खालून म्हणजे जे.ई. पासून मा.आयुक्त पर्यतच्या सहाय्य आहेत. म्हणजे ह्या सर्वांना निलंबित करायचे का? आणि श्री. खांबित इज अ वर हेड ऑफ दि डिपार्टमेंट आणि त्यांच्यावर नियंत्रण म्हणून श्री. वाणी साहेब, त्यांना निलंबित करायचे का? मग पुढच्या वेळेला तुम्ही विषय दिला. आम्ही

एखादा अधिकारी सांगितले की आपण याची टिपणी द्या तर तो देणारच नाही. आणि हॉस्पिटलला आपण मंजुरी दिली होती. मग त्यावेळेला काही चुक झाली नाही आणि आज एक चुक झाली? म्हणजे महत्वाचे नाले आहेत ते ठिक आहे. बजेटमध्ये तरतुद नव्हती. आपल्याला पूढच्या वेळेला घ्यायला पाहिजे ठिक आहे. पण कुठल्या अधिकाऱ्याला त्यांनी हे का आणले? ते का आणले? असे आपण करत गेलो तर पूढच्या वेळेला कुठलाही अधिकारी आपल्याला कुठलाही गोषवारा देणार नाही. आणि एखाद्या आपल्या कुठल्याही नगरसेवकांनी कामे सुचविली कोणी सांगितले तर कोणी टिपणी देणार नाही? टाळाटाळ करणार नाही माझी आपल्याला विनंती आहे की, सन्मा. सदस्य श्री. वैती साहेब आपण जे म्हटलेले आहे ते मागे घ्या. चुकीचा मॅसेज जाईल.

**चंद्रकांत वैती :-**

तुम्ही विनंती करता आहात. सन २०३१ सालापर्यंत जवाहरलाल नेहरू नॅशनल अर्बन रिन्युअल मिशनचे काम करण्यासाठी विलंब होणार आहे. तुम्ही केंद्र सरकारची योजना किती वर्ष मागे नेली? १ लाख करोड रुपयाचे ६४ शहरांसाठी या योजनेच्या माध्यमातून उपलब्ध केले जाणार आहेत. आणि त्या योजनेवरती आक्षेप घेणारा हा कोण? त्यानंतर सन २००८-०९ च्या अर्थसंकल्पात त्याची तरतुद करायची मात्र आता तसेच कामाच्या प्रशासकिय व आर्थिक मान्यतेबाबत.....

**मा. महापौर :-**

आपण पहिलेही दिलेले आहे.

**चंद्रकांत वैती :-**

नाही आता दिलेले नाही. शहरामध्ये ते दोनच नाले नाही.

**मा. महापौर :-**

सन्मा. नगरसेवक आपण जे म्हणता की त्या जे.एन.ए.आर.एम. या स्कीम खाली हे करायचे होते. पण आता फस्ट स्टेजला आपले.....

**चंद्रकांत वैती :-**

आपण तेव्हा प्रायोरिटी ठरावायची होती.

**मा. महापौर :-**

फर्स्ट स्टेजला आपले.....

**चंद्रकांत वैती :-**

आपण निर्वाचित नगरसेवकांना त्यांना सांगता पत्र लिहून द्या आणि इथे प्रस्ताव तयार करता. ह्याबाबत आम्ही आधीही चर्चा केलेली आहे. मा. आयुक्त साहेबांशी देखील आधीच चर्चा केलेली आहे. आपण चुकीचा विषय घेतलेला आहे. मग तुम्हाला का वाटले नाही? की ह्या विषयांवर आपण आधीच काहीतरी चर्चा करून हे विषय घेवू. तुम्हाला काय. सन्मा. सदस्य श्री. शरद पाटील यांचे मी कौतुक करतो. त्यांनी सांगितले की, अधिकाऱ्यांनी ह्यापुढे गोषवारा आणतांना सावधगिरी बाळगा. मा. महासभेसमोर विषय मांडतांना तो विषय रितसर मांडा.

**मा. महापौर :-**

विषय रितसर मांडला होता शहरातील गटाराचा विषय आहे.

**चंद्रकांत वैती :-**

अॅक्ट मध्ये प्रोव्हीजनन आहे तुम्ही कशी काय तुम्ही एवढी मोठी तरतुद करता. तुम्ही साधारण १० करोड रुपयाची तरतुद प्रकरण क्र. १३ आणि प्रकरण १४ मध्ये केलेली आहे. १० करोड रुपये तरतुद करता. उद्देश काय? पॉलिटीकल मायलेज कोणाला द्यायचा आहे ते ज्याचे त्याला माहिती आहे. आमच्या नगरसेवकाला माहिती पडायच्या आधी तिथे कोणीतरी जावून सांगितले की, हम तुम्हारे इधर नाला बना रहे है। सोसायटीचे रस्ते हँडओव्हर झाले नाही. अॅग्रीमेंट बनलेले नाही. पण त्याच्यासाठी आपल्याकडे तरतुद झाली. हे सांगायला तिथे माणूस आहे. आमचा नगरसेवक नाही. म्हणजे तुम्ही ते काम पॉलिटीकली करत असाल....

**मा. महापौर :-**

पॉलिटीकली कोण करते? त्या अधिकाऱ्यांचा काय दोष आहे. जर कोणी पॉलिटीकली केला तर?

**चंद्रकांत वैती :-**

अधिकाऱ्यांनी हा रोल करू नये. ते त्यांचे जे कर्तव्य आहे. त्या कर्तव्याशी संबंधित जेवढे कामकाज आहे. तेवढ्याच कामकाजामध्ये इंटरफेअर करायचा. आज आम्ही इशारा दिला आहे प्रत्येकालाच आपल्या कामात सुधारणा करायची आहे.

**चंद्रकांत मोदी :-**

मा. महापौर साहेब, हमने सन २००३-०४ मे नाला बनाने का लेटर दिया था वह विषय आया नहीं। कहा की बजेट नहीं है।

**स्नेहा पांडे :-**

मा. महापौर साहेब, मिरा भाईंदर के जिस जिस एरिया मे पानी ज्यादा भरता है वहाँ के गटार का समावेश आपने किया है तो भाईंदर इस्ट हनुमान नगर जहाँ आप खुद नगरसेवक रह चुके है उस एरिया के गटार का समावेश इसमे क्यो नही किया गया है।

**मा. महापौर :-**

प्रायोरिटी के हिसाब से किया गया था।

**स्नेहा पांडे :-**

हनुमान नगर मे भी तिन साडे तीन फिट पानी भरता है। बाकी एरियामे १ फुट पानी रहता है। तीन तीन दिन पानी निकलता नही है। उस एरिया का समावेश क्यो नही किया गया है।

**जयंत पाटील :-**

श्री. दिपक खांबित या सक्षम अधिकाऱ्यांच्या निलंबनाचा जो ठराव मांडलेला आहे. आमचा सर्वांचा त्या ठरावाला विरोध आहे याची नोंद घ्या. सभा संपलेली नाही.

**जोत्सना हसनाळे :-**

या ठरावाला आमचा सर्वांचा विरोध आहे.

**मा. महापौर :-**

आजची ही सभा वेळे अभावी तहकूब करत आहे.

**भगवती शर्मा :-**

निलंबनाच्या ठरावाला आमचा विरोध आहे.

**चंद्रकांत वैती :-**

यांचा विरोध नोंदवून घ्या आणि ठराव मंजूर करा.

**सभा तहकुबीची वेळ :- सायं. ७.०० वा.**

महापौर  
मिरा भाईंदर महानगरपालिका

नगरसचिव  
मिरा भाईंदर महानगरपालिका

